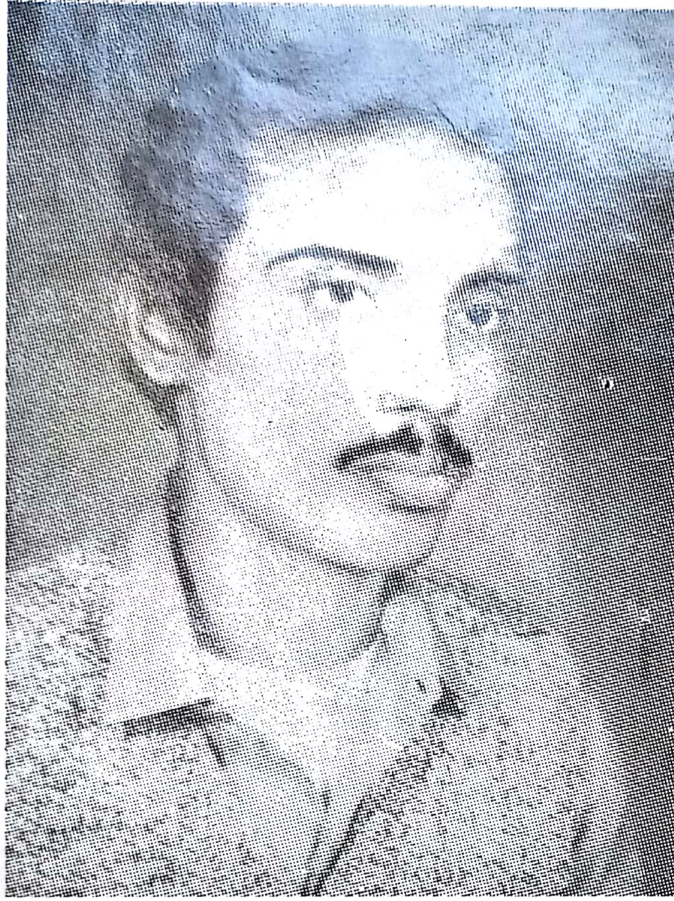


मैथिलीक दधीचि :
बाबू भोलालाल दास

शम्भुनाथ मिश्र

लेखकक परिचय



नाम : शम्भुनाथ मिश्र

जन्म : २६ नवंबर, १९६२

मूल निवासी : खोजपुर, जि० मधुबनी

शिक्षा : १९७७ ई० मे मैट्रीकुलेशन,

१९८२ ई० मे बी. ए., मैथिली प्रतिष्ठा मे

प्रथम श्रेणी मे प्रथम

१९८४ ई. मे मैथिली सँ एम.ए., प्रथम श्रेणी मे प्रथम

संप्रति: भारतीय स्टेट बैंक, कमतौल, जि. दरभंगामे

कार्यरत एवं ल. ना. मि. विश्वविद्यालयक

अन्तर्गत पी० एच० डी० हेतु शोधरत

सम्पर्क : भारतीय स्टेट बैंक, कमतौल, जि० दरभङ्गा

स्थायी पता : द्वारा श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

आदित्य-सदन, मिश्रटोला, दरभङ्गा

अभिरुचि : अन्वेषण, अनुसन्धान एवं आलोचना।

मैथिलीक दधीचि : बाबू भोला लाल दास

•

लेखक :

शम्भुनाथ मिश्र एम० ए०



प्रकाशक :

कर्ण गोष्ठी,

कलकत्ता

● सर्वाधिकार : लेखकाधीन

●

● प्रकाशक : कर्णगोष्ठी, १/डी, ओमदा राजा लेन,
कलकत्ता-७०००१५

●

● प्रथम संस्करण : १९९१

●

● मूल्य : ५०) टाका मात्र

●

● मुद्रक : एशोसियेटेड आर्ट प्रिन्टर्स,
७/२, वीडन रो, कलकत्ता-७००००६

●

प्रस्तुत ग्रन्थ ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा द्वारा एम० ए० परीक्षा १९८४क हेतु स्वीकृत निबन्धक संशोधितओ परिवर्धित रूप थीक। —लेखक

●

MAITHILIK DADHICHI : BABU BHOLALAL DAS

मैथिलीक दधीचि : बाबू भोलालाल दास



जन्म : माघ वदि त्रयोदशी शुक्ल	निधन : ज्येष्ठ शुक्ल दशमी
सन् १३०१ साल १८९४ ई०	शनि सन् १३८४ साल १९७७ ई०

समर्पण

मातृभाषा मैथिलीक अनन्य सेवी, भारतीय
संस्कृतिक अनुरक्त, पूज्य पिता
पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' कें, जनिक
दिशा निर्देश हमरा सतत् अनु-
प्राणित करैत रहल अछि,
सादर, सभक्ति
समर्पित।

—शम्भुनाथ मिश्र

प्रकाशकीय

प्रस्तुत पोथी कर्णगोष्ठी प्रकाशनमालाक सातम पुष्प प्रकाशित कऽ गौरवक अनुभव कऽ रहल छी। मैथिलीक निष्णात एवं अधिकारी विद्वान सभक निर्देशन मे लिखल ई शोध ग्रन्थ मैथिली आन्दोलनक युगपुरुष, मैथिलीक दधीचि, बाबू भोलालाल दासक प्रति दीपित श्रद्धांजलियेटा नहि, वरण मैथिलीक स्तित्व रक्षाक हेतु संघर्षक गाथा थीक। एहि मे कतिपय दुर्लभ ऐतिहासिक तथ्य सभक उद्घाटन कएल गेल अछि जे मैथिली आन्दोलन सँ जुड़ल मातृभाषा प्रेमीक हेतु प्रेरणा-दायक तथा शोधकर्त्ता लोकनिक हेतु उपयोगी सिद्ध होएत—से विश्वास अछि।

एहि प्रकाशनक हेतु हम आभारी छी नवानी ग्राम (जिला-मधुवनी) निवासी श्री मणिकान्त दासक (सुपुत्र स्व० भुवनेश्वर दास), जिनक उदारतापूर्ण आर्थिक सहयोगक वलें ई सम्भव भऽ सकल अछि। ज्ञातव्य जे श्री मणिकान्त दास मैथिल कर्ण कायस्थ मध्य सुप्रसिद्ध व्यवसायी श्री जुगेश्वरलाल दास तथा यशस्वी समाजसेवी श्री शोभाकान्त दासक परिवारक कीर्तिमान सदस्य छथि। अपन पारिवारिक मर्यादाक अनु-रूपे श्री मणिकान्त बाबूक सहयोग मातृभाषा मैथिलीक प्रति हुनक अगाध प्रेम तथा बाबू भोलालाल दासक प्रति असीम श्रद्धाक द्योतक थीक।

एहि प्रकाशनक क्रम मे उत्साहवर्धक सक्रिय सहयोगक हेतु श्रीयुत राजकुमार मल्लिकजीक प्रति आभार व्यक्त करब नहि विसरि सकैत छी। एशोसियेटेड आर्ट प्रिन्टर्सक संचालक श्री चन्द्रकान्त झा तथा कर्मचारी गणक सहयोग प्रशंसनीय रहल अछि। खूब सतर्क रहितहुँ, यत्र-तत्र प्रूफक त्रुटि रहि गेल अछि। सुधी पाठक सँ अनुरोध जे क्षमा करथि।

राजनन्दनलाल दास,

जूड़शीतल, १५ अप्रैल १९९१ — अध्यक्ष, कर्णगोष्ठी, कलकत्ता-१५

मैथिलीक लाल : बाबू भोलालाल

'क्रतो स्मर कृतं स्मर'—वैदिक धारणाक निगमेँ, 'सेवाधर्म परम गहन :'—नीतिक अवधारणाक आगमें ओ 'नास्ति येषां यशः काये जरा मरणजं भयं'—साहित्यिक सिद्धिक अनुगमें मैथिली-दधीचि बाबू भोलालाल दासजीक व्यक्तित्व कृतित्व पर प्रकाश देबाक लेल आयुष्मान लेखक ओ कीर्तिमान प्रकाशक दूहू सर्वथा साधुवादार्ह छथि। संगहि एही पृष्ठभूमि मे संस्मरणीय अग्रजन्मा साहित्य साधनैक धर्मा स्मरणीय पुण्यात्माक स्मृति-चित्र के निखारबाक ओ हुनक प्रेरक चरित्र केँ भाव—सुमनें पुजबाक अवसर पाबि अपना कें कृतार्थ बुझैत छी।

रंग श्याम, कद नाम, आकृति दूबर रहितहूँ अभिराम; दृष्टि तेजस्वी, स्वभाव ओजस्वी, स्वर भास्वर ओ लेखनी प्रखर रहितहुँ व्यवहार सँ मिलनसार; अंग दुर्बल ओ मनोबल दबंग। एहि अनूप रूप ओ आकृति-प्रकृतिक जनिक स्मृतिचित्र एखनहुं हृदय पट पर अंकित अछि—ओ छला मिथिला-मैथिलीक अनमोल लाल बाबू भोला लाल।

भोलाबाबूकें जहियो स्वरूपतः नहि देखने छलिऐन तहिओ चिन्हैत छलिऐन 'मिथिला' मासिक पत्रक ओहि 'मोटो' सँ जाहिमे अंकित छल—

"कुमर पुरातन नीति निरत छथि, दास नवीन समाजी
अछि आशा, दूह दूहकाँ राखथि सब दिन राजी॥"

पुरातन छला ज्योतिर्विद वरिष्ठ सम्पादक पं० कुशेश्वरकुमर जनिक नीति-निलयक रचना सनातनी विचारधारा प्रवाहित करैत छल। समाजी अर्थात् तत्कालीन सुधारवादी तथाकथित आर्य-समाजी विचार-निर्झर कें प्रवहमान रखनिहार कनिष्ठ रहितहुँ गरिष्ठ, अपर सम्पादक बाबूभोलालाल दास—जे समाजक जड़ताकें नव चेतना सँ चूर-चूर करबाक तरस्विता नेने आयल छला। विद्यापति प्रेसक संस्थापक स्व० रामलोचन-

शरणजी एहि प्रकारें दक्षिण-वाम दूहू भुजदण्डक आघात-प्रतिघात सँ मिथिलाक साहित्यिक क्षेत्रमे ऊर्जा भरबाक कौशल देखा रहल छला।

मिथिलाक प्रकाशन सँ पूर्वहुँ अपन छात्र-जीवनक अरुणोदयमे—आजुक चाह-पान जकाँ पत्र-पत्रिकाक चाटमे तत्कालीन माधुरी, प्रभा, सुधा, चाँद, गंगा, विशालभारत, आदि हिन्दी-मासिक पत्रिका पढ़बाक उच्चाटमे-भोलाबाबूक नाम सँ परिचित भेलहुँ। तत्कालीन हिन्दी-पत्रिकामे क्रान्तिकारी पत्रकार रामरखसिंहक सम्पादकत्वमे 'चाँद' ओहि समय नाम कयने छल। बाबू भोलालाल दास ओहि पत्र सँ सम्बद्ध छला। हिन्दू कानूनमे अवलाक अधिकार विषय पर हुनक लेखमाला बेस रोचक ओ वैचारिक उत्तेजक छपैत छल। पुनः जखन मैथिली साहित्य परिषदक मन्त्रित्वक भार पं० शशिनाथ चौधरीक बाद हुनका पर आयल तँ ओ बड़े जोस-खरोस सँ मैथिलीक प्रश्न तत्कालीन विभिन्न भाषाक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित करबैत छला। ताहि सबसँ हुनक ओजस्वी विचारक परिचय भेटैत छल।

किन्तु हुनकासँ साक्षात्कार १९३५ क मैथिल महासभाक रोसड़ा-अधिवेशनमे भेल जतय प्रथम-प्रथम कवि सम्मेलनमे सम्मिलित भेल छलहुँ। ओहि समय धरि मैथिल महासभाक संगहि मैथिली साहित्य परिषदक तत्वावधानमे कविसम्मेलन आयोजित होइत छल जकर पुरोधा रहैत छला परिषदक मन्त्रीक रूपमे स्वयं भोलाबाबू।

तकर बादे जून १९३५ ई० मे 'मिहिर'क सम्पादक रूपमे हम जखन दरभंगा अयलहुं ओ परिषदक कार्य समिति मे सम्मिलित होइत रहलहुँ, भोलाबाबू सँ घनिष्ठता बढ़ैत गेल ओ अग्रजक अनुजक भावना निरंतर अंत धरि हमरा दूहूकें अविच्छेद्य रूपमे एकीकृत करैत रहल।

परिषदक चतुर्थ अधिवेशन ओही बीच मधुबनीमे आयोजित छल। एहिसँ पूर्व तमुरिया (धोघरडीहा) अधिवेशनमे म० म० डा० उमेश मिश्र भाषा-वैज्ञानिक दृष्टिसँ मैथिलीक पक्ष स्थापित कऽ चुकल छलाह। ओम्हर हिन्दी साहित्य सम्मेलनक मंच ओ पत्र-पत्रिकाक स्तम्भ सँ डा० जनार्दन

मिश्र, पं० जनार्दन झा "द्विज" महा पंडित राहुल सांकृत्यायन, युवक योगी सम्पादक रामवृक्ष वेनीपुरी जी प्रभृति मैथिलीक उत्थानकेँ राष्ट्र-भाषा हिन्दीक बाधक मानि विरोध स्वर तीव्र कयने छला। भोलाबाबू एहि प्रयासमे छला जे मैथिलीक विपक्षी स्वरक निराकरण तथा सरकारी पक्षक आकलन करवाक हेतु एहन सर्वमान्य व्यक्तित्वक अन्तर्नाद चाही जे शैक्षणिक ओ प्रशासनिक कर्णकुहरकेँ प्रमाणित कऽ सकय। सौभाग्य सँ म० म० डा० गंगानाथ झा सन महान् व्यक्तित्व परिषदक मधुवनी अधि-वेशनक अध्यक्षताक हेतु उपलब्ध भेलथिन, जनिक भाषणमे अन्यान्य तर्कक संग अल्पमत संरक्षणक दृष्टिअहुँ मैथिलीक आरक्षणक प्रश्न उठाओल गेल। हिन्दी पत्र-पत्रिकामे बिड़रो उठल। ता 'धरि मिहिरक हिन्दी प्रभाग हिन्दी क्षेत्रहुमे पढ़य जाय लागल छल। सुतरां ओकर तत्कालीन अंकमे अनुरोध-विरोध व्यंग्य-आक्षेपक स्वर-बेस प्रतिध्वनित होइत रहल। बाबू भोलालाल दासक संग सर्व श्री नरेन्द्रनाथ दास विद्यालंकार, पुलकितलाल दास 'मधुर', धनुषधारी दास, मैथिली वाचस्पति बाबू अच्युतानन्द दत्त लोकनिक स्वर झा-मिश्र-सिंह-ठाकुर-यादव-आदिक अपेक्षा ततेक ने तीव्र छल जे हिन्दी योद्धा बेनीपुरीजी आदि चीत्कार कय उठला जे "मैथिली चन्दलाल दासों की भाषा है'। एतावता बाबू भोलालाल दास विशेषतः मैथिलीक-आन्दोलनक प्रतीक रूपमे चर्चित-अर्चित होइत रहला। मैथिलीकेँ विश्वविद्यालयीय स्वीकृति करयबामे मैथिली साहित्य परिषदक मंच भोलाबाबूक प्रधान-मन्त्रित्वमे अन्ततः महाराजाधिराज डा० कामेश्वर सिंह बहादूरक प्रभावी व्यक्तित्वक संबल पाबि कृतकार्य भेल। भोलाबाबू अपन अभिनन्दन पद्यमे एकर चारु चित्रण कयने छथि।

भोलाबाबूक परिषदक मन्त्रित्व काल संघर्षमय छल। समाजक अनेकानेक मान्य व्यक्ति एहि संघर्ष कालमे हुनका सहयोग-सहानुभूति दैत रहलथिन। कु० गंगानन्द सिंह, रायबहादुर जयानन्द कुमर, बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', बाबू चन्द्रधारी सिंह, पं० गिरीन्द्र मोहन मिश्र, राजपंडित

बलदेव मिश्र, पं० गंगाधर मिश्र, पं० जीवनाथ राय, डा० सुभद्र झा, पं० तन्त्रनाथ झा, श्री काञ्चीनाथ झा 'किरण', ठाकुर सूर्यनारायण सिंह, प्रो० परमाकान्त चौधरी, प्रो० श्रीकृष्ण मिश्र प्रभृतिक नाम उल्लेखनीय अछि। एहि क्रमेँ परिषदक परिधि विस्तार होइत गेल ओ क्रमहि मुजफ्फरपुर, पटना, काशीक अधिवेशन एवं सरिसव, सीतामढ़ी, सहरसा, अजमेर, मन्दार-मधुसूदन आदिक विशिष्ट उपवेशन आयोजित होइत रहल। भोलाबाबूक एहि सेवाक पूजन अध्यक्ष रूपेँ काशीमे आयोजित भेल छल। ओही बीच बंगीय साहित्य परिषदक तत्वावधानमे प्रवासी बंगभाषीक सम्मेलन डा० सुनीति कुमार चटर्जीक अध्यक्षता मे पटनामे भेल छल। परिषद मंत्री भोलाबाबूक संग हमहुं सम्मिलित छलहुं। ओहिमे सदस्य लोकनिसँ जाहि आवेश ओ उल्लास सँ ओ हुनक परिचय करौलथिन ओ अत्यन्त आवर्जक छल।

मैथिली, परिषद ओ भोलाबाबू तीनू पर्यायवाची शब्द बनि गेल छल। ओहि समयमे भोलाबाबूक मुख्य जीविका व्यवसाय वकालतिक गौण ओ मैथिली भाषा साहित्यक चिन्तने मुख्य अध्यवसाय बनि गेल छल। कखनहु ओ मैथिलीक पक्षमे आधार वस्तुक संकलन करथि, प्रतिनिधि मंडलक जोगार करथि ओ अधिकारीक आगाँ स्वीकृतिक लेल मांग राखथि तँ कखनहु मातृभाषाक प्रति लोकमे रूचिजागरण हेतु सभा-समितिक आयोजन करथि। पुनः विरोधी लोकनिक उत्तरमे पत्र-पत्रिकाक कालम भरबाक हेतु अंग्रेजी, हिन्दी ओ मैथिली भाषामे लौह-लेखनी भाँजथि। हुनक ई रूप देखि क्यौ हुनका सनकी कहथि—'जनिका नहि परवाहि आहि क्यौ कहओ बतोहो' ओही स्वरूपक चित्रण थिक।

मैथिलीक प्रकाशन-क्षेत्रकेँ प्रशस्त करबाक हेतु हुनक अनेक योजना छल। 'मित्र प्रकाशन'क नाम सँ एक प्रकाशन संस्था खोलबाक विज्ञप्ति यद्यपि कार्यगत नहि भऽ सकल। परंच ओहिसँ हुनक महत्वाकांक्षी भावनाक पता चलैछ। 'मिथिला' बंद भेलाक बाद ओ पुनः एक पत्रिका

प्रकाशित करबाक स्वप्न देखैत छला जे पाछां 'भारती'क रूपमे ३७ ई०मे आबिकऽ कार्यगत भेल।

'भारती'क संचालन समय एक एहन घटना, घटित भेल जाहिसँ वकील केँ स्वयं मोबवकील होबय पड़लनि। मुजफ्फरपुरमे प्रसिद्ध साहित्यिक बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' जे मिथिला राजपरिवार खण्ड-वला कुरुक एक खण्ड परिवारक छला, 'विभूति' नामक पत्र ओहि बीच बहार कयलनि। पहिने ओ कुरुमुख्य महाराजाधिराजक प्रशंसक छला। पांछां कोनहु कारणवश हुनक विरोध आरम्भ कयलनि। मैथिल महा-सभाक सीतामढ़ी-अधिवेशनमे ओ विरोधी प्रदर्शन कयलनि। महाराज स्वयं ओहि पर विशेष ध्यान नहि देलनि। किन्तु हुनक भागिन जे साहित्यमे विशेष रूचि रखैत छला संगहि चित्रकलाक सेहो अभिरूचि देखवैत छला-भुवनजी पर अपना नामे महारथीजीसँ व्यंग्य चित्र ओ ओहि पर अपना लोकनिसँ व्यंग्य कविता प्रस्तुत करौलनि। ओहि समय मिथिलाक प्रकाशनक बादेसँ अपना लोकनिक एक साहित्यिक मंडल जुटि गेल छल, पुस्तक भण्डारमे शिवपूजनजी, पं० कपिलेश्वर मिश्र जी, दत्तजी, महारथी जो, सहृदयजो प्रभृति एवं मिहिर, भारती आदिक हमरा लोकनि ओ कुमार गंगानन्द सिंह, राजपंडित बलदेव मिश्र जी, प्रभृति ओ यथा समय हरिमोहन बाबू, दिनकरजीक यदा-कदा जुटान होइते रहैत छल। राजपुस्तकालय मे रमानाथ बाबू, तन्त्रनाथ बाबू, ईशनाथ बाबू, जीवा बाबू सेहो जमि जाइत छला। ओहि बीच परिषदक पटना-अधिवेशनमे प्रो० तन्त्रनाथ बाबू 'रासभ' नाम सँ कविता पढ़लन्हि। ओ कविता 'मिहिर' मे छपल। पाछाँ कन्हैयाजी द्वारा प्रस्तुत व्यंग्यचित्र ओ सम्बद्ध व्यंग्यतुकबन्दी-'भारती' ओ 'मिहिर' मे सेहो छपल। फलतः भुवनजी मुजफ्फरपुर कोर्ट मे मिहिर, भारती ओ कन्हैयाजीक संग भालाबाबू, तन्त्रनाथ जो आ हमरा पर मानहानिक मोकदमा चलौलनि। कतोक मास धरि मोकदमामे हमरालोकनि मुजफ्फरपुरक दौड़-धूप करैत

रही। तारीफ ई छल जे मोकदमो चलैत छल ओ भुवनजीक संग हुनक साहित्य निकुंजमे साहित्यिक संगम सेहो जमैत छल। मोकदमा जेना तेना उठल तदनुबन्ध हमरा लोकनिक गोष्ठी बन्धुता प्रगाढ़ होइत गेल। तावत् विभूतिक संग भारती सेहो लड़खड़ा गेल। बसन्ताङ्क 'भारती'क अन्तिम अंक सिद्ध भेल, जकर प्रकाशनमे भोलाबाबूक संग पुरबाक पूर्ण अवसर हमरा प्राप्त भेल छल। एहि बीच भोलाबाबूक आर्थिक स्थिति औरो चिन्तनीय भऽ गेल छल। गप्पक क्रममे राजपंडित जी एक दिन भोलाबाबू केँ भावावेश मे कहलथिन जे अहाँ पर सरस्वतीक कृपा छनिहे लक्ष्मीक कृपा सेहो होयबे करत। भोलाबाबू सामाजिक क्षेत्रमे क्रान्तिकारी विचार रखितहुं, वैयक्तिक जीवनमे आस्थावान छला। बीचमे 'आर्यावर्तक' सम्पादकीय विभाग मे कार्यरत होयबाक प्रसंग सेहो उठल। तावत् किछु दिन हेतु भोलाबाबू यूनियन प्रेस भागलपुर मे लेखकीय कार्य करय लगलाह। संयोगवश ओही क्रम मे विहार-सरकार द्वारा आहूत प्रारम्भिक शिक्षाक ऐतिहासिक पाठ-मालामे ओ अपन किछु पुस्तक स्वतन्त्र रूपमे पठौलनि। किछु दिन पूर्व जकर हस्तलिपि सय-सैकड़ामे कोनो प्रकाशक लेबा लेल नहि प्रस्तुत छल से स्वीकृति-पत्र पाबि हजार-हजार देवा लेल आग्रही भऽ गेल। एक श्रमिक लेखकक चित्त डगमगायल, प्रकाशनक झंझटि सँ कॉपीराइट देबाक विचार मनमे आयल। किन्तु दोसरे क्षण साहसी हृदय भोलाबाबू स्वयं प्रकाशनमे जुटि गेला। 'इण्डियननेशन'क मैनेजर उपेन्द्र आचार्यजी कागजक किछु सुविधा देलनि प्रेसो प्रस्तुत भेल। अन्ततः पुस्तक सब छपि कऽ प्रस्तुत भऽ गेल। स्थितिमे तेना तड़िदवेग सँ परिवर्त्तन आयल जे भोलाबाबू दैन्यक 'दास' सँ सम्पन्नताक 'लाल' बनि गेला। जमीन, भवन, प्रेस सब सहजहिँ किनलनि। भोलाबाबूक मुँह सँ सुनल अछि जे पुस्तक विक्रेताक नोट गनबाक मौका नहि होनि। नोटक गट्टी टा गनि सकथि। पटना, भागलपुर बनारस एक संग संस्करण पर संस्करण छपय लागल।

किन्तु ई सम्पन्नताक स्थिति वर्ख दुइएक रहल। किछु प्रकाशकीय संघर्ष, किछु दलीय विरोध—पुस्तक वर्ग पाठ्यमे बहुत दिन धरि नहि रहि सकल। पुनः भोलाबाबू लक्ष्मीक पर्यंक सँ सरस्वतीक कुश शय्या पर फिरि ऐलाह। पुनः वैह संघर्ष, वैह साधना, वैह भाव-अभाव, वैह श्रम आराधना।

एहू बीच हमरा लोकनि बरोबरि मिलैत-जुलैत, भावक आदान-प्रदान करैत रहलहुँ। एम्हर किछु वर्ष राजनीतिक व्यस्ततामे भेंट-घांटक अवसर कम भेटैत छल। किन्तु भोलाबाबू तखनहुं, वार्धक्य अस्वास्थ्यक असुविधा रहितहुँ दर्शन दैत छलाह, कोनो रचना पढ़लन्हि तँ पत्र द्वारा अपन उद्गार सँ अनुगृहीत करैत छलाह। मृत्यु सँ किछु दिन पूर्व एक दिन श्री दिनेश्वर लाल आनन्द (तत्कालीन सब डिविजनल आफिसर, समस्तीपुर) क संग डेरा पर अयला। रास्तामे रिक्सा दुर्घटनामे किछु चोट ओ कदुऐल कपड़ा पहिरने पहुँचला। निवेदन केलिऐनि—भोलाबाबू, अपने अयबाक कष्ट नहि कएल जाय, संवाद दी हम स्वयं डेरा पर दर्शन कयल करब।

दर्शन करय जाइतो छलहुँ किन्तु से अधिक दिन धरि नहि भऽ सकल-

"एहेन नहि संयोग भे गल छल ने पुनि एहन वियोग"

२८ मई १९७७ क एक मनहूस दिन मे मिथिला मैथिलीक सेवा मे पल-पल तिल-तिल खटैत, मन प्राण होमैत, स्वास्थ्य-सम्पदा झोंकैत, दधीचि जकाँ अस्थिशेष विसर्जित करैत नश्वर शरीरकेँ त्यागि यशः शरीर द्वारा ओ चिरस्मरणीय बनि गेलाह।

हुनक अन्तिम दर्शनमे जखन सम्मिलित भेलहुँ, श्रद्धा सुमन अर्पित कयलहुँ, देखैत रहलहुँ हुनक पार्थिव शरीर। के कहि सकैत छल जे एही क्षीण-दुर्बल कलेवर मे ओ गिरिगुरू महाप्राण बसैत छल जकरामे ज्वाला-मुखीक विकट-विस्फोट छलैक, यौवनक उद्दाम झंझा-झोंक रहैक, ओ विद्रोहक हुँकार-टंकार गर्जैक-जे एखनहुँ प्रतिध्वनित होइत रहैछ—

"अन्यायी सत्ताक छी प्रलय गगन सम अति विषम।
हमरहि लघु हुँकार सँ महाप्रलय होइछ चरम॥

एहन ओजस्वी आन्दोलकक जीवन-यौवन केँ ओ तेहन साहित्यिक साधकक यशस्वी साधना वो सिद्धि केँ प्रसिद्धि देवाक हेतु चिरजीवी लेखक श्री शम्भुनाथजी केँ ओ कर्तव्यनिष्ठ प्रकाशक कर्णगोष्ठीक पुनः हार्दिक संवर्धना करैत छी—'तेजस्विनावधीतमस्तु'।

मैथिली मन्दिर, दरभंगा —सुरेन्द्र झा 'सुमन'
देवोत्थान एकादशी
दि० ३०-१०-१९९०

प्रस्तावना

आधुनिक मैथिली भाषा सहित्य मे बाबू भोलालालदासक स्थान सम्भवतः अद्यापि उचित रूप सँ निर्धारित नहि भऽ सकल अछि। एकर कारण अछि जे एहि मनीषीक कृतित्वक सम्यक् मूल्यांकन नहि कयल जा सकल अछि। मूल्यांकन नहि होयबाक पाछाँ सेहो कारण विद्यमान अछि। कोनो लेखक वा कवि कोनो विधा विशेष मे प्रचुर साहित्य रचना द्वारा अपन स्थान निर्धारित कराय लैत छथि। सर्जनात्मक ओ समीक्षात्मक साहित्य दिस लोकक ध्यान सहजहि चल जाइत छैक। पाठक ओ समीक्षक वर्ग द्वारा ओहि रचना सभक अवलोकन करबाक प्रक्रिया मे, साहित्य कारक उचित स्थान स्वतः निर्धारित भऽ जाइत अछि। किन्तु बाबू भोलालालदास रचनात्मक साहित्य सृष्टिक दिशा मे एकाग्र नहि भऽ सकलाह। लेखनक दिशा विकीर्ण रहलनि। ओ अपन समस्त शक्ति मैथिलीक अधिकार प्राप्ति संगठन, साहित्यिक प्रगति एवं मैथिलीक रक्षा मे लगा देलनि, जाहि प्रसादें मैथिली आइ उन्नत भारतीय भाषा साहित्यक श्रेणी मे परिगणित होयबाक सामर्थ्य प्राप्त कऽ सकल अछि। ई हिनकहि आन्दोलनक प्रत्यक्ष वा परोक्ष परिणाम थिक जे सम्प्रति मैथिली प्राथमिक कक्षा सँ उच्च कक्षा धरि मान्यता प्राप्तकय, विश्व संस्था पी० ई० एन०, ओरियण्टल कान्फ्रेन्स, बिहार लोक सेवा आयोग तथा आकाशवाणी स्तर केँ पार करैत साहित्य अकादमीक भाषा पंक्ति तक आसीन भऽ सकल अछि तथा संविधानक अष्टम अनुसूची मे स्थान पयबाक दाबी कऽ रहल अछि। मैथिलीक अभ्युन्नतिक दिशा मे निरन्तर चिन्तनशील ओ क्रियाशील रहि जे शाश्वत अवदान हुनक भेल से थिक मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना, पटना विश्व विद्यालय तथा बिहार संस्कृत एसोसियेशनक पाठ्यक्रम मे मैथिलीक प्रवेश, नवीन प्रतिभावान लेखकक अन्वेषण, प्रोत्साहन, नवीन साहित्य

निर्माणक प्रक्रिया मे पथ-प्रदर्शन, समाज मे मैथिलीक प्रति जागरूकता उत्पन्न करब तथा मैथिली सँ सम्बद्ध मोर्चा पर सजग योद्धा जकाँ निरन्तर संघर्ष—ई सब भोलाबाबूक सेवाक विविध आयाम रहलनि। ओ तें एक साहित्यकारक रूप मे ई अपना कें स्थापित नहि कऽ सकलाह। अतः बाबू भोलालाल दासक मैथिलीक प्रति कयल गेल समस्त कार्यक मूल्यांकन नितान्त अपेक्षित। मूलतः भोला बाबू एकटा सशक्त गद्यकार ओ सफल पत्रकार छलाह।

प्रस्तुत पुस्तक मे पाँच गोट अध्याय राखल गेल अछि। प्रथम अध्याय कें विषय-प्रवेश कहल जा सकैत अछि। एहि मे बाबू भोलालालदासक मैथिली क्षेत्र मे पदार्पण सँ पूर्वक परिस्थिति पर विचार कयल गेल अछि। कारण, यैह परिस्थिति हुनका मैथिलीक हेतु कार्यशील होयबा मे पृष्ठभूमिक काज कयलक।

दोसर अध्याय मे भोलालाल दासक जीवन वृत्त प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहि मे प्रकाशित तथ्यक अतिरिक्त अनेक स्रोत सँ अनभिज्ञात सामग्रीक संचयन कय आलेखित कयल गेल अछि।

भोला बाबूक सबसँ महत्वपूर्ण अवदान थिकनि मैथिली आन्दोलन कें एकटा अभिनव दिशा प्रदान करब। आन्दोलन क्षेत्र मे हुनक क्रिया-कलाप, सफलता-विफलताक आकलन तेसर अध्याय मे भेल अछि।

चतुर्थ अध्यायक विवेच्य विषय थिक भोलालालदासक लेखकीय अवदान। एकटा लेखकक रूप मे जे किछु मैथिली साहित्य कें दऽ सकलाह ताहि पर सम्यक् विचार एहि अध्याय मे कयल गेल अछि।

बाबू भोलालालदास एकटा सफल पत्रकार छलाह। मैथिली पत्र-कारिताक क्षेत्र मे हुनक विशिष्ट अवदान कें बिसरल नहि जा सकैछ। अतः पंचम अध्याय मे मिथिला ओ भारती नामक मासिक पत्रक समीक्षा कय हुनक पत्रकारिता विषयक वैशिष्ट्य पर विचार करैत उपसंहार प्रस्तुत कऽ देल गेल अछि। उपसंहारक हेतु स्वतन्त्र अध्याय अपेक्षित नहि बुझल गेल अछि।

एतय हम कहि देवय चाहैत छी जे ई पुस्तक हमर एम० ए० परीक्षाक हेतु प्रस्तुत मतबन्धक संशोधित एवं परिवर्धित रूप थिक, तें पुस्तकीय स्वरूप मे पैध-पैध उद्धरण, सन्दर्भ-निर्देश ओ कतिपय पद्य भाग जे सामान्य पाठक कें भार स्वरूप लगितनि तकरा हटाय देल गेल अछि। विवरण ओ प्रतिपादन शैली मे सेहो अनेक ठाम परिवर्तन कय गवेषणात्मक शैलीक स्थान मे निवन्धात्मक शैलीक उपयोग कयल गेल अछि। जे किछु कहल गेल अछि से प्रमाण पुरस्सर, तथापि जाहिठाम अत्यन्त आवश्यक बूझि पड़ल ताहि ठाम सन्दर्भ निर्देशादिक सर्वथा परित्याग नहि कयल गेल अछि। सामान्य पाठकक सौकर्य कें ध्यान मे राखि संकलित सूचना सामग्रीक उल्लेख यथाविधि पाद-टिप्पणी मे कऽ देल गेल अछि। विशेष ई जे विषय कें स्पष्ट करवाक दृष्टियें कतिपय ठाम कथ्य कें दोहरयबाक आवश्यकता सेहो परि गेल अछि।

कृतज्ञता ज्ञापन करब हमर कर्त्तव्य थिक ल० ना० मि० विश्व विद्यालयक अध्यक्ष डा० श्री शैलेन्द्रमोहन झाजीक प्रति, जे एम० ए० परीक्षा मे मतबन्ध लेखन हेतु कृपापूर्वक अनुमति प्रदान करबे कयलनि संगहि ओकर प्रतिपादन मे मूल्यवान निदेश दैत रहलाह, जकर फल-स्वरूप आइ ई पुस्तकाकार रूप ग्रहण कऽ सकल अछि। डा० श्री रामदेव झा, उपाचार्य, मैथिली विभाग ल० ना० मि० विश्व विद्यालय स्नेह-पूर्वक शोध-प्रक्रियाक तँ प्रशिक्षण दैते रहलाह संगहि समस्त प्रबन्ध कें परीक्षकक दृष्टि सँ अवलोकन कय, अनावश्यक अंशक परिहार तथा अपेक्षित सूचना विवेचनाक समाहार करबाक निर्देश निरन्तर दैत रहलाह। अन्य गुरुजन डा० श्री अमरनाथ झा (मि० वि०) डा० श्री लक्ष्मण चौधरी 'ललित' (मि० वि०), डा० श्रीमती नीता झा (मि० वि०) तथा डा० श्रीमती इन्दिरा झा (प० वि०) सँ समय समय पर निर्देशन भेटैत रहल अछि। एहि गुरुजन लोकनीक प्रति शाब्दिक आभार प्रदर्शन धृष्टता मात्र सिद्ध होयत सेह नहि अपितु

एहि विषयक प्रति हुनका लोकनिक सचित स्नेह ओ ममत्वक मूल्य कें कम करब होयत।

आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' मैथिली आन्दोलन एवं बाबू भोला लालदास सँ साहित्यकार ओ सम्पादक उभय रूप मे सम्बद्ध सम्पृक्त रहलाह। अनुसन्धान मे, प्रबन्ध लेखन मे तथा प्रस्तुत ग्रन्थक रूप रचना मे ऋषितुल्य श्रद्धेय गुरुवर श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' जी द्वारा बहुतो तथ्यक अभिनव सूचना, पूर्वज्ञात तथ्यक सत्यापन हुनक अनुभव ओ संस्मरण सँ संभव भऽ सकल। एही संग बहुतो उपयोगी तथ्य ओ निर्देशन प्राप्त भेल। किन्तु सबसँ पैघ बात ई जे हुनक आशीर्वाद हमरा हृदय कें सतत् बलित बनौने रहल। अतः हुनका प्रति अकिंचन शब्द द्वारा कृतज्ञता प्रकाश करबाक चेष्टा हुनक आशीर्वाद कें सीमाबद्ध करब होयत। एहि ठाम भोलाबाबूक धर्मपत्नी श्रीमती योगमाया देवीक सहयोग उल्लेखनीय अछि। ओ भोलाबाबूक नितान्त वैयक्तिक एवं अन्तरंग सूचना दऽ कऽ कृतार्थ कयलनि। हुनक संस्मरणात्मक सूचना ओ अन्य कागत-पत्रक आधार पर भोलाबाबूक व्यक्तित्वक अनभिज्ञात पक्षक उद्घाटन ओ मूल्यांकन मे सौकर्य भऽ सकल। भोलाबाबूक एकमात्र पुत्र श्री जगदीश प्रसाद कर्ण जी सेहो कतोक अप्रकाशित सामग्री उपलब्ध कराय एहि पुस्तक कें महत्वपूर्ण बनयबा मे सहायता देलनि। एहि दूनू माइ-पूतक प्रति हम आभारी छियनि।

पोथी कें वर्त्तमान रूप मे प्रकाशित करबाक समस्त श्रेय छनि कर्णगोष्ठी कलकत्ताक अध्यक्ष श्री राजनन्दनलालदास जी कें, जे बेर-बेर एहि पोथीक सम्बन्ध मे पत्र द्वारा जिज्ञासा करैत रहलाह। प्रस्तुत ग्रन्थक प्रकाशनक प्रसंग हुनक उत्साह, हुनक अभिरुचि एकर परिमार्जन ओ प्रकाशन मे नियामक सिद्ध भेल अछि। अतः हमरा प्रति संचित हुनक स्नेहक हेतु हम हृदय सँ कृतज्ञ छियनि।

अन्त मे परम पूज्य पिता (प० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर') जे भोलाबाबूक प्रति अनन्य श्रद्धा रखैत छथि आ मतबन्धक हेतु हिनके पर

काज करबाक परामर्श देलनि, हुनक निरन्तर प्रदत्त उत्साह, अनुपलभ्य सामग्रीक प्राप्तिक हेतु पथ-निर्देश, भाषा प्रयोग ओ वाक्य विन्यासक प्रति सचेत रहबाक उपदेश कें बिसरब असंभव। हुनक आशीर्वाद तँ हमरा डेग-डेग पर भेटैत रहैत अछि, हमरा रोम-रोम मे वैह व्याप्त छथि। हम तँ हुनकहि गढ़ल मूर्ति छियनि, तँ हमरा प्रति संचित ममत्वक अंकन शब्दें नहि होअय।

हँऽ कृतज्ञ एवं आभारी छियनि ओहि समस्त वरिष्ठ, कनिष्ठ समकक्ष हितैषी, बैंक सहकर्मी ओ सुहृद्‌जनक जे हमर एहि शोध कार्य ओ पुनः तकरा पुस्तकीय स्वरूप प्रदान करबा मे कोनहु रुपमे सहयोगी ओ उपकारक भेलाह।

एहि पुस्तक सं भोला बाबूक सम्बन्ध मे अध्येता-पाठक कें किछुओ सन्तोष भेटतनि तँ लेखक अपन परिश्रम कें सार्थक बुझताह।

कतबो साकांक्ष रहने ग्रन्थ मे यत्र-तत्र त्रुटि रहि गेल होअय ताहि हेतु क्षमा-याचने मात्र अवलम्ब।

बसन्त पंचमी, १९९१ —श्री शम्भुनाथ मिश्र

मिश्र टोला, दरभंगा

विषय क्रम



—०—

प्रथम अध्याय

बाबू भोलालाल दासक पदार्पण सँ पूर्व मैथिली क्षेत्रक स्थिति

बाबू भोलालाल दास उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम दशक मे जन्म लेने छलाह। उनैसम शताब्दीक अन्तिम चरण मैथिली भाषा साहित्य मे नवीन मोड़ अयबाक समय मानल जाइछ जखन महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह दरभंगाक राजगद्दी पर आसीन भेलाह। भारतवर्षक अन्यान्य प्रान्त मे तावत धरि आधुनिक शिक्षा अपन जड़ि पकड़ि लेने छल। मिथिला मे वर्चस्विता छल मैथिल ब्राह्मणक। शिक्षाक प्रचार मुख्यतः ब्राह्मण ओ करण कायस्थ मध्य छल। ब्राह्मण लोकनि जतय न्याय, व्याकरण, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, वेदान्त, मीमांसा आदि शास्त्रक अध्ययन करैत छलाह करण कायस्थ लोकनि राज्यकार्य संचालन मे विशेष सहभागिता रहलाक कारणेँ देशी हिसाब, भूगोल, राजकीय व्यवस्था सँ सम्बद्ध विषयक अतिरिक्त पुराण आदिक विशेष अध्ययन करैत छलाह। देशी भाषा साहित्य तँ पारस्परिक सम्पर्क रखबाक ओ मनोरंजन मात्रक हेतु बूझल मानल जाइत छल। ई अध्ययन अध्यापनक विषय भऽ सकैत अछि तकर कल्पनो नहि कयल गेल छल। भाषा साहित्य केँ के कहय, संस्कृतो साहित्य शुरु सँ पढ़बाक विषय नहि मानल जाइत छल। व्याकरण, कोष, न्याय आदि पढ़ि लेलाक बाद साहित्य स्वाध्याय सँ हृदयंगम करबाक विषय मानल जाइत छल। साहित्य-सर्जनाक दिस जनिक प्रवृति होइत छलनि से पिंगल शास्त्र (छन्दःशास्त्र) ओ अलंकार शास्त्रक अनुशीलन करैत छलाह।

देशी भाषा साहित्य दिस जनसामान्यक ध्यान केँ मोड़लक आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा अर्थात् अङ्गरेजी शिक्षा। यद्यपि अङ्गरेज लोकनिक अङ्गरेजी शिक्षा-व्यवस्थाक मुख्य उद्देश्य छलैक भारतवासी केँ पाश्चात्य शिक्षाक माध्यम सँ आंग्ल सभ्यता ओ संस्कृतिक रंग मे रङ्गि कऽ वर्तमान शासकक अन्ध भक्त बनायब, हिन्दुस्तानी साहेब बनायब, संगहि अपन प्राचीन परम्पराक प्रति उदासीनता तथा उपेक्षाक भाव जगायब। यदि तत्वतः विचारि कऽ देखल जाय तँ एहिमे विदेशी लोकनि कें पूर्ण सफलता प्राप्त भेलनि। किन्तु एहि शिक्षा प्रणाली मे मातृभाषा केँ शिक्षाक माध्यम रुप मे स्थान प्राप्त होयबाक कारणेँ आधुनिक भारतीय आर्यभाषा सभक बड़ पैघ उपकार भेलैक। एहिमे सब सँ अग्रणी रहल बंगाल। मिथिलो ताहि समय बंगालेक अंग छल, किन्तु मिथिलाक शिरोभूषण मिथिलेश ताहि समय मे अपन राजकाज मे प्रयुक्त होइत मैथिली केँ निष्कासित कऽ ताहि स्थान पर बलात् हिन्दी भाषा ओ देवाक्षर केँ थोपि देलनि। हिन्दीक की स्थिति छल ताहि प्रसंग प्रो० श्री जयदेव मिश्र, साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित 'चन्दा झा' नामक पुस्तक मे १८६९ ई० मे तिरहुत डिवीजनक स्कूल निरीक्षकक कथन उल्लेख करैत लिखने छथि—

"अधिकांश शिक्षक, जनिका हिन्दी-शिक्षक कहल जाइत छनि, ठीक सँ हिन्दीक पहिल पोथी वर्णमाला सेहो नहि जनैत छथि। अधिकांश उर्दू शिक्षक इतिहास, भूगोल, रेखागणित, बीजगणित, त्रिकोणमिति, वर्गमूल, मूल अर्थ ओ गौण अर्थ, पद निरूपण आदि शब्द सुनि आश्चर्य चकित होइत छथि, कारण जे ओ अपन जीवन मे कहियो एहि शब्द सभ केँ नहि सुनने छथि।"

तथापि महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह मैथिलीक स्थान पर हिन्दी केँ प्रतिष्ठित करबाक हेतु कतेक व्यग्र छलाह सेहो उपर्युक्त ग्रन्थ मे उधृत अंश सँ स्पष्ट होइत अछि। १८८० ई० क जुलाइ मास मे महाराज

लक्ष्मीश्वर सिंह द्वारा निर्गत एक आदेश केँ उधृत करैत प्रो० श्री जयदेव मिश्र ताहि समय समाज मे हिन्दीक प्रति की धारणा छलैक ताहि प्रसंग लिखैत छथि—

"अनिच्छुक समाजक लेल हिन्दी प्रायः विदेशी बोली छल। ई निश्चित छल जे हिन्दी केँ लोक कंठो मे ओकर मनोभाव वा ओकर शैक्षणिक आवश्यकता पर बिनु विचार कयने ठूसल जा रहल छल। मुदा जकरा मध्यमवर्ग कहबैक, जकरा उच्च वर्ग सँ, जकर प्रतिनिधित्व महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह करैत छलाह, फराक कऽ चीन्हल जा सकैत छल, तकर ओहि अधिकारी वर्ग पर कोनो प्रभाव नहि छल जे वास्तविक मातृभाषा मैथिलीक उपेक्षा कऽ स्कूल सभ मे हिन्दी पढ़यबाक लेल आगाँ बढ़लाह। कारण जे, ओ बुझैत छलाह जे एहिठामक लोक खिन्न आ क्रुद्ध रहितहु ताहि रूपेँ असंगठित अछि जे एहि पर आपत्ति करबामे निष्क्रिय रहत। यदि समाजक सांस्कृतिक सम्भ्रान्त जन एहि दिस सचेष्ट रहितथिजे पाठ्य चर्या मे मैथिली अपन उचित स्थान पाबि लितय तँ स्थिति किछु दोसर तरहक रहैत।"

एक तँ तत्कालीन समाज पूर्ण रुप सँ उदासीन छल आ ताहिपर सँ समाजक सर्वप्रभुता सम्पन्न मिथिलेशक निम्नांकित आदेश—

"हम बहुत पहिनहि अपन कार्यालय मे हिन्दी लिपि तथा भाषाक व्यवहार करबाक आदेश दऽ चुकल छी। मुदा ई तावत धरि नहि भऽ सकैछ यावत धरि हमर भाषा जननिहार अमला लोकनि नीक जकाँ लिपि केँ सीख नहि लैत छथि जाहि सँ ओ धाराप्रवाह पढ़ि लिखि सकथि। मुदा हमरा ई खेद पूर्वक कहय पड़ैत अछि जे हमर कोनो अमला ई नहि जनैत छथि जे ई कोना कैल जाय।

अतः हमरा ओहि तरहक आदेश देवाक हेतु बाध्य होमय पड़ल अछि। ओ ई जे शीघ्र सभ अमला हिन्दी लिपि ओ भाषा सिखबाक हेतु लागि

पड़थु। एकरा सिखबाक लेल हम हुनका सभकें आरो तीन मासक समय दैत छिऐन्ह। नभम्बर धरि हिनका लोकनि कें एकरा नीक जकाँ सीखि लेबाक हैतन्हि जाहि सँ हमरा पुरान कर्मचारी कें पेंसन दय हटयबाक, छँटनी करबाक दुखद प्रयोजन नहि पड़य।''

निश्चित रुपें कर्मचारी वर्ग मे आतंक उत्पन्न कऽ देने होयतनि। एहना स्थिति मे अवधी, ब्रजभाषा आदि जकाँ मैथिली मरि नहि गेल तँ तकरे एक सुखद आश्चर्य मानबाक चाही। एकर जड़ि दूबि जकाँ समाज मे तेना पसरल छलैक जे मृतप्राय होइतो छोटो सन अछार भेला पर ओ पनुघि जाइत अछि। से अछार बरसौनिहार भेलाह कवीश्वर चन्दा झा। ओना मानल जाइत अछि जे डॉ० ग्रिअर्शन कवीश्वरक प्रेरक भेलथिन। परन्तु प्रेरणा लेनिहारो तँ कवीश्वरे भेलाह। तें यदि ई संयोग नहि भेल रहितैक तँ निश्चित रूपें मैथिलीक विकासक गति ओतहि अवरूद्ध भऽ गेल रहितैक। ओहि समय मे हर्षनाथ झा, भानुनाथ झा, प्रसिद्ध भाना झा, लाल दास, कविवर जीवन झा प्रभृति प्रौढ़ साहित्यकार लोकनि रहथि, किन्तु मैथिलीक उपेक्षा सँ हुनका लोकनि कें ततेक बेसी कचोट नहि भेलनि जतेक चन्दा झा कें। हँ ईहो अनुमान कयल जा सकैत अछि जे जाहि हिन्दीक प्रति महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह कें एहन दुराग्रह छलनि से हिन्दी भविष्य मे चलि कऽ हमरा लोकनिक मातृभाषा क विकास मे एतेक पैघ बाधक तत्व बनि उभरत सेहो अनुमान चन्दा झा कें नहि रहल होनि आने मैथिली भाषा कें सर्वांगपूर्ण साहित्यिक भाषाक रुप मे विकसित करबाक कोनो परिकल्पना। हिन्दी भविष्य मे सिरमाक साँप बनि जायत यदि से आशंका कनेको रहितनि तँ पुरुष परीक्षा मैथिली अनुवाद जकरा मैथिली गद्यक न्यों बूझल जाइत अछि, भूमिका हिन्दी मे तथा स्थान-स्थान पर टिप्पणी सेहो हिन्दी मे लिखलनि से कथमपि नहि लिखितथि। हँ एकटा आरो अनुमान करबाक आधार अछि जे चन्दा झा महाराज

लक्ष्मीश्वर सिंहक आश्रित छलाह आ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह केँ हिन्दीक प्रति एतेक दुराग्रह छलनि। तेँ हुनका प्रसन्न करबाक बुद्धिसँ सेहो हिन्दी दिस रूचि देखौने होथि। हिनक चन्द्र पद्यावली मे सेहो अनेक पद हिन्दी मे रचित उपलब्ध अछि। जखन चन्दा झा सदृश दूरदृष्टि रखनिहार व्यक्ति केँ एकर भान नहि भेलनि तखन भाना झा, हर्षनाथ झा प्रभृति केँ कोना होइतनि। ओ लोकनि तँ सहजहिँ विद्यापतिक समय सँ चल अबैत प्राचीन परिपाटीक अनुसार किछु पद आदिक रचना कय आत्म तृष्टि प्राप्त कयनिहार छलाह।

जाहि हिन्दी केँ पड़िछि कऽ मिथिलांचल मे आनि प्रतिष्ठापित कयल गेल ताही हिन्दीक तथाकथित समर्थक लोकनि मैथिली केँ अपन घड़ारी पर्यन्त सँ बेदखल करबाक हेतु फाँड़ बान्हि कऽ भिड़ि गेलाह। १८८० ई० मे मैथिली कतेक बेदखल भेल जा रहल छल से तँ उपर्युक्त उद्धरण सँ स्पष्ट भऽ चुकल अछि आ मात्र ३० वर्षक बाद आरा सँ प्रकाशित 'भारत मित्र' नामक पत्रिका मे मिथिला मिहिरक एहि हेतु कटु अलोचना कयल गेलैक जे एहि मे मैथिलीओक हेतु किछु पृष्ठ सुरक्षित राखल गेल छलैक। ओहि समय 'भारत मित्र' नामक पत्र मे मैथिलीक विरुद्ध जे विचार व्यक्त कयल गेल छल तकर किछु अंश 'मिथिला मोद' मे उधृत कयल गेल छल। 'भारत मित्र' लिखने छलैक —"अबकी बार मैथिल कान्फरेन्स में यह प्रस्ताव भी स्वीकृत हुआ है कि यथासाध्य मैथिली भाषा मे पुस्तकें लिखकर मैथिली मे विद्या प्रचार किया जाय। मिथिला मिहिर के चौथे प्रकाश का अर्धांश मैथिली भाषा से भरा हुआ है। ऐसी दशा मे कहना अनुचित नहीं है कि मैथिल लोग पीछे से अपने अन्यान्य भाइयों को खींच रहे हैं। 'मिथिला मिहिर' में जैसी मैथिली लिखी जाती है, इससे सभी विचारवान समझ सकते हैं कि इसके द्वारा विद्या प्रचार नहीं हो सकता। क्योंकि क्रियापद और विभक्तियों के अतिरिक्त यह हिन्दी ही है। इससे मैथिली मे विद्या

प्रचार का स्वप्न देखना शेष चिल्लियों के सिवा दूसरों को नही सोहाता।"[1]

एमहर मैथिली भाषो क्षेत्र मे हिन्दीक प्रति कतेक आदर-भाव छलैक से एही सँ बूझल जा सकैछ जे मैथिलीक प्रथम पत्र 'मैथिल हित साधन' दोसर 'मिथिला मिहिर' सबमे हिन्दीक समावेस होइत रहल आ ओमहर हिन्दीक तथाकथित समर्थक लोकनि कें मैथिलीक नाम सूनि परभाच्छय उठैत छलनि। १९१४ ई० मे हिन्दी साहित्य सम्मेलनक वार्षिक अधिवेशन भेल छलैक ताहि प्रसंग पं० गिरीन्द्र मोहन मिश्र अपन संस्मरण ग्रन्थ 'किछु देखल किछु सूनल' मे वेश विस्तार सँ विवरण देने छथि। ओहि विवरण सँ अवगत करयबाक हेतु उधृत करब उपयुक्त बुझना जाइछ कारण ई एक प्रत्यक्षदर्शीक कलम सँ निःसृत भेल अछि। ओ लिखने छथि :—

"१९१४ ई० मे हिन्दी साहित्य सम्मेलनक वार्षिक अधिवेशन भागलपुर मे भेल छल। एहि सम्मेलनक स्वागत समितिक अध्यक्ष छलाह बनैली राज्याधीश राजा कीर्त्यानन्द सिंह बहादुर। सम्मेलनक अध्यक्ष छलाह लाला मुन्शीराम जे पछाति संन्यास लेलाक बाद श्रद्धानन्द स्वामीक नाम सँ प्रसिद्ध भेलाह आर जनिक हत्या एक अविवेकी मुसलमान द्वारा भेल छल। लाला मुन्शीराम अपना समय मे हिन्दीक प्रखर विद्वान मानल जाइत छलाह। एहि सम्मेलन मे स्वभावतः विहार प्रान्तक भिन्न-भिन्न भाग सँ अनेक हिन्दी प्रेमी व्यक्ति प्रतिनिधि रुप मे उपस्थित भेल रहथि। हमरालोकनिक समकालीन छात्र वर्गहुक अनेक हिन्दी प्रेमी व्यक्ति एहि सम्मेलन मे उपस्थित रहथि; यथा बाबू राजेन्द्र प्रसाद, बाबू जगधरनारायण इत्यादि। सम्मेलनक नियमानुसार प्रतिवर्ष सम्मेलनक अधिवेशनक समय सँ किछु दिन पूर्वहि भिन्न-भिन्न विषयक एक

1—मिथिला मोद उद्गार ५६, पृ० ११-१२

सूची प्रकाशित कयल जाइत छलैक। ई लेख सभ सम्मेलनक अधिवेशन समय सँ पूर्वहि एक निश्चित अवधिक भीतर सम्मेलनक मन्त्रीक ओहि-ठाम पठाओल जाइत छलनि आओर एहि तरहेँ आयल लेख सभमे किछु विशिष्ट चुनल लेख, जे निर्धारित साहित्यिक लोकनि सँ स्वीकृत कयल जाइत छल, सम्मेलन द्वारा एक पुस्तक रूप मे प्रकाशित कयल जाइत छल।

भागलपुर हिन्दी साहित्य सम्मेलनक अधिवेशनक हेतु जे विषय सभ निर्धारित कयल गेल छल ताहिमे एक विषय छल 'मैथिली और हिन्दी,। एहि विषय पर हम एक लेख लिखलहुँ आओर यथा नियम सम्मेलनक मंत्री केँ पठाए देलिऐन्हि। ई लेख सम्मेलनक समीक्षक लोकनि द्वारा स्वीकृत कयल गेल छल आओर सम्मेलन द्वारा प्रकाशित होयबाक कारणेँ किछु अंश प्रकाशन मे छोड़ि देल गेल छल। हिन्दी साहित्य सम्मेलन विहार प्रान्त मे भेल छल आओर विहार प्रान्त मे प्रचलित प्रान्तीय भाषा मे मैथिली भाषा एक मुख्य भाषा थिक, प्रायः तएँ हेतु एहि प्रकारक विषय पर लेख लिखबाक हेतु सम्मेलन समितिक द्वारा निर्धारित कयल गेल छल।

एहि सम्मेलनक किछुए दिन पूर्व बिहार प्रान्तक प्रारंभिक पाठशाला मे शिक्षाक माध्यमक विषय मे किछु विवाद उपस्थित भय गेल छल। मैथिली भाषा- भाषी लोकनिक दिश सँ एक प्रस्ताव उपस्थित कयल गेल छल आओर समाचार पत्र मे प्रकाशित भय गेल छल जे मिथिला मे प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मैथिली होयबाक चाही, हिन्दी नहि। बिहार प्रान्तक अन्य भागक रहनिहार लोकनि केँ ई ग्राह्य नहि बूझि पड़ैत छलनि। हुनका लोकनिक मातृभाषा भोजपुरी वा मगही होईतहु प्राथमिक शिक्षाक माध्यम हिन्दी रहब समुचित बुझना जाइत छलैन्हि। मैथिली भाषा-भाषी लोकनिक मध्य एहि विषय पर मतभेद छल। विशेषतया भागलपुर तथा मुंगेर दिशुक लोक केँ मैथिलीक अपेक्षा

हिन्दीक माध्यम रहब समुचित आओर सभ प्रकारेँ लाभप्रद बुझका जाइत छलैन्हि। हिनका लोकनिक मतेँ बिहार प्रान्त मे प्रचलित भिन्न-भिन्न भाषा हिन्दियहिक रुपान्तर थिक।

ऊपर कथित मैथिली भाषाक सम्बन्ध मे प्रकाशित प्रस्तावक विरोध मे एक प्रस्ताव सम्मेलन मे उपस्थित करब सम्मेलन मे आएल कतेको प्रतिनिधि केँ समुचित बूझि पड़लैन्हि तएँ सम्मेलनक अधिवेशनक पहिल दिनुक राति मे विषय निर्वाचन समितिक अधिवेशन मे एहि प्रकारक एक प्रस्ताव उपस्थित कयल गेल जे विहार प्रान्तक मातृभाषा हिन्दी थिक आओर तएँ एहि प्रान्तक प्राथमिक शिक्षाक माध्यम हिन्दी होयबाक चाही। जाहि समय मे ई प्रस्ताव विषय निर्वाचन समिति मे उपस्थित कयल गेल छल ताहि समय मे हम संयोगवशात् नहि छलहुँ। हम किछु काल पहिनहि निर्वाचन समिति सँ चल आएल रहि। एहि विषयक प्रस्तावक विषय मे हमरा कोनो प्रकारक सूचना नहि छल। हमरा अनुपस्थितियहि मे एहि प्रस्तावक पोषक लोकनि सम्मेलनक खुलल अधिवेशन मे प्रस्ताव केँ प्रस्तुत करबा लेल हमरहि नाम प्रस्तावकर्त्ताक रुपमे राखि देल।

दोसर दिन प्रातः काल खरहराक बाबू गोपालजी चौधरी तथा बेतियाक पण्डित त्रिलोचन झा हमरा सँ भेट करबाक लेल हमर वासस्थान पर अएलाह। एहि प्रकारक प्रस्ताव विषय निर्वाचन समितिक द्वारा स्वीकृत भेल अछि से हिनकहि लोकनि सँ हमरा ज्ञात भेल। ई लोकनि हमरा सँ इएह आग्रह करबा लेल आएल रहथि जे हम एहि प्रस्ताव केँ सम्मेलनक अधिवेशन मे प्रस्तुत नहि करी। यद्यपि राजेन्द्र बाबू केँ जखन ई बात ज्ञात भेलनि जे प्रस्ताव हमरा द्वारा सम्मेलनक अधिवेशन मे प्रस्तुत नहि कयल जाय, एकर आग्रह हमरा कयल जाइत अछि, तखन ओ स्वयं एहि प्रस्ताव केँ सम्मेलन मे प्रस्तुत करबाक हेतु तैयार भेलाह किन्तु एहि परस्थिति मे हम प्रस्ताव केँ सम्मेलनमे प्रस्तुत करबा सँ विरत

होयब उचित नहि बूझल आओर यथासमय अधिवेशन मे प्रस्तावक उपस्थापन कयला पर सर्वसम्मति सँ स्वीकृत भेल। एकर विरोध मे सम्मेलन मे एकोटा व्यक्ति देखल नहि गेलाह। राजा कीर्त्यानन्दसिंह बहादुर स्वागत समितिक अध्यक्ष रहितहु ओहि दिन अनुपस्थित छलाह। हमरा लोकनि केँ ओहि समय मे इएह खबरि भेल जे राजा बहादुर, जे हिन्दीक अनुरागी छलाहे संगहि संग मैथिली भाषी रहबाक कारणेँ किछु असमंजस मे पड़ि गेलाह आओर तएँ ओहि दिन सम्मेलन मे उपस्थित नहि भेलाह।

'हिन्दी आओर मैथिली' शीर्षक विषय पर लेख लिखबा लेल सम्मेलनक स्थायी समिति सँ निर्धारित भेल छल आओर ओहि पर हम जे लेख लिखने रही ताहिमे एहि पक्षक प्रतिपादन करबाक चेष्टा कयने छलहुँ जे मैथिली हिन्दी भाषाक एक अंगमात्र थिक। सम्मेलनक अधिवेशनक समाप्तिक बाद उपर्युक्त स्वीकृत प्रस्तावक दरिभंगाक 'मिथिला मिहिर' साप्ताहिक पत्र मे सम्पादकीय लेख मे समालोचना प्रकाशित भेल। ओहि समय मे 'मिथिला मिहिर' क सम्पादक छलाह पं० योगानन्द कुमर। हुनक समालोचनात्मक लेखक खण्डन मे हमहुँ पटनाक 'बिहार बन्धु, नामक साप्ताहिक पत्र मे लेख प्रकाशित कराओल। एहि विषय पर किछु दिन धरि मिथिला मिहिरक सम्पादक तथा हमरा बीच लेख द्वारा विवाद चलैत रहल। एहि लेख मे हम मैथिली केँ हिन्दीक अंग बुझितहुँ भाषा विज्ञानक आधार पर ई लिखि देने छलिऐक जे मैथिली, बंगला तथा मगहीक उत्पत्ति मागधी प्राकृत सँ छैक अर्थात् मागधी प्राकृतक रूपान्तरे देस भेदेँ मैथिली, मगही तथा बंगला थिक।

किछु दिनुक बाद दरिभंगा मे हमरा सखबाड़क मुन्शी रघुनन्दन दास सँ भेंट भेल। मुन्शी रघुनन्दन दास मैथिली भाषाक एक विज्ञ लेखक छलाह। ओ हमरा सँ बड़ नम्रता तथा संगहि संग दृढ़ता सँ ई प्रश्न कएलैन्हि जे कोन युक्ति सँ मैथिली भाषा केँ स्वतंत्र भाषा नहि कहि हिन्दीक अंग मात्र बुझैत छी। किछु काल धरि हम एहि विषय मे

युक्ति कहलिऐन्हि तखन ओ जे कहलैन्हि से मार्मिक छल। ओ कहलैन्हि जे अपनहि अहाँ मैथिली, मगही आओर बंगला कें जौं मागधी अथवा अर्धमागधीक रूपान्तर बुझैत छी तँ कोन युक्ति सँ बंगला भाषा हिन्दी सँ एक स्वतन्त्र भाषा भेल आओर मैथिली नहि? मुन्शीजीक ई प्रश्न हमरा निरुत्तर कऽ देलक। वस्तुतः अपन प्रदेशक सटले पछवारि कातक प्रान्तमे प्रचलित हिन्दी सँ साक्षात् सम्पर्क रहलाक कारणें किछु हिन्दीक छाया मैथिली पर पड़ैत छल से अस्वभाविक नहि। ओकर संयोग पूर्ववर्ती बंगला भाषा कें नहि, तएँ बंग भाषाक स्वातन्त्र्य किछु स्पष्ट बुझना जाइत छैक, किन्तु मूलतः जे स्थिति बंगलाभाषाक अछि ताहि सँ भिन्न मैथिलीक होयब अयुक्तिकर।" [2]

एतेक पैघ उद्धारण देबाक उद्देश्य ई जे इतिहास मे एकर चर्चा तँ अछि किन्तु एतेक स्पष्टता सँ नहि कहल गेल अछि जे एक तऽ मैथिली-भाषीक स्वागताध्यक्ष होइत, दोसर मैथिली भाषी द्वारा ई प्रस्ताव उपस्थापित कराय मिथिलेक क्षेत्र मे मैथिली विरोधी प्रस्ताव स्वीकृत कयल गेल छल। दोसर उद्देश्य ई जे प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मैथिली भाषी क्षेत्रमे मातृभाषा मैथिलीए हो, एहि हेतु एहि शताब्दीक आरंभे सँ चर्चा होइत आबि रहल अछि किन्तु एखनहुधरि, जखन एहि शताब्दीक नवम दशक बीति रहल अछि, ई प्रश्न जहिनाक तहिना अछि जाहि सँ मैथिलीभाषीक राजनीतिक दुर्बलता तथा जननेताक अकर्मण्यता उजागर होइत अछि। बीच भारतक मानचित्र बदलि गेल, शासन व्यवस्था बदलि गेल, भाषाक आधार पर अनेक प्रान्तक निर्माण भऽ गेल, एतेकधरि जे भाषाहिक प्रश्न कें लऽ पाकिस्तान सँ फराक भऽ स्वतंत्र बंगला देश बनि गेल किन्तु हमरा लोकनि मैथिली भाषी ओतहि पड़ल-पड़ल प्रस्ताव पारित करैत आबि रहल छी आ जाहि व्यक्तिक व्यक्तित्व वा साहित्य-सेवाक विश्लेषण एतय कयल जा रहल अछि से आजीवन एहि हेतु तिल-तिल खटैत, एहि सेहन्ता कें मोनमे पोसनहि अपन लीला समाप्त कऽ

२—किछु देखल, किछु सूनल—गिरीन्द्र मोहन मिश्र

लेलनि। तेसर उद्देश्य जे कोन एहन संयोग छलैक जे एही वर्ष अर्थात् १९१४ ई० मे ओमहर बड़गामक सरस्वती पुस्तकालयक वार्षिकोत्सवक अवसर पर बाबू भोलालाल दास मैथिलीक उत्थान हिन्दी जकाँ सोचब केँ काछुक मंथर गति सँ रेलगारी केँ पकड़बाक प्रयास जकाँ हास्यास्पद होयत से बिचार अपन हिन्दीक लेख मे व्यक्त कयने छलाह आ एमहर भागलपुर मे मैथिली कें प्राथमिक शिक्षाक माध्यम बनायब प्रस्तावक विरुद्ध पं० गिरीन्द्रमोहन मिश्र द्वारा उपस्थापित प्रस्ताव पारित भेल हिन्दी साहित्य सम्मेलनक मंच सँ, आ दूनु गोटे केँ वास्तविक तथ्यक ज्ञान प्राप्त भऽ सकलनि साहित्य रत्नाकर मुन्शी रघुनन्दनदासहिक द्वारा। एकरा अद्भुत संयोग नहि तँ आओर की कहल जा सकैछ? बाबू भोला-लालदास तकर बाद आजीवन मैथिली एक योग क्षेमिक चिन्तन करैत अपन जीवन विसर्जन कयलनि आ पं० गिरीन्द्रमोहन मिश्र एहि भोला बाबू द्वारा पालित पोषित मैथिली साहित्य परिषदक अध्यक्ष पद कें समलंकृत करैत ओहि भ्रमक हेतु अपन त्रुटि केँ स्वीकर कयलनि। ततबे नहि जीवनक अन्तिम समय मे 'किछु देखल किछु सुनल' सन ग्रन्थ मैथिली मे लिखि साहित्य अकादमी पुरस्कार सँ सम्मानित भेलाह।

बाबू भोलालालदासक व्यक्तित्व निर्माण जाहि काल खण्ड मे भऽ रहल छलनि ओ भारतवर्षक नवजागरण काल छल, समाज व्यवस्थाक परिवर्तनक काल छल, स्वदेशी भावना केँ उत्प्रेरित करबाक काल छल, मातृभूमि ओ मातृभाषाक नवोन्येषक काल छल। उनैसम शताब्दी बीतैत-बीतैत सम्पूर्ण देश मे जनजागरणक जे एक लहरि उठि गेल छल तकर पूर्व मे मुख्य केन्द्र छल बंगाल आ पश्चिम मे महाराष्ट्र। मिथिला जेँ हेतु ताहि समय बंगाल प्रान्तेक एक अंग छल तथा बंगालक सम्पर्क मिथिलाक संग बहुत पूर्वहि सँ आबि रहल छलैक, तेँ ओकर प्रभाव एहठामक जनजीवन पर पड़ब अनिवार्य छलैक, किन्तु ओ युग सामन्तवादी छल। मिथिलाक नेतृत्व मिथिलेश लोकनिक हाथ मे छलनि। मिथिलेश

छलाह महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह, ओ मातृभाषा केँ आधुनिकताक चकचोन्ही मे कोन तरहेँ दूध मे पड़ल माछी जकाँ कात कऽ फेकि देने छलाह तकर उल्लेख पूर्व हि भऽ चुकल अछि। १८९८ ई० मे हुनक आकस्मिक देहान्त भऽ गेलाक बाद महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह सिंहासनारूढ़ भेलाह। हुनक राजत्वकाल मे एहि ठामक शिक्षाक की स्थिति छलैक तकर ज्ञान निम्नांकित उद्धरण सँ होइत अछि। 'मैथिल हित साधन' मे 'दरभंगा मे दरबार' शीर्षक एक समाचारक अविकल रूप निम्नांकित अछि :—

"बहुत आनन्दक विषय थिक जे भारतसम्राट श्रीमान एडवर्डक जन्मदिवसक उपलक्ष मे मिथिलाधीश्वर श्रीमान् महाराजबहादुर दरभंगा केँ महाराजबहादुरक पदवी वंश परम्परालय सरकारक दिससँ प्रदान कयल गेल छनि। एहि शुभावसर पर दरभंगा मे बड़का समारोह भेल छल। श्रीमान् लफ्टिनेण्ट गवर्नर (छोटालाट) स्वयं उपस्थित भय सनद प्रदान कयलथिन। महाराज बहादुर एहि हर्ष मे, एहि उपाधि प्रदानक शुभ उपलक्ष मे एक लक्ष रुपैया खर्च करबाक प्रतिज्ञा कयलैन्हि अछि।

हमरालोकनि सतत एहने आशा लगौने रहैत छी जे कोनो तादृश हर्षक अवसर हो जे श्रीमान मिथिलाधीश अपन दुर्दश देश दिस दृष्टि-पात कऽ एकोबेरि एहन उदार दान केँ मिथिलाक ओ मैथिल समाजक उन्नति निमित्त व्यय करथि। परन्तु अभागी मिथिला देश अद्यापि महाराजक करुणा पात्र नहि भेल अछि। एक वर्ष नहि भेल अछि श्रीमान् प्रिंस ऑफ वेल्सक शुभागमनक स्मारक रूप एक लक्ष रुपैया कलकत्ताक 'लेडिडफरनफण्ड' आदि मे देल ओ पुनः एहि अवसर पर एक लक्ष पचास हजार रुपैया पटना नगरक नाली बनयबालय ओ पचास हजार दरभंगा नगर मे सर्वसाधारणक उपयोगी कोनो कार्य निमित्त खर्च करबाक श्रीमान् अपन इच्छा प्रकट कयने छथि।

श्रीमान् आइधरि जतबा द्रव्य अनेक अवसर पर प्रदान कयने छथि अवश्ये ओकर सदुपयोग भेल अछि ओ आबहु जे पचास हजार रुपैया राखल गेल अछि से अवश्ये कोनो सदुपयोगहिं मे खर्च होयत। परन्तु श्रीमान्क ओतय एतबा प्रार्थना अवश्य अछि जे, दरभंगा मे टाउन हाल (सार्वजनिक गृह) नाली वा हड़ाही दिग्घी ब्रिज (पुल) आदि बनायब तादृश उपयोगी नहि हयत जेहन एहिं रुपैयाक सूद द्वारा प्राथमिक शिक्षाक प्रचार सँ देशक दशा सुधारब उपयोगी हयत। मानल जे सम्पूर्ण मिथिला मे प्राथमिक शिक्षा प्रचारहु लय एतबा रुपैया पर्याप्त नहि भय सकै अछि परन्तु "अकरणान्मन्द करणं श्रेयः" एहिं न्यायानुसार जे भय सकय तकरे परम लाभ बुझबाक चाही। पुनः अवसर-अवसर पर अवशिष्ट प्रान्त मे तादृश पाठशाला स्थापित होइत रहत।

सर्वतः प्रथम मिथिला मे शिक्षाक आवश्यकता छैक। ओना तँ अनेक मैथिल शीघ्र बोध सारस्वत वा कारिकावलीक पोथी हथियबितहि छथि, परन्तु तादृश शिक्षा वर्त्तमान काल मे पर्याप्त नहिं भय सकै अछि। सुनबा मे आयल अछि जे हालहिं मे श्रीमान् दरभंगा मे एक संस्कृत पाठशाला स्थापित कयलैन्हि अछि। हमरा लोकनि श्रीमान् कें एहि देशोपकारक कार्यं निमित्त अनन्तानन्त धन्यवाद दैत छियैन्हि, परन्तु एतबा अवश्य निवेदनीय अछि जे 'मूलंनास्ति कुतः शाखाः? प्राथमिक शिक्षाक अभावहिक फल थिक जे भाष्यान्त उच्च शिक्षा पओलहु उत्तर मैथिल लोकनि बाँचब, लिखब, हिसाब जे नितान्त आवश्यक विषय थिक, ओहि मे नितान्त अपटु ओ अक्षम रहै छथि। प्रमाणक आवश्यकता नहि, विदिते अछि जे पण्डित लोकनि कें यदि अपठित पुस्तक हाथ मे देल जाइन तऽ पढ़ैकाल अनेक स्थल मे स्खलन हयतैन्ह। लिखब, पढ़ब, गणित भूगोल, इतिहास आदि सामाजिक शिक्षाक मिथिला मे नितान्त आवश्यकता अछि। परन्तु मिथिलेश मिथिला दिश दृष्टिपात नहि करथि तँ आन के ठाढ़ हो? यदि प्रभुवर दया दृष्टि सँ मिथिला कें एको

निगाहें नहि देखथि तँ आन के देखय ? श्रीमान्क साकांक्ष भेने सरकार-हुक दिश सँ सहायता भेटि सकत ओ तत्रत्य धनीक जमीन्दार लोकनि सेहो देशोन्नति मे कटिबद्ध हयताह।

असमर्थ मैथिल विद्यार्थी लोकनि कैँ छात्रवृत्ति देब, दरभंगा मे कालेज खोलब, छात्रालय बनायब, मैथिल लोकनि कैँ औद्योगिक शिक्षा देब, इत्यादि प्रधान कर्त्तव्य महाराज बहादुर कैँ सर्वदा स्मरण राखक चाही। ई सब कार्य यथावकाश यदि श्रीमाने नहि करताह तँ के करत ? तावत एहि शुभावसरक उपलक्ष मे यदि एहि द्रव्य सँ प्राथमिक शिक्षाक प्रचारार्थ मिथिलाक अनेक प्रान्त मे महाराजबहादुर प्राइमरी स्कूल (आरम्भिक पाठशाला) स्थापित कयल जाय तँ देशक असीम उपकार हो।"

उपर्यंकित उद्धरण सँ जतय ई बोध होइत अछि जे एहि शताब्दीक प्रथम दशक धरि मिथिलांचल मे प्राथमिक पाठशालाक नितान्त अभाव छल ततय ईहो ज्ञात होइत अछि जे जनजागरणक लहरि देश मे उठल छल तकर प्रभाव शिक्षित समुदाय धरि पहुँचि चुकल छल। संगहि किछु चिन्तक एहनो उत्पन्न भऽ चुकल छलाह जे मिथिलांचल मे प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मैथिली हो एहि हेतु सर्तक भऽ गेल छलाह। 'मैथिल हित साधन' मे प्रकाशित व्याकरण, भूगोल, गणित आदि पुस्तक एही प्रारंभिक तैयारीक आभास दैत अछि। ध्यातव्य जे मैथिली पत्रकारिताक श्री गणेश एही 'मैथिल हित साधन' पत्रिका सँ भेल। पं० श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' मे एहि पत्रिकाक उद्देश्य ओ नीतिक प्रसंग विचार व्यक्त करैत लिखने छथि—"एहि संस्पष्ट अछि जे 'हितसाधन' प्राथमिक शिक्षाक प्रचारक घोर पक्षपाती छल। केवल दरभंगा महाराज कैँ सुझाव दऽ अपन कर्त्तव्यक इतिश्री नहि बुझलक, एहि दिशा मे ओकर रचनात्मक कार्य देखबा मे अबैत अछि। एही दृष्टि सँ गणित, व्याकरण, भूगोल आदि सामान्य विषयक

पुस्तक लिखबा-लिखबा कऽ अपना माध्यम सँ प्रचार करैत छल। ,,[3]

ई तँ भेल शैक्षणिक स्थिति, किन्तु साहित्यसर्जनक क्रम अबाधित गति सँ चलि रहल छल। कवीश्वर चन्दा झा एक दिस गद्य रचनाक न्यों दऽ देने छलथिन तँ दोसर दिस पद्य साहित्योक धारा कें अपन परम्परागत पद्धतिएँ मोड़ि नवीन दिशा दिस उन्मुख कऽ चुकल छलाह। ओ नवीन चेतना सँ ताहि रूपें अभिभूत छलाह जे केवल मुक्तक, भजन अथवा महाकाव्य (रामायण) क रचना धरि अपना कें सीमित नहि राखि, गद्य रचना दिस एही उद्देश्य सँ प्रवृत भेल होयताह जे केवल पद्य सँ भाषाक आधार दृढ़ नहि भऽ सकैत अछि। ततवे नहि, ओ मिथिलाक अतीतक अनुसन्धान कऽ ओकरा अपन देशवासीक सम्मुख प्रस्तुत करबाक चेष्टा कयलनि जाहि सँ प्रेरित भऽ ओ लोकनि एहि आधार पर विस्तृत ओ श्रमसाध्य अध्ययन अनुशीलन कऽ सकथि। इतिहास साक्षी अछि जे म० म० प० परमेश्वर झा कें 'मिथिला तत्त्व विमर्श' लिखबाक आधार कवीश्वरक येह प्रयास मुख्य रूप मे प्राप्त भेलनि। ओहि वार्द्धक्य कालहु मे कवीश्वर चन्दा झा कतेक सजग आ उत्साहित रहैत छलाह से हुनका द्वारा 'मैथिल हित साधन' क व्यवस्थापकक नामें लिखल एक पद्यमय पत्र सँ होइत अछि। समाज कें अशिक्षाक अन्धकार सँ बाहर कऽ प्रकाश मे अनबाक हेतु कुसंस्कार, कुरीति ओ अन्धविश्वास सँ परिचय कराय ओहि सँ मुक्त करबाक हेतु तथा जनसामान्य धरि एहि विचार कें प्रचारित करबाक हेतु जहिना राजा राममोहन राय कें पत्रक माध्यम परम उपयुक्त बुझना गेलनि तहिना आधुनिक शिक्षाक आलोक सँ आलोकित तथा सम्पूर्ण देश मे सामाजिक, राजनीतिक ओ शैक्षणिक क्षेत्र मे तीव्रता सँ होइत परिवर्तन सँ अवगत करयबाक हेतु प्रवासी मैथिल लोकनि पत्र प्रकाशित करबाक योजना बनौलनि। ताहि समयक सब सँ ज्येष्ठ ओ

3—मै० पत्रकारिताक इतिहास-श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', मै० अकादमी, पटना, पृ० ३०-३२

श्रेष्ठ साहित्य साधक कविश्वर चन्दा झा सँ पत्राचार द्वारा एहि प्रसंग परामर्श देबाक अनुरोध कयने छल होयथिन जकर उत्तर मे कवीश्वरक निम्नांकित पत्र द्रष्टव्य अछि। ओ लिखने छलथिन :—

लिखल जाय मिथिला इतिहास। नहि हो ताहिमे शिथिल प्रयास॥
विषय विशेष हमहुं लिखि देव। सपनहुँ एक टका नहि लेब॥
गुण रत्नाकर थिक जयपूर। आग्रह ग्रह नहि एको क्रूर॥
पण्डित सभ्यक नियत निवास। बहुत पड़त अनकर नहि आस॥
पत्र बहुतजन हर्षित लेत। नियमित मूल्य पूर्व दय देत॥
मासिक मिथिला पत्र प्रचार। मैथिल भाषैं विहित विचार॥
सभ तकइत अछि पत्रक बाट। पौषक दिवस रहल अछि खाँट॥
नमस्कार लिखइत छथि चन्द। सत्वर लिखब कुशल आनन्द॥

उपर्युक्त पद केँ पढ़ला सँ एहेन प्रतीत होइत अछि जे मैथिली मे पत्र पत्रिकाक प्रकाशन हेतु जेना कवीश्वरक आत्मा छटपटाइत रहल होइनि। जयपुरक प्रवासी बन्धु एहि दिस उन्मुख भेलाह अछि से जानि जेना प्रसन्नताक बाढ़ि मे हृदय उबडुब करय लागल होइनि। मातृभाषा केँ आधुनिक पद्धति पर विकसित करबाक हेतु साहित्यिक निर्बल शृंखला केँ जोड़ब, ऐतिहासिक आधार ओ व्याकरणक दृष्टियें भाषाक अध्ययन करब, अतीतक परिचय राखब ओ गद्य साहित्यक प्रचुर मात्रा मे निर्माण करब आदि अनेक कार्य, जे परम आवश्यक छल, पड़ल छल। एहि सभक प्रसंग चिन्तन करितहु अपन वार्द्धक्य, ताहि पर पुत्रशोक आदि सँ जर्जर जीर्ण कलेवर देखि स्वयं सभक सम्पादन दुर्घट बुझना जाइत छल होयतनि। ताहि स्थिति मे अपन भाषा मे पत्रक प्रकाशनक समाचार हुनका अंतःकरण मे आशाक संचार कयने होयतनि। 'मैथिल हित साधन'क प्रकाशनक बाद किछुए दिनक अन्तराल मे काशी सँ मिथिलामोद'क प्रकाशन देखि कतेक आह्लाद भेल होयतनि से एही दोहा सँ व्यक्त भऽ जाइत अछि —

"मिथिला मोद गोद लय बैसलि काशी भेलि नमस्या
मुरलीधर जीवन शुभ चिन्तक पत्रक परम तपस्या ॥ "

एकर डेढ़ वर्षक बाद हुनक देहान्त भऽ गेलनि। दू-दू गोट पत्रक प्रकाशन देखि, निश्चित रूपें ओ मैथिलीक भविष्यक प्रति आश्वस्त भऽ अपन शरीरक त्याग कयने होयताह, किन्तु बाबू भोलालाल दास मातृभाषाक माध्यम सँ प्राथमिक पाठशाला मे अध्यापन होइत देखबाक लालसा मोन मे लेनहि प्राणविसर्जन कयलनि।

कवीश्वरक बादक पीढ़ी मे कविवर जीवन झा (१८५६), म० म० परमेश्वर झा (१८५६), लाल दास (१८५६), म० म० मुरलीधर झा, विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा, म० म० मुकुन्द झा 'वख्शी' म० म० डा० सर गंगानाथ झा, साहित्य रत्नाकर मुन्सी रघुनन्दन दास, पं० जनार्दन झा 'जनसीदन', पं० जीवछ मिश्र प्रभृति अनेक युवक प्रौढ़ विद्वान मैथिलीक क्षेत्र मे उपस्थित छलाह। हिनका लोकनि मे अधिकतर व्यक्ति गद्य लेखन दिस विशेष रूपेँ प्रवृत भेलाह। जीवन झा नाटक, परमेश्र झा आख्यायिका ओ मिथिला तत्त्व विमर्श, मुरलीधर झा ओ विधावाचस्पति पत्रकारिताक माध्यम सँ निबन्ध, मुकुन्द झा इतिहास, रघुनन्दन दास नाटक, लालदास स्त्रीधर्म शिक्षा आ जीबछ मिश्र ओ जनसीदन जी उपन्यास आदि सँ मैथिली गद्य साहित्य केँ परिपुष्ट करय लगलाह। पत्र-पत्रिकाक उदय सँ गद्य साहित्यक रचना केँ पूर्ण प्रोत्साहन भेटलैक। व्याकरणक प्रसंग इतिहास मे प० हल्ली झा, म० म० मुरलीधर झा, हीरालल झा 'हेम', बाबू गंगापति सिंह आदि अनेक व्यक्तिक प्रयासक चर्चा भेटैत अछि। ओमहर प्रवासी मैथिल पं० रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र' (जैत मथुरा) अलंकार ग्रन्थक प्रणयन कयलनि। एहि प्रकारेँ मैथिली भाषा साहित्यक विभिन्न विधाकेँ समुन्नत करबाक दिशा मे लेखक लोकनि लागि गेल छलाह।

एमहर राष्ट्रीय विचार धाराक लहरि पर समाज मे जातीय संगठन जोर पकड़ने छल। राजपूत महासभा, गोप महासभा, वैश्य महासभा आदिक संगठन देखि महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह मैथिल महासभाक संगठन कयलनि। ओहि मे मैथिल ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ मात्रक प्रवेश सँ मैथिल शब्दक अर्थ ततेक संकुचित भऽ गेल जे ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थक अतिरिक्त व्यक्ति अपना केँ मैथिल कहबा सँ अरुचि देखाबय लगलाह। आरम्भे मे कहल जाए चुकल अछि जे शिक्षाक प्रचार मुख्यत ब्राह्मण ओ कायस्थ वर्ग मे छलैक, तें साहित्य सर्जनोक दिस एहि दू वर्ग केँ प्रवृत्ति छलनि। एक दिस मैथिल महसभाक कारणें मैथिल शब्दक ओ संकुचित अर्थ आ शिक्षाक प्रवेश एहि दू जातिक मध्य रहलाक कारणें साहित्य रचना मे सेहो एही दू जातिक प्रधानता देखि शेष समाज अपना घर मे मैथिली मे वजितो अपना केँ अमैथिली भाषी कहय ओ मानय लागल।

ओमहर कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा मैथिली केँ पाठ्य विषयक रूपमे स्वीकृति भेटि गेल छलैक, किन्तु पढ़यबाक योग्य ग्रन्थक अभाव छल। १९२५ ई० मे 'श्री मैथिली'क जे प्रकाशन लहेरियासराय सँ आरम्भ भेल तकर पहिले अंक मे अग्रिम निवेदन शीर्षक अग्रलेखमे मिथिलाक संस्कृति सभ्यताक विशेषता पर प्रकाश दैत, मैथिली भाषा मिथिला मे बसनिहार सब वर्गक ओ सब जातिक भाषा थीक एहि तथ्य केँ उजागर करैत, मैथिली भाषाक प्रति सभक की कर्त्तव्य थीक ताहि दिस संकेत करैत अन्तमे कहल गेल अछि—

"कलकत्ता विश्वविद्यालय मध्य मिथिला भाषा केँ एम० ए० तक मे स्वतन्त्र स्थान देल गेलैक अछि तकर कारण यैह जे एकर अपन साहित्य उच्च कोटिक छैक। विश्वविद्यालय मे स्थान तौं हमरा भाषा केँ भेटि गेल अछि अवश्य, किन्तु यदि एकर अंग पुस्तकादि तथा पत्र-पत्रिका द्वारा उत्तरोत्तर बृद्धि नहि कैल जेतैक तौं एहिसौं कोनो लाभ होयबाक आशा नहि प्रत्युत अन्यत्र निन्दे होयबाक योग्यता।"

एतावता मैथिली केँ एक भाषाक रूप मे प्रतिष्ठित करबाक आकांक्षा रखनिहार चिन्तक लोकनिक समक्ष एक समस्या ओ उत्तरदायित्व उपस्थित छलनि आ एहि पृष्ठभूमि मे बाबू भोलालाल दास मैथिली क्षेत्र मे सक्रिय रूपें अवतीर्ण होइत देखल जाइत छथि।

द्वितीय अध्याय

बाबू भोलालाल दासक जीवन वृत्त

जन्म ओ वंश

बाबू भोलालाल दास करण कायस्थ पंजी मे अंकित विवरणक अनुसार बीअर मूलक बीजी पुरुष रत्नदेवक वंशधर, दरभंगा जिलान्तर्गत कसरौर गामक निवासी स्व० चोआलालक एकमात्र पुत्र छलाह। पंजीक अनुसार हिनक पूर्ण नाम रामकृष्ण प्रसाद भोलादास छलनि, किन्तु प्राथमिक पाठशाला मे नामांकन भोलालालदास नामें भेल छलनि आ एही नामें ई अभिहित होइत रहलाह। हिनक माताक नाम छलनि सकलवती। हिनक पिता स्व० चोआलाल करण कायस्थ क परम्परा-नुसार सामान्य शिक्षा प्राप्त कऽ कोनो छोट सन जमीन्दारक ओतय पट-बरिका करैत छलथिन। हुनक आर्थिक स्थिति तेहन विपन्न छलनि जे अपन परिवारोक भरण पोषण सामान्यो रूपमे पार नहि लगैत छलनि, तें हिनक माय अधिक काल अपन नैहर, सम्प्रति सहरसा जिलान्तर्गत सम्पूर्ण मिथिला कें महिमा मण्डित कयनिहार, परम विशिष्ट मीमांसक पण्डित मण्डन मिश्रक जन्म भूमि महिषीये मे रहैत छलथिन। एही कारणें हिनक जन्म अपन मातृकहि मे भेलनि। विभिन्न इतिहास तथा विभिन्न संकलन ग्रन्थ मे, एतेक धरि जे हिनक अपन लिखल 'पटना विश्वविद्यालय मे मैथिलीक प्रवेश' संस्मरण ग्रन्थ पर्यन्त मे हिनक जन्मवर्ष १८९७ ई० अंकित भेटैत अछि। किन्तु सांस्कृतिक परिषद, मधेपुर सँ प्रकाशित 'स्मृति' नामक स्मारिका क सम्पादक मण्डलक एक अन्यतम सम्पादक डा० श्री फूलचन्द्रमिश्र 'रमण' उक्त स्मारिका क

पुरोवाक् मे हिनक जन्मक प्रसंग भ्रान्तिक निवारण करैत लिखने छथि :—

"हम भोलाबाबूक जीवनवृत्तक सांगोपांग ढुढ़िया पसारय लगलहुँ। मैथिली साहित्यक इतिहास सँ लऽ व्यक्तित्व ओ कृतित्व (प्रकाशक-आल इन्डिया मैथिल संघ, कलकत्ता) एवं संस्मरण (प्रकाशक-चित्रगुप्त सभा, पटना) क अवलोकन केलाक उपरान्त हुनक जन्मतिथिक प्रसंग हमर ध्यान सर्वाधिक आकृष्ट भेल। कारण जे इतिहास मे हुनक जन्म १८९७ ई०, संस्मरणक प्रकाशकक अनुसार १८९७ ई०, व्यक्तित्व ओ कृतित्व मे-डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'-१८९७ ई०, पं० नागेश्वर मिश्र तथा कमल-नारायण झा 'कमलेश' १८९६ ई०, श्री दिनेश्वर लाल 'आनन्द' माघ-वदि त्रयोदशी शुक्र, सन १३०१ साल, प्रायः फरवरी १८९३ ई० लिखने छथि। आनो विद्वानक छिटफुट निबन्ध मे १८९७ ई० लिखल भेटल। परंच संस्मरण मे भोलाबाबूक लिखल किछु अतीतक अनुमानगणन-वर्ष एवं मिथिला मिहिर (२४ नवंबर, ६८) केर हुनकहि स्वानुभवक निबन्ध मे वयः क्रमक प्रसंगात् उल्लेख सँ हम एहि निर्णयक क्रम मे अयलहुँ जे हुनक जन्म १८९४ ई० मे भेल हेतनि। एहि लेले किछु आरो प्रमाणक निमित्त श्री जगदीश प्रसाद कर्ण सँ हम भेंट कयल। ओ अत्यधिक प्रसन्न भय अपन पिताक संचित रचनादिक सामग्री सँ तकैत एक गोट टंकित पन्ना निकाललनि; जे राष्ट्रभाषा परिषद, पटना केँ पठाओल गेल भोला-बाबूक हस्ताक्षरित परिचय (हिन्दी मे) अछि। ओहिमे ओ अपन जन्म माघवदि त्रयोदशी शुक्र, सन् १३०१ साल लिखने छथि। साल सँ ईस्वी बनेबाक गणित होइछ-साल मे छः सय जोड़िकऽ सात घटायब। तथा-१३०१ + ६०० = १९०१ – ७ = १८९४ ई०। एहिसँ पूर्णतः स्पष्ट ओ प्रामाणिक भऽ गेल जे हुनक जन्म १८९४ ई० मे भेल छलनि।"[1] हिनक वंशावली देखला सँ ज्ञात होइत अछि जे कम सँ कम ६ पुश्त, हिनक वृद्धप्रपितामह दत्तदास सँ हिनक पुत्र श्री जगदीश प्रसाद कर्ण, एम,ए०

1 —स्मृति, सांस्कृतिक समिति, मधेपुरक स्मारिका, मइ १९९०

(अंगरेजी शिक्षक, एम० एल, एकेडमी, लहेरिया सराय) धरि हिनक वंश एक पुरुषीया रहलनि अछि। हुँऽ पौत्र हिनका तीन गोट छथिन। हिनका सँ छोट एक मात्र बहिन प्रियंवदा प्रसिद्ध लालादाइ छथिन जनिक बाल बच्चा लोकनि अपन पैतृक सहरसा जिलान्तर्गत परुहरगाम मे रहैत छथिन।

शिक्षा

पूर्व मे कहल गेल अछि जे भोला बाबूक पिताक आर्थिक अवस्था विपन्न रहनि, से तेहन विपन्न रहनि जे एक मात्र कुल दीपकहु कें शिक्षा दीक्षा देबा मे ओ असमर्थ रहथिन। अतः हिनक प्रारंभिक शिक्षा मातृ-कहि मे भेलनि। महिषी गामक विशिष्टता इतिहास प्रसिद्ध अछि। "स्वतः प्रमाणम् परतः प्रमाणम्" केर गरिमामय गौरव-गाथा एही गामक थीक। भोलाबाबू स्वयं लिखने छथि :—

"अनेक कारणें हमर मातृक महिषी गामक संस्कृति ओ परोपट्टा मे विशेष मैथिल छल। किमधिकम् भाषा पर्यन्त समीपवर्ती बधबा, वनगाम, चैनपुर आदि सँ विशेष परिमार्जित छलैक, एखनहु छैक।"

एहने विशेष ओ परिष्कृत सांस्कृतिक परिवेश मे पालित-पोषित होयबाक कारणेँ बालक भोलालाल पर तकर तेहन चिरस्थायी प्रभाव पड़लनि जे आजीवन बनल रहलनि। कविशेश्वर बदरीनाथझा क उक्ति—

"बाल्य अवस्था जे दृढ़ संस्कार। तकर न हो परिवर्तन वा परिहार"

हिनका प्रसंग सर्वथा चरितार्थ होइत प्रतीत होइत अछि।

हिनक जीवनक सम्पूर्ण घटनाक्रमक पर्यवेक्षण सँ प्रतीत होइत अछि जे यदि हिनक मातामहो पिता जकाँ अपन जातिएक परम्पराक अनुसरण कयने रहितथिन तँ ने जानि हिनक विकास कोन रूप मे भेल रहितनि। कारण जे यदि हिनका मे पूर्व जन्मार्जित संस्कारक प्रसादात् एहन अदम्य दृढ़ इच्छा शक्ति नहि रहितनि तँ जतेक धरि शिक्षा प्राप्त कऽ सकलाह से नहि भऽ सकितनि। हिनक मातामह रहथिन निठ्ठाह गृहस्थ। अपना

भू सम्पत्ति ततबा छलनि जे पारिवारिक भरण-पोषण खुसफैल सँ भऽ जाइत छलनि। अतः अपन कन्या तथा दौहित्र केँ अधिककाल अपने ओहिठाम रखैत छलथिन। ताहि समय मे प्राथमिक शिक्षाक की स्थिति छलैक एहि प्रसंग हिनके लिखल निम्नांकित पंक्ति सँ ज्ञात होइत अछि। भोला-बाबू लिखने छथि :—

"ताहि दिन मैथिलीक नाम अथवा अधिकारक चर्चा प्रायः छल मुदा काज आइ सँ बेसिये होइ छल ताहिमे सन्देह नहि। ऊँच नीचक भावना ओहि समय मे आइ सँ प्रबल एवं तीव्रतर छल मुदा भाषा रूपें मैथिलीक व्यवहार एवं मिथिलाक्षरक प्रचार प्राय; सर्वत्र छल। साहित्य सेवाक प्रचार सेहो पूर्ववते बनल छल। उर्दू-फारसी सिखबाक हेतु मौलवी साहेबक गुड़गुड़ी आ बधना इत्यादि धोयबा-माँजबाक प्रयोजन आब विद्यार्थी लोकनि केँ नहि छलैन्हि। मुदा 'पढ़े फारसी बेचे तेल, देख भाई करम के खेल, ई लोकोक्ति अवश्य पूर्ववते सुनि पड़ैत छल। दस-पाँच गामपर सरकारक दिस सँ हिन्दीक अपर लोअर प्राइमरी स्कूल खुलल छल, मुदा हिन्दी केँ काहे कूहे कहल जाइ छल आ सरकारी स्कूल मे छात्रक संख्या बढ़ौ तदर्थ गुरुजी लोकनि केँ लोअर तथा अपर परीक्षा मे उत्तीर्ण छात्र संख्या पर प्रतिवर्ष सरकारक दिससँ पारितोषिक देल जाइ छलैन्हि। कोनो हाकिम हुक्काम यदि स्कूल पर आवि गेलाह तँ किछु टाका विद्यार्थीओ लोकनि केँ मिठाइ खैबाक हेतु भेटैत छलैन्हि। पुस्तकादिक पुरस्कार एहिसँ अतिरिक्त छल।

देहात मे एखनहु सरकारी पाठशालाक अपेक्षा खानगीए पाठशाला अधिक छल। संस्कृत टोल सेहो यत्र तत्र सर्वत्र सर्वत्र छल। खानगी पाठशाला मे प्रायः तिरहुतेक आँजी-सीधी सँ पाठारम्भ होइ छल। कैथीक ओना मासी कमेठाम चलै छल। पुस्तक पाठ सँ अधिक देशी हिसाबक शिक्षा छल। कुल शिक्षाक माध्यम अनिवार्य रूपें मैथिलीये छल।

एही प्रकारक परिस्थिति मे हमर अक्षरारम्भ तिरहुते मे भेल। हमरा मातृक मे बंगालक कृत्तिवासी रामायण, काशी दासक महाभारत आदि एवं हिन्दीक रामायण, सुखसागर तथा मैथिलीक सुन्दर-संयोग नाटक एवं चन्दा झाक मिथिला रामायण आदि छल। सभक यत्किंचित परिचय भेटि चुकल छल।''[2]

एतय ध्यातव्य जे भोलाबाबूक समय धरि फारसीक प्रचलन समाप्त भऽ गेल छलैक जखन कि हिनका सँ लगभग दू दशक पूर्व म० म० डा० सरगंगानाथ झाक जन्म (१८७१ ई० मे) भेल छलनि। ओ एकठाम लिखने छथि—''पचास वर्ष पूर्व मुसलमानी राज्यक प्रभाव एतबा रहि गेल छलैक जे प्रायः धनिक घर मे बालक केँ फारसीक शिक्षा होइत छलैक। बाल्यावस्था मे 'अलिफबे' क परिचय कराओल गेल छल, परन्तु ई दुइ अक्षर छाड़ि और किछु स्मरण नहि रहल।''

भोलाबाबूक हृदय मे मातृभाषाक प्रति सहज अनुराग ताही दिन सँ दृढ़ भऽ गेल छलनि जहिया मिथिलाक्षर सँ अक्षरारम्भ भेलनि। सुसंस्कृत परिवेश तथा मैथिलीमय वातावरण मे पालित नेनाक हृदय मे अपना मातृभाषाक प्रति विशेष आस्था होयब स्वाभाविको मानल जायत, किन्तु हिनक मातामह हिनका आधुनिक शिक्षा दिस उन्मुख करबय चाहैत छलथिन, तेँ हिनक मातामह हिनका नामांकन शाहपुर लगमाक अपर प्राइमरी स्कूल मे करा देलथिन। लगमा एक छोट सन स्टेट छलैक जे 'कोर्ट ऑफ वार्ड्सक अधीन छलैक। ओहि स्टेट मे हिनक एक माम अनूपलाल दास तहसीलदार छलथिन। हुनके अभिभावकत्व मे लगमा मे राखल गेलनि। ओहिठाम मैथिलीक कोनो पठन-पाठन नहि होइत देखि ग्लानि, क्षोभ, निराशा सब किछु होइत छलनि। हिनके कथनानुसार

२—संकल्प लोक, लहेरिया सराय द्वारा प्रकाशित स्मारिका, 'संकल्प' वर्ष १९७७ पृ० ११

सरकारी व्यवस्था मे जनसामान्य कें हस्तक्षेप करबाक कोनो अधिकार नहि रहैत छैक, से सोचि मोन मसोसि रहि जाय पड़ैत छलनि। ताहि-पर एक घटना एहन घटित भेलनि जे बाल्यकालक अविस्मरणीय घटनाक रूपमे स्मृति पटलपर आजीवन अंकित रहि गेलनि आ भविष्य मे आबि मातृभाषा कें समुचित अधिकार देअयबाक दृढ़ संकल्पक रूप मे प्रकट भेलनि। ओहि घटनाक चर्च अनेक ठाम कयने छथि। ओ कोन रूपें घटित भेल छलनि से हुनके शब्द मे पठनीय। ओ लिखने छथि—

"जखन लोअर पास कऽ अपर मे गेलहुँ तँ साहित्यक पोथी मे गोसाँइजीक रामायणक किछु अंश संकलित पौल। तकर एक चौपाई छल -

मंत्रिहि राम उठाई प्रबोधा।
तात धरम मगु तुम सब सोधा '।

एहि 'सोधा' शब्दक अर्थ मास्टर साहेब नीकें बुझा देथि-यथार्थ रूपें जानब, ठीक ठीक बूझब इत्यादि, मुदा हम स्वभावतः बूझी जे नष्ट करब अथवा बिगाड़ब। एक दिन तँ मास्टर साहेब एहि गलत अर्थ कें सुधारि देलनि, मुदा जखन दोसरो दिन हम सैह कहलियैन्ह तँ हुनक क्रोधक सीमा नहि रहलैन्हि। ओ तीन चारि खड़ाम मारलैन्ह। हुनक दोष नहि छलैन्हि। मुदा हमरो दोष नहि छल, से ओ नहि बूझि सकलाह। हम तँ दिन-राति सोधबाक व्यवहार तेहने अर्थ मे सुनैत छलहुँ-सोधनामा, सोधन कुरथी आदि।"[३]

एक तँ उपयुक्त परिवेश दोसर नैसर्गिक प्रतिभा जाहि प्रसादें भोला बाबू अपर प्राइमरी सँ प्रवेशिका धरि प्रत्येक परीक्षा मे उत्तीर्णता प्रथम श्रेणी मे प्राप्त कयलनि। परिणामतः अपर प्राइमरी सँ जे सरकारी छात्रवृत्ति प्राप्त होमय लगलनि से इण्टरक परीक्षा धरि हिनका अध्ययनक बाट प्रशस्त कऽ देलकनि। कहल गेल अछि जे हिनक पिता चोआलाल

३—स्मृति पृ० ७

तेहन विपन्न छलथिन जे एकमात्र कुलदीपकक भरण-पोषण पर्यन्त करबा मे अक्षम रहथिन। मातामही ततबे शिक्षा देअयबाक स्थिति अथवा विचार मे छलथिन जतबा शिक्षा प्राप्त कऽ ताहि दिन साधारणतः कायस्थ परिवारक बालक पटबरिका करबाक योग्यता हासिल कऽ लैत छलाह। किन्तु हिनका सरकारी छात्रवृत्ति उच्च विक्षा प्राप्त करबा मे सहायक तँ भेबे कयलनि, प्रेरणाप्रद सेहो भेलनि। अपर प्राइमरी पास कयलाक बाद १९११ ई० में सिरीज इन्स्टीच्यूशन मधीपुरा (आजुक मधेपुरा जिला) सँ, जे इन्स्टीच्यूशन कलकत्ता विश्व-विद्यालयक अन्तर्गत छात्र, प्रवेशिक परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह। प्रवेशिको मे प्रथम श्रेणी प्राप्त भेलाक कारणेँ अध्ययन दिस हिनक उत्साह बहुत बढ़ि गेलनि। ई भागलपुरक टी० एन्० बी० जुबिली कॉलेज मे नामांकन करौलनि। ओ कॉलेज पटना विश्वविद्यालयक अन्तर्गत छल। १९१३ ई० मे आइ० ए० परीक्षा मे उत्तीर्ण तँ भेलाह, किन्तु प्रथम श्रेणी प्राप्त नहि भेलाक कारणें छात्रवृत्ति भेटब बन्द भऽ गेलनि। घरक कथे नहि, मातृको सँ कोनो आर्थिक सहायता नहि प्राप्त होइत छलनि। स्नातक वर्ग मे नामांकन करौताह से साधन नहि रहि गेल छलनि, किन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक प्रबल अभिलाषा मोन केँ मथय लगलनि, ताही चिन्तन मे व्याकुल छटपटाइत छलाह तावत मुंगेर जिलाक नया गाँव सिराजपुरक मध्य विद्यालय मे प्रधानाध्यापकक पद रिक्त होयबाक समाचार कतहु सँ प्राप्त भेलनि। ओहि पदक प्रत्याशी भेलाह। भाग्य संग देलकनि। ओहि पद पर हिनक नियुक्ति भऽ गेलनि। केवल दू वर्ष १९१३ ई० सँ १९१५ ई० धरि ओहि पद पर सेवारत रहि आगाँ पढ़बाक खर्च जुटौलनि आ पुनः टी० एन० बी० जुबिली कालेज मे बी० ए० मे नामांकन करौलनि तथा १९१७ ई० मे ओतहि सँ बी० ए० परीक्षोत्तीर्ण भेलाह।

ओ एहन समय छल जखन राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन क्रमशः प्रखर भेल जा रहल छल तथा ओहि आन्दोलनक नेतृवर्ग मे अधिकतर विधिवेत्ता लोकनि छलाह। स्वावलम्बी युवक भोलालालदासक अन्तःकरण मे विधिवेत्ता बनबाक आकांक्षा भऽ गेल छलनि। स्मर्त्तव्य जे राष्ट्रीय आन्दोलन मे अग्रणी संस्था राष्ट्रीय कांग्रेसक मंच पर महात्मा-गान्धीक पदार्पण भऽ चुकल छलनि। आन्दोलनक गति केँ तीव्र सँ तीव्रतर करबाक मार्गक अन्वेषण भऽ रहल छल। भोला बाबू सदृश ओजस्वी व्यक्ति केँ ओ विचारधारा बहुत प्रभावित कयने छलनि, तेँ ईहो विधिशास्त्र पढ़बाक हेतु उन्मुख भेलाह। 'यद्भावीतद्भविष्यति' से मोन मे ठानि रामधाम कऽ कलकत्ताक रीपन लॉ कालेज मे जाय ताम लिखौलनि। अर्थाभावक कारणेँ, जे हिनका पहिनहि सँ खेहारने अबैत छलनि, कलकत्ता मे अधिक दिन नहि रहि सकलाह। एतबा मानय पड़त जे 'जहाँ चाह तहाँ राह' जे लोकोक्ति मे अछि से हिनका संग चरितार्थ होइत रहलनि। भाग्य संग देलकनि आ ओही समय मे बेतिया राज स्कूल मे एक सहायक अध्यापकक स्थान रिक्त भेलैक। ई ओतय प्रत्याशी भेलाह। हिनक योग्यता तथा वाक्पटुता देखि ओहि ठामक प्रबन्ध-समिति हिनकर नियुक्ति कऽ लेलकनि। ओहि ठाम जीविकापन्न तँ भऽ गेलाह किन्तु विधिशास्त्र पढ़बाक आकांक्षा एक दिस आ दोसर दिस राष्ट्रीय आन्दोलन चित्त केँ अपना दिस खीचैत रहलनि, तथापि अध्यापन मे हिनक दक्षता, अनुशासनप्रियता ओ कर्मठता देखि १९२१ ई० मे प्रबन्ध-समिति हिनका प्रधानाध्यापक पद पर प्रतिष्ठापित करबाक निर्णय लेलक। ओमहर महात्मा गान्धी द्वारा असहयोग आन्दोलनक बिगुल बाजल। स्कूल कालेज छोड़ि राष्ट्रीय आन्दोलन मे भाग लेबाक आह्वान भेल। साहसक प्रतिमूर्ति, सदा संघर्षमय जीवन व्यतीत कयनिहार तथा परम राष्ट्रवादी भोला बाबू ताहि समय पैर कोना पाछू करितथि ? ओहि आन्दोलन मे ईहो

कूदि पड़लाह। कूदिए नहि पड़लाह, ओहि मे जेल सेहो कटलनि। जेल सँ किछुए दिनुक बाद मुक्त भेला पर विभिन्न राष्ट्रीय स्कूल सब मे काज करैत रहलाह। विधिवेत्ता बनबाक आकांक्षा एखनहु निवृत्त नहि भेल छलनि। अन्ततः १९२३ ई० मे इलाहाबाद लॉ कालेज मे नामांकन कराय १९२४ ई० मे ओतय सँ एल्० एल्० बी० परीक्षोतीर्ण भऽ अपन मनोवांछित शिक्षा सम्पन्न कऽ पूर्ण रूप सँ कर्मक्षेत्र मे प्रवेश कयलनि। एहि सँ पूर्व जीविकोपार्जन मे प्रवृत्त भेल छलाह तकर एक मात्र उद्देश्य अपन अभिलाषित शिक्षा प्राप्त करब छलनि।

विवाह ओ सन्तति :—

जखन भोलाबाबू भागलपुर मे आइ० ए० मे पढ़ैत छलाह तखने १९१२ ई० मे हिनक पिता पँचगछियाक समीप पटोरी (सहरसा) गाम मे हिनक विवाह करा देने छलथिन, किन्तु किछुए दिनुक बाद ओहि पत्नीक देहान्त भऽ गेलनि। ओ पत्नी शिक्षिता छलथिन। हुनक नाम मुनचुनबती छलनि। हुनक मृत्यु सँ ई मर्माहत भऽ भेलाह। पहिल पत्नीक देहान्तक बाद हिनक पिता हिनकर दोसर विवाह करयबाक चेष्टा करबो कयलथिन तँ अपन अभीप्सित शिक्षा प्राप्ति मे तकरा बाधक तत्व मानि बी० ए० पास कयलाक बाद विवाह करबाक वचन पिता केँ दऽ, तत्काल ई ओहि मायाजाल मे नहि ओझराय देबाक निवेदन पिता सँ कयलनि। दैव संयोग जे परीक्षा दऽ कऽ अयलाक बाद पिता स्वयं स्वर्गवासी भऽ गेलथिन। १९१७ ई० मे जखन पिताक देहान्त भऽ गेलनि आ अपने कानून पढ़बाक जोगाड़ धरयबाक हेतु गाम सँ बाहर भऽ गेलाह तँ गाम पर माय एकाकी पड़ि गेलथिन। पिताक प्रथम वार्षिक श्राद्ध सम्पन्न कयलनि, तखन माय बीतल एक वर्षक रिक्त जीवनक करुण कथा कानि-कानि कहलथिन तथा दोसर विवाह करबाक आग्रह करय लगलथिन। भोलाबाबू मायक परम

भक्त छलाह। 'संस्मरण' नामक ग्रन्थ मे पाद टिप्पणी मे लिखने छथि— "हमर माताक नाम सकलवती थिक, मातृभाषाक किछुओ भक्ति हुनके शिक्षाक परिणाम थिक।"

श्री दिनेश्वर लाल 'आन्नद' जे हिनकर ममियौत थिकथिन, हिनका मायक नाम 'सकलमणि' लिखने छथिन। अस्तु, माताक आग्रह पर ई अपन दोसर विवाह नवादा (मधेपुर) निवासी स्व० शिवकुमार लाल दासक दशवर्षीया कन्या श्रीमती योगमाया देवीक संग १९१८ मे कयलनि। श्रीमती योगमाया देवी सँ साक्षात्कार कयला उत्तर ज्ञात भेल ओ अक्षरक ज्ञानक अतिरिक्त मौखिक रूपेँ तुलसीकृत रामचरितमानस, मनोबोधकृत कृष्ण जन्म आदिक किछु-किछु परिचय प्राप्त कयने छलीह तथापि विवाहक समय तेहन अबोध छलीह जे विवाहक बरियाती जखन दुआरि पर पहुँचलनि तँ कुतुहलवश घघरी पहिरने दरबज्जा दिस दौड़ि गेलीह। स्त्री शिक्षाक प्रबल पक्षधर भोलाबाबू हिनका कोनरुपेँ शिक्षित कयलथिन से हिनके द्वारा लिखित "संस्मरण" सँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि। ओ लिखने छथिन—

"हमरा तँ हुनक शिक्षा कोहबरे घर सँ प्राप्त होमय लागल। विवाहक चारिमदिन धरि (चतुर्थी) वर वधू केँ वार्त्तालाप उचित नहि छल, परन्तु हमरा सँ प्रश्न हुनके भेलन्हि—अहाँ कते पढ़ल छी? उत्तर-अहाँ सँ बेसी। पुनः प्रश्न-हम अहाँक इमतिहान लेब। उत्तर-बेस। परीक्षा प्रारंभ भेल-गणित प्रश्न जोड़, घटाव तकर बाद गुणा तीस मे तीस सँ गुणा करु, तऽ उत्तर चुप, हम फेल भऽ गेलहुँ। आब साहित्य प्रारंभ भेल-रामायण पढ़ै छी? उत्तर जी हाँ। अर्थो बुझै छियै? उत्तर-हाँऽ। प्रश्न-अहाँ केँ रामायणक कोनो चौपाइ याद अछि? उत्तर जी हँऽ। पढ़ू! उत्तर-जामवन्त के वचन सुहाये। सुनि हनुमन्त हृदय अति भाये॥ ठीक। हम टटोलि कय संक्षेप मे अर्थो कहि देलियन्हि।...... गीता मे किछु पढ़बाय गीतो पाठक आदेश देलन्हि और किछु पढ़वितो रहला।

जखन परदेश रहैत छलाह तखन अत्यन्त सरल अंगरेजी मे हमरा पत्रा लिखैत छलाह और हम जे कोनो गलती अंगरेजी उत्तर देबामे करैत छलियन्हि तकरा गाम पर एला उत्तर सुधारि कय नमहर छुट्टी मे हमरा अंगरेजी पढबितो छलाह ।''

पहिलुक पत्नीक द्विरागमनो नहि भेलनि तखन सन्ततिक प्रश्ने कोन ? कारण जखन दोसर विवाह चौबीसम वर्ष मे कयलनि तखन पत्नी दस वर्षक भेलथिन तँ प्रथम विवाह तँ अठारहमे वर्षक अवस्था मे भेलनि तँ पत्नीओ अल्पे वयसक छल होयथिन । ताहि समय मे परमावधि बारह तेरह वर्षक अवस्था धरि कन्यादान कऽ लेब अनिवार्य बूझल जाइत छल । दोसर पत्नी श्रीमती योगमाया देबी, जे जीवित छथिन, तनिक कथनानुसार पहिल सन्तान कन्या जन्म लेलकनि जखन हिनका सोड़हम वर्ष छलनि । जातक फल कहनिहारक मत छनि जे स्त्री केँ सोड़हम वर्ष मे सन्तान होयब अशुभ होइत छैक । माता वा पिता वा जन्म लेनिहार नेना तीनू मे सँ ककरो ने ककरो अभिघात होयबे करय । भेबो सैह कयलनि । ओ कन्या मासाभ्यन्तरे संसार त्यागि देलथिन । ई धटना १९२४ ई० मे घटित भेलनि जखन भोलाबाबू विधिशास्त्रक परीक्षा मे व्यस्त छलाह । तकर बाद पाँच वर्ष धरि कोनो सन्तान नहि भेलनि । १९२९ ई० मे एक बालक भेलथिन जे एक मात्र वंशक टेक छथिन श्री जगदीश प्रसाद कर्ण । ई अङ्गरेजी मे एम० ए० कयने छथिन । सम्प्रति लहेरियासराय एम०,एल एकेडमी मे सहायक अध्यापक क पद पर कार्यरत छथिन । आकृति-प्रकृति तथा साहित्य साधनाक प्रति अनुराग पिताक समाने छनि । मैथिली, हिन्दी तथा अङ्गरेजी मे विशेषतः कविता तथा समीक्षा करबा मे पूर्ण प्रौढ़ता प्राप्त छनि । हिनका तीन गोट पुत्र ओ तीन गोट कन्या छथिन । हिनक विवाह मैथिलीक अपना युगक सुपरिचित मैथिली सेवक स्व० हरेकृष्णलाल दास मुख्तारक कन्या सँ भेल छनि ।

रुचि ओ परिधान

युगानुरुपता सँ किछु अधिके प्रगतिशील विचार रखनिहार बाबू भोलालाल दास मे कतोक विचित्रता सेहो विद्यमान छलनि। रुढ़ि ओ अन्धविश्वासक भंजक रहितो आध्यात्मिकता हिनका रग-रग मे भरल छलनि। वाल्मीकीय रामायण महाभारत, गीता ओ उपनिषदक विशेष अध्येता छलाह। सामान्यतः प्रगतिशीलता नास्तिकता क पर्याय बूझल जाइत अछि। हिनक आस्तिकता एहने छलनि जे एक दिस अर्थाभाव डेग-डेग पर संघर्ष, सम्पूर्ण समाज ओ राष्ट्रक चिन्ता, तँ दोसर दिस अपने लिखब दोसर सँ लिखायब, पुनः तकर सम्पादन, प्रकाशन, वितरण तथापि गायक गोबर सँ नीपल ठाँओ पर निश्चित समय पर बैसि न्यून-तम एक घंटा देवाराधना पूजन-तर्पण बिनु कयने अन्न ग्रहण नहि करब, गीता ओ वाल्मीकीय रामायणक नित्यपाठ करब, समय-समय पर कीर्तन भजन करब ओ करायब, साधुसन्त गो ब्राह्मणक प्रति अपार श्रद्धा राखब, अपने विपन्न रहितो अतिथि अभ्यागत क सत्कार मे पूर्ण तत्परता एवं आहलाद देखायब आदि-आदि। प्रियतम आहार मे दही, चूड़ा, चीनी, माछ, मधूर, परन्तु नागरिक जीवन मे नीक दूध भेटब कठिन, तेँ स्वयं गाय पोसथि। कहथिन 'एक पंथ दुइ काज' गाय पोसला सँ घर-आङन केँ पवित्र रखबाक हेतु गोबर सुलभ ओ शुद्ध दूध संगहि गो सेवाक फल स्वतः प्राप्त। कूकुर, बिलाड़ि सेहो पोसथि। एतेक अस्त व्यस्त जीवन रहितहु संगीतक प्रति ततेक रुचि जे अपनहु विद्यापतिक गीत सब केँ नव-नव लय ओ स्वर मे बान्हि नेना केँ सिखाबथि। पत्नी केँ संगीत सिखयबाक हेतु एक गायक केँ नियुक्त कऽ देने छलथिन। संगीतक ओ गुण हिनक एक-मात्र पुत्र श्री जगदीश प्रसाद कर्ण मे एखनहु विद्यमान छनि। मिथिला मे भिन्न-भिन्न पावनि विशेषतः चौठचन्द्र ओ देवोत्थान एकादशी कऽ स्त्रीवर्ग मे एक प्रकारेँ प्रतियोगिते जकाँ होइक।

ककरा आङनक अरिपन केहन विशिष्ट तकर लोक निरीक्षण करय। भिन्न-भिन्न अरिपन केँ कोन तन्त्रशास्त्रीय यन्त्र सब सँ सन्बन्ध छैक तकर विश्वलेषण-विवेचन करैत पत्नी केँ अरिपन देबाक हेतु प्रेरित करथि। एही काल मे भोला बाबू केँ एक कन्याक अभाव खटकनि। कहल करथिन- 'एकटा बेटी रहैत तँ तकरा विभिन्न प्रकार अरिपन देब सिखाय अखिल भारतीय प्रतियोगिता मे उपस्थित करबितहुँ' किन्तु प्रथम सन्तान कन्या भेबो कयलनि तकर मुँह पर्यन्त नहि देखि सकल छलाह। हिनका सदृश सतत संघर्षशील रहनिहार लोकक हेतु एहन-एहन विषयक प्रति रुचि, रुचिवैचित्र्य नहि तँ आओर की कहाओत? पूर्व मे कहल जा चुकल अछि जे भोलाबाबू महात्मागान्धीक राष्ट्रीय विचारधारा सँ बहुत अनुप्राणित रहथि। विदेशीक बहिष्कार तथा स्वदेशीक प्रचार कार्यक्रम क अन्तर्गत घर-घर चर्खाक प्रसार-प्रचार भेल तथा कांग्रेसीक हेतु खद्धरक धोती खद्दरहिक गंजी कुर्त्ता, टोपी एक प्रकारेँ गणवेश बनि गेल। भोला-बाबू जे १९२१ ई० मे बेतिया राज स्कूलक अध्यापक पदक परित्याग कऽ एहि राष्ट्रीय आन्दोलन यज्ञ मे उतरलाह तँ सर्वात्मना अपना कांग्रेस क सिद्धान्तक अनुयायी बनि गेलाह। तहियो सँ जे खद्धर धारण कयलनि से अन्त्येष्टिअहु मे खद्धरेक वस्त्र देल गेलनि। हँऽ हिनका परिधान मे यदि कनेक भित्रता छलनि तँ ई जे खद्धरक धोती, खद्धरेक गोलगला गंजी' खद्ध-रेक कुर्त्ता वा कोट तँ पहिरैत छलाह, किन्तु गान्धी टोपी कहियो नहि पहिरलनि। ओना एमहर आबि किछु कांग्रेसी तौनी सेहो धारण करय लगलाह अछि, किन्तु भोला बाबू प्रारंभे सँ तौनी केँ सेहो अपन परिधानक एक आवश्यक अंग मानैत छलाह। आन-आन कांग्रेसी तौनी केँ चौपेति कऽ कान्ह पर रखने रहैत छथि आ ई ओकरा गर्दन मे लपेटि कऽ व्यबहार करैत छलाह। रंग मे कोकटी हिनका सर्वाधिक प्रिय छलनि। पैर मे जाड़ मास मे हाफ जूता आ गर्मी मे जूता वा चप्पल सेहो पहिरि लैत छलाह। येह छलनि हिनक मुख्य परिधान।

सम्मान ओ सम्बर्द्धना

आदरणीय भोलाबाबू कें मैथिली भाषा कें शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृति देअयबा मे कोना अपन तन-मन-धन अर्पित करय पड़लनि से मैथिली साहित्यक अध्येता अथवा मैथिली प्रेमीलोकनि सँ अविदित नहि अछि, परन्तु स्वीकृति भेटि गेलाक बाद किछु वर्ग द्वारा हुनक त्याग ओ तपस्याक उपेक्षा कयल गेलनि तकरो साक्षी इतिहास अछि। एहि उपेक्षाक आभास अपन वार्द्धक्य काल मे आवि हिनका भेलनि से हिनक लिखल 'संस्मरण' नामक ग्रन्थ सँ सूचित होइत अछि। यद्यपि मातृभाषाक सेवाक हेतु हिनका कोनो सम्मान वा पुरस्कारक अभिलाषा नहि छलनि। ई स्वयं लिखने छथि :—

''हम जनै छलहुँ जे मातृभाषा सेवा हमरा लोकनिक धर्म थिक। एहि मे पुरस्कार वा सहायताक प्रतीक्षा कोन ?''

भोला बाबू कें जाहि कारणें क्षोभ भेलनि तकरो उल्लेख प्रसंगात् करब समीचीन होयत। सर्वप्रथम महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह जे अपन इच्छा पत्र (विल) बना गेल छथि ताहि मे राज्यक सम्पत्तिक एक तृतीयांश जनसामान्यक हित मे खर्च करबाक प्रावधान कयने छथि। ताही प्रसंग एक गुमनाम पर्चा अङरेजी मे छपबाय वितरण भेल छल। जकरा पढ़ि कऽ भोला बाबू सेहो एक लेख लिखने रहथि 'जा हे दरभंगा राज' जे मिथिला मिहिर कें पठौने रहथिन। ओहि मे अन्ततः मिथिला राज्यक सम्पत्ति कोना नष्ट-भ्रष्ट होइत रित्ती-छित्ती भऽ गेलैक आ मिथिलाक कोनो उपकार नहि भऽ सकलैक तकर खेद, क्षोभ तथा आक्रोश भरल विश्लेषण कयने छथि। संगहि म० म० मुरलीधर झाक ई उक्ति—''विश्व विख्यात मिथिला देश तिरहुत वा विदेह नहि कहाय बिहार भए गेल एतदर्थ धन्यवाद हमरा लोकनि शास्त्र मर्मज्ञ अपन श्रीमान् महाराजाधिराज कें नहि कोना देबैन्हि, जाहि करुणागार कें 'मिथिलेश' रुचिकर किन्तु मैथिली भाषाक उन्नतिक हेतु कनेको उत्साह

नहि । यदि दैवात् कनेक उनमुनी होइतहु छन्हि तँ तेहन-तेहन राजप्रधान मिथिला लवणभक्त हाउ लोकनि छथि जे मैथिली कलकत्ता युनिवर्सीटी मे सफल मनोरथ परन्तु बिहार मे दुर-दुर छी छी ।" कलकत्ता सँ प्रकाशित 'मिथिला दर्शन' क १९६९क अंक मे निबन्ध प्रकाशित भेल छलनि 'जा हे दरभंगा राज' जाहिमे एकठाम लिखने छथि—

"जाहि व्यक्ति केँ कार्यपाल नियुक्त कै एकरा चालू करबाक भार वा अधिकार देल गेल छैन्हि, से जानि बूझि एहि मे बिलम्ब कै रहल छथि। सोनाक अंडा देनिहार राजक एक एक मुरगी केँ मारि-मारि अनुचित लाभ उठाए रहल छथि। तँ लोकहितक ने कोनो काज भेल ने हैबाक आशा अछि। इत्यादि इत्यादि ।"

सुविदित अछि जे कार्यपाल छलाह बिहार उच्च न्यायालय क मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति पं० लक्ष्मी कान्त झा जे ताहि समय चेतना समिति पटनाक अध्यक्ष सेहो छलाह । १९६८ ई० चेतना समिति, भोलाबाबू केँ मुख्य अतिथिक रूप मे आमन्त्रित कऽ हिनका प्रति सम्मान व्यक्त कयने छलनि। एही प्रश्न पर पं० लक्ष्मी कान्त झा चेतना समितिक अध्यक्ष पद सँ त्यागपत्र दऽ देने छलाह। यद्यपि अपन त्यागपत्र मे ओ एहि विषयक चर्च नहि कयने छथि। ओहि पत्रक स्वरूप निम्नांकित अछि जे मिथिला मिहिरक १२ जनवरी १९६९क अंक मे प्रकाशित भेल छल

"सचिव, चेतना समिति, पटना ।

अपन पूर्ण इच्छा नहियो रहला उत्तर हम चेतना समितिक अध्यक्ष बनाओल गेलहुँ, परन्तु हमरा ने पूर्ण अवकाश रहैत छल जाहि सँ हम चेतना समितिक कोनो कार्यभारक उत्तरदायित्व लितहुँ आ ने समिति केँ कोनो तरहक हमर विचार अथवा परामर्शक प्रयोजन भेलैक। तँ हम एहि संस्था सँ सम्बद्ध रहबा मे पूर्णतः असमर्थ छी। एहि अवस्था मे एहि संस्था सँ हम अपन सम्बन्ध विच्छेद करैत छी ।

ह० लक्ष्मीकान्त झा

२-१-६९ ।"

परन्तु एहि घटना पर मिथिला मिहिरक सम्पादकीय मे व्यक्त विचार अवश्य अनादर मूलक छल जे भोलाबाबू सन सर्वस्व अर्पित कयनिहारक प्रति अशोभन मानल जायत। १९ जनवरी १९६९क 'मिथिला मिहिरक' क सम्पादकीय "अध्यक्षक सम्बन्ध विच्छेद : मैथिली संस्थाक दुर्भाग्य" शीर्षक सँ प्रकाशित अग्रलेख मे कहल गेल अछि जे—

"चेतना समितिक अचेतना केँ आब अधिक दिन नुकाकऽ नहि राखल जा सकैत अछि। मैथिलीक चेतना केँ जे संस्था सर्वग्रास पर तुलल होअय अथवा जे व्यक्ति चेतना शब्द केँ अपन आचरण सँ कलंकित कऽ रहल होअय तकर परिष्कार आवश्यक अछि। जाहि संस्थाक स्वार्थी तत्त्व एतबो नहि बुझैत अछि जे संस्थाक अध्यक्ष समाज ओ देशक विशेष स्तरक होथि ताहि संस्थाक विशिष्ट पाहुन नहि विशेष स्तरक तँ कम सँ कम समानो स्तरक होथि। ओहि स्वार्थी तत्त्व केँ ई बुझा देब आवश्यक जे मैथिलीक मंच पर अप्रतिष्ठामूलक एको काज नहि होयबाक चाही।"

एहि सँ स्पष्ट प्रतिध्वनित होइत अछि जे अध्यक्ष संस्था सँ एही कारणेँ सम्बन्ध विच्छेद कयने छलाह जे जाहि व्यक्ति द्वारा दरभंगा राजक ओहि प्रकारेँ खिधांस कयल गेल छल, सैह व्यक्ति ओहि वर्ष चेतना समितिक विद्यापति स्मृति पर्वक मंच पर मुख्य अतिथिक रूप मे किएक आमंत्रित कयल गेलाह।

मिथिला-मिहिर सम्पादक स्वेच्छा सँ मैथिलीक हेतु दधीचि जकाँ अपन अस्थि पर्यन्त दान कयनिहार भोला बाबूक त्याग तपस्या सँ परिचित रहैत एहि प्रकारक विचार व्यक्त कयने होथि से पूर्णतः विश्वसनीय नहि प्रतीत होइत अछि। तखन भऽ ई सकैछ जे मिथिला मिहिर तँ राज दरभंगेक संरक्षण मे पालित होइत छल आ महाराजक स्थानापन्न कार्यपाले छलाह, तेँ हुनके संकेत पर एहन लिखल गेल

होयत। हँ, ई भिन्न बात थिक जे भोला बाबू सन निर्भीक व्यक्ति सम्पादकक आसन पर रहितथि आ एहन कोनो तपस्वीक विरुद्ध हुनका लिखबाक हेतु कहल जइतनि तँ ओ त्यागपत्र दऽ दितथि से स्वीकार्य होइतनि, किन्तु एहन पंक्ति लिखब स्वीकार्य नहि होइतनि। किन्तु आजीविकाक समक्ष एहन दुःसाहस कयनिहार तऽ विरले लोक होइत अछि, जे होइत अछि से सामान्य स्तर सँ बहुत अधिक उच्चस्तरक व्यक्तित्व रखनिहार होइत अछि।

किन्तु एहि धटनाक्रम मे 'चेतना समिति' अपन निर्भीकताक परिचय एहि रूपेँ देलक जे १९७२ ई० मे जे एक नवीन कार्यक्रम विशिष्ट व्यक्तिक अभिनन्दन करब प्रारम्भ कयलक तँ ताहिमे कलकत्ता विश्वविद्यालय मे मैथिली केँ प्रवेश देऔनिहार पं० व्रजमोहन ठाकुर, कविशेखर बदरीनाथ झा, कविवर सीताराम झा क संग भोला बाबू क अभिनन्द सेहो कयलकनि। चेतना समिति तँ राज दरभंगाक दबदबा मे नहि छल, किन्तु एकटा त्रुटि ओहू अवसर पर अवश्य भेलैक से भोले बाबू क 'संस्मरण' देखला सँ पता चलैत अछि। ओहि अभिनन्दन समारोह मे प्रत्येक व्यक्ति केँ कोन रूपेँ सम्मानित कयल गेलनि तथा कोन त्रुटि भेलैक से हिनकहि शब्द मे देखब विशेष उपयुक्त। ओ लिखने छथि—

"ओहि समारोहक सभापति छलाह पश्चिम बंगालकमुख्य मंत्री माननीय सिद्धार्थशंकर राय महोदय। माला पहिराय एक शाल ओढ़ाय गाढ़ आलिंगन दैत समिति क दिससँ हमर सम्मान कैलन्हि। एहि मे प्रत्येक व्यक्ति केँ एक-एक ताम्रपत्रो देबाक निश्चय कैल गेल छलैक। जेँ हेतु ओ तत्काल निर्मित नहि भय सकल छलैक, तेँ ओहिपर किनका हेतु की खोधौल जयतनि तकर तत्काल घोषणामात्र कय देल गेलैक। हमरा विषय मे निर्भीक समालोचक, सफल सेनानी आदि कतोक प्रशंसा सूचक शब्द गुच्छक घोषणा होइतहु पटना विश्वविद्यालय मे मैथिली प्रवेशक

कोनो चर्चा नहि भेलैक, ने कानक अबलता सँ हमरा से सब किछु सुनबाक योग्य भेल। ''

मैथिलीक हेतु जे सब सँ पैघ अवदान भोलाबाबूक छलनि शिक्षा मे मैथिलीक स्थान देआयब, जाहि सँ वस्तुतः मैथिलीक भविष्यक द्वार उद्-घाटित भऽ सकलैक, तकर कोनो चर्चा नहि रहलाक कारणेँ मोन मे अभिखेद भेलनि।

दोसर घटना थिक डॉ० सुधाकर झा क निबन्ध—''पटना विश्व-विद्यालय मे मैथिलीक प्रवेश कोना भेल। '' ई निबन्ध चेतना समितिक स्मारिका मे १९७०ई० मे प्रकाशित भेल छनि। ओहि मे डा० सुधाकर झा जी लिखैत-लिखैत एक ठाम लिखने छथि

''पटना विश्वविद्यालय सिनेट मे मैथिलीक स्वीकृतिक प्रस्ताव प्रायः सर्वप्रथम १९२५ ई० मे एवं तकर बादो कय बेर आयल किन्तु प्रबल विरोधक कारण स्वीकृत नहि भय सकैत छल। १९३८ ई० मे मैथिली आन्दोलन मे किछु बल आएल। महाराजाधिराज स्व० सर कामेश्शर सिंह जे पटना विश्वविद्यालयक सिनेटक आजीवन सदस्य छलाह, मैथिलीक स्वीकृतिक प्रस्ताव स्वयं अनलन्हि ओ भाग्यवश एहि बेर हुनक व्यक्तिगत प्रभाव सँ कहू वा मैथिलीभाषीक जागरूकता सँ, प्रवेशिका वर्ग मे एक ऐच्छिक विषयक रूप मे मैथिली स्वीकृत भेल।''

उपर्युक्त लेख मे मैथिली साहित्य परिषदक मंच सँ कयल गेल भोला-बाबू क प्रयास तथा संघर्षक कतहु कोनो चर्चा नहि भेल अछि। अभिन-न्दन समारोह मे जे ताम्रपत्र देबाक हेतु प्रस्तुत कयल जाइत छल ताहू मे एहि विषयक कोनो चर्च नहि छल, जकर उल्लेख पूर्व मे भऽ चुकल अछि। भोला बाबू द्वारा कयल गेल प्रयास एक ऐतिहासिक तथ्य अछि। ऐतिहासिक तथ्यक उपेक्षा सत्यक अपलाप थिक। भोलाबाबू अपनहुँ इतिहासकार छलाह। एक इतिहासकार केँ सत्यक एहन अपलाप सँ क्षोभ होयब स्वा-

भाविक बात थिक। भोलाबाबू केँ एहि सब घटना सँ आभास भेलनि जे जानि बूझि कऽ किछु व्यक्ति हुनक विरोधी भऽ गेल छथिन जे हुनक व्यक्तित्व केँ लुप्त कऽ देबाक षड़यंत्र कऽ रहल छथिन। हुनक ई आशंका निर्मूल नहि मानल जा सकैत अछि। यद्यपि भोलाबाबू एहि तथ्यक कतहु चर्च नहि कयलनि अछि तथापि हुनका सन सूक्ष्म तथा दूर दृष्टि रखनिहार लोक सँ अनवगत नहि रहल होयतनि। हुनक उपेक्षाक बीज १९४१ ई० मे मैथिली साहित्य परिषद द्वारा प्रकाशित, प्रो० रमानाथ झा द्वारा सम्पादित मैथिथो पद्य संग्रहक भूमिकाक प्रथमे वाक्य मे देखल जा सकैत अछि। उक्त भूमिकाक आरंभे होइत अछि—

"श्री ५ मन्मिथिलेशक सदुद्योग सँ पटना विश्वविद्यालय मध्य मैथिलीक स्वीकृति भय गेलाक पर पाठ्यग्रन्थक निर्माण ओ प्रकाशनक भार मैथिली साहित्य परिषद केँ भेल।"

एहि मे 'सदुद्योग' शब्द विशेष रूपेँ द्रष्टव्य थिक ई सत्य जे मैथिलीक स्वीकृति मे दरभंगा महाराजक प्रभाव बहुत सहायक भेल होयत, परन्तु ओ हुनक प्रभाव छलनि, उद्योग कथमपि नहि। अतः सदुद्यगोक स्थान पर सत्प्रभाव शब्दक प्रयोग रहला सँ जाहि षड़यंत्रक गन्ध आबि रहल अछि से प्रायः नहि रहैत। ई एक नग्न सत्य अछि जे स्वीकृतिक हेतु उद्योग मे यदि क्यौ लागल रहलाह तँ ओहि मे सर्वोपरि नाम एक मात्र भोलाबाबूक लेब न्याय संगत। सांस्कृतक परिषद मधेपुर द्वारा प्रकाशित स्मारिका मे भोलाबाबूक प्रसंग पं० श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' ई कथन पूर्णतः समीचीन बुझि पड़ैछ जे—"भोलाबाबू तँ एक व्यक्ति छलाह, जखन जाहि मैथिली साहित्य परिषदक प्लेटफार्म सँ भोलाबाबू ओहन संघर्ष कऽ मैथिलीक हेतु ई अधिकार प्राप्त कयने छलाह ताहि परिषदक आर्थिक आधार सुदृढ़ करबाक हेतु किछु साहित्यकार अपन उदारताक ढ़ोल पीटैत किछु ग्रन्थ परिषद् केँ समर्पित कऽ देने छलथिन, मुदा जखन ओ पुस्तक

सब पाठ्यग्रन्थक रूप मे स्वीकृत भऽ गेल तखन ओ लोकनि पुनः अपन-अपन आधिपत्य ओहि पर जमा लेलनि आ परिषद कें अङुठा देखा देलथिन तखन भोलाबाबू दूधक माछी बना देल गेलाह तँ कोन आश्चर्य।''

एहिठाम तँ आर्थिक लाभक प्रश्न छल। लोभ केहन-केहन कें पथभ्रष्ट तथा कर्त्तव्यच्युत बना दैत अछि, परन्तु मैथिली भाषाक आधुनिक कालक विकासक गति वधिक सूक्ष्म पर्यवेक्षण सँ 'सूचित होइत अछि जे मिथिलेश अथवा मिथिला राज सँ सम्बद्ध कोनो व्यक्ति मात्रक जे क्यौ आलोचना कयलनि अथवा सत्यक उद्घाटन कयलनि तनिकर ऐतिहासक महत्त्व कें लुप्त कऽ देबाक प्रयास होइत रहल अछि। एहि प्रसंग म० म० पं० मुरलीधर झा सेहो एक प्रमाण छथि जे 'मिथिला-मोदक' माध्यम सँ मैथिलीक गद्य कें एक मानक रूप देने छलाह, किन्तु ओहो राज दरभंगा द्वारा मिथिला, मैथिली ओ मिथिलाक्षरक विकासक प्रसंग उदासीनता वा उपेक्षा देखयबाक कटु आलोचक छलाह, तें शैलीक कृत्रिम समस्या उत्पन्न कऽ म० म० जी द्वारा स्थापित मानक स्वरूप कें अप्रतिष्ठ कयल गेल, फलतः एखन धरि कोनो स्वरूप स्थिर नहि भऽ सकल अछि। भोलाबाबू सेहो महामहोपाध्याय जी पथक अनुगामी छलाह। अतः पटना विश्वविद्यालय मे मैथिलीक प्रवेशक श्रेय हिनका नहि भेटनि तकर असफल चेष्टा हिनक मन्त्रिपद छोड़ितहि आरंभ भऽ गेल। परन्तु एहि प्रसंग स्मारिका 'स्मृति' मे कथित पं० श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क कथन अत्यन्त सटीक बैसैत अछि—

''भने स्वार्थी लोक इतिहास कें तोड़ि मरोड़ि देबाक चेष्टा करओ तथापि सत्य कें बहुत दिन धरि झाँपि कऽ नहि राखल जा सकैत छैक। ओहन स्वार्थी लोक भोलाबाबू कें बिसरिओ जाथिन, तथापि ताहि सँ कोनो अन्तर नहि पड़ैत छैक, कारण जे ऐतिहासिक पुरुष बिसरल नहि जा सकैत छथि।''

वस्तुतः किछु मुट्ठी भरि लोकक द्वारा एहन चेष्टा भने भेल हो, किन्तु जनसान्य मे भोलाबाबूक प्रति अपार श्रद्धा छलैक। तेँ समय-समय पर भिन्न-भिन्न स्थान मे भिन्न-भिन्न संस्था द्वारा हिनक सम्मान ओ स्वागत संवर्द्धना होइत रहलनि। हिनके स्मृति मे सांस्कृतिक समिति मघेपुर द्वारा प्रकाशित 'स्मृति' नामक स्मारिका मे मिथिला दधीचि बाबू भोलालाल दास क जीवन वृत्त तिथि क्रमक रूप मे शीर्षकक अन्तर्गत विभिन्न संस्था द्वारा कयल गेल सम्मानक विवरण उपस्थित कयक गेल अछि, किन्तु विभिन्न अभिलेखक अनुशीलन सँ ताहि मे अनेक व्यतिक्रम बुझना जाइत अछि। जेना ३१ म संख्या क्रम मे कहल गेल अछि-'मैथिली साहित्य परिषदक सरिसव मे भेल वार्षिक अधिवेशन मे 'मिथिला दधीचि' उपाधि द्वारा सम्मान प्रायः १९५० ई०।' किन्तु मैथिली साहित्य परिषद क संक्षिप्त इतिहासक अनुशीलन सँ ज्ञात होइत अछि जे १९५० ई० मे परिषदक कोनो अधिवेशने नहि भेल छल।

वस्तुतः एहि सम्मानोपाधिक प्रसंग वास्तविकता किछु भिन्न अछि। भोलाबाबू क प्रसंग यावन्तो उपलब्ध पत्र-पत्रिका, स्मारिका ओ संकलिति ग्रन्थ सब केँ तकला-हेरला सँ जे प्रमाण उपलब्ध भेल से थिक मिथिलाक साहित्य, संस्कृति ओ समाजिक चेतना मंच संकल्प लोक लहेरियासराय द्वारा ८ एवं ९ जनवरी १९७७ ई० कऽ आयोजित विद्यापति स्मृति पर्वक अवसर, जहिया भोलाबाबू केँ उक्त संस्था द्वारा मिथिला-विभूति सम्मानोपाधि सँ अभिनन्दित कयल गेल छलनि, तहिये हिनक अति संक्षिप्त परिचय, जे आवरण सहित कुल १२ पृष्ठ क छल, सेहो प्रचारित कयक गेल छल। आ ताही परिचय मे मैथिली-साहित्य-दधीचि शब्दक प्रयोग कयल गेल छल। हिनक मृत्यूपरान्त अगस्त १९७८ ई० मे आल इण्डिया मैथिल संघ कलकत्ता द्वारा व्यक्तित्व ओ कृतित्व नाम सँ स्व० भोला बाबू ओ स्व० राजेश्वरझा क व्यक्तित्व ओ कृतित्व पर प्रकाश देबाक हेतु श्री राजनन्दन लाल दासक सम्पादकत्व मे ८० पृष्ठक एक

पुस्तक प्रकाशित भेल जाहि मे भोलाबाबू क चित्रक नीचाँ 'मिथिला-दधीचि' छपल भेटैत अछि तथा ओहि पुस्तक मे हिनक ममियौत श्री दिनेश्वर लाल 'आनन्द' क एक लेख सेहो छपल अछि जकर शीर्षक छैक 'मैथिलीक दधीचि बाबू भोलाललदास'। एतावता निष्कर्ष ई बहराइत अछि जे सर्वप्रथम संकल्प लोक, लहेरियासराय सैह मैथिली साहित्य दधीचि विशेषणक प्रयोग हिनका नामक संग कयने छल। ऐही विशेषण केँ क्यो मिथिला दधीचि वा मैथिलीक दधीचि आदि भिन्न-भिन्न रूप मे प्रयोग करैत रहलाह अछि।

एहिना स्मृतिक उपर्युक्त शीर्षक क ३३ क क्रम संख्या मे सेहो भ्रान्ति परिलक्षित होइत अछि। ओहि मे उल्लिखित अछि—अखिल भारतीय मिथिला संघ कलकत्ता द्वारा अभिनंदन १९६० ई०। एहू सूचनाक प्रामाणिकता संदिग्ध अछि। १९६८ ई० क दिसंबर मास मे अखिल भारतीय मिथिला संघ, कलकत्ता, मैथिली केँ सांवैधानिक मान्यताक लेल एक विचार गोष्ठी आयोजित कयने छल जाहिमे भोलाबाबू केँ सेहो आहूत कयने छलनि आ ताही अवसर पर अभिनन्दित सेहो कयने छलनि। अतः उक्त शूचना केँ अखिल भारतीय मिथिला संघ, कलकत्ता १९६८ ई० मानब समीचीन होयत।

भोला बाबू क सम्बन्ध मे प्रकाशित ओ उपलब्ध समस्त रचनाक अन्वेषण सँ ज्ञात होइत अछि जे हिनक सम्मान ओ संवर्द्धना सर्वप्रथम मिथिला-साहित्य-संस्कृति-संस्थान, दरभंगा द्वारा २९ अक्टूबर १९६८ कऽ कयल गेल छलनि। एकर अध्यक्ष छलाह प० गिरीन्द्र मोहन मिश्र, उपाध्यक्ष स्व० धर्मलाल सिंह, सचिव श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर, तथा आचार्य श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन', डा० श्री कांचीनाथझा 'किरण' तथा प्रो० श्री कृष्णकान्त मिश्र सदस्य छलाह। एकर कार्यालय दरभंगा गोशाला मे छलैक तथा एकर प्रेरक छलाह स्व० धर्मलाल सिंह। ई संस्था मिथिलान्तर्वर्ती मैथिली, हिन्दी तथा संस्कृत मे सँ कोनो एक विशिष्ट ग्रन्थ पर

क्रमशः प्रतिवर्ष पाँच सय टाकाक पुरस्कार तथा कोनो एक विशिष्ट साहित्य सेवी कें विद्यारत्न उपाधि सँ विभूषित करैत एक प्रशस्तिपत्र सेहो देबाक प्रावधान कयने छल। तदनुसार उपर्युक्त तिथि कें तत्कालीन केन्द्रीय संसदीय मंत्री स्व० रामसुभग सिंह 'चाणक्य' महाकाव्य पर स्व० दीनानाथ पाठक 'बन्धु' क पिता कें तथा विद्यारत्न उपाधि सँ भोलाबाबू कें सम्मानित कयने छलथिन, जकर सूचना १० नवंबर १९६८ क 'मिथिला-मिहिर' सँ प्राप्त होइत अछि।

तदुत्तर ओही वर्ष चेतना समिति मुख्य अतिथिक रूप मे आमंत्रित कऽ सम्मान प्रदर्शित कयने छलनि जकर चर्च भोलाबाबू अपन 'संस्मरण' नामक ग्रन्थ मे कयने छथि। पुनश्च ओही वर्ष दिसम्बर मे 'अखिल भारतीय मिथिला संघ' कलकत्ता, सम्मानित कयने छलनि जकर उल्लेख पूर्वहि प्रसंगात् कयल जा चुकल अछि। मैथिली एकेडमी, प्रयाग द्वारा १६ मई १९७१ कऽ अभिनन्दन तथा ओही वर्ष चित्रगुप्त सभा, पटना द्वारा 'मिथिला सरोज' उपाधि सँ सम्मानित करबाक सूचना भेटैत अछि। ११ जनवरी १९७६ ई० कऽ बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना ताम्रपत्र प्रदान कऽ सम्मानित कयने छलनि तथा साहित्यकार कलाकार कल्याण कोष सँ तीन सय टाका मासिक वृत्ति दऽ वार्द्धक्य मे आजीविकाक व्यवस्था कऽ देने छलनि। एहि वृत्तिक प्रसंग ऑल इण्डिया मैथिल संघ, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित 'व्यक्तित्व ओ कृतित्व' नामक पुस्तक मे व्यक्त श्री दीनेश्वर लाल 'आनन्द' क कथन अवश्य भ्रामक छनि। ओ लिखने छथि—

"भोलाबाबू मैथिलीक प्रचार-प्रसार एवं विकासक हेतु जीवन होम कए देलन्हि' अपन ओकालतिक पैसा सँ हिन्दी लेखनक पैसा सँ मैथिलीक सेवा करैत रहलाह, कर्ज लय पत्रिका प्रकाशित करैत रहलाह। मुदा जखन मैथिलीक सेवा सँ किछु प्राप्ति होयबाक-किछु आर्थिक सुविधाक समय एलै तऽ हुनका दूधक माछी जकाँ विस्मरणक गर्त्त मे फेकि देल गेल

मुदा धन्य कही हिन्दी कें । हिंन्दिएक लेखनक बलें किछु अर्थोपार्जनक साधन सेहो भेलन्हि आ अन्त धरि राष्ट्रभाषा परिषद, पटनेक कृपा सँ दू सन्ध्या भोजन धरिक ठ्हार रहलनि। ओकालतिक दिन मे अर्जित कएल मकानक छाँह आ आरंभिक दिन मे हिन्दी सेवाक पुरस्कार स्वरूप राष्ट्र-भाषा परिषद, पटना सँ भेटैत ओ तीन सौ टाका मासिक वृत्ति। जँ से नहि रहितन्हि तँ कल्पना नहि कय सकैत छी जे हुनक की स्थिति भेल रहितन्हि।"

भ्रामक एहि दृष्टिएँ जे कोनो साहित्यकार कें जे वृत्ति भेटैत छनि से राष्ट्रभाषा परिषद सँ नहि, प्रत्युत बिहार सरकार एक साहित्यकार-कलाकार-कल्याण कोष स्थापित कयने अछि जाहि सँ एहि प्रकारक वृतिक व्यवस्था होइत छैक। एहि कोषक संचालनार्थ एक समिति गठित छैक। ओहि समिति मे भिन्न-भिन्न क्षेत्र सँ सदस्य मनोनीत होइत छथि। ओ समिति जनिकर अनुशंसा करैत छनि तनिका ई वृत्ति प्राप्त होइत छनि भोलाबाबू कें जहिया ई वृत्ति भेटय लगलनि तहिया आचार्य श्री सुरेन्द्र-झा 'सुमन' उक्त समितिक सदस्य छलाह। हिनके प्रस्ताव ओ अनुशंसा सँ ओ वृत्ति आरंभ भेल छलनि। मैथिलीक अन्यान्यो साहित्यकार कें अन्यान्य रुपक सहायता उक्त कोष सँ भेटैत रहलनि अछि। भोलाबाबू क ख्याति हिन्दी सँ नहि, मैथिलीए सँ रहलनि अछि। हँ उक्त समितिक सचिव, पदेन राष्ट्रभाषा परिषदक निदेशक रहैत अयलाह अछि। तें प्रायः श्री दिनेश्वर लाल 'आनन्द' कें एहन भ्रम भेल होइनि। ई तथ्य आचार्य श्री सुमनजी क साक्षात्कार सँ ज्ञात भेल अछि। हँऽ राष्ट्र-भाषा परिषद द्वारा जे ताम्रपत्र प्रदान कयल गेलनि से हिन्दीक सेवा कें दृष्टि मे राखि, से १९७६ ई० मे, परन्तु उक्त वृत्ति तकर पूर्वहि सँ भेटि रहल छलनि।

संकल्प लोक लहेरियासराय द्वारा जे १९७७ मे सम्मानोपाधि प्रदान कयल गेलनि तकर उल्लेख पूर्वहि कयल जा चुकल अछि। विभिन्न संस्था

द्वारा जे सम्मान संवर्द्धना भेलनि से तँ भेबे कयलन्हि, सर्वोपरि सम्मान हिनक जीवन काल मे मैथिलीक एहने सारस्वत-साधनारत तपस्वी आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' अपन परम यशस्कर काव्य संकलन 'पयस्विनी' जाहि पर साहित्य अकादमी पुरस्कार सँ पुरस्कृत कयल गेलाह जाहि त्रिमूर्ति कें समर्पित कयने छथिन ताहि त्रिमूर्ति मे ओज गुणक प्रतिमान बाबू भोलालाल दासजी सेह छथि। सुमनेजी क शब्दमे—

विधि हरि—हरक त्रिमूर्ति सृष्टि पालन संहारण
प्रति प्रसाद-माधुर्य-ओज गुणक्रम निर्द्धारण
सूर्य, चन्द्र ओ अनल सदाशिव विदित त्रिलोचन
मातृ शिशुक नव उत्थानक आधार शिलाधन
कविवर, कविशेखर विदित भोलालाल अमोल जे
जेठ-जेठ गुन, तत्समक सगुन अभयगुन घोल से।

एहि त्रिमूर्ति मे भोलाबाबू भेलाह शिवक तेसर आँखि, ओज अथवा अभयताक प्रतिमूर्ति। पुनश्च तीनू व्यक्ति क पृथक पृथक गुण वैशिष्ट्य वर्णन क्रम मे भोलाबाबू क प्रसंग कथित उक्ति—

जनिका नहि परबाहि अहि क्यौ कहौ बताहो
मैथिलीक हित लड़बे उचित पहिरि सन्नाहो
जे विधान-विद्वान, सुकवि, सम्पादक, वक्ता
उभय भारती मिथिला हित निज जे अधिवक्ता
दास मैथिलिक लाल छथि जे अमोल भोला भला
माथ मातृभाषाक नहि झुकओ, कटओ बरू निज गला।

तदुत्तर हुनक मृत्युक बाद सांस्कृतिक समिति, मधेपुर द्वारा हुनका स्मृति मे 'स्मृति' नामक स्मारिका प्रकाशित कऽ जे सम्मान प्रदर्शित कयने अछि सेहो स्तुत्य अछि।

मातृभाषाक प्रति अनुपम प्रेम ओ उदारशयता

भोलाबाबूक हृदय मे मातृभाषाक प्रति कतेक अनुराग छलनि तकर ज्वलन्त उदाहरण थिक हिनक 'अक्षरों की लड़ाई' नामक पुस्तक, जे हिन्दी संसार मे अतिचर्चित रहलनि। अतिचर्चित शब्दक प्रयोग एहि हेतु भेल अछि जे २१-७-१९४४ ई० मे सेण्ट्रल प्रोविंस आबेरारक डी० पी० आई० पुस्तकालय एवं विश्वविद्यालय हेतु पहिने एकरा स्वीकृति देलथिन तखन ओही वर्षक दिसम्बर मे बिहारक शिक्षा विभाग सेहो एकरा स्वीकृति प्रदान कयलक। ई पोथी तँ अछि हिन्दी मे, किन्तु उदाहरण मे महाकवि गोविन्ददासक अनेकानेक पदक उल्लेख करैत 'मेरी मातृभाषा मैथिली है' कहि गौरवक आभास देने छथि। ताहू सँ विलक्षण बात ई जे ई पुस्तक अपन ममतामयी माता केँ सर्मपित कयने छथि जनिक मृत्यु १९३० ई० मे भेल छलनि। समर्पण पद्य अछि—

"जननि सकल शब्दार्थ गुरु, जानि संतमणि रूप
अतिश्रम सँ निर्म्मित करी, स्मृति-पथ ई लघुकूप"

यद्यपि हिन्दीक अन्यान्य पुस्तकक चर्चा एहि पुस्तक मे विस्तारक भय सँ संभव नहि भऽ सकल अछि, किन्तु जें एहि पुस्तकक समर्पण मैथिली मे तथा कतिपय उदाहरण मैथिली मे अछि, संगहि भोला बाबू एहि पुस्तकक भूमिका मे हिन्दी एवं मैथिलीक संग अपना सम्बन्धक प्रसंग बहुत स्पष्टता सँ विचार अभिव्यक्त कयने छथि तैं एकर चर्च करब एतय अपेक्षित बूझि पड़ल। जेँ हेतु आब ई पुस्तक दुष्प्राप्य भऽ गेल अछि तेँ कनेक विस्तृत होइतो भूमिकाक किछु अंश उद्धृत करब उपादेयताक दृष्टि सँ समीचन होयत। भोलाबाबू एकर भूमिकाक क्रम मे लिखने छथि—

"पुस्तक की दूसरी विशेषता है, इसका पद्यभाग। प्रायः प्रत्येक अक्षर पर बहुधा लड़ाइयों के अन्त में ऐसे पद्य उद्धृत हुए हैं, जिसके सारे शब्द या कम से कम प्रत्येक पंक्तियाँ चरण के शब्द उसी खास अक्षर से

आरम्भ होते हैं। मुझे दुख है कि ऐसे पद्य मुझे हिन्दी के बहुत कम मिले। यहां के पूज्य श्रीयुत धरणीधरजी वकील साहेब ने बाबा नानक की रचनाओं में से ऐसे पद्य देने का वादा किया था और उन्होंने इसका भरसक प्रयास भी किया। जिस हेतु मैं उनका कृतज्ञ हूँ, किन्तु विदित होता है, बाबा नानक की रचनाओं में ऐसे पद्य नहीं है। विवश होकर मुझे मैथिली के महाकवि गोविन्द दास जी तथा एकाध और कवियों की रचनाओं से ही सन्तुष्ट होना पड़ा है। एक आध पद्य मैंने अपना भी रखने का प्रयास किया है।.......

अन्त मे एक बात अपने विषय में कहना जरूरी समझता हूँ। मेरी मातृभाषा मैथिली है। कुछ दिन पहले मैं इसके सरस और विशाल साहित्य से अनभिज्ञ रहने के कारण इसकी सेवा का विरोधी था। स्कूल कालिजों में इसकी अद्भुत सामग्रियों से मुझे भेंट नहीं हुई थी, किन्तु आज से १४-१५ वर्ष पहले इसके वयोवृद्ध साहित्य-सेवी मुंशी रघुनन्दन दास जी की दीक्षा से मैंने इस निर्वासिता मैथिली का पता पाया और तबसे इसका निरन्तर अध्ययन करता आया। मेरे लिए एक नवीन दुनिया दृष्टिगोचर हुई। मैंने इसके महत्त्व को शीघ्र देखा और कर्त्तव्य-बुद्धि से इसकी ओर भी ध्यान देना शुरु किया। किन्तु अपनी अनेकानेक अयोग्यताओं और अक्षमताओं के कारण इसकी यथोचित सेवा नहीं कर सकता हूँ तो भी मैं जो कुछ इसकी नगण्य सेवा किया करता हूँ उससे दुर्भाग्यवश बिहार के कुछ हिन्दी प्रेमियों को मेरे विषय में कुछ मिथ्या धारणाएँ टोंच रही हैं। उनसे केवल इतना ही निवेदन है कि मेरी योग्यता चाहे जैसी अल्प हो, किन्तु मैं भी अपने को हिन्दी का कम हिमायती नहीं मानता। भेद इतना ही है कि मैं उनके समान मैथिली को तुच्छ या हिन्दी का एक प्रभेद या उसका शत्रु नहीं मानता हूँ। यदि इस पुस्तक से ऐसे लोगों का मैथिली प्रेमियों के विषय में कुछ भी भ्रम दूर हुआ तो मैं भी अपने परिश्रम को कम सफल नहीं समझूँगा।"

एहि उद्धरण सँ भोला बाबूक राष्ट्रवादिताक संग मातृभाषाक प्रति अगाध प्रेमक प्रमाण तँ भेटिते अछि, संगहि हिनक विनम्रता ओ निरहंकारिताक झलक सेहो भेटि जाइत अछि। जाहि भोलाबाबूक मृत्युक उपरान्त प० श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' अपन श्रद्धांजलिक शीर्षक देने छलथिन

मैथिली—भोलाबाबू=शून्यः मैथिली+भोलाबाबू=अस्तित्व ३ वस्तुतः एक मात्र भोलाबाबू केँ छाँटि देल जाय तँ श्री अमरेजीक शब्द मे—

"मानय पड़त जे कवीश्वर चन्दा झा जँ नष्ट होइत मैथिलीक बीज केँ सुरक्षित राखि ओकरा अंकुरित कयलनि तँ म० म० मुरलीधर झा ओहि अंकुर केँ समुचित आलन दऽ मचान धरि चढ़यबाक हेतु कोड़ियबैत आ पानि पटबैत रहलाह। किन्तु आइ ताहि मैथिली लता केँ जाहि वितान पर लतरल-चतरल देखि रहल छी आ जकर फल लुप-लुप तोड़ि टुप-टुप खा रहल छी ताहि मचान केँ ठाढ़ करबा मे भोलाबाबू केँ अपन सर्वस्व लगा देबय परल छलनि। अतः अतिशयोक्ति नहि, सर्वांशतः यथार्थ जे वर्तमान मैथिली साहित्यक इतिहास मे मैथिली केँ संजीवनी दऽ पुनः शक्ति प्राप्त करौनिहार साधक लोकनिक पंक्ति मे सब सँ पहिल अंकित करबाक योग्य यदि कोनो व्यक्ति-वाचक संज्ञा भऽ सकैत अछि तँ से संज्ञा थीक बाबू भोलालाल दास।" ४

वस्तुतः मैथिली केँ एक भाषाक रूप मे स्वीकृति देऔनिहार लोकनि मे सर्वप्रथम नाम भोलेबाबूक लेब, मिथिलेशोक नाम तकर बादे लिखल जायब न्यायोचित होयत, किन्तु भोलाबाबू कतेक विनम्र ओ विशाल हृदयक छलाह तकर परिचय मिथिला संघ केँ लिखल एक पत्रोत्तर सँ भेटैत अछि। ओ लिखने छलथिन :

३—मि० मिहिर, २८-८-७७

४—स्मृति, पृ०-२२

"जाहि आन्दोलनक उत्पत्ति आ विकास चाहैत छी से वस्तुतः मैथिली भाषाक एवं साहित्यक वर्त्तमान इतिहास थिक। ई मानव भ्रम थिक जे हमहि एकर जनक वा कर्त्ता-धर्ता तमिस्रहा छी। यथार्थ पूछल जाय तँ एकर पृष्ठभूमि सँ नखलोमादि पर्यन्त अनेकानेक महान व्यक्तिक प्रेरणा, सम्मति एवं सहयोग भेटैत रहल छल।"

आजीविका—

पूर्व मे कहल जा चुकल अछि जे भोलाबाबू अपन अभिप्सित शिक्षा प्राप्त करबाक उद्देश्य सँ बीच-बीच मे मध्य विद्यालय, उच्च विद्यालय तथा 'चान्द' हिन्दी मासिक क स्थायी लेखक तथा अस्थायी सम्पादक क रूप मे आजीविकाक हेतु सेवा-निरत रहलाह। यदि ई अध्यापने वृत्ति केँ अपनौने रहितथि तँ ताहू मे पूर्ण यशोपार्जन कऽ सकैत छलाह। एहि कथनक आधार ई अछि जे १९१७ ई० मे स्नातक परीक्षोत्तीर्ण भेलाक बाद तथा पिताक मृत्यु क उपरान्त बेतिया राज स्कूल मे अध्यापक पद पर नियुक्त भेलाह। ओतय तीन वर्ष अध्यापकक जीवन समाप्तो कयना नहि भेल छलनि कि उक्त स्कूलक प्रबन्ध समिति हिनक अनुशासन-प्रियता, अध्यापन दक्षता, कार्य-कुशलता ओ कर्त्तव्य-निष्ठता सँ अनुप्राणित भय, प्रधानाध्यापक क पद पर प्रतिष्ठित करबाक निर्णय लेलक। किन्तु ई तँ विधिवेत्ता बनि देशक कार्य मे अपन जीवन अर्पित करबाक लक्ष्य बना चुकल छलाह। अतः एहि जीविका केँ जीविका नहि मानि, अपन अभीप्सित शिक्षा प्राप्तिक दिशा मे पुनः लागि गेलाह। १९२४ ई० मे ई अपन लक्ष्य क अनुसार एल्० एल्० बी परीक्षा मे उत्तीर्णता प्राप्त कयलनि। तदुत्तर आजीविकाक रूप मे ओकालति आरंभ-कयलनि। प्रखर प्रतिभा, सूक्ष्म दृष्टि, अथक परिश्रम आदि गुणक प्रभावेँ ओकालति मे जमैत हिनका अधिक समय नहि लगलनि।

ओकालतिओ जमि कऽ ई ४-५ वर्ष मात्र कऽ सकल होयताह कि एही अवधि मे एक दिस मैथिली भाषा कें पूर्ण रूपें कोन उपाय सँ विकसित कयल जा सकैत अछि एहि विचार-मन्थन मे लागल रहलाह तथा "हिन्दू लॉ में स्त्रियों के अधिकार" नामक वृहत् ग्रन्थक रचना सेहो करैत रहलाह। १९२९ ई० मे जखन 'मिथिला' मासिक क प्रकाशन पुस्तक भंडार सँ आरंभ भेलैक तँ चित्त दू दिस बँटि गेलनि। फलतः ओकालति मे सम्पूर्ण समय देब संभव नहि रहि गेल होयतनि। एहि अल्पे अवधिक ओकालति मे लहेरियासराय मे एक तख्त जगह पर जमीन किनब तथा अपन आवासगृह बना लेब एहि सँ हिनक ओकालति सँ होइत आयक अनुमान लगाओल जा सकैत अछि। 'मिथिला' क सम्पादक मण्डली मे वरिष्ठ सम्पादक कहबाक हेतु तँ पं० कुशेश्वर कुमर छलाह, किन्तु बेसी खटय पड़ैत छलनि भोलेबाबू कें, जे हिनके कथन सँ स्पष्ट अछि। ई अपन संस्मरण मे लिखने छथि—

"सम्पादक क भार मुख्यतः हमरे ऊपर छल, कुमरजी क्वचिते कदाचित् लिखै छलाह जे कि मिथिलाक सम्पादकीय लेख, टिप्पणी तथा आनो लेख इत्यादि सँ प्रत्यक्ष अछि।"

फलतः आजीविकाक जे मुख्य स्रोत छलनि ओकालति ताहि मे क्रमशः ढिलाइए होइत गेलनि। पत्रकारिता सँ आयकेर कोन प्रश्न, प्रत्युत् आयक अन्यो स्रोत मे स्खलने होइत छलनि।

मैथिलीक उद्धारक प्रसंग चिन्तन मे जहिना-जहिना प्रगाढ़ता अबैत गेलनि, ओकालतिक दिस सँ मनोयोग मे तहिना-तहिना ह्रास होइत गेलनि। मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना तदुत्तर तकर मन्त्रित्वक भार, तकर बाद स्वीकृतिक हेतु संघर्ष मे ताहि रूपें सन्नद्ध भऽ गेलाह जे आजीविका केर सुधिए नहि रहि गेलनि।

१९३९ ई० मे संघर्ष मे विजय प्राप्तिक बाद १९४० ई० मे मैथिली साहित्य परिषदक मन्त्रित्व हिनका हाथ सँ लऽ लेल गेलनि किन्तु ई

पलटिकऽ ओकालति मे नहि गेलाह तकर कारण जे अपन ओकालतिक आय सँ लहेरियासराय मे पैर रोपबाक जे स्थान बनौने छलाह, भारती मासिक पत्रक प्रकाशनक समस्त आर्थिक भार माथ पर पड़ि गेलाक कारणेँ ताहि कर्ज सँ मुक्त होयबाक लेल मकान सेहो भरना पड़ि गेलनि। एक दशक धरि सम्पादन, लेखन, प्रकाशन आदि कार्य मे सतत लागल रहलाक कारणेँ एहि सब दिस प्रवृत्ति बढ़िए गेल छलनि तेँ भविष्य मे आजीविकाक हेतु ई लेखन आदि काज आरंभ कयलनि। श्री दिनेश्वर लाल 'आनन्द' 'व्यक्तित्व-कृतित्व' मे लिखने छथि—

''अन्त मे दरभंगा छोड़ि ई पुनः हिन्दी लेखकक रूप मे युनाइटेड प्रेस लि०, पटना मे प्रकाशन विभागक प्रभारी बनि कय पटना अयलाह। एहिठाम रहैत हिन्दीक कतेको पाठ्य पुस्तक ई लिखलन्हि तथा सम्पादन कयलनि। 'हिन्दी व्याकरण के सिद्धान्त', 'व्याकरण कलाधर' आदि पुस्तक खूब प्रचलित भेल।''

स्मर्तव्य जे जाहि समय मैथिली साहित्य परिषद केँ सुदृढ़ करबा मे तथा मैथिली केँ स्वीकृति दिअयबाक संघर्ष मे लागल छलाह ताहू मध्य पुस्तक भन्डारक सम्पर्क मे रहलाक कारणेँ 'भारतवर्ष का इतिहास' लिखने छलाह। ओहि समय मे प्रकाशक पाठ्य ग्रन्थ मे सामान्यतः लेखकक नाम नहि छपैत छलैक तथा लेखक केँ पारिश्रमिकक रूप मे हथउठाई जकाँ किछु दऽ दैत छलैक, किन्तु ओहि संघर्षक काल मे जीवन निर्वाह मे उक्त इतिहासक लेखन बहुत किछु सहायक भेल छलनि।

युनाइटेड प्रेसमे जखन लेखकीय काज मे लागल छलाह ताहि समय मे एक सुयोग हिनका हाथ लगलनि जाहि प्रसंग आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' क शब्द मे निम्नांकित तथ्य पर प्रकाश पड़ैत अछि। श्रीयुत सुमनजी लिखने छथिन—

"संयोगवश ओही क्रम मे बिहार सरकार द्वारा आहूत प्रारंभिक शिक्षाक ऐतिहासिक पाठशाला मे अपन किछु पुस्तक स्वतन्त्र रूपें पठौलनि। किछु दिन पूर्व जकर हस्तलिपि सय-सैकड़ा मे कोनो प्रकाशक लेबा लेल नहि प्रस्तुत छल से स्वीकृतिक पत्र पाबि हजार-हजार देबा लेल आग्रही भऽ गेल। एक श्रमिक लेखकक चित्त डगमगायल, प्रकाशनक झंझट सँ कापीराइट देबाक विचार मन मे आयल। किन्तु दोसरे क्षण साहसी हृदय भोलाबाबू स्वयं प्रकाशन मे जुटि गेलाह। इण्डियन नेशनक मैनेजर उपेन्द्र आचार्यजी कागजक सुविधा देलथिन, प्रेसो प्रस्तुत भेल। अन्ततः पुस्तक छपि कऽ प्रस्तुत भऽ गेल। स्थिति मे तेना त्वरितवेग सँ परिवर्तन आयल जे भोलाबाबू दैन्यक 'दास' सँ सम्पन्नताक लाल बनि गेला। जमीन, भवन, प्रेस सब सहजहि किनलनि। भोला बाबूक मुँह सँ सुनल अछि जे पुस्तक विक्रेताक नोट गनबाक मौका नहि होनि। नोटक गड्डी टा गनि सकथि। पटना-भागलपुर-बनारस एक संग संस्करण पर संस्करण छपय लागल।"[5]

एहि प्रकारें भोलाबाबू सिद्धार्थ प्रेस नाम सँ एक प्रेस तथा अभिनव ग्रन्थागार नाम सँ एक प्रकाशन संस्था स्थापित कऽ स्वयं प्रकाशक बनि गेलाह। सरस्वतीक आराधना करैत-करैत लक्ष्मीक कृपा कोन रूपें हिनका पर भेलनि से उपरिलिखित उद्धरण सँ स्पष्ट अछि। किन्तु व्यापार तँ व्यापार थिकैक। एहिमे शीलमन्त भेला सँ काज नहि चलैत छैक। एहि मे संस्कृतक जे एक बहुप्रचलित नीतिक वाक्य खण्ड छैक—"आहारे व्यवहारे च त्यक्त लज्जः सुखी भवेत्" तकर अक्षरशः पालन करब अनिवार्य होइत छैक। भोलाबाबू मे ज्ञानक गंभीरता, चिन्तनक विशदता, उत्साहक अदम्यता, संघर्ष लय धीरता, मातृ-भाषाक उद्धार हेतु अन्तःकरण मे आगि तथा समग्र राष्ट्रक

5—स्मृति, पृ०-१२ प्र०—सांस्कृतिक समिति, मधेपुर

उत्थान हेतु व्यग्रता सब किछु छलनि, परन्तु व्यवसाय मे जे स्पष्टता चाही से उदार-शयता ओ संकोचशीलताक कारणेँ नहि छलनि, तेँ श्री दिनेश्वर लाल 'आनन्द' क ई उक्ति—

''व्यवसाय तँ कएलन्हि, मुदा व्यावसायिक बुद्धिक सर्वथा अभाव छलन्हि। कए गोट नीक पुस्तक सभक प्रकाशन सेहो कएलन्हि। मुदा व्यवसाय मे घाटा लगलन्हि। जतेक पाइ छलन्हि बहुतो गोटा ठकि लेल-कन्हि आ बहुतो मोकदमा मे तथा घाटा मे नष्ट भए गेलन्हि। कोनो टा स्थायी काज नहि कए सकलाह। पटना मे एकटा मकानो धरि नहि लए सकलाह, ने लहेरियासराय बला मकानक पुनर्निर्माण कए सकलाह।''[6]

हिनक आर्थिक स्थिति केँ पुनः बिगड़बाक कारण पर प्रकाश दैत श्रीयुत सुमनजी लिखैत छथि—''पुनः भोलाबाबू लक्ष्मीक पर्यंक सँ सरस्वतीक कुशशय्या पर फिरि अयलाह। पुनः वैह संघर्ष, वैह साधना, वैह भाव-अभाव, वैह श्रम-आराधना।''

अन्त मे बिहार सरकारक वैह साहित्यकार-कलाकार-कल्याण कोष सँ प्राप्त तीन सय टाका मासिक वृत्ति तथा 'मैथिली व्याकरण प्रबोध' नामक लिखल मैथिली व्याकरणक पुस्तक सँ यदा कदा चटकल ताबा पर पड़ल बुन्द जकाँ किछु प्राप्त भऽ जाइत छलनि जाहि सँ नोन रोटीक जोगार होइत जाइत छलनि। एहि अन्तराल मे जेना तेना लहेरिया-सरायक मकान जे भरना पड़ल छलनि सेहो कतेक संघर्षक बाद कोहुना पुनः हस्तगत भऽ सकलनि एवं जीवनक शेष भाग ओही मकान मे बितौलनि।

भोलाबाबू मैथिलीक हेतु सब सँ अधिक कट्टर होइतो हृदय सँ राष्ट्रवादी छलाह आ तेँ अनुभव करैत छलाह जे एहि देशक हेतु राष्ट्र-

---

6—व्यक्तित्व-कृतित्व, पृ०-१२ प्र०—ऑल इण्डिया मैथिल संघ, कलकत्ता

भाषा होयबाक योग्यता यदि कोनो भाषा केँ छैक तँ से हिन्दीये केँ भऽ सकैत छैक आ ताही कारणेँ ओ हिन्दीक विरोध नहि कयलनि। यद्यपि हिन्दीक समर्थक लोकनि मैथिली केँ आत्मसात करबाक प्रयास मे सतत लागल रहलाह। एकरे प्रतिक्रिया स्वरूप मैथिलीक समर्थक लोकनिक कहब छनि जे हिन्दीक विरोध सम्पूर्ण मिथिलांचल मे ओहिना होयबाक चाही जहिना तमिलनाडु इत्यादि स्थान मे होइत अछि। किन्तु हुनक धारणा छलनि जे हिन्दीक विकास सँ मैथिलीक विकास मे कोनो बाधा तत्त्वतः नहीं छैक। मैथिलीओ केँ अपन उचित अधिकार प्राप्त होइक, 'एकरो ओ राष्ट्रीय विकासेक एक आवश्यक अंग मानैत छलाह। अस्तु।

शिक्षाक क्षेत्र मे मैथिली केँ अधिकार प्राप्त भेना लगभग आध शताब्द होमय जा रहल अछि तथापि केवल मैथिली साहित्यक सेवा सँ एखनहुँ आजीविका क्यो चला रहल होथि से स्थिति उत्पन्न नहि भेल अछि। एहिठाम श्री यात्रीजीक 'पृथ्वी ते पात्रं' निबन्धक ओ उक्ति स्मरण होइत अछि जे ओ पटना कालेजक किछु छात्रक समक्ष व्यक्त कयने छलाह। ओ कहने छलथिन—

"बउआ! अहाँ लोकनि केँ होइत होएत जे पाँचोदस बीघा खेत यात्रीजी केँ अवस्से हेतनि—तखन किए सदिखन हिन्दी टा खड़रैत रहै छथिन्ह। किए नहि वेशी सँ वेशी अपने भाखा मे लिखइ छथि यात्रीजी? किए एना बउआएल घुरै छथि पूब पश्चिम? ....से हमरा तीनिए कट्ठा खेत अछि बउआ, धन्य हिन्दी जे पाँच छओ गोटाक पेट चलैए। से हिन्दीओ गद्य लिखई छी तेँ निमहैऐ ने तऽ अगबे कविवर भेने चारिओ दिनुका खोरिस की जुमैत?"

से अन्ततः अपन सर्वस्व झोंकि, मैथिली केँ शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत कराय, एकर विकासक बाट केँ प्रशस्त कऽ आजीविकाक हेतु

भोलाबाबू सदृश समर्पित व्यक्ति पर्यन्त केँ हिन्दीक शरण लेबय पड़लनि, ई मैथिली भाषी लोकनिक हेतु कतेक ग्लानिक विषय थीक से गंभीरता सँ चिन्तन करबाक योग्य अछि।

मृत्यु—

ओना भोलाबाबू संघर्षरत जीवन मे सदा अस्त-व्यस्त रहलाह। प्रगतिशील विचारक होइतो आध्यात्मिकता रोम-रोम मे रमल छलनि। पूजा-पाठ, खान-पान आदि मे जहिना समय बद्धताक निर्वाह करैत छलाह तहिना आत्म संयम सेहो बहुत करैत छलाह। व्यसन मे व्यसन एक मात्र हुक्का पीबाक छलनि। श्री दिनेश्वर लाल 'आनन्द' हुनक स्वास्थ्य-संयम आदिक प्रसंग लिखने छथि—

"भोलाबाबू जे किछु छलाह से अपने बल पर। छात्र जीवन सँ अन्त-धरि ई प्रतिकूल परिस्थिति सँ संघर्ष करिते रहलाह।......चाहे किछु भए जाइ ओ अपन नित्यक ध्यानपूजा अवश्य सम्पन्न करैत छलाह।...... ओ पूर्ण संयमी छलाह। संयमेक कारण ओ सदा स्वस्थ रहथि, बीमार पहिने साइते कहियो पड़ल होएताह। अन्तिम दू-तीन वर्ष मे, विशेष कय जखन सँ एपेण्डेसाइटिसक दौरा पड़लन्हि तखन सँ स्वास्थ्य कमजोर भए गेलन्हि। एहू मे ८२-८३ वर्षक आयु मे एपेंडेसाइटिसक आपरेशन सफल होएब आ तकरा पश्चात् स्वास्थ्य लाभ करब सेहो मामूली बात नहि। ई हुनक प्रबल इच्छा शक्तिक परिचायक छल।"

'स्मृति' स्मारिका मे हिनक आहार ओ संयमक प्रसंग हिनक पुत्र श्री जगदीश प्रसाद कर्ण लिखने छथिन—

"हुनका आगू स्वादिष्ट भोजन कतबो अधिक मात्रा मे राखि देल जाइन्ह तऽ ओ ओही मे सँ अपन भोजनक दैनिक नियम मात्राक अति-रिक्त किन्नहु नै ग्रहण करितथि। नापल-तौलल-निर्धारित भोजन। हम बीमार पड़ि जाइ आ पिताजी केँ दीर्घ काल धरि अपन स्वास्थ्य मे एके

रंग सन्तुलित आ पुष्ट देखियैन्ह । आगू चलि कय हुनक भोजन-शयन, आहार- विहारक सन्तुलन देखि हमरा आन्तरिक ईर्ष्या होअय । रोग हुनका ताबत धरि नहि आक्रमण केलकनि यावत् अनिवार्य रूपेँ ओ चिन्ता, परिश्रमक अधिकता आ वृद्धावस्था सँ घिरि विवश नहि भऽ गेलाह । तैयो डी० एच्० लारेन्स जकाँ हुनक स्वास्थ्य लाभ करबाक गति बड़ तीव्र रहैन्ह । फलतः ओ ककरो अपन सेवा करेबाक बहुत अवसर नहि देलथिन्ह । ''

तथापि श्रीमद्भगवद्गीताक वाक्य छैक--'जातस्य हि ध्रुवोः मृत्युः' एकरा के टारि सकैत अछि ? भोलाबाबू केँ गंगाक प्रति असीम आस्था रहनि । हुनक अभिलाषा रहनि जे अन्तिम समय गंगालाभ हो, यद्यपि से संभव नहि भऽ सकलनि । किन्तु अन्तिम समय मे गंगा गंगा करैत २८ मई १९७७ ई० तदनुसार ज्येष्ठ शुक्ल दशमी सनि अर्थात् गंगा दशहरा सन् १३८४ सालक राति मे ज्ञान पुरस्सर मृत्युक वरण कयलनि । एहि प्रकारेँ ८३ वर्ष ४ मास ओ १३ दिनक अपन दीर्घ जीवनक अवधि बिताय मैथिली माताक ई वरद सुपुत्र सदा सदाक हेतु परलोकवासी भऽ गेलाह ।

मृत्युक उपरान्त :—

भोलाबाबूक मृत्युक समाचार सुनैत देरी दरभंगा नगर मे रहनिहार मैथिली प्रेमी हिनक अन्तिम दर्शन करबाक हेतु अश्रु-सिक्त नयनें उपस्थित भऽ पुष्पमाल्य ओ पुष्पांजलि सँ चिरनिद्रालीन शरीर केँ आच्छादित कऽ देलथिन । हमरहु हुनक अन्तिम दर्शनक अवसर प्राप्त भेल छल ।

प्रान्तक विभिन्न दैनिक, साप्ताहिक पत्र-पत्रिका मे शोक समाचार, तथा संस्मरण आदि अनेक मास धरि प्रकाशित होइत रहल ।

'मिथिला-मिहिर' परिवारक दिस सँ श्री भीमनाथ झा (आब डाक्टर ओ प्राध्यापक) 'शक्ति-साधना-साहसक मूर्ति' शीर्षक सम्पादकीय मे हिनक अमर कीर्ति पर प्रकाश दैत लिखलनि—

"अपन गलोक मूल्य पर मातृभाषाक माथ कें सर्वत्र उन्नत देखऽ वला युवक 'भोला' अस्सी वर्षक भैयोकऽ कहियो बूढ़ नहि भेला, नश्वर शरीर छोड़ियो कऽ ओ मुइलाह नहि। जा धरि मैथिलीक माथ उठल रहत, हमसब रहब, ओहो रहबे करताह।"[7] पटना युवागोष्ठीक सुप्रसिद्ध मैथिली कथाकार ओ उपन्यास लेखक श्री प्रभास कुमार चौधरी क अध्यक्षता मे शोक सभा आयोजित कऽ हुनक कीर्तिक स्मरण करैत प्रेरणा लेबाक संकल्प लेलक।

वाराणसी सँ डॉ० श्री सुधाकान्त मिश्र शोक प्रकाश करैत लिखलनि जे मनीषी भोलालाल दास अपन लगनशीलता एवं कर्मठता सँ कठिआयल मैथिली कें भारतीय भाषा साहित्यक पंक्ति मे मांसल बना अग्रणी बनाओल।

कुमारिल वाचनालय, भट्टपुरा मे श्री बुद्धिनाथ मिश्र 'भङ्वेर' क अध्यक्षता मे शोक सभा आयोजित भेल।[8]

आल इण्डिया मैथिल संघ, कलकत्ता संघक अध्यक्ष श्री महावीर झा, अधिवक्ताक अध्यक्षता मे शोक सभा कयलक। चेतना समिति, पटनाक संयुक्त सचिव श्री गणेश शंकर खर्गा समितिक दिस सँ अपन वक्तव्य द्वारा शोक सन्देश व्यक्त कयलनि।

संकल्प लोक, लहेरियासराय तत्कालीन सांसद श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' क अध्यक्षता मे शोक सभा आयोजित कयलक। श्री सुमनजी श्रद्धांजलि अर्पित करैत भोलाबाबूक जीवन कें आधुनिक मैथिली साहित्यक

7—मिथिला मिहिर ५ जून १९७७

8—तत्रैव १२ जून १९७७

इतिहास कहलनि। कटिहारक चित्रगुप्त परिषद श्री सत्यानन्द दासक अध्यक्षता मे श्रद्धांजलि अर्पित कयलक।[9] एव क्रमे प्रयाग, कानपुर, दिल्ली, जयपुर, बोकारो, रांची, जमशेदपुर, धनबाद, गौहाटी, जनकपुर, काठमाण्डू आदि विभिन्न स्थान मे दू-तीन मास धरि भोलाबाबूक मृत्यु पर शोकसभा आयोजित कऽ एहि इतिहास पुरुषक प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित कयल जाइत रहल।

आब भोलाबाबू हमरा सभक बीच नहि छथि किन्तु हुनक यशः शरीर एखनहुँ समस्त मैथिली भाषीक हेतु आदर्श ओ प्रेरणाक स्रोत बनल अछि आ बनल रहत।

9—मिथिला मिहिर, ३ जुलाई १९७७

तृतीय अध्याय

मैथिली आन्दोलन ओ भोलालाल दास

आजुक परिवेश मे 'आन्दोलन' शब्द किछु एहन अर्थ मे रूढ़ भऽ गेल अछि जाहि सँ तोड़-फोड़, हो-हंगामा, नाराबाजी, सर्वसाधारणक कार्य-कलाप मे बाधा पहुँचायब, अनुशासन भंग करब, अपना दायित्व सँ विमुख भऽ अनको उत्तरदायित्व सँ विमुख करबाक हेतु बल प्रयोग करब, राष्ट्रीय सम्पत्ति केँ नष्ट-भ्रष्ट करब, यातायात आदि मे अवरोध ठाढ़ करब आदि आदि भाव प्रकट होइत अछि। किन्तु एहिठाम आन्दोलन शब्दक प्रयोग एहि सब अर्थ मे नहि कयल गेल अछि, प्रत्युत् एहि प्रकारक संघर्ष सँ अछि जे जनमानस सँ लय अधिकारी वर्ग धरिक मानस केँ ताहि रूपें दोलायमान कऽ देलकैक जाहि सँ न्याय, अधिकार तथा औचित्य दिस सभक ध्यान आकृष्ट भऽ सकलैक।

बाबू भोलालाल दास जीक शिक्षा प्राप्तिक क्रम प्रसंग मे कहल गेल अछि जे अक्षरारम्भ भेलनि तिरहुता मे, परन्तु प्राथमिक पाठशाला मे जखन नामांकन कराओल गेलनि तँ ओहिठाम ओहि मिथिलाक्षर तथा जाहि भाषा मे ओ अपन माय-बहिन, मातामह, माम, संग-समाज सभक बीच बजैत-भुकैत छलाह वा लोक केँ गप करैत देखैत-सुनैत छलथिन ताहि भाषाक चर्च मात्र नहि देखबा मे अयलनि, प्रत्युत् जाहि भाषाक माध्यम सँ पढ़ाओल जाय लगलनि से सब प्रकारेँ अनचिन्हार आ तें हृदयंगम करबा मे दुरूह प्रतीत होइनि। एहि हेतु क्षोभ तथा निराशा होइत छलनि। ताहि पर सँ 'सोधा' शब्दक अर्थ बोध मे व्यतिक्रम होयबाक कारणें गुरुजीक खरामक मारि, शिक्षा विभाग द्वारा अपन

मातृभाषाक उपेक्षाक विरुद्ध विद्रोहक एक चिनगी हिनका हृदय में सुनगा कऽ राखि देलकनि जे चिनगी भविष्य मे आबि ज्वालाक रूप धारण कऽ लेलकनि आ ओ ज्वाला ताबत धरि धधकैत रहलनि जावत धरि शिक्षा विभाग द्वारा मैथिली केँ एक स्वतन्त्र भाषाक रूप मे मान्यता नहि प्राप्त भऽ गेलैक। ईहो सत्य जे शिक्षा विभाग द्वारा मैथिली केँ एक स्वतन्त्र भाषाक रूप मे स्वीकृति प्राप्त भेलाक बाद ओहि ज्वालाक शमन किछु अंश मे अवश्य भेलनि, किन्तु ओकर सम्पूर्ण क्रियान्वयन नहि होयबाक कारणें, तज्जन्य जे कचोट से आजीवन बनले रहलनि।

मिथिलाक्षरक संरक्षण—

कहल जाइत छैक जे जखन जे भवितव्यता रहैत छैक तकरा घटित होयबाक संयोग सेहो तहिना लागि जाइत छैक। भोला बाबू केँ मातृभाषाक उद्धारक हेतु एक आन्दोलनकारीक रूप मे कर्मक्षेत्र मे उतारब नियति केँ अभीष्ट छलैक, तेँ देखबा मे अबैत अछि जे जाहि भोला बाबू केँ ताहि जमाना मे अपर प्राइमरी सँ लय प्रवेशिका परीक्षा धरि प्रथम श्रेणी प्राप्त होइत रहलनि तथा जाहि प्रसादेँ सरकारी छात्रबृत्ति पबैत विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्राप्त करबाक हेतु भागलपुर क टी० एन० बी० जुबिली कॉलेज मे नामांकन करौलनि से यदि आइ० ए० परीक्षा मे सेहो प्रथम श्रेणी प्राप्त भऽ गेल रहितनि तँ ओ छात्रवृत्ति बरकरार रहि जइतनि। तखन जे मुंगेर जिलान्तर्गत नयागाँव सिराजपुरक मध्य विद्यालय मे प्रधानाध्यापकक पद ग्रहण करबाक हेतु बाध्यता उपस्थित भेलनि से नहि होइतनि। से नहि भेल रहितनि तखन ओहि अध्यापन काल मे हिन्दीक बढ़ैत प्रचार केँ देखि मातृभाषा मैथिलीक विकासक प्रसंग जे हृदय मे निराशाक भाव बढ़ैत गेलनि से नहि होइतनि। ताहि प्रसंगे १९७७ ई० मे संकल्प लोक, लहेरियासराय द्वारा प्रकाशित स्मारिका मे व्यक्त हिनक विचार केँ उद्धृत करब विशेष प्रामाणिक होयत। भोला बाबू लिखने छथि—

"कालक्रमे मैथिलीक अभाव खटकिते नहि रहल, प्रत्युत् दिनानुदिन हिन्दीक प्रचार सर्वत्र देखि निराशा बढ़िते गेल एवं अन्त मे ई धारणा बद्धमूल भै गेल जे आब हिन्दीक समक्ष मैथिलीक उत्थान एक प्रकारेँ असंभव अछि। एकर प्रयासो उपहासास्पदे। आइ० ए० पास कयलाक बाद अर्थाभावें दू वर्ष पढ़ब छोड़ि मुंगेर जिलाक नयागाँव सिराजपुर गामक मिड्ल इंगलिश स्कूल मे प्रथम अध्यापकक काज कयल। एहि बीच मैथिलीक आनो किछु पुस्तक तथा पत्र-पत्रिकादि देखबाक सौभाग्य भेल। संगहि मैथिलीक लेखक, कवि, तथा सम्पादक गणक नाम सँ परिचित भेलहुँ—जयपुरक म० म० (?) विद्यावाचस्पति मधुसूदन (मिश्र?) झा, काशीक म० म० पं० मुरलीधर झा, दरभंगा क पं० योगानन्द कुमर, मुन्शी रघुनन्दन दास, मुन्शी गुणवन्तलाल दास, मुन्शी लाल दास, बभनगामाक स्व० पुलकित लाल दास 'मधुर', मुरहोक पं० यदुनाथ झा 'यदुवर', वनगामक पं० छेदी झा 'द्विजवर', बेतियाक पं० त्रिलोचन झा आदि। ततबे नहि सुपौल मैथिल महासभाक अधिवेशन मे स्वयं सेवक रूपेँ मधेपुरा हाई स्कूल सँ गेल छलहुँ और तकर समस्त कार्यवाही मैथिली मे देखलहुँ। एहि सब सँ किछु भरोस वा आशा तँ भेल, मुदा जखन स्वयं महाराजाधिराज मिथिलेश्वर केँ देवाक्षरेक शरणा-पन्न देखलियैन्ह तऽ ओ धारणा दृढ़तरे भेल।"

एहि उद्धरण सँ प्रतीत होइत अछि जे जाहि मिथिलाक्षर मे हिनक अक्षरारम्भ भेल छलनि तकर प्रयोग मैथिल महासभा सन विशाल जातीय संगठन मे, जकर अध्यक्ष क्यो आन नहि, स्वयं मिथिलेश रहथि, हुनका अछैत मिथिलाक्षरक कतहु दर्शन नहि भेलनि। तखन सर्वसाधारण ताहि मिथिलाक्षरक रक्षा कोना कऽ सकैत अछि? एही चिन्ताक कारणेँ हुनक कथ्य छनि जे ओ धारणा दृढ़तरे भेल। वस्तुतः तावत धरि छापाक युग आबि गेल छलैक। मिथिलाक्षर मे छापाक कोनो व्यवस्था नहि छलैक। मिथिलाक्षरक ह्रास अथवा ओकर उपेक्षा सँ मैथिली भाषाक

बहुत पैघ हानि भेलैक। इतिहासक अवलोकन सँ ई प्रतीत होइत अछि जे बीसम शताब्दीक आरम्भे सँ किछु चिन्तक मैथिली भाषाक विकासक हेतु प्रयत्नशील भऽ गेल छलाह। पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन दिस अग्रसर होयबाक प्रयास तकरे सूचक थीक। ततबे नहि, १९१४ ई० मे भागलपुर मे आयोजित हिन्दी साहित्य सम्मेलनक मंच सँ भेल मैथिलीक विरोध सेहो सूचित करैत अछि जे किछु बुद्धिजीवी वर्ग मे एहनो लोक छलाह जे शिक्षाक माध्यम नेनासभक हेतु मातृभाषा मैथिली हो एहि रूपक प्रस्ताव बिहारक शिक्षा विभागक समक्ष उपस्थित कऽ चुकल छलाह आ तकरे प्रतिक्रिया स्वरूप उपर्युक्त प्रस्ताव उपस्थित कयल गेल छल। ई भिन्न बात जे प्रस्ताव मात्र पठाओल गेल छल, एहि हेतु जनमत जगयबाक प्रयास नहि कयल गेल। तथापि भाषा कें संरक्षित करबाक चेतना, किछुए वर्ग मे हो, आबि धरि गेल छल। जहिना एक दिस चेतना जागल तहिना जँ ताहि समय सँ मिथिलाक्षरहुक रक्षाक हेतु तत्परता देखाओल जाइत तँ आइ देवाक्षर कें ग्रहण करबाक कारणें जे हिन्दीक बोली कहि मैथिली कें आत्मसात् करबाक चेष्टा होइत रहल अछि, षड्यन्त्र सब रचैत जाइत रहल से नहि भऽ पबैत। भोला बाबूक प्राण मिथिलाक्षरक पुनरुद्धार करबाक हेतु जेना छटपटाइत छलनि। 'श्री मैथिली' मासिक पत्रक ५म अंक मे एक समाचार भेटैत अछि तदनुसार ६ जून १९२५ ई० कऽ मिथिलाक्षरक पुनरुद्धार हेतु एक समिति संघटित भेल छल जाहि मे पं० जीवनाथ राय संयोजक तथा राजपण्डित बलदेव मिश्र, आचार्य राममोचन शरण, पं० गंगाधर मिश्र ओकील, हरिवंश झा मुख्तार (मधुबनी), रायबहादुर सिद्धिनाथ मिश्र तथा 'श्री मैथिली'क सम्पादक उदित नारायण दास सदस्य मनोनीत भेलाह। अन्यान्यो व्यक्ति मिथिलाक्षरक रक्षाक आवश्यकता अनुभव कऽ रहल छलाह से ज्ञात होइत अछि एक सम्पादकीय टिप्पणी सँ, जाहि मे कहल गेल अछि जे छपरा मे जनकलाल झा नामक क्यो स्टेशन मास्टर रहथि ओ सूचित कयने

छलथिन जे यदि मिथिलाक्षरक टाइप ढरयबाक हेतु अर्थ संग्रहक आयोजन हो तँ ओ पचास टाका साहाय्य देबाक हेतु उद्यत छथि।

यद्यपि भोलाबाबू उक्त समितिक सदस्य नहि छलाह। किछुए दिन पहिने दरभंगा अयलो रहथि तेँ एहि कार्यक सम्पादनार्थ हिनका मे कतेक उत्साह ओ आतुरता छलनि ताहि सँ लोक परिचित नहि भेल छल। यद्यपि उक्त समितिक संगठन सँ हिनका अपार हर्ष ओ प्रसन्नता भेलनि। उक्त समितिकेँ आचार्य रामलोचन शरण तत्काल एक हजारक साहाय्य दैत वचन देलथिन जे समस्त व्ययभार पुस्तक भंडार वहन करत। अस्तु, जेना तेना जखन मिथिलाक्षरक टाइप बनि कऽ आबि गेलैक तँ सबसँ पहिने भोलाबाबू 'मिथिला'क एगारहम अंक सँ सम्पादकीय मिथिलाक्षर मे छापय लगलाह तथा ओहि अंक सँ रचना, स्तम्भ, आदिक शीर्षक मिथिलाक्षरे मे देल गेल। आब एकर प्रचार कोना हो ताहि हेतु दस गोट उपाय सुझौने छथि। एहि प्रकारेँ ई प्रथम पत्रकार भेलाह जे सम्पादकीय मिथिलाक्षर मे छपने होथि। ओना मुख पृष्ठ आदिक ब्लाक बनबाय अन्यान्यो पत्र-पत्रिका मे मिथिलाक्षरक अस्तित्वक प्रमाण स्वरूप छापल जाइत रहल अछि।

मातृभाषाक दिस उन्मुखताक सुयोग

जाहि अवधि मे नयागाँव, सिराजपुर मे अध्यापन करैत छलाह ताही समय मे १९१४ ई० मे बड़गाम मे एक सरस्वती पुस्तकालय छलैक जकर वार्षिकोत्सब बड़ समारोह पूर्वक मनाओल गेल छलैक। अध्यक्षता कयने छलथिन भागलपुरक प्रसिद्ध ओकिल तथा प्रखर राष्ट्रीय नेता जगधर प्रसाद। जेँ हेतु भोलाबाबू प्रथम शिक्षकक पद पर कार्यरत छलाह तेँ ओहि वार्षिकोत्सब मे सम्मिलित होयबाक आमन्त्रण पत्र हिनको पठाओल गेल छलनि। भोला बाबू अन्य कार्य मे व्यस्त रहबाक कारणेँ स्वयं उपस्थित नहि भऽ सकल छलाह, किन्तु एक लेख लिखि पठा देने छलथिन

जाहि मे प्रसंगतः ई भाव व्यक्त कयल गेल छलैक जे हिन्दीक समक्ष मैथिलीक उत्थानक प्रयास आब तेहने हास्यास्पद सन लगैत अछि जेना काछुक चालि सँ रेलगाड़ी केँ पछुअयबाक प्रयास होयत। हिन्दीक कट्टर समर्थक सभापति केँ ओ लेख रोचक प्रतीत भेलनि, तैं ककरो द्वारा ओ लेख पढ़बाओल गेल छल। मैथिलीक दुर्बलता मैथिलीभाषिएक कलम सँ अभिव्यक्त भेल छल तैं रोचक।

संयोगवश मुंशी रघुनन्दन दास सेहो ओहि सभा मे उपस्थित छलाह जनिका बाद मे आबि मैथिली साहित्य परिषद द्वारा साहित्य रत्नाकरक उपाधि सँ विभूषित कयल गेल छलनि। हुनका लेखकक नाम जानिकऽ परम विस्मय भेलनि। ओ हिनकर पता ठेकाना लय एक पत्र विस्तार-पूर्वक लिखलथिन। ओहि पत्र मे ओ मैथिली भाषाक प्राचीनता, प्रांजलता तथा एकर साहित्यक विशालता ओ अविच्छिन्न रूप सँ चल अबैत परम्पराक दिग्दर्शन करबैत अन्त मे उपालम्भ देलथिन जे मैथिलीक प्रति उदासीनता अथवा अज्ञानता 'बाड़ीक पटुआ तीत' लोकोक्ति केँ चरितार्थ करब थिक। भोला बाबू स्वयं लिखैत छथि—

"ओ पत्र वस्तुतः मृत शरीर मे जेना नवजीवनक संचार कऽ देलक ओ उत्तर मे अपन अपराध केँ स्वीकार करैत भविष्य मे योग्यता-नुसार राष्ट्रभाषा हिन्दीक संग मातृभाषा मैथिलीहुक सेवाक प्रतिज्ञा कैलियैन्हि।"[1]

एहि पत्रक हिनका पर तेहन प्रभाव पड़लनि जे मुंशीजी केँ एहि हेतु एहि विषयक दीक्षा गुरु मानैत रहलथिन। आँगा चलि ई अपना केँ मातृभाषाक सेवा मे समर्पित कऽ देलनि ताहि मे यैह पत्र हिनक मुख्य प्रेरक भेलनि। भोला बाबू मुंशीजी रचित 'मिथिला नाटक' पढ़ि चुकल छलाह, 'ओकर अभिनय देखबाक सुयोग सेहो प्राप्त भऽ चुकल

1—संकल्प १९७७, पृ०-१४

जाहि मे प्रसंगतः ई भाव व्यक्त कयल गेल छलैक जे हिन्दीक समक्ष मैथिलीक उत्थानक प्रयास आब तेहने हास्यास्पद सन लगैत अछि जेना काछुक चालि सँ रेलगाड़ी कें पछुअयबाक प्रयास होयत। हिन्दीक कट्टर समर्थक सभापति कें ओ लेख रोचक प्रतीत भेलनि, तें ककरो द्वारा ओ लेख पढ़बाओल गेल छल। मैथिलीक दुर्बलता मैथिलीभाषिएक कलम सँ अभिव्यक्त भेल छल तें रोचक।

संयोगवश मुंशी रघुनन्दन दास सेहो ओहि सभा मे उपस्थित छलाह जनिका बाद मे आबि मैथिली साहित्य परिषद द्वारा साहित्य रत्नाकरक उपाधि सँ विभूषित कयल गेल छलनि। हुनका लेखकक नाम जानिकऽ परम विस्मय भेलनि। ओ हिनकर पता ठेकाना लय एक पत्र विस्तार-पूर्वक लिखलथिन। ओहि पत्र मे ओ मैथिली भाषाक प्राचीनता, प्रांजलता तथा एकर साहित्यक विशालता ओ अविच्छिन्न रूप सँ चल अबैत परम्पराक दिग्दर्शन करबैत अन्त मे उपालम्भ देलथिन जे मैथिलीक प्रति उदासीनता अथवा अज्ञानता 'बाड़ीक पटुआ तीत' लोकोक्ति कें चरितार्थ करब थिक। भोला बाबू स्वयं लिखैत छथि—

"ओ पत्र वस्तुतः मृत शरीर मे जेना नवजीवनक संचार कऽ देलक ओ उत्तर मे अपन अपराध कें स्वीकार करैत भविष्य मे योग्यता-नुसार राष्ट्रभाषा हिन्दीक संग मातृभाषा मैथिलीहुक सेवाक प्रतिज्ञा कैलियैन्हि।"[1]

एहि पत्रक हिनका पर तेहन प्रभाव पड़लनि जे मुंशीजी कें एहि हेतु एहि विषयक दीक्षा गुरु मानैत रहलथिन। आँगा चलि ई अपना कें मातृभाषाक सेवा मे समर्पित कऽ देलनि ताहि मे यैह पत्र हिनक मुख्य प्रेरक भेलनि। भोला बाबू मुंशीजी रचित 'मिथिला नाटक' पढ़ि चुकल छलाह, 'ओकर अभिनय देखबाक सुयोग सेहो प्राप्त भऽ चुकल

1—संकल्प १९७७, पृ०-१४

छलनि, तेँ साक्षात् दर्शन नहियो भेलापर हुनक नाम ओ यश सँ पूर्व परिचित रहथि। भोला बाबू स्वयं कहने छथि—

"हुनका प्रति एहि प्रकारक निष्ठा कोनो भावुकताक परिणाम नहि छल, अपितु एक ठोस आधारशिला पर प्रतिष्ठित भेल जकरा प्रसादेँ कोनहु संघर्ष वा विवाद मे केहनो प्रतिपक्षी केँ अपना सँ अधिक मानबाक विवशता नहि आयल।"[2]

मातृभाषाक उद्धार करबाक संकल्प मे अन्यान्यो प्रेरक तत्त्व सहयोगी भेलनि। लॉ पढ़बाक हेतु किछु दिन कलकत्ता मे सेहो रहलाह जकर उल्लेख प्रसंगवश पूर्वहि भऽ चुकल अछि। कलकत्ता विश्वविद्यालय १९१० ई० मे प्रवेशिका सँ लय स्नातकोत्तर कक्षा धरि मैथिली केँ स्वीकृति दऽ चुकल छलैक। बिहारक अधिकांश विद्यार्थी हिन्दी छोड़ि मैथिलीए पढ़य लागि गेल छल। जखन बंगाल केँ विभाजित कय बिहारक पृथक् प्रान्त बनाओल गेल, जाहि कारणेँ बेस उग्र आन्दोलन भेल छल, तखन कलकत्ता मे रहनिहार हिन्दीक पक्षधर लोकनि मैथिलीक विरोध मे जुटि जाइत गेलाह। ताहि समय मे मैथिलीक जड़ि केँ सुदृढ़ करबाक प्रयास मैथिली भाषी लोकनि द्वारा चलि रहल छल। भोलाबाबू ताहि मे सहभागी तँ नहि बनि सकलाह, किन्तु ओहि विश्वविद्यालय मे मैथिलीक व्याख्याता क पद पर कार्यरत तथा मैथिलीक प्राचीनतम गद्य ग्रन्थ वर्णरत्नाकरक सम्पादनकर्त्ता मे अन्यतर व्यक्ति पं० बबुआजी मिश्र सँ सम्पर्क स्थापित भेलनि तथा मैथिलीक स्थिति सँ नीक जकाँ अवगत होयबाक सुयोग प्राप्त भऽ सकलनि

बेतिया राज स्कूल मे जखन अध्यापकक पद पर रहथि ताहि अवधि मे (बानू छपरा) बेतिया निवासी, अपना समयक प्रखर लेखनी रखनिहार, मिथिला मोदक प्रबल पक्षधर, समाजक दशा तथा मैथिली

2—संकल्प १९७७, पृष्ठ १४

भाषाक दुर्दशा पर सतत चिन्तन कयनिहार मुखर समाज सेवक प० त्रिलोचन झाक निकट सम्पर्क मे अयबाक सुअवसर भेटलनि। हुनका माध्यम सँ मैथिलीक विविध समस्या केँ गंभीरता सँ बुझबाक सुयोग हाथ लगलनि। एहि सबसँ अन्तर्निहित चिनगी केँ प्रज्ज्वलित होयबाक उपयुक्त इन्धन प्राप्त होइत गेलैक। बेतिया मे रहैत महात्मा गान्धीक आह्वान पर ई राष्ट्रीय आन्दोलन मे कूदि पड़लाह। ओहि आन्दोलन सँ सम्पृक्त भेला पर देशक स्त्री वर्गक दशा सुधारबाक दिस दृष्टि गेलनि। ई अपन मातृभाषाक तथा अपन समाजक मातृवर्गक उद्धार करबाक निश्चय कयलनि। विधि शास्त्र पढ़बाक हेतु जखन प्रयाग पहुंचलाह तँ महामहोपाध्याय डाक्टर सर गंगानाथ झा सँ परिचय भेलनि। हुनका सम्पर्क मे अयलाक बाद मातृभाषाक उद्धारक भावना आओरो परिपुष्ट भेलनि। प्रयाग केवल गंगा-यमुना-सरस्वतिएक त्रिवेणी संगम नहि रहल अछि, अपितु साहित्यिक, राजनीतिक तथा धार्मिक विचारधाराक संगम स्थल सेहो रहल अछि। ओहिठाम एहि सभक हलचल हिनका प्रभाविते नहि, आन्दोलितो करैत रहलनि। प्रतिभावान तँ छलाहे, किन्तु हिनक प्रतिभा ताहि समय चमकि उठलनि जखन ताहि समयक हिन्दीक बहुचर्चित राष्ट्रीय विचारधाराक प्रमुख पत्र 'चान्द' क सम्पर्क मे अयबाक सुयोग भेटलनि। 'चान्द' क सम्पादक रहथि रामरख सिंह सहगल जे क्रान्तिकारी विचारक लोकनि मे प्रमुख गनल जाइत छलाह। हुनका सँ परिचय भेलनि। ओ प्रतिभाक बेस पारखी लोक छलाह। हुनके अनुरोधेँ ई चान्दक स्थायी लेखक बनि गेलाह। जखन कखनहुँ सम्पादक स्वयं कोनो कार्य विशेषवश अनुपस्थित रहैत छलाह तँ सम्पादनक उत्तरदायित्व हिनके पर छोड़ि जाइत छलथिन, जाहि सँ सम्पादनकला सँ परिचित होयबाक संयोग भेटलनि। एहि प्रकारें एक समाज सुधारक आन्दोलनकारीक हेतु जेहन उपयुक्त आधारभूमि होयबाक चाहियैक से भोलाबाबू केँ प्राप्त भऽ गेलनि।

५—

ई सत्य जे भोलाबाबू केँ कर्मक्षेत्र मे अवतीर्ण होयबाक समय धरि मैथिली भाषा मे साहित्य रचना मे गति आबि गेल छल। पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन सँ प्रचार-प्रसार सेहो भऽ रहल छल, ई भिन्न बात जे जाहि प्रचुर परिमाण मे प्रचार होयबाक चाही, से तावत धरि नहि भऽ सकल छल आ एखनहुँ जे मैथिलीभाषीक जनसंख्या अछि, ताहि अनुपात मे एकरा नगण्ये मानल जायत। किन्तु सबसँ पैघ त्रुटि ई छल जे वैधानिक रूपेँ एहि भाषा केँ समुचित अधिकार प्राप्त करयबाक कोनो सुविचारित योजना बनाय ताहि योजना केँ क्रियान्वित करबाक हेतु समर्पित केयो व्यक्ति नहि छल। यद्यपि एहि प्रकारक काज व्यक्तिसाध्य नहि होइत छैक, एहि हेतु एक दृढ़ संगठन अपेक्षित होइत छैक, किन्तु ओहि संगठन केँ गतिशील बना कऽ रखबाक हेतु कोनो समर्पित व्यक्तिक आवश्यकता रहिते छैक। १९२४ ई० मे प्रयाग सँ एल० एल० बी० परीक्षोत्तीर्ण भऽ दरभंगा कचहरी मे ओकालति करबाक निश्चय कऽ सोझे लहेरियासराय चलि अयलाह। ओहि समय मे लहेरियासराय सँ 'श्री मैथिली' मासिक पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेलैक। संयोगवश ओकर सम्पादक तथा सहायक सम्पादक दूनू गोटे स्वजातीय छलथिन। ओहि समय मे सामाजिक जीवन मे प्रविष्ट अन्धविश्वास, रूढ़ि ओ अन्यान्य दोषक निराकरण करैत समाज मे नवीन चेतना जगयबाक हेतु अनेक जातीय संगठन कार्यरत छल। ताही क्रम मे कर्ण कायस्थ महासभा सेहो चलि रहल छल। भोलाबाबू स्वयं 'संस्मरण' मे लिखने छथि— "सन् १९२४ ई० मे जखन दरभंगा आबि लहेरियासराय मे ओकालति आरम्भ कैल तँ किछु समय कर्ण कायस्थ महासभा मे लगौल तथा जमिन्दारी लोपक भय सँ एहि समाजक भविष्य अन्धकारपूर्ण देखि राज दरभंगाक खुसामद मे कतोक दौड़ धूप कैल।"[३] 'श्री मैथिली'क प्रकाशन

3—संस्मरण, पृ०-२०

सँ मैथिलीक सेवाक हेतु जे कोनो पत्र-पत्रिकाक आसरा अनिवार्य बुझाइत छलनि तकर आंशिक पूर्ति भैलनि। आंशिक एहि हेतु जे हिनक जे अभीष्ट छलनि ताहि दिस 'श्री मैथिली'क कोनो विशेष झुकाव नहि छलैक, से हिनके कथन सँ झलकैत अछि। एहि प्रसंग मे हिनक कहल छनि—

" 'श्री मैथिली'क उद्देश्य मैथिल संस्कृति आदिक विषय मे बड़ विशाल एवं स्फीत छल, मुदा पठन-पाठन मे मैथिलीक स्वीकृति, हिनका लोकनिक हेतु कोनो प्राथमिक आवश्यकता नहि छल।"[4]

मैथिली क्षेत्र मे सक्रिय प्रवेश

मैथिली भाषाक संरक्षण-संवर्द्धनक प्रसंग समाजमध्य किछु लोक मे हलचल रहितो, कोन प्रकारक काज कयला सँ एकर दूरगामी प्रभाव पड़ि सकैत छैक, ताहि प्रसंग ककरो कोनो सुविचारित चिन्तन नहि छलनि। एहि प्रकारक चिन्तन कयनिहार श्रद्धेय भोलालाल दासेजी प्रथम व्यक्ति भैलाह। ओही वर्ष अर्थात् १९२५ ई० मे कोनो बंगाली सदस्य पटना विश्वविद्यालय मे पाठ्य विषयक रूप मे मैथिलीक स्वीकृतिक प्रश्न उपस्थित कयने रहथि जकर विरोध अपना कें परम हितैषी माननिहार मैथिलीए भाषी डा० जनार्दन मिश्र कयने छलथिन। तेँ ई प्रश्न स्थगित वा अस्वीकृत कऽ देल गेल छल। समाचार पत्रादि मे मैथिली क स्थिति ई छलैक जे बिहारक कोनो अङरेजी वा हिन्दीक पत्र मैथिलीक पक्ष मे कोनो लेख छपबाक साहस नहि करैत छल। भोलाबाबूक हृदय मे सुनगैत चिनगी आब अङोर रूप मे परिणत भऽ गेल छलनि। एहि विषयक एक लेख भोलाबाबू काशी सँ प्रकाशित 'आज' नामक पत्र मे छपौलनि। हिनका लेखक खण्डन मे पटना सँ प्रकाशित होइत 'देश' नामक पत्रिका मे एक विस्तृत लेख छपलनि। भोलाबाबू स्वयं लिखने छथि—

4—तत्रैव, पृ०-२१

"हमर एहि विषयक एक लेख काशीक 'आज' मे छपल। तकर खण्डन मे पटनाक 'देश' नामक पत्र मे एक विस्तृत लेख छपल जाहि मे मैथिलीक स्वीकृतिक प्रश्न केँ 'चन्द लालदासी कायस्थों का षड्यन्त्र' कहल गेल। आनो कतोक भ्रामक विचार ओहि मे व्यक्त कैल गेल छल।"[5] ई चन्द लालदासी कायस्थों का षड्यन्त्र उक्ति सँ तँ हिनका हृदय मे पजरैत ओ अङोर आब धधकि उठलनि।

'श्री मैथिली'क प्रकाशन सँ हृदय मे उद्भूत विचार केँ व्यक्त करबाक एक आधार तँ भेटल छलनि, किन्तु ताहि सँ ई पूर्ण सन्तुष्ट नहि छलाह। ई सत्य जे कोनो समाजक संस्कृतिक रक्षा होयब आवश्यक थीक, किन्तु जखन मातृभाषाक जीवन मरणक प्रश्न उपस्थित हो तखन एकरा प्राथमिकता नहि दऽ संस्कृति सभ्यता केँ प्राथमिकता देब हुनका समीचीन नहि प्रतीत होइत छलनि। अस्तु, दुर्योग एहन जे उदित नारायण दास, प्रधान सम्पादक केँ अस्वस्थ भऽ गेलाक कारणेँ 'श्री मैथिली' क प्रकाशनो बन्द भऽ गेलैक। श्री मैथिली सँ सम्पर्क मे अयलाक कारणेँ मैथिली विभूति आचार्य रामलोचन शरण सँ परिचय भऽ गेल छलनि। भोलाबाबू अपन संस्मरण मे लिखने छथि—

"एतबा धरि अवश्य भेल जे मित्रवर उदित बाबूक द्वारा लहेरिया-सराय पुस्तक भंडार मे हमरो प्रवेश भेल। ओहि सँ स्व० रायसाहेब रामलोचनशरणजीक अतिरिक्त मूर्द्धन्य हिन्दी साहित्यसेवी स्व० शिव-पूजन सहाय, स्व० रामवृक्ष शर्मा बेनीपुरीजी, हिन्दी मैथिलीक प्रकाण्ड सेवक एवं अत्यन्त अध्ययनशील विद्वान स्व० अच्युतानन्द दत्तजी आदि सँ पूर्ण घनिष्ठता भेल। पश्चात् 'मिथिला मिहिरक' नवीन सम्पादक साहित्याचार्य पं० सुरेन्द्र झा 'सुमन' एवं ज्यो० आचार्य स्व० पं० कुशेश्वर कुमर आदिहु सँ सम्पर्क बढ़ल। ……सौभाग्य सँ कुमरजी

5—तत्रैव, पृ०-२३

स्व० म० म० मुरलीधर झाक शिष्य छलथिन्ह। 'मिथिला मोद' काशी मे बन्द भय गेल छलैक तेँ हिनकर विचार पुस्तक भंडार सँ कोनो मैथिली मासिक पत्र बहार करबाक छलैन्ह। हम तँ से चाहिते छलहुँ...... ।"[6]

कहबी छैक—'जे रोगी कें भावै से वैदा फरमावै' सैह हिनका भेलनि। ई तँ चाहिते छलाह जे एकटा पत्र बहार हो जाहि माध्यमे अपन हृदयक भाव व्यक्त कऽ सकी। स्व० कुमरजीक प्रस्तावक अनुमोदन तँ करबे कयलथिन, प्रत्युत् विशेष आग्रह करय लगलथिन। कुमरजी हिनक तीव्र इच्छा कें देखैत सम्पादन मे निःशुल्क सहयोग देबाक वचन देलथिन। पुस्तक भंडारक विश्रुत चित्रकार उपेन्द्र महारथी सँ भारतक मानचित्र पर मिथिलोमाताक माथ पर एक हाथ रखने भारतमाताक आदमकद चित्र दऽ मुखपृष्ठ बनाओल गेल। जतेक आकर्षक ढंग सँ सजा धजा कय एहि पत्रक प्रकाशन प्रारंभ भेलैक ततेक आकर्षक ढंग सँ एहि सँ पूर्वक कोनो पत्र प्रकाशित नहि भेल छल। ध्यातव्य जे आगाँ चलि 'भारती'क प्रकाशन भेल तँ भोलाबाबू ओही ब्लाकक उपयोग कयलनि १९३७ ई० मे तथा आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' १९४८ ई० मे स्वदेश मासिक प्रकाशित करय लगलाह तँ ओहो मुखपृष्ठ पर एही ब्लाकक उपयोग कयने रहथि। वस्तुतः एही ठाम सँ आरंभ होइत छनि भोला-बाबूक आन्दोलन अभियान। एहि अभियानक हेतु हिनका कतेक आतुरता छलनि से हिनकहि एक पंक्ति सँ भासित होइत अछि जे "हमर यदि एकाधिकार रहैत तँ 'मिथिला' मे मैथिली स्वीकृतिक प्रश्न छोड़ि आन किछु लिखले नहि जाइत।"

जाहि समय मे भोलाबाबू सन्नाह पहिरि एहि आन्दोलनक समर भूमि मे उतरलाह ताहि समयक स्थितिक सम्बन्ध मे डा० श्री रामदेव झाक कथन छनि—

6—तत्रैव, पृ०-२१-२२

"१९२९ ई० धरि मैथिली मे जे कार्य होइत रहल ताहि मे कोनो सुनिश्चित योजना नहि छल। मैथिली आन्दोलनक कोनो दिशा निर्धारित नहि छल। मैथिलीक भविष्यक सम्बन्ध मे कोनो परिकल्पना नहि छल। भोलाबाबू दरभंगा अयलाक बाद निरन्तर एहि सम्बन्ध मे चिन्तन करैत रहलाह। अन्ततः किछु निश्चित निष्कर्ष पर आबि ओ मैथिली विषयक कार्यक किछु निश्चित रूपरेखा स्थिर कयल। ओहि काल मे मैथिली कें अपेक्षित छलैक मिथिलावासीक मोन मे मैंथिलीक महत्ता स्थापित करब ओ ममत्व जगायब। साहित्य रचना मे नवीन पीढ़ीक सहभागिता ओ लोकोन्मुखी साहित्यक रचना, मैथिलीक प्रति नवीन पीढ़ीक निकटता बढ़ैक, राजकीय स्वीकृति, विशेषतः शिक्षण संस्थान मे मान्यता प्राप्त होइक। एहि सब उद्देश्यक सम्पादनार्थ चेतना जगयबाक हेतु, मैथिली भाषी कें संगठित करबाक हेतु एक केन्द्रीय संस्थाक प्रयोजनीयता बूझि पड़लनि। उपर्युक्त सन्दर्भ मे देखी तँ १९२९ ई० ने केवल भोलाबाबूक जीवन मे, अपितु मैथिलीक इतिहास मे महत्वपूर्ण वर्ष सिद्ध भेल।"[7]

भोलाबाबू कें 'मिथिला' मासिक पत्रक रूप मे एक अस्त्र हाथ मे आबि गेल छलनि। यद्यपि ई पूर्ण स्वतन्त्र नहि छलाह तथापि मिथिलाक पहिले अंक मे ई अपन उद्देश्य स्पष्ट रूपें प्रतिपादित कयलनि जे पटना विश्वविद्यालय मे मैथिलीक विरोध मे जे किछु आपत्ति उठाओल जाइत अछि से सब भ्रमपूर्ण तथा निराधार अछि। तकर पूर्ण खंडन होयबाक चाही। सामूहिको संघर्ष करबाक हेतु मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना, विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन ओ प्रचार तथा मैथिली साहित्यक नवनिर्माण होयबाक आवश्यकता अनुभव करैत एहि सब काज कें प्रमुखता भेटबाक चाही।

7—स्मृति, पृ० २८-२९

भोलाबाबू प्रगतिशील विचारधाराक लोक छलाह। आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क निम्नांकित किछु पंक्ति हिनक अन्तरंग ओ बहिरंग दूनू केँ चित्रित करैत अछि। हिनका प्रसंग ओ लिखने छथि—

"रंग श्याम, कद नाम, आकृति दूबर रहितहु अभिराम, दृष्टि तेजस्वी, स्वभाव ओजस्वी, स्वर भास्वर ओ लेखनी प्रखर रहितहु व्यवहार सँ मिलनसार, अंग दुर्बल ओ मनोबल दवंग।"[8]

पुस्तक भंडार जखन मिथिलाक प्रकाशन आरंभ कयलक तँ पत्र यदि प्राचीनतावादी भऽ जायत तखन युगानुकूल दृष्टि रखनिहार एहि सँ उदासीन रहि जायत आ यदि आधुनिकतावादी भेल तखन परम्परा सँ जकड़ल मैथिल समाज एकर उपेक्षा कऽ देत। तेँ पं० कुशेश्वर कुमर ओ बाबू भोलालाल दासक संयुक्त सम्पादकत्व मे प्रकाशित करब श्रेयस्कर बुझलक। पं० कुशेश्वर कुमर एहि पत्रक नीति स्पष्ट करैत ई आदर्श वाक्य लिखि देलथिन।

"वादी प्रतिवादी दुनुक हम खण्डन मण्डन छापब
उचित दोष-गुण जे क्यो लिखता नहि तकरा हम झाँपब।
कुमर पुरातन नीति निरत छथि, दास नवीन समाजी
अछि आशा दूनू दूनू केँ सब बिधि रखता राजी"

एकरे व्याख्या करैत आगाँ श्रद्धेय सुमनजी लिखने छथि—

"पुरातन छला ज्योतिर्विद वरिष्ठ सम्पादक पं० कुशेश्वर कुमर जनिक नीति-निलयक रचना सनातनी विचारधारा प्रवाहित करैत छल। समाजी अर्थात् तत्कालीन सुधारवादी तथाकथित आर्य समाजी विचार निर्झर केँ प्रवहमान रखनिहार कनिष्ठ रहितहु गरिष्ठ अपर सम्पादक बाबू भोलालाल दास जे समाजक जड़ता केँ नव चेतना सँ चूर-चूर करबाक तरस्विता नेने आयल छला।"

8—स्मृति, पृ० १०

भोलाबाबू दूरगामी परिणाम केँ, दृष्टि मे राखि मुख्य उद्देश्य तँ बनौलनि शिक्षा मे मैथिलीक प्रवेश केँ, किन्तु एहि उद्देश्यक पूर्ति हेतु जाहि प्रकारक कार्य अपेक्षित छलैक ताहि सब प्रकारक कार्यक योजना सेहो बनौलनि, संगहि राष्ट्रीय विचारधाराक पक्षधर होयबाक कारणे स्त्री शिक्षाक प्रचार पर सेहो जोर देलनि। हुनक मान्यता छलनि जे जाहि मातृवर्गक कण्ठ सँ निःसृत भाषा हमरा लोकनिक मनोभाव केँ अभिव्यक्त करबाक अवगति प्रदान करैत अछि ताही मातृवर्ग केँ शिक्षित भेला उत्तर एहि भाषाक विकास मे अपेक्षाकृत विशेष बल प्राप्त होयबाक संभावना बढ़ि जायत। एक पंथ दूई काज। स्त्री शिक्षाक विकास सँ राष्ट्रीय विकास तँ होयबे करत, मातृभाषाक प्रचार प्रसारक हेतु क्षिति-जक विस्तार होयत। सामाजिक दुरवस्थाक अनेक कारण मानैत छलाह। 'मिथिला' मासिक पत्रक प्रथमे अंकक सम्पादकीय मे भोलाबाबू लिखने छथि।

"सम्प्रति मैथिल समाजक जे दुरवस्था अछि सेहो ककरहु सँ अज्ञात नहि अछि। यथार्थ पूछी तँ सामाजिक दुरवस्थहि सँ हमरा लोकनिक भाषा, भाव एवं भेष आदिक ई दुर्दशा सम्प्राप्त भेल अछि। एहि विषय मे यथार्थ पूछी तँ प्रबल क्रान्तिक आवश्यकता अछि। हमरा लोकनि कोनहु प्रकारेँ वर्तमानक उपेक्षा कै कऽ सुन्दर भविष्यक आशा नहि कै सकै छी।"

स्त्रीशिक्षाक समर्थन

भोलाबाबू जाहि क्रान्तिक कल्पना करैत छलाह ताहि मे अपन समाजक स्त्री वर्ग मे व्याप्त अशिक्षा केँ दूर करब प्रथम आवश्यकता प्रतीत होइत छलनि। कथनी ओ करनी मे ई कोन रूपेँ सामंजस्य रखैत छलाह तकर उल्लेख पूर्वहि भऽ चुकल अछि जे कोना ई अपन द्वितीया पत्नी श्रीमती योगमाया देवी केँ शिक्षित कऽ समाज मे स्त्रीक दशा मे सुधार अनबाक हेतु मझोलिया (दरभंगा) स्थित मगन आश्रम मे

रहय देबाक अनुमति दऽ प्रेरक बनल छलथिन। एहि संग ई अन्यान्य मित्र लोकनि कें सेहो प्रेरित करैत रहैत छलाह। एहि कथनक ज्वलन्त उदाहरण थिकाह व्यंग्य सम्राट प्रो० हरिमोहन झा जनिक कन्यादान उपन्यास समाजक मानस कें मथित करैत अन्ततः समाज मे स्त्री शिक्षाक द्वार कें उन्मुक्त कऽ देलक।

विद्यापति स्मृति पर्वक आरंभ

आधुनिक शिक्षा प्रणाली कें, जे अङरेजक द्वारा प्रवर्तित भेल छल, लागू होयबा सँ पहिने धरि लोक भाषा परिवार ओ समाजक मध्य पारस्परिक विचारक आदान-प्रदानक माध्यम बुझल जाइत छल। साहित्य सर्जनाक हेतु दुइ गोट क्षेत्र – मनोविनोदार्थ शृंगारिक पद तथा आत्मसंतोषार्थ भक्ति परक गीत, भजन आदिक रचना ओ लोकनि करैत छलाह। 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'क अनुभव कयनिहार महाकवि विद्यापति ने केवल मैथिलिएक अपितु समस्त आधुनिक आर्य भाषा भाषी कें एक प्रकारक नवीन दृष्टिबोध देलथिन। विद्यापति जाहि लोकभाषा कें साहित्यिक प्रतिष्ठा देलथिन ताही छंदबद्ध सरणिक अनुगमन १८म शताब्दो धरि होइत रहल। आधुनिक शिक्षा प्रणाली कें लागू भेला उत्तर पाश्चात्य शिक्षा जाहि क्षेत्र मे जतेक शीघ्र पसरल ताहि क्षेत्रक भाषा साहित्य छन्दबद्धताक ऊभड़-खाभड़ भूमि सँ उतरि गद्यक समतल धरातल पर सुप्रतिष्ठित होइत गेल तथा जन मानस मे अपन स्थान बनबैत गेल।

दर्शन ओ कर्मकाण्डक भूमि मिथिला, महाकवि विद्यापतिक जन्म भूमि मिथिलाक जनमानस मे २०म शताब्दीक दोसरो दशक धरि ओ चेतना नहि आबि सकल छल जे एक भाषाक समुचित विकासक हेतु आवश्यक छैक। भोला बाबू, मैथिली कें जनाधार कोनो प्राप्त हो एहि प्रसंग चिन्तन करिते छलाह, संगहि आनो आनो ठाम मैथिलीक हित

चिन्तक एहि दिशा मे कोनो प्रभावशाली कार्यक्रम आयोजित करबाक हेतु सोचि रहल छलाह। विद्यापति स्मृति पर्वक आरम्भ सेहो एही चिन्तनक प्रतिफल थीक। 'मिथिला'क सम्पादकीय टिप्पणी मे एकर आरंभ होयबाक सूचना प्राप्त होइत अछि। टिप्पणीक स्वरूप निम्नांकित अछि—

"महापुरुषक जयन्ती उत्सव अपना देशक प्राचीन प्रथा थिके, किन्तु सम्प्रति भारतवर्ष मे ई नवजीवनक संचार कै रहल अछि। तुलसी जयन्ती शिवाजी जयन्ती, तिलक जयन्ती आदि सर्वत्र मनाओल जाइछ। जहिना हिन्दीक हेतु गुसाँई तुलसीदास छथि तहिना मैथिली, बंगला एवं हिन्दीक हेतु विद्यापति छथि, किन्तु एतेक प्रसिद्ध रहनहुँ कतहु हुनक जयन्ती नहि मनाओल जाइछ। ई मैथिलीक हेतु विशेष खेदक विषय। विद्यापतिक एक पद्यें हुनक मृत्यु कार्त्तिक धवल त्रयोदशी अर्थात् कार्त्तिक मासक शुक्ल पक्षीय त्रयोदशी कै भेल छलैन्ह। ओ तिथि एहि बेर १४-१५ नोअम्बर कै पड़त। पटना, भागलपुर तथा मुजफ्फरपुरक कतेक युवक मित्र लोकनिक ई सूचना प्रकाशित करबाक आग्रह पाबि परम प्रसन्न भेलहुं जे एहि वर्ष उक्त तिथि मे कविवर विद्यापतिक जयन्ती अवश्य मनाओल जाय। हमरा लोकनि दरभंगहुँ मे एतदर्थ आयोजन कै रहल छी तथा समस्त मैथिल समाज सँ आग्रह करै छी जे सर्वत्र देश मे अपना भाषा-स हित्य-सूर्यक जयन्ती प्रतिशहर, प्रति गाँव मे मनाओल जाय जाहि मे हुनका जीवन तथा काव्य पर विशेष आलोचना हो।"

यद्यपि ई कार्यान्वित कतय भेल तकर कोनो समाचार वा सूचना प्रकाशित नहि भेटैत अछि, किन्तु दरभंगा मे दोसरो वर्ष अर्थात् १९३० ई० मे भेल तकर उल्लेख भोला बाबू अपन संस्मरण नामक ग्रन्थ मे कयने छथि"।[9] आरंभ भेल ई पर्व विद्यापति जयन्ती क नाम पर, परन्तु मृत्यु-दिवस स्मृति पर्वे थिक आ पितरक स्मरण मृत्यु-तिथिएक दिन भारतीय संस्कृतिक परम्परानुसार कर्त्तव्यो। अतः पछाति विद्यापति

9—संस्मरण, पृ० ३४

जयन्ती, विद्यापति-स्मृति-पर्व रूप मे विशेष प्रस्तुत भेल। आइ देखल जाइछ जे यदि मैथिली कें किछुओ जनाधार प्राप्त भेलैक अछि, किछुओ लोक अपन मातृभाषाक महत्त्व कें बूझय लागल अछि, साहित्यकार कलाकार कें यत्किंचितो आर्थिक लाभ भऽ रहलनि अछि, प्रवास मे रहनिहार मैथिली भाषी लोकनि कें कम सँ कम एको दिनुक हेतु मातृभाषाक प्रसंग चर्च करबाक मंच उपलब्ध भऽ सकलनि अछि तथा मातृभाषाक उत्थान आजीविका प्राप्ति मे सहायक भऽ सकैत अछि एहि तथ्य कें लोक बूझय लागल अछि तँ एकर श्रेय सबसँ बेसी एही पर्व कें प्राप्त छैक। आइ विद्यापति पर्व मैथिलीक आन्दोलन ओ विकासक पर्याय बनि गेल अछि। एहि प्रकारेँ मैथिली कें जनाधार प्राप्त करयबाक दिशा मे भोलाबाबूक ई डेग सर्वथा सुविचारित तथा दूरदर्शित सिद्ध भेलनि। ई भिन्न बात थीक जे स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद भाषा कें राजनीति स जोड़ि देलाक कारणेँ मैथिलीक विकासक मार्ग मे अनेक अवरोध ठाढ़ कयल जा रहल अछि। मैथिली भाषी क्षेत्र कें खण्ड-प्रखण्ड कऽ एकरे उपभाषा सबकेँ नवीन नाम दऽ दऽ एकर क्षेत्र कें संकुचित करबाक कुचक्र सब रचल जा रहल अछि। एहि भाषाक विकास सँ जाहि वर्ग कें सबसँ अधिक लाभ होयबाक संभावना छैक ताही वर्ग कें भड़काय हमरा लोकनिक मातृभाषा मैथिली नहि थीक से कहबाक हेतु उकसाओल जा रहल अछि। तथापि जेना बूढ़ पुरान लोकक मुँह सँ सुनल जाइछ जे मैथिली भाषी लोकनि कें अपन भाषा मे गप्पो करबा मे संकोच होइत छलनि, तेहना स्थिति मे आइ मैथिली भाषी ताहि हीन भावना सँ मुक्त भेल जा रहल छथि। ई सब उपलब्धिक अधिकतर श्रेय एही पर्व कें छैक से निःसंकोच भावेँ कहल जा सकैत अछि तथा एहि पर्वक बीज कें अंकुरित करबाक श्रेय भोलाबाबू कें छनि।

शैक्षणिक स्तर पर मैथिलीक मान्यता

मैथिली भाषाक अस्तित्व रक्षा हेतु शिक्षा विभाग द्वारा एकरा

मान्यता प्रदान करायब भोलाबाबूक केँ अनिवार्य प्रतीत होइत छलनि आ तेँ एकरा ओ अपन चरम लक्ष्य बनाय एहि क्षेत्र मे अवतीर्ण भेल छलाह। एहि कार्य केँ सम्पादित करबाक हेतु, लक्ष्य धरि पहुँचबाक हेतु एक दिस समस्त बुद्धिजीवी वर्ग केँ सन्नद्ध होयबाक तथा सम्पूर्ण क्षेत्रक जनसमुदायक समर्थन प्राप्त होयबाक आवश्यकता छलैक, किन्तु जन समुदायक समर्थन प्राप्त होयबाक कोन कथा जे बुद्धि जीवियो वर्ग मे समुचित परिमाण मे संघर्ष करबाक साहस वा उत्साह नगण्ये छल। तथापि दृढ़ निश्चयी भोला बाबू कोन रूपेँ ऐहि हेतु संघर्षशील रहलाह, कोन-कोन रूपक बाधा हिनका समक्ष उपस्थित होइत रहलनि, कोना अपनो लोक सँ उपेक्षित रहैत, उपहासक पात्र बनैत अपन निश्चय पर दृढ़ रहलाह तकर विस्तृत विवरण 'पटना विश्वविद्यालय मे मैथिलीक प्रवेश' नामक संस्मरण ग्रन्थ मे देने छथि। किन्तु ईहो ग्रन्थ हुनक अपन जीवन काल मे प्रकाश मे नहि आबि सकल। प्रकाशितो भेल तेँ ततेक थोड़ संख्या मे जे मैथिलीक सब हितचिन्तकोक समक्ष नहि पहुँचि सकल। ओहि ग्रन्थक अनुशीलन सँ आचार्य श्रीयुत सुमनजीक भोलाबाबूक प्रति ई उक्ति—'जनिका नहि परवाहि आहि क्यौ कहओ बताहो' अक्षरशः यथार्थ प्रतीत होइत अछि।

भोला बाबू मुख्यतः मैथिली केँ शैक्षणिक स्तर पर मान्यता देआय एकर स्वतन्त्र भाषात्व सिद्ध करबैक उद्देश्य सँ वैशाख सन् १३३६ साल तदनुसार अप्रैल-मई १९२९ ई० मे विद्यापति प्रेस लहेरियासराय सँ पुस्तक भंडारक संस्थापक और स्वत्वाधिकारी मैथिली विभूति स्वर्गीय रामलोचन शरणक संरक्षकत्व मे प्रकाश्य 'मिथिला' नामक मासिक पत्रक कनीय सम्पादकक अवैतनिक भार स्वीकार कऽ लेलनि। ओ लिखनहुँ छथि जे—

"हमर यदि एकाधिकार रहैत तँ 'मिथिला' मे मैथिलीक स्वीकृतिक प्रश्न छोड़ि आन किछु लिखले नहि जाइत।"

ई ककरो सँ अविदित नहि जे 'मिथिला'क हेतु जे दू व्यक्ति सम्पादक बनाओल गेलाह ताहि मे स्व० पं० कुशेश्वर कुमर प्राचीन विचारधाराक तथा बाबू भोलालाल दास आधुनिकताक समर्थक छलाह तेँ दूनू सम्पादकक मत मे भिन्नता छल। संचालक छलाह व्यवसायी बुद्धिक लोक। व्यावसायिक दृष्टिएँ एहि सँ लाभक कोन कथा किछु हानिएक सामना करय पड़लनि। भोलाबाबू लिखने छथि—

" 'मिथिला' एतेक विघ्नबाधा रहितहुँ विद्यापति जयन्तीक श्रीगणेश तँ कइए देलक नवीन साहित्य सर्जना द्वारा एकटा नवविधा सेहो प्रस्तुत कए गेल, संगहि मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना, मैथिली स्वीकृतिक संघर्ष एवं नवजागरणक पृष्ठभूमि तैयार कै देलक जे अगिले वर्ष चालू भए गेल।"

भोलाबाबूक जे चरम लक्ष्य छलनि मैथिली केँ शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत करायब ताहि हेतु तत्काल कोनो मंच नहि रहि गेल छलनि। अतः मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना कोहुना हो ताहि दिशा मे सचेष्ट भऽ गेलाह। एहि ठाम एहि विषय केँ स्पष्ट कऽ देब अप्रासंगिक नहि होयत जे एकर स्थापना वर्षक विषय मे विद्वान लोकनि एकमत नहि छलाह। मैथिली साहित्य परिषदक संक्षिप्त इतिहास मे प० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' लिखैत छथि—

"मैथिली साहित्य परिषदक जन्म सम्बन्धी दू तरहक सूचना भेटैत अछि। परिषद द्वारा सर्वप्रथम प्रकाशित 'मिथिला दर्शन' नामक ग्रन्थ मे प्रधानमन्त्रीक वक्तव्य मे १९३० ई० एवं बाबू भोलालाल दास अपन एक संस्मरण मे १९३० ई० लिखैत छथि तथा श्री शशिनाथ चौधरी जी ओही ग्रन्थ मे दोसर ठाम १९३१ ई० लिखैत छथि। हम एहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ अछि जे एकर पहिल अधिवेशन १९३१ ई० मे भेल छल जकर अध्यक्षता कुमार गंगानन्द सिंहजी कयने छलाह। तेँ एकर जन्म १९३० मे भेल।"

किन्तु भोलाबाबूक 'संस्मरण' नामक ग्रन्थ प्रकाश मे अयलाक बाद एकर स्थापना वर्षक प्रसंग संदिग्धताक स्थिति समाप्त भऽ गेल। भोलाबाबू लिखने छथि—

यावत् 'मिथिला' एवं 'भारती' क दूनू जिल्द नहि भेटल छल तावत् हमहुँ एहि भ्रम मे छलहुँ जे परिषदक स्थापना' १९३० हि मध्य भेल मुदा एहि सँ एहि भ्रमक पूर्ण निराकरण भै गेल एवं आनो ठामक लेखादि सँ निश्चित भए गेल अछि जे मै० सा० परिषदक स्थापना निश्चित रूपें ५-४-३१ केँ दरभंगहि मध्य भेल एवं श्री चौधरी जीक संगहि हमहुँ एक मन्त्री नियुक्त भेलहुँ।"[10]

भोला बाबूक 'संस्मरण' नामक ग्रन्थक सम्यक् अनुशीलन एवं इतिहासक अन्वेषण सँ ज्ञात होइत अछि जे १९१४ ई० मे भागलपुरक अधिवेशन मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन मैथिलीक विरोध मे प्रस्ताव पारित कयने छल तथा १९१५ ई० मे मैथिल महासभाक अधिवेशन मन्दार मधुसूदन मे भेल छलैक जाहि मे डा० जनार्दन मिश्र तथा राधाकृष्ण झा हिन्दी मे भाषण करबाक हेतु उद्यत भेलाह तँ हुनका लोकनि केँ 'हुट-आउट' कयल गेल छलनि। ताही अवसर पर मैथिल महासभाक अंगक रूप मे मैथिली साहित्य समितिक स्थापना भेल छल जकर अध्यक्ष म० म० डा० गगानाथ झा, मन्त्री प० त्रिलोचन झा तथा संयुक्त मन्त्री मुंशी रघुनन्दन दासजी नियुक्त भेल छलाह। जेँ हेतु ई मैथिल महासभाक एक अंग रूप मे छल आ मैथिल महासभा ब्राह्मण आ करण कायस्थ धरि सीमित छल तेँ मैथिली भाषा केँ एहि सँ लाभ होयबाक कोनो आशा नहि छलैक। मैथिल महासभाक नीतिक कारणेँ मैथिली मात्र एही दूजातिक भाषा मानल जाय लागल छल आ तेँ अनेक मातृभाषा प्रेमी एक नवीन साहित्यिक संस्थाक स्थापना चाहैत छलाह। संयोगवश

10—तत्रैव, पृ० २९

१९३१ ई० क मैथिल महासभाक अधिवेशन दरभंगे मे आयोजित भेल छलैक। आयोजक छलाह प० नागेश्वर मिश्र एडवोकेट। एक नवीन साहित्यिक संस्थाक स्थापनाक इच्छा हुनको छलनि। प० शशिनाथ चौधरी सेहो एहि प्रयास मे लगलाह। ओहि साहित्य समितिक सदस्य लोकनि मे एक प्रभावशाली सदस्य दरभंगाक सर्कल मैनेजर प० केशी मिश्र सेहो छलाह। ओही साहित्य समितिक स्थान पर नवीन संस्था स्थापित करबाक पृष्ठभूमि सब गोटे मिलि तैयार कऽ चुकल छलाह। एहि प्रसंग भोलाबाबू अपन संस्मरण मे लिखने छथि :—

"प० नागेश्वर मिश्रक आश्वासन पर हम ताहि प्रकारेँ तैयार भेलहुँ जेना कोनो अधिवक्ता (ओकील) अपन मोकिल केँ ओकर स्वत्व रक्षार्थ मोकदमा जितैबाक अभिप्रायेँ प्रमाण पुस्तक तथा फाइल इत्यादिक संग न्यायालय जाइछ। जखन साहित्य समितिक बैसक भेल तँ स्व० कुमार गंगानन्द सिंह जी सभापति निर्वाचित भेलाह एवं क्रमशः कतोक व्यक्तिक भाषण भेल। हमरा पूर्ण स्मरण अछि जे जखन हम बंगला, अंगरेजी, हिन्दी आदिक पुस्तक सब सँ आवश्यक अंश पढ़ि-पढ़ि मैथिली साहित्यक महत्व एवं परिषदक स्थापनाक आवश्यकता देखबै लगलहुँ तँ प० केशी मिश्र आदि वयोवृद्ध साहित्य सेवीगण गदगद भय गेलाह। अस्तु, किछु वाद-विवाद नामक हेतु चलल जे संस्थाक नाम समिति, सम्मेलन वा परिषद की राखल जाय। अन्ततः अन्तमे नामक निर्णय भय प० श्री शशिनाथ चौधरी केँ प्रधानमन्त्री आ हमरा संयुक्त मन्त्री नियुक्त कैल गेल। एहि प्रकारेँ ५-४-१९३१ केँ दरभंगा मे मैथिली साहित्य परिषद क स्थापना भेल एवं मैथिली-स्वीकृतिक प्रस्ताव सर्वसम्मति सँ पारित कए पटना विश्वविद्यालय तथा शिक्षा विभाग मे पठेबाक निश्चय भेल।"[11]

11—तत्रैव, पृ० ३२-३३

जेँ हेतु एकर प्रथम अधिवेशन १६३१ ई० मे भेल छल तेँ श्री अमरजी अनुमान कयने होयताह जे एकर स्थापना १६३० मे भेल होयत किन्तु भोलाबाबूक संस्मरणक उपर्युक्त उद्धरण सँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि, जे एकर स्थापना १६३१ ई० मे भेल छल। परिस्थितिवश एकर प्रथम अधिवेशन वर्ष पुरला पर नहि अपितु स्थापनेक दिन भेल। अस्तु, एहि रूपेँ अपन मनोवांछित लक्ष्य धरि पहुँचबाक हेतु भोलाबाबू केँ एक स्वतन्त्र मंच प्राप्त भेलनि। हिनक लगनशीलताक प्रमाण यैह थीक जे अग्रिम अधिवेशन मे हिनका प्रधानमन्त्री निर्वाचित कयल गेलनि। ई जखन प्रधानमन्त्री निर्वाचित भऽ गेलाह तखन मैथिली साहित्य परिषदक मंच सँ अपन अन्यान्य सब कार्य कलापक उपेक्षा करैत एक मात्र मैथिलीक स्वीकृतिक प्रश्न केँ लक्ष्य मे राखि जूझय लगलाह। ओही वर्ष तत्कालीन तिरहुत प्रमंडलक शिक्षोपनिदेशक पछाति शिक्षा निदेशक (डी० पी० आइ०) स्व० गोरखनाथ सिंह जे भोजपुरी भाषा-भाषी छलाह तथा पटना विश्वविद्यालयक भाइसचांसलर फोकस साहेब दरभंगा आबयबला रहथि। दरभंगा जिलाक इन्स्पेक्टर एक मुसलमान रहथि। पहिले अधिवेशनक अवसर पर जे प्रस्ताव पारित कऽ शिक्षा विभाग तथा पटना विश्वविद्यालयक उपकुलपति केँ पठाओल गेल छल ताहि प्रसंग पत्राचार द्वारा परिषदक एक शिष्ट मंडल केँ भेट करबाक हेतु स्थान ओ समय निर्धारित कराय लेलनि। ताहि अनुसारेँ प० गंगाधर मिश्र एडवोकेट, नागेश्वर मिश्र एडवोकेट तथा एक अन्य व्यक्तिक संग चारू गोटे लहेरियासरायक सर्किट हाउस मे भेट करय गेलथिन। गंगाधर बाबू पहिने कहि देलथिन जे तर्क-वितर्क अहीँ के करय पड़त, हम सब केवल अहाँक समर्थन करब।

जखन भोलाबाबू अपन पक्ष उपस्थित करय लगलाह तँ भोजपुरी भाषा-भाषी गोरखनाथ सिंह हिनका तर्कक खण्डन करय लगलथिन जे सरकारी आँकड़ाक अनुकूल नहि छलनि। फोकस साहेब चुपचाप खण्डन-मण्डन सुनैत छलाह। ओ जिला इन्स्पेक्टर सँ पुछलथिन जे ई भाषा सर्वसाधारण

द्वारा बाजल जाइछ अथवा कोनो खास जाति मात्र बजैत अछि ? इन्स्पेक्टर मुसलमान होइतो निष्पक्ष भावें कहलथिन जे एहि क्षेत्रक मुसलमान लोकनि पर्यन्त ई भाषा बजैत छथि। हुनक कथा सुनि गोरखबाबू कहलथिन जे यथा समय उत्तर देल जायत आ किछु दिनक बाद उत्तर भेटलनि जे जाधरि विश्वविद्यालय मैथिली कें वर्नाकुलर रूपें उच्च कक्षाक हेतु स्वीकृत नहि करत ताधरि जनशिक्षा मे शिक्षा विभाग चालू नहि कऽ सकैत अछि। तखने सँ ओ विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत करयबाक प्रयत्न मे लागि गेलाह।

१९३३ ई०क आरम्भे मे तत्कालीन भाइस चान्सलर फोकस साहेब एक उपसमिति गठित कऽ देलथिन जाहिमे अन्यान्य सदस्यक अतिरिक्त एकटा सदस्य डा० जर्नादन मिश्र सेहो छलाह। भोलाबाबूक संस्मरण ग्रन्थ सँ ज्ञात होइत अछि जे 'विद्यापति काव्यालोक'क यशस्वी लेखक श्री नरेन्द्रनाथ दास पटने मे रहैत छलाह। हुनका संग मिलि कऽ भोलाबाबू उक्त सब-कमिटीक अन्यान्य सदस्यलोकनिक अनुनय विनय कऽ अपना पक्ष मे अनलनि, किन्तु तावत धरि पटना विश्वविद्यालय मे महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक दान सँ मिथिलेश महेश-रमेश चेयरक स्थापना भऽ चुकल छलैक। डा० जनार्दन मिश्र बी० एन्० कालेज मे प्राध्यापक रहथि। एही बीच युक्तिध राय बी० एन० कालेज सँ हटि, पटना कालेज आबि, उक्त चेयरक संचालक बनि गेलाह। उपसमितिक बैसक मे मैथिली चेयरक संचालन सँ अधिक मैथिली विषय मे प्रामाणिक व्यक्ति दोसर के भऽ सकैत छल ? एक तँ मैथिल ब्राह्मण, दोसर मैथिली चेयरक संचालक, ई उनटा सुनटा जे किछु तर्क-वितर्क देलथिन समिति से मानि लेलकनि आ मैथिलीक स्वीकृतिक विपक्ष मे अपन रिपोर्ट पठा देलकैक। फलतः १९३३क सिनेट एहि प्रस्ताव कें अस्वीकृत कऽ देलक। पत्र-पत्रिकाक दृष्टियें सेहो ओ काल शून्ये जकाँ छल। एक मात्र मिथिला मिहिर ताहू मे हिन्दीएक प्रधानता। जनसाधारण धरिक तँ गप्पे नहि, बुद्धिजीविओ वर्ग धरि अपन समस्याक सूचना पहुँचायब कठिन भऽ जाइत

छलनि। भोलाबाबू लिखने छथि—"परिषद अपन १६-१२-३४क स्थायी समितिक अधिवेशन मे एकर घोर प्रतिवाद करैत एक 'अपील' नामक पुस्तिका अंगरेजी मे छपाय सर्वत्र वितरित कैलक। ताहि सँ पूर्वहु एक पुस्तिका अङरेजिये मे 'केस आफ मैथिली बिफोर पटना युनिवर्सीटी' नामे छपौने छल जकरा ऊपर कमीटी वा सिनेट दृष्टिपातो नहि कैलक।"

पूर्व मे कहल गेल अछि जे भोलाबाबू स्वयं तँ संघर्षरत छलाहे, मित्रो लोकनि केँ एहि हेतु प्रेरित करैत रहैत छलाह। घोघरडीहा धरि मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशन मैथिल महासभाक संगहि होइत छल। घोघरडीहा अधिवेशनक हेतु अध्यक्ष म० म० डा० उमेश मिश्र मनोनीत छलाह। मैथिलीक विपक्षी लोकनि एकरा स्वतन्त्र भाषाक रूप मे मान्यता देबहि ने चाहैत छलाह। तेँ भोलाबाबू म० म० जी केँ अपन अध्यक्षीय भाषण मे विपक्षी लोकनिक तर्क केँ खण्डित करबाक विशेष अनुरोध कयने छलथिन। पटना विश्वविद्यालयक सिनेट केँ जे रिपोर्ट देल गेल छलैक ताहि मे मैथिलीक सम्बन्ध मे कहल गेल छलैक जे ईहो मगही तथा भोजपुरी जकाँ हिन्दीएक एक बोली (प्रभेद) थिक। एहि सँ प्रान्तीय एकता मे बाधा उपस्थित होयत, एहि सँ विश्व-विद्यालयक अनावश्यक व्ययभार बढ़ि जायत, तेँ एकरा मान्यता देब निरर्थक होयत। मैथिली पर चारू कात सँ होइत आक्रमण केँ देखि उक्त अधिवेशन मे म० म० जी द्वारा देल गेल भाषण मे जे मुद्रित अछि आधुनिक प्रादेशिक भाषा सबहिक विकास मे मैथिलीक स्थान, मैथिली मातृभाषाक सीमा, मैथिली बजनिहारक संख्या, मैथिली साहित्यक प्राचीनता, मैथिली मे विद्यमान साहित्य, मैथिलीक स्वतन्त्र लिपि आदिक विस्तृत परिचय देल गेल। ई स्वाभाविक जे म० म० जी उक्त भाषण गहन अध्ययन ओ कठोर परिश्रम सँ तैयार कयने होयताह, किन्तु एहि हेतु चिन्तन करबाक ओ उद्यत होयबाक प्रेरक भोलाबाबू छलथिन एतबा निःसंकोच भावेँ कहल जा सकैछ।

परिषद द्वारा पारित प्रस्ताव जे सम्बद्ध अधिकारी लोकनि केँ पठाओल जाइत छल तकरा ई कहि रद्दीक टोकरी मे धऽ देल जाइत छल जे ई कोनो स्वतन्त्र संस्था नहि, ओही मैथिल महासभाक पुच्छड़ थीक जे किछु ब्राह्मण ओ करण कायस्थ सँ सम्बद्ध अछि। विरोधीगणक एहि आपत्तिक निराकरण करबाक हेतु घोघरडीहा अधिवेशनक बाद मैथिली साहित्य परिषद केँ एकदम फराक कऽ देल गेल तथा एकर स्वतन्त्र अधिवेशन होमय लागल।

अनुक्षण मैथिलीक हित-चिन्तन मे लीन रहनिहार भोलाबाबू परिषदक अग्रिम अधिवेशन एम० एल० एकेडमी, लहेरियासरायक प्रांगण मे आयोजित कयलनि तथा ओहि अधिवेशनक अध्यक्षताक हेतु अलवर स्टेटक मुख्य न्यायाधीश तथा मैथिलीक प्रथम पत्र मैथिल-हित-साधनक संस्थापक सदस्य प० रामभद्र झाजी सँ अनुरोध कयलथिन। प० रामभद्र झाक हृदय मे मातृभाषाक प्रति केहन अनुराग रहनि से एही सँ स्पष्ट अछि जे सुदूर प्रवास मे रहैत अपना भाषा मे पत्र-पत्रिका प्रकाशित हो एहि प्रकारक चिन्तन कयनिहार लोकनि मे एक अन्यतम व्यक्ति छलाह। अपन मुद्रित भाषण मे हिन्दी ओ मैथिली कतेक भिन्न भाषा थीक, मैथिलीक अस्तित्व कतेक स्वतन्त्र ओ आत्मनिर्भर छैक ताहि सब विषय पर गंभीरता सँ विचार कयने रहथि। ओ एहन अनेकानेक शब्दक सूची प्रस्तुत कयने छलाह जकर अभिव्यक्ति हिन्दी मे एक शब्देँ नहि कयल जा सकैछ, जेना एक शब्द अछि इन्होर। एतबे नहि मैथिलीक स्वतन्त्र व्याकरण, रचना, शब्द साधनिका, लोकोक्ति आदिक अनेक उदारण दऽ मैथिलीक स्वतन्त्र सत्ता केँ प्रमाणित कयने रहथि। एतबे नहि, पोसुआ पशु-पक्षी पर्यन्तक हेतु व्यवहृत किछु एहन शब्दावलीक उदाहरण देने रहथिन जाहि सँ लोक चमत्कृत भऽ उठल रहय।

कतय अलवर स्टेट राजस्थान मे आ कतय मैथिली साहित्य परिषद दरभंगा मे, जकर कर्णधार भोलाबाबू अपन न्यायोचित अधिकार प्राप्त करबाक हेतु सोचैत-सोचैत एक न्यायालयक मुख्य न्यायाधीश केँ

अध्यक्षता हेतु आहूत कयलनि। एही सँ हुनक संघर्षक हेतु तन्मयताक अनुमान कयल जा सकैत अछि। ओ मुद्रित भाषण कोनहु युक्तिएँ डा० जनार्दन मिश्र धरि पहुँचाय देलथिन। डा० जनार्दन मिश्र तकर बाद एक लेख कोनो अंगरेजी पत्र मे लिखि प्रकाशित करौलनि जाहि मे मातृभाषाक परिभाषे बदलि देलथिन। उक्त लेख मे मातृभाषाक प्रसंगे डा० मिश्र की विचार व्यक्त कयने रहथि से भोलाबाबूक संस्मरणे सँ ज्ञात होइत अछि जे "जे भाषा लोक अपन माय-बहिन आदिक मुहेँ सिखैछ एवं जन्म भरि बजैछ से नहि, वरन् बार्द्धक्य अवस्था मे जाहि सँ ओकर जातीय संस्कार वा व्यक्तित्व बनैछ से थिक असल मातृभाषा, से बिहारक हिन्दिये अछि।"

संयोगवश डा० सर गंगानाथ झा ओहि समय दरभंगा आयल रहथि। भोला बाबू सूचना पबिते हुनका सँ भेट कऽ परिषदक कठिनता, डा० मिश्रक लेखक चर्चा करैत अग्रिम अधिवेशनक हेतु, जे मधुबनी मे होइतैक, अध्यक्षता करबाक प्रार्थना सेहो कयलथिन। डा० झा अध्यक्षता करबाक आग्रह केँ स्वीकार करैत कहलथिन—ओ लेख लेने आउ, हम उत्तर लिखबैत जायब आ अहाँ लिखने जायब, सैह हमर अध्यक्षीय भाषणो होयत। भोला बाबू सैह कयलनि, किन्तु परिषद केँ आर्थिक संकट रहिते छलैक तेँ परिषद ओहि भाषण केँ मुद्रित नहि करा सकल। भोलाबाबूक संस्मरणक अनुसार ओहि भाषणक किछु अंश 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित भेल छल। कहबाक तात्पर्य जे जेना महाभारत आदि मे आग्नेयास्त्रक प्रतिरोध करबाक हेतु वरुणास्त्रक प्रयोग पुनः तकर प्रतिरोध मे वायव्यास्त्रक प्रयोगक वर्णन भेटैत अछि तहिना भोला बाबू ताहि समयक विशिष्ट-विशिष्ट विद्वान लोकनि द्वारा प्रतिपक्षीक तर्क सभक खण्डन करबैत अपने नाटकक सूत्रधार जकाँ नेपथ्ये मे रहि संघर्ष केँ अग्रसरित करैत रहलाह।

एक तँ ताहि समय धरि शिक्षाक विशेष प्रसार ब्राह्मण ओ करण कायस्थ धरि सीमित छल जाहि कारणेँ साहित्य सर्जनाक क्षेत्र मे एही

दू जातिक लोक विशेष रुचि लैत छलाह। एही कारणेँ मिथिलाक्षरहुक व्यवहार एही दू जाति मध्य प्रचलित छल। दोसर मैथिल महासभाक नीतिक फलस्वरूप मैथिल शब्द ततेक सीमित भऽ गेल छल जे अन्यान्य जातिक लोक मे मैथिलत्वक कोनो गौरव-बोध नहि होइत छलैक। भोलाबाबू एहू वैषम्यक अनुभव करैत छलाह। परिषदक छठम अधिवेशन जे १९३६ ई० मे मुजफ्फरपुर मे आयोजित भेल छल जकर अध्यक्ष प० जयानन्द कुमर तथा स्वागताध्यक्ष बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' रहथि। ताहि मे एहि वैषम्य केँ दूर करबाक चेष्टा परिलक्षित होइत अछि। मैथिली साहित्य परिषदक एहि अधिवेशनक मंच पर उपस्थित व्यक्तिसभक नामावली एहि कथनक पुष्टि करैत अछि। श्री अमरजी 'परिषदक संक्षिप्त इतिहास' मे लिखने छथि :

"एहि अधिवेशन मे उपस्थित किछु विशिष्ट व्यक्तिक नामावली सँ ज्ञात होइत अछि जे मैथिली भाषाक उत्थानक हेतु जाहि प्रकारक मंचक आवश्यकताक अनुभव कयल जाइत छल तकर पूर्ति एहि अधिवेशन मे आबि कऽ भेल। नामावली निम्नलिखित अछि :

"बाबू उमाशंकर प्रसाद, रायबहादुर श्यामनन्दन सहाय, बाबू राजेश्वर प्रसाद सिंह (नरहन), सर चन्द्रेश्वर प्रसाद नारायण सिंह, रायबहादुर श्री नारायण महथा, श्री महेश्वर नारायण सिंह, प० धर्नराज ओझा, प० यमुनाप्रसाद त्रिपाठी, प० परमेश्वर त्रिपाठी, सर्वश्री केदारनाथ महथा, गौरीदत्त जालान, रामदेव ओझा, लक्ष्मीनारायण गुप्त, गया प्रसाद, रमाचरण, विन्देश्वरी प्रसाद वर्मा, जनकधारी प्रसाद, शारदा प्रसाद, मदन प्रसाद, एल० एन० गोस्वामी, लक्ष्मी नारायण सिंह, तारकेश्वर प्रसाद, आरसी प्रसाद सिंह, रेवती रमण श्रीवास्तव, श्रीमती भवानी मेहरोत्रा, प० रामनन्दन मिश्र, श्री सूर्यनारायण सिंह, श्री योगेशचन्द्र मुखर्जी आदि।"

समाजक विभिन्न वर्ग आ सेहो गण्य-मान्य, अपन-अपन विशिष्ट व्यक्तित्वक कारणेँ प्रमुख स्थान रखनिहार लोकनि केँ मैथिलीक मंच

पर उपस्थित करबा मे यदि स्वागताध्यक्ष भुवनजीक किछु प्रभाव सहायक भेलनि तँ भोलाबाबू केँ सम्पर्क करबा मे सेहो पर्याप्त समय ओ श्रम लगाबय पड़ल छलनि ।

संघर्ष केँ तेज करबाक दृष्टिएँ उपरिलिखित अधिवेशन मे कतोक महत्त्वपूर्ण कार्य सब कयल गेल जाहि सबसँ जाहि अधिकार प्राप्तिक संघर्ष मे लागल छलाह, से अधिकार प्राप्त भेला उत्तर मैथिली-भाषा-साहित्य अपना केँ ताहि योग्य सिद्ध कऽ सकय । ताहि हेतु आवश्यक छल भाषाक एक मानक स्वरूप हो । तेँ हेतु एहि अधिवेशन मे शैली निर्धारण समिति संगठित कयल गेल जकर अध्यक्षता म० म० डा० उमेश मिश्र कयने छलाह ।

साहित्य केँ सर्वाङ्गपूर्ण बनयबाक हेतु महाकाव्य सेहो महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि । एहि अधिवेशन सँ पूर्व धरि मिथिला भाषा रामायण केँ छोड़ि कोनो महाकाव्य मैथिली मे प्रकाशित नहि भेल छल । परिषदक इतिहासक अनुसार एहि अधिवेशन मे जतय कविशेखर बदरीनाथ झा मैथिली मे महाकाव्य लिखि देबाक घोषणा कयने छलाह ततय साहित्य रत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दास अपन लिखल 'सुभद्राहरण' महाकाव्यक किछु अंश सुनौने छलथिन । एहिना साहित्यक अन्यान्य विधा केँ समृद्ध करबाक आग्रह विद्वान लोकनि सँ कयल गेल छलनि । कविशेखरजीक 'एकावली परिणय' महाकाव्य तथा म० म० डा० सर गंगानाथ झाक 'वेदान्त दीपक' एहि अनुरोधक प्रतिफल थीक ।

ई अधिवेशन परिषद मे एक नवीन उत्साह भरि देने छल । सरकारिओ पदाधिकारी लोकनिक ध्यान मैथिलीक बढ़ैत शक्ति दिस आकृष्ट कयने छल । मैथिलीक स्वीकृतिक विरोध ओ पक्ष मे रहनिहार लोकनि केँ, यथार्थक दर्शन करयबाक हेतु अग्रिम अर्थात् सातम अधिवेशन बिहारक राजधानी पटने मे करबाक निश्चय कयल गेल छल । ओहि अधिवेशनक अध्यक्षता करबाक अनुरोध डा० अमरनाथ झा सँ कयल गेल छलनि । एहि मध्य दू गोट विशेषाधिवेशन सेहो मैथिल महासभाक संग आयोजित

कयने छलाह, प्रथम सरिसब मे जकर अध्यक्ष प० गिरीन्द्र मोहन मिश्र केँ बनाओल गेल छलनि। ध्यातव्य जे जे मिश्रजी १९१४ ई०क भागलपुर मे आयोजित हिन्दी साहित्य सम्मेलनक मंच सँ मैथिलीक विरोध मे प्रस्ताव उपस्थित कयने छलाह, सैह मिश्रजी अपन पहिलुक भ्रान्ति केँ स्वीकार करैत अपन अध्यक्षीय भाषण मे मातृभाषाक विकासक महत्व केँ स्वीकार कयने छलाह जकर चर्चा ओ अपन 'किछु देखल किछु सुनल' नामक संस्मरणात्मक ग्रन्थ मे कयनहु छथि आ एहु पुस्तक मे पूर्वक अध्याय मे एकर चर्च भऽ चुकल अछि। दोसर विशेषाधिवेशन सीतामढ़ी मे भेल छल जकर अध्यक्षता राजपण्डित बलदेब मिश्र कयने रहथि। राजपण्डितजीक प्रभाव महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह पर छलनि तथा अपन चरम लक्ष्यक प्राप्ति मे महाराजाधिराजक सहयोग विशेष प्रभावी होयत सैह सोचि भोलाबाबू उपर्युक्त दूनू मिश्रजी केँ अध्यक्षक सम्मानपूर्ण पद पर प्रतिष्ठापित कयने रहथिन। ई दूरदर्शितापूर्ण दृष्टि छलनि भोलाबाबूक।

पटनाक अधिवेशनक हेतु मनोनीत अध्यक्ष डा० अमरनाथ झा केँ समयाभावेँ अयबामे कठिनता होइनि, तेँ अधिवेशनक तिथि अनेक बेर आगाँ बढ़ाओल गेल। अन्ततः जखन समय नहिएँ बाहर कऽ सकलाह तँ ३-४ अक्टूबर १९३६क मुजफ्फरपुर अधिवेशनक बाद ९ अप्रैल १९३८ ई० मे पहिलुके अध्यक्ष पं० जयानन्द कुमरजीक अध्यक्षता मे सातमो अधिवेशन सम्पादित भेल। ओहि अधिवेशन मे दू गोट शिष्टमंडल आ एकटा उपसमिति नियुक्त कयल गेल छल। पहिल शिष्टमंडल बिहार सरकार द्वारा नियुक्त शिक्षा समितिक अध्यक्ष डा० राजेन्द्र प्रसाद सँ वर्धा स्कीमक अनुसार मातृभाषाक माध्यम सँ शिक्षा देबाक तथा मिथिलांचलक मातृभाषा मैथिली होयबाक कारणेँ मैथिली माध्यम लागू करयबाक आग्रह करबाक हेतु तथा दोसर शिष्ट मंडल पटना विश्वविद्यालयक तत्कालीन उपकुलपति डा० सच्चिदानन्द सिन्हा सँ भेंट कऽ पाठ्य विषय मे मैथिली केँ स्वीकृति देबाक औचित्य सिद्ध करबाक हेतु कयल

गेल छल। उपर्युक्त पहिल शिष्ट मंडल मे रायबहादुर प० जयानन्द कुमर, श्री सूर्यनन्दन ठाकुर एम्० एल्० ए०, श्री चतुरानन दास एम्० एल्० ए०, डा० सुधाकर झा तथा बाबू भोलालाल दास तथा दोसरो शिष्ट मंडल मे भोला बाबू तथा रायबहादुर पं० जयानन्द कुमरक अतिरिक्त बाबू अवधबिहारी झा एडवोकेट, प० लक्ष्मीकान्त झा, जे पछाति पटना उच्च न्यायालयक मुख्य न्यायाधीश भेलाह, पं० रामअनुग्रह झा तथा कुमार गंगानन्द सिंह कें राखल गेलनि। उपसमिति जे संगठित कयल गेल छल से ग्राम्य गीत सभक संकलनार्थ जाहि मे बाबू गंगापति सिंह, श्री नरेन्द्र-नाथ दास 'विद्यालंकार', प० शिवनन्दन ठाकुर, श्री पुलकितलाल 'मधुर', श्री काञ्चीनाथ झा 'किरण', बाबू लक्ष्मीपति सिंह, श्री हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज', बाबू धनुषधारी लाल दास, मैथिली वाचस्पति प० श्रीबल्लभ झा प० जयगोविन्द मिश्र तथा पटना अधिवेशनक मनोनीत अध्यक्ष डा० अमर नाथ झा सेहो छलाह।

परिषद कही अथवा भोला लाल दास, ताहि समय भोलाबाबू परिषदक पर्यायवाची बनि गेल छलाह। अतः परिषदक मुख्य उद्देश्य अर्थात् भोलाबाबूक मुख्य उद्देश्य छलनि विश्वविद्यालय द्वारा मैथिलीक स्वीकृति जाहि उद्देश्यक पूर्ति हेतु उक्त शिष्ट-मण्डल बनाओल गेल छल। ओ शिष्ट-मण्डल कोन रूपें काज कयलक से एतय भोलेबाबूक 'संस्मरण' ग्रन्थ सं उद्धृत करब विशेष प्रामाणिक होयत। ओ लिखने छथि :

"शिष्ट-मण्डल लए जयबाक प्रस्ताव मुजफ्फरपुर मे भेल छल। बीचहु मे कतेक बेर एकर आश्वासन एवं आयोजन सम्बन्धी समाचार भारती मे छपल देखि पड़ैछ। (भारतीक अंक १ पृ० ३५, अंक ३ पृ० १०, अंक ५-६ पृ० २०४, अंक ७ पृ० २४५ द्रष्टव्य) कतबो प्रयास कय आबी डा० अमरनाथ झा एवं कुमार गंगानन्द सिंह कें जुटायब असंभव भए गेल। सोतिपुरेक कोनो विश्वासी लोक सँ पता लागल जे डा० झाक ओहिठाम उपनयन थिकैन्ह। ओ अमुक तिथि कें पटने होइत गाम आबि रहल छथि तें ने आओ (पानि) बुझलहुँ ने ताओ (आगि) पटनहि

मे हुनका पकड़बाक हेतु दौड़ि गेल्हुँ। ओतय ई सुनि आसमान सँ खसि पड़ल्हुं जे ओ रातिये खन सीधे गाम चल गेलाह, पटना मे एको घंटा नहि अटकलाह। मनक साध मनहि रहल जे भाइस चान्सलर केँ भाइस चान्सलर सँ भेट भेल कि स्वीकृति अनायासे हैत। ....डा० अमरनाथ झाक एहि प्रकार उपेक्षा पर हमरा मर्माहत देखि रायबहादुर जयानन्द कुमरजी आश्वासन देलन्हि जे आइ आब समय नहि अछि, काल्हि चलब। अपनहि डेरा पर बड़े आदरपूर्वक रखलन्हि एवं प्रातःकाल कहलन्हि जे हमरा फोन पर सिन्हा साहेब सँ गप भय गेल अछि, अहाँक प्रतीक्षा कए रहल छथि, अहाँ भेट कय अबियौन्ह। हम हुनको संग चलबाक आग्रह केल्यिन्ह मुदा ई कहि अपने नहि गेलाह जे हम हुनका सँ पश्चात् गप कय लेब, अहाँ जाऊ।"[12]

शिष्ट-मण्डल मे जे विशिष्ट लोक छलाह तनिका लोकनिकेँ ततेक समयाभाव रहैत छलनि जे एहन सार्वजनिक काजक हेतु अपन वैयक्तिक काज केँ टारि कऽ समय देब संभव नहि भऽ पबैत छलनि। अतः क्षुब्ध भऽ भोलाबाबू केँ लिखय पड़लनि :

"प्रस्ताव करैत काल हमरा सबहुकेँ ई ध्यान नहि रहैत अछि जे जाहि व्यक्ति केँ हम एहि कार्यक हेतु निर्वाचित करै छी, तनिका समय भेटतन्हि वा नहि। पत्राचारक कोन कथा तार पर्यन्त देल गेल किन्तु सदस्यगण केँ एकत्रित हैबाक कोनो संभावना नहि देखल गेल। ओना हम स्वयं भाइस चान्सलर महोदय सँ जूनहि मे भेट कए आयल छिऐन्ह किन्तु हुनको आग्रह छलन्हि जे डेपुटेशनिस्ट लोक सबसँ बात करी। अन्त मे ईह निश्चित भेल जे जतबे गोटय सम्मिलित भए सकब ततबे व्यक्ति परिषदक प्रस्तावक ध्येय बुझा दियैन्ह। तदर्थ हम एहि मासक आरंभ मे कय बेर पटना गेल्हुँ किन्तु कुमार गंगानन्द सिंह महोदय केँ समय नहि भेटि सकलन्हि। अतः हम एहि यात्राक उपयोग स्वागत समितिहिक संगठन मे कैल। ई परिस्थिति अछि हमरा सबहक उद्योगक। तखन स्वीकृति आदिक चर्चा व्यर्थे कैल जाइछ।" [13]

12. संस्मरण, पृ० 95-96। 13. भारती अंक 7, पृ० 245-246

अस्तु, रायबहादुर जयानन्द कुमरजी जखन भोलाबाबू केँ एकसरे जाय भाइस-चान्सलर सँ भेट करय कहलथिन तखनुक प्रसंग ,मे भोलाबाबू लिखने छथि :

"हमरा अपना विषय मे कोनो न्यूनता आदिक भावना नहि छल। यद्यपि सिन्हा साहेबक समक्ष हम एक मामूली जुनियर ओकिल, ओ लब्ध-प्रतिष्ठ बैरिस्टर, अवस्थो तेहने छोट पैघ। व्यक्तित्व, विद्वत्ता आदिक तँ कथे नहि हो। मैथिलीक विषय मे हम अपना केँ केहनो पैघ व्यक्तित्व केँ सब प्रकारेँ परास्त करबाक हेतु सक्षम बुझैत छलहुँ।"[14]

वस्तुतः कतेक दृढ़ आत्म-विश्वास छलनि हुनका मे से एहि कथन सँ व्यक्त भऽ जाइत अछि आ जेँ हुनका मे एतेक आत्मबल छलनि तेँ एतबो अधिकार मैथिली केँ प्राप्त भऽ सकलैक। डा० सच्चिदानन्द सिन्हा सँ एकाकी जाय भोलाबाबू जे भेट कयने छलथिन ताहि अवसर पर जे दूनू गोटे मे वार्त्तालाप भेलनि, से किछु विस्तृत होइतो उद्धृत करब एहि हेतु समीचीन होयत जे ओ एक ऐतिहासिक वार्त्ता छल। भोलाबाबू एहि प्रसंग 'संस्मरण' मे विस्तार सँ चर्चा कयने छथि :

"वस्तुतः सिन्हा साहेब प्रतीक्षा कए रहल छलाह। हिन्दी मे वार्त्तालाप भेल। स्वागत करैत पृछलन्हि जे अमरनाथ बाबू कहाँ छथि ? हम एतेक दिन सँ हुनके प्रतीक्षा कय रहल छलहुँ। अस्तु, अहीं बुझाउ। संक्षेपहि मे हम अपन पक्ष स्थापित कैल। एक डेढ़ घंटा धरि हुनका सँ वार्त्तालाप होइत रहल। कोना बंगाल सँ अति प्रयत्ने बिहार प्रान्तक ओ लोकनि निर्माण कैलन्हि एवं किछु मैथिले सब बंगालक गवर्नर सँ पृथक भेंट कए बाधक भेलथिन, पहिने तकरे बड़का खिस्सा चलल। सबटा सुनि अन्त मे नम्रतापूर्वक हम विरोधक प्रतिरोध मे ई कहलियन्हि जे मैथिल सब अनुचिते की कैलन्हि जखन कलकत्ता विश्वविद्यालय मैथिली केँ मैट्रिक सँ एम० ए० पर्यन्त भाषा रूपेँ स्वीकृत कएल्क मुदा

14. संस्मरण पृ० 96

अपना प्रान्तक विश्वविद्यालय आइ १५-२० वर्ष सँ एकर विरोधपूर्ण उपेक्षा कए रहल अछि।

......मुदा हम जतेक दिन सँ प्रैक्टिस कए रहल छी तथा जतेक दूर पूर्णियाँ सँ बलिया धरि घूमल छी, अहाँ ने प्रैक्टिश कैने छी ने घुमले हैब, मैथिली बजैत ककरो.मुहेँ कतहु,नहि सुनलहुँ, सब ठाम लोक हिन्दीये बजैत अछि। अपना सेबक केँ हमरा हेतु भोजपूरी मे चाय अनबाक आज्ञा दैत सिन्हा साहेब बजलाह :

''भोजपुरी तँ सरकारक मुहेँ सुनबे कैल आ पटना मे मगहियो सुनिते छी, मैथिलीक व्यवहार तँ जनसाधारणो नहि करैछ, एकर लोकगीतो नहि चलैछ, लोकनृत्ये नहि होइछ, साहित्यसेवो नहिये होइत आएल अछि। किछु एहि प्रकार हमर नम्र उत्तर भेल अछि। सिन्हा साहेब मैथिली साहित्यक अल्पता एवं पत्र-पत्रिकादिक नगण्यताक शिकायत करैत कहलन्हि जे अहाँ मैथिलीक स्वीकृति करबए चाहै छी तँ की भोजपुरी और मगहियो से नहि चाहत ? और सोचू तऽ तखन ई प्रान्त की छिन्न-भिन्न नहि भए जायत ? व्यर्थ अहाँ बिहार केँ 'टूवर आफ बावेल' बनावए चाहै छी। आ हमरा लोकनिक नव प्रान्त निर्माणक सबटा कैल धैल ध्वस्त करए चाहै छी। चाहो चलैत रहल एवं गप्पो किछु काल एहिना चलैत रहल। हुनक विचार यैह बुझि पड़ल जे प्राचीन तथा प्रांजल साहित्य यदि मैथिलीक छैको तँ ओहो अवधी ब्रजभाषा जकाँ हिन्दीक भेँट चढ़ाओल जाय किन्तु बंगला, मराठी आदि जकाँ ने ओकर स्वीकृति हो ने भाषा रूपेँ पठन-पाठन आदि।

हम जखन क्रम सँ एहि सब विचारक औचित्य एवं न्याय बतौलि-यन्हि तँ सिन्हा साहेब किछु रुष्टता एवं आवेग पूर्वक कहलन्हि जे देखू आब हम बूढ़ भेलहुँ। अहाँक महाराजाधिराज नवयुवक छथि। हम भगवान सँ मनवैत छी जे हमरा बाद यैह भाइस-चान्सलर होथि मुदा हम कहि दै छी, बाबू भोलालाल, यदि ई प्रश्न हुनको समक्ष उपस्थित हैत तँ ई तेहन जटिल एवं अनुपयुक्त अछि जे हुनको एकरा स्वीकृत करबाक साहस

नहि हेतैन्ह। तथापि अहाँक सन्तोषार्थ हम आइ सँ मैथिलीक एक स्वतन्त्र फाइल रखबाक व्यवस्था कए दैत छी और देखए चाहै छी जे एकर माङ कतेक अनिवार्य एवं सार्वजनीन अछि। विश्वविद्यालयक एक किरानी जे ओहि ठाम बैसल छलाह, तनिका एहि प्रकारक आदेश प्रदान कए देलथिन्ह।

अधिक वाद-विवाद व्यर्थ जनितहुँ नम्रतापूर्वक ई कहि उठि गेलहुं जे मैथिली कोनो व्यक्तिक कृपापर नहि अपना कोटिहुसँ ऊपरे मैथिली भाषी जनताक माङ क औचित्य एवं न्यायहि पर निर्भर अछि आ आइ ने काल्हि एकर स्वीकृति भइए कए रहत।[15]

सीतामढ़ी विशेषाधिवेशन मे जे शिष्ट मण्डल महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह सँ भेंट करबाक हेतु नियुक्त भेल छल ताहि सँ किछुए दिन पूर्व पटना विश्वविद्यालय महाराज केँ आजीवन सदस्यता प्रदान कयने छलनि आ ताहि हेतु 'गाउन' पठौने छलनि। जखन ई शिष्ट मण्डल भेंट करय गेलनि तँ सदस्यता प्राप्तिक हेतु साधुवाद दैत आग्रह कयलकनि जे एहि गाउनक उपयोग प्रथम प्रथम मैथिलीक स्वीकृतिएक हेतु कयल जाय। परिषद तँ प्रस्ताव पठौनहि छैक, अपनहु एक स्वतन्त्र प्रस्ताव पठाओल जाय से निवेदन कयलकनि। पैघ लोकक बात किछु भिन्न होइत छक। एहू काज मे किछु समय बीति गेलैक। एहि बीच मे भोला बाबू मैथिलीक पक्ष मे 'इण्डियन नेशन' मे एक लेख पठौने छलथिन। महाराज इण्डियन नेशन अवश्य पढ़ैत छलाह। भोलाबाबूक उक्त लेख सँ महाराज बहुत प्रभावित भेल रहथि।

यद्यपि ओहि समय धरि औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त भऽ गेल छलैक, बिहार मे कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल बनि गेल छलैक तथापि सामन्तवादी युगक अन्त नहि भेल छलैक। महाराजाक धाख बनले छलनि। ओहि लेख सँ प्रभावित भए महाराजाधिराज घोड़सवार पठाय भोलाबाबू केँ बजबौलथिन। तकर बाद महाराजाधिराज द्वारा कोना सिनेट मे प्रस्ताव

15. संस्मरण, पृ० 96-97

राखल गेल, कोना भोलाबाबू लोकनि पटनो मे तत्पर छलाह तकर विस्तृत विवरण 'संस्मरण' नामक ग्रन्थ मे लिखने छथि। स्वीकृतिओक समय मे विरोधी पक्ष कोन तरहेँ छिटकी मारय चाहैत छल सेहो घटना रोचक अछि। औहूठाम भोलाबाबूक दूरदृष्टि मैथिलीक भविष्यक रक्षा मे साधक भेल। सदन मे महाराजाधिराज केँ प्रलोभन देल गेलनि जे क्लासिकल रूप मे मैट्रिक सँ एम० ए० कक्षा धरि स्वीकृति भेटि सकैत अछि, यदि वर्नाकुलर रूपेँ चाहब तँ तावत केवल मैट्रिक कक्षा मे सेहो ऐच्छिक रूप मे भेटि सकत। महाराजा बाहर आबि प्रतीक्षारत व्यक्ति सब सँ दूनू स्थिति कहि सुनौलथिन। भोलाबाबूक उत्तर छलनि जे एके कक्षा मे तावत हो, किन्तु से वर्नाकुलरे रूप मे हो। एहि प्रकारेँ सर्वत्र सजग ओ सावधान रहि मैथिली केँ उचित मान्यता दिअयबा मे भोलाबाबू संघर्षशील रहलाह। एहि क्रिया-कलापक प्रत्यक्षदर्शी आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' उचिते कहने छथि :

"मैथिली, परिषद ओ भोलाबाबू तीनू शब्द पर्यायवाची बनि गेल छल। ओहि समय मे भोलाबाबूक मुख्य जीविका वकालति गौण आ मैथिली भाषा साहित्यक चिन्तने मुख्य अध्यवसाय बनि गेल छल। कखनहु ओ मैथिली पक्ष मे आधार वस्तुक संकलन करथि, प्रतिनिधि मण्डलक जोगाड़ करथि ओ अधिकारिक आगाँ स्वीकृतिक लेल माङ राखथि तँ कखनहुं मातृभाषाक प्रति लोक मे रुचि जागरण हेतु सभा समितिक आयोजन करथि। पुनः विरोधी लोकनिक उत्तर मे पत्र-पत्रिकाक कालम भरबाक हेतु अंग्रेजी, हिन्दी ओ मैथिली भाषा मे लौह लेखनी भाँजथि। हुनक ई रूप देखि क्यौ हुनका सनकल कहनि—'जनिका नहि परवाहि अहि क्यौ कहओ बताहो' ओहि स्वरूपक चित्रण थिक।"[16]

मैथिलीभाषी क्षेत्रक मानचित्र

भोलाबाबू केँ एहू बातक चिन्ता छलनि जे मैथिली भाषाक स्वीकृतिक प्रसंग एकटा ईहो प्रश्न उठाओल जा सकैत अछि जे बिहार प्रान्तक

16. स्मृति, पृ० 11

नक्शा मे मैथिलीक क्षेत्र कतय सँ कतय तक मानल जायत। जे संघर्ष-शील व्यक्ति दक्ष होइत अछि से अपन आगाँ, पाछा, वामा, दहिना अर्थात् चतुर्दिक सुरक्षाक प्रबन्ध पहिने कऽ लैत अछि आ सैह कयलनि भोलाबाबू, जे 'भारती'क वसन्तांक मे मैथिली भाषी क्षेत्रक निर्णायक मानचित्र प्रकाशित करबौलनि। मैथिलीक स्वीकृतिक विरोध मे हिन्दीक पक्षधर लोकनि कोनो कुचक्र रचना सँ बाज नहि अबैत छलाह। मैथिली भाषी क्षेत्र केँ खण्ड-प्रखण्ड कऽ जार्ज ग्रिअर्सन जे मैथिलीक उपभाषा सभक चर्चा कयने छथि ताहि बोली सबकेँ भाषाक संज्ञा दऽ छिन्न-भिन्न करबाक चेष्टा करय लगलाह। भोलाबाबू लिखने छथि :

"स्वीकृतिक विरोध मे हिन्दीक पक्षपाती कतोक व्यक्ति कखनहु पूर्णियाँ, कखनहु सन्थाल परगना एवं दक्षिण बिहारक मुंगेर, भागलपुर, हजारीबाग, गिरिडीह एतेक दूर धरि जे मुजफ्फरपुर पर्यन्त में बज्जिका, अंगिका, मधेसी, जोलही आदि भिन्न-भिन्न बोलीक नाम कहि मैथिली क्षेत्रहि केँ लुप्तप्राय करबाक प्रयास कए रहल छलाह। तेँ सरकारी भाषा सर्वेक्षणक आधार पर ताहि क्षेत्रक निश्चित रूपरेखा देव अनिवार्य भेल।"

उक्त मानचित्र मे शुद्ध मैथिली क्षेत्र, मैथिली बंगला मिश्रित क्षेत्र, शुद्ध बंगला क्षेत्र, उड़िया मिश्रित क्षेत्रक भिन्न-भिन्न रंगक विवरण दऽ स्पष्ट कयल गेल छैक, संगहि भोजपुरी, मगही आदिक निर्देश सेहो देल गेल छैक। स्मर्त्तव्य जे ई मानचित्र 'भारती' मे प्रकाशित भेलाक बाद पुनः ओही वर्ष 'मिथिला-मिहिर'क शारदीय अंक मे सेहो प्रकाशित भेल।

आन्दोलनक डेग जहिना-जहिना आगाँ बढ़ैत गेल, ओकरा आओरो गतिशील करबाक हेतु भोलाबाबू केँ एक स्वतन्त्र पत्रिकाक आवश्यकता अनुभव भेलनि। लहेरियासराय मे दरभंगाक छओ गोट व्यवसायी व्यक्ति एक 'मित्रमण्डल' नामक संस्था बनाय 'बिहार प्रेस' नामक एक प्रेस स्थापित कयलनि। ओ छबो व्यक्ति के सब छलाह तकर कोनो प्रामाणिक सूचना नहि प्राप्त होइत अछि। अन्वेषण कयला पर मात्र एतबे

ज्ञात भऽ सकल जे किशोरीलाल दास नामक व्यक्ति ओकर मैनेजर रहथि। वैह मित्रमण्डल 'भारती' मासिक पत्रक प्रकाशक छल। भोला-बाबू ताहि समय मैथिली साहित्य परिषदक प्रधान मन्त्री छलाह। परिषद ताहि समय मे मैथिली केँ शैक्षणिक मान्यता देबाक कार्य केँ मुख्य लक्ष्य बनाय आन्दोलन मे लागल छल। अतः आर्थिक दृष्टिएँ विपन्न रहितहुँ भोलाबाबू मैथिली साहित्य परिषद द्वारा संरक्षित मासिक पत्र उद्धृत करैत ओकर सम्पादन आरंभ कयलनि। जेँ पत्रक नाम 'भारती' छलैक तेँ ओकरा मुखपृष्ठ पर हंसवाहिनी वीणाधारिणी सर-स्वतीक चित्र अंकित कयल गेल तथा वीणाक वामभाग मे षोड़शदल एक कमलक चित्र बनाय प्रत्येक दल पर एक-एक अक्षर 'मैथिली साहित्य परिषद द्वारा संरक्षित' मिथिलाक्षर मे लिखबाय मध्य मे षट्कोणक बीच मे 'ॐ' लिखल गेल। भोलाबाबू आशान्वित छलाह जे परिषद एक सार्वजनिक संस्था थिक। समाजक प्रबुद्ध वर्ग एहि सँ सम्बद्ध छथि आ ई पत्र परिषदहिक लक्ष्य साधन मे अपन शक्ति लगाओत तेँ एकर व्ययभार विवेकी लोकनि अवश्य उठयबाक हेतु उत्साहित होयताह। भारतीक प्रथमे अंकक आत्म निवेदन मे कहल गेल अछि :

"बिहार मे मैथिलीक प्रश्न जेहन महत्त्वपूर्ण भय रहल अछि ताहि सँ आब क्यो मिथिलावासी तटस्थ नहि रहि सकै छथि। मैथिली साहित्य परिषदक निरन्तर उद्योग सँ विरोधक वातावरण आब बहुत किछु परिमार्जित भेल अछि। पटना विश्वविद्यालय आइ १५-२० वर्ष सँ मैथिलीक प्रश्न केँ जाहि रीतियेँ ठोकरबैत आयल अछि से महती मैथिली जनताक हेतु लज्जाक विषय थीक। ओ चोट आब ताहि पराकाष्ठा पर पहुँचि गेल अछि जे ओकर अभिव्यक्ति अधिवेशनक प्रस्ता-वादि द्वारा नहि भए सकैछ। यद्यपि आब प्रान्त वा पड़ोसहुक अनेक पत्र मैथिलीक पक्षकेँ समर्थित करै छथि तथापि बिना स्वतन्त्र पत्रेँ एहि लोकमतक निर्वाह नहि भै सकैछ।

आब हम मैथिलीक पुरातन पटोर सँ अभिनव खादीक शुभ्र साड़िये

सजाएब आवश्यक बुझै छी। विद्यापति ओ गोविन्द दासक काव्यावली सँ आधुनिक साहित्य निर्माणहि कैँ अनिवार्य बुझै छी। से की बिना सर्वाङ्ग सुन्दर पत्रेँ संभव? एही निश्चित उद्देश्य केँ समक्ष राखि भारतीक अवतार भेल अछि।''

भोलाबाबू केँ ई आशा छलनि जे पत्रक कार्य-कलाप, एकर नीति ओ प्रकाशित सामग्री केँ देखि पाठक लोकनि यथोचित सहयोग देताह। 'परिषद द्वारा संरक्षित' मुखपृष्ठक सब सँ उपरे छपबैत छलाह तथा परिषद समाचारक हेतु जे स्तम्भ निर्धारित कयने छलाह तकरा हेतु तेसर अंक सँ एक वृत्ताकार मे 'परिषद समाचार' ई मिथिलाक्षर मे लिखबाय ब्लाक बनबा लेने छलाह किन्तु भेलनि की से पुनः भोले बाबूक शब्द मे विशेष विश्वसनीय होयत। ओ संस्मरण मे लिखने छथि :

''सहायताक तँ कोनो बाते नहि, प्रतिष्ठहु मे किछु बट्टे लागल। ई पत्र शुद्ध रूपें मैथिली स्वीकृतिक आन्दोलन केँ प्रगति देबाक अभिप्राय सँ चलौल गेल छल। परिषदक ई खास पत्र थिक ताहि भावना सँ आवरण पृष्ठक चित्र पर ''परिषद द्वारा संरक्षित'' कमलदलक मोहर पर अंकित कयल गेल मुदा स्थायी समितिक अधिवेशन मे स्व० पं० नागेश्वर मिश्र केँ सन्देह भेलैन्ह जे कदाचित भोलाबाबू, शशिनाथ चौधरी जकाँ एकर व्ययभार परिषद् पर ने लादथि तएँ प्रस्ताव द्वारा ओहि दोसर अक्षर केँ उठयबाक प्रस्ताव कए देलथिन्ह। हमरा आश्वासन देला पर ओ कहुना रहल मुदा अन्त मे वस्तुतः ओकर प्रकाशन व्ययक बकियौताक चुकता हम नहि कए सकलहुँ तँ **डेढ़ हजार मे अपन लहेरियासराय बला डेरा बन्धक राखि तकरा स्वयं चुकौलहुँ।**''[17]

एहि प्रकारेँ हिनक समग्र क्रिया-कलापक अनुशोलन कयला सँ मानय पड़ैत अछि जे भोलाबाबू तन-मन-धन सँ अर्थात् पहिने मन सँ उद्यत भय, तन सँ प्रवृत्त भय तथा धन सँ एहि महानुष्ठानक अर्थात् पाठ्यग्रन्थ मे मैथिलीक मान्यता दिअयबाक पूर्णाहुति कय मातृभाषाक उद्धार मे अपना केँ होम कऽ देलनि।

---

17. संस्मरण पृ० 18

चतुर्थ अध्याय

भोलालाल दासक लेखनी ओ मैथिली केँ अवदान

अपन कारयित्री प्रतिभा सँ भोलाबाबू मातृभाषाक भंडारक श्रीवृद्धि करबा मे कोन रूपक योगदान कयने छथि ताहि पर विचार करबाक समय डॉ० श्री रामदेव झा द्वारा व्यक्त उद्गार समक्ष आबि जाइछ जे निम्नांकित अछि :

"एकटा ज्वालामुखी जकरा भीतर मे धह-धह आगि निरन्तर धधकैत रहल। जाहि आगि मे विघ्नबाधाक पहाड़ पिघलि कऽ तरल बनि बहैत रहल। एकटा ज्वालापुञ्ज, जकरा प्रकाश मे अनदेखल पथरेखा पूर्ण स्पष्ट भऽ उठल छल। एकटा क्षीणकाय, जकरा भीतर मे मातृ-भाषा-प्रेमक अथाह सागर लहराइत रहल, जकर उत्ताल तरंग केहन केहन चट्टान केँ चूर-चूर कऽ देलक, एहन व्यक्तित्व छलनि बाबू भोला लाल दासक। हम अपन मन मे हुनक एहने व्यक्तित्वक मानसचिह्न बना कऽ रखने छी। परन्तु जखन हुनका विषय मे लिखऽ लगलहुं अछि तँ समस्या बनि गेल अछि हमरा लेल जे भोलाबाबूक विषय मे अपन कथ्य कोन ठाम सँ आरम्भ करी।"[1] भोलाबाबूक लिखल समस्त रचनाक अनुशीलन सँ ई कवि, गद्यकार, समीक्षक, प्राचीन साहित्यक व्याख्याता तथा पत्रकारक रूप मे समक्ष अबैत छथि। एहि सब मे सब सँ अधिक स्फुट रूप पत्रकारिता मे देखल जाइत छनि। तेँ पत्रकारिता सम्बन्धी विचार हेतु एक स्वतन्त्र अध्याय अपेक्षित बूझि पड़ल। एहिठाम तद-तिरिक्त विषय पर विवेचन कयल गेल अछि।

---

1. 'आरम्भ' मैथिली त्रैमासिक संकलन, सं०—श्री राजमोहन झा, पटना अंक ३, पृ० ४

यद्यपि भोलाबाबू अपना केँ कवि नहि मानैत छलाह, 'मैथिलक गत पचास वर्ष' शीर्षक, एक अपूर्ण तथा अप्रकाशित, किन्तु अपना हाथें लिखल एक निबन्ध मे लिखैत छथि—'गद्य लिखबा मे यदि किछु गति अछियो तँ पद्य मे एकदम पंगुए छी' तथा 'मिथिला' मासिक पत्रक बारहम, जकरा अन्तिमो अंक कहल जाय सकैत अछि, अंक मे भरि वर्षक लेखा-जोखा करैत 'लेखकगण सँ निवेदन' उपशीर्षक मे लिखने छथि :

"एहि वर्ष 'मिथिला'क पद्य मनोनुकूल नहि भेल। तकर कारण हमरा कवि समाजक उदासीनता थीक। तथापि पं० सीताराम झा श्रीयुत जयनारायण मल्लिक, श्रीयुत दामोदर लाल दास आदि अनेकानेक कविगण हमरा सहयोग देने छथि। तदर्थ हुनका लोकनि केँ हम अनेक धन्यवाद दैत छिऐन्ह और एतबा आग्रह करै छिऐन्ह जे हमर समस्त कवि समाज एहि दिश ध्यान देथि। जहिना भारतवर्षक शृंगार प्रधान भक्ति काव्यक समय मे विद्यापति, गोविन्ददास आदि उत्कृष्ट काव्यक रचना कय अपना समयक उच्च कवि भेलाह तहिना वर्तमान समयक वायुमंडल देखि यदि हमर कवि समाज अग्रसर होथि तँ बड़ उपकार हो। एक प्रकारक पद्य हमहुँ अहि अंक मे "युवक" शीर्षक देने छी। पद्य रचना मे हमर लेखनी तेहन शिथिल अछि जे हम तकर प्रयासो करब अनधिकार चर्चा बुझै छी तथापी हम चाहै छी जे हमर काव्य मिथिलाभाषा मे रहितहु केवल मैथिल, मैथिली अथवा मिथिलाक सम्बन्ध मे नहि रहै, प्रत्युत सार्वदेशिक और सार्वजनिक होइत भावोन्नायक रहय।"

तथापि हिनक मैथिली मे कयल रचना मे प्रथम तथा अन्तिमो समयक काव्ये उपलब्ध अछि। अतः सर्वप्रथम काव्यकृतिएक विवेचन कयल जाइत अछि।

भोलालाल दास कविरूप मे :

हिनक प्रथम प्रकाशित रचना श्रीमैथिली मासिक मे उपलब्ध होइत अछि जे पं० उदितनारायणदास तथा नन्दकिशोर लाल मुख्तारक

संयुक्त सम्पादकत्व मे लहेरियासराय सँ १९२५ ई० मे प्रकाशित भेल छल जे पद्यमय अछि, जकर शीर्षक 'गीत' थिकैक तथा 'श्रीमैथिली'क प्रथमे अंक मे प्रकाशित भेल अछि। यद्यपि प्रकाशित रचना मे भने एकरा प्रथम कहल जाय किन्तु एहि सँ पूर्वहु, बेतिया राजस्कूल मे जहिया रहथि, ताहि समयक एक मुखर, मिथिला-मैथिल-मैथिलीक उत्थान मे लागल, कर्मठ ओ सक्रिय रहनिहार पं० त्रिलोचन झाक सम्पर्क मे अयलाक कारणेँ मैथिलीक भविष्य चिन्तनक प्रति विशेष रुचि उत्पन्न भेलनि तँ एक खण्डकाव्य लिखि गेल छलाह। ओ ने आइ उपलब्ध अछि ने प्रकाश मे आबि सकल। एहि प्रसंग भोलाबाबू अपने लिखने छथि—

"मैथिल महासभाक अधिवेशन मे यदा कदा जैबाक कारणेँ तथा 'मिथिला मोद' एवं 'मिथिला मिहिर'क कोनो-कोनो अंक देखला उत्तर मैथिली सेवाक भावना जागल छल। मिथिलाक स्व० पं० त्रिलोचन झाजी पुरान मैथिली प्रेमी छलाह, तेँ हुनका घर बानू छपरा जाय हुनक सम्पर्क बढ़ौलहुँ एवं बेतिया आएब एक प्रकारेँ नोके बुझलहुँ। बैसल-बैसल १५-२० पृष्ठ मे एक खण्डकाव्य मैथिलीक भविष्य पर मैथिली मे लिखि गेलहुँ। अनेक वर्ष धरि ओ रखले छलैक, मुदा अज्ञाते रूपेँ ओकरा केओ नष्ट कै देल्कैक वा हेराय गेलैक। हँ, किछु पंक्ति ओकर एखनहुँ मोने अछि। आइ ने काल्हि पटनो विश्वविद्यालय के मैथिली स्वीकृतिक प्रश्न उठाबहि पड़त एवं एहि लेल संघर्षो करै पड़त तेँ ओकर आरम्भ एहि प्रकारेँ भेल छल :—

जे श्रीकृष्ण विमूढ़ भेल रण मे कौन्तेय प्रोत्साहल
कर्माकर्मविकर्मसार ग्रथिता गीता सुनाओल से
आत्मा मे बल देथु पूर्ण हमरा प्रान्तीय संघर्ष लै
जै सौं स्वीकृति मैथिलीक शीघ्र पटनो दियै......।

आ बूझल तँ ततेक नहि छल जे कलकत्ताक स्वीकृति मे बनैलीक अतिरिक्त रजौराधीशहुक सहयोग छैन्हि, अतः बनैली चेयरक नाम सुनि

केवल स्व० राजाबहादुर कीर्त्यानन्द सिंह महोदय केँ एहि प्रकारेँ अन्त मे धन्यवाद देलियैन्ह :—

अमर यश बनैली चेयरो छापि लेलौं
मरइत निज भाषा प्राण मानू बचेलौं
अनुपम निज भाषा प्रेम देखी अहाँ मे
अमल धवल व्यापै कीर्ति चान्द्री जहाँ मे"2

एहि उद्धरण सँ पूर्णतः स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे मैथिली मे जहिया प्रथम रचना करबाक दिस प्रवृत्त भेलाह तहिया एक कविएक रूप मे तथा सर्वप्रथम जे रचना प्रकाशित भेलनि तँ सेहो छन्दोबद्धे। एतावता मैथिली केँ एक स्वतन्त्र भाषाक रूप मे प्रतिष्ठापित कऽ शिक्षा विभाग तथा विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त करयबाक धुनि जँ हिनका पर सवार नहि होइतनि, जेना कि हिनक लेखनी सँ उद्धृत अपन खण्ड-काव्यक चारि पाँती मे एक पांती छनि—

'आत्मा मे बल देथु पूर्ण हमरा प्रान्तीय संघर्ष लै' तँ ईहो संभव छल जे एक कविएक रूप मे हिनक प्रतिभा पूर्ण रूपेँ विकसित भेल रहितनि। जीवनक अन्तिम समयहु मे, जखन ई शरीर सँ बहुत किछु अक्षम भऽ गेल छलाह तखनहु, एक महाकाव्य लिखबाक हेतु उद्यत भेलाह जे सम्पन्न नहि भऽ सकलनि आ जकर किछु अंश सांस्कृतिक समिति, मधेपुर सँ' प्रकाशित 'स्मृति' नामक स्मारिका मे तथा किछु अंश मैथिली साहित्य-परिषदक पत्रिका मे प्रकाशित भेल छनि। उक्त महाकाव्यक शीर्षक छैक 'नव निवन्ध महाकाव्यम्'। जहिना हिनक प्रथम प्रकाशित पद्य मे सीताक चरित्र केँ आधार बनाय मैथिलीएक चिन्तन देखबा मे अबैत अछि तहिना एहूमे हिनक चिन्तनक बिन्दु मैथिलीक विकासे परिलक्षित होइत अछि। तेँ कवि कहैत छथि—

"मिथिला मैथिल मैथिली बहु चर्चित अछि भेल
पुर्वाञ्चल अर्चित बुझी पथ बाधा टरि गेल

---

२ संस्मरण, पृ० १८-१९

पथबाधा टरिगेल मैथिली बसति अपन घर
बंगले सन ई हैत विश्वविज्ञानक आकर
हो आदान प्रदान अंचलहुँ सौं व्यापक पुनि
राष्ट्रो धरि ता रहौ विषय वर्णन सीमा धुनि"

एक तँ हिनक पद्य साहित्य अल्पमात्रा मे प्राप्त होइत अछि जे किछु प्राप्तो होइत अछि ताहिमे दू तीन केँ छोड़ि मैथिलीक विकासे सँ सम्बद्ध। उदाहरणार्थ पटना विश्वविद्यालय द्वारा मैथिलीक स्वीकृति मे मिथिलेश महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह, जे सिनेटक आजीवन सदस्य छलाह तनिक व्यक्तित्वक प्रभाव सर्वाधिक सहायक भेल छलनि तेँ परिषद द्वारा हुनक अभिनन्दन कयल गेल छलनि। ओ अभिनन्दन पत्र पद्यबद्ध छलैक जकर रचना भोलाबाबू स्वयं कयने छलाह। १६४२ ई० क मार्चक 'मिथिला मिहिरक' कोनो अंक मे प्रकाशित भेल छलनि ओहि मे भोला बाबूक कथनानुसार एक पद भ्रमात् वा स्थानक संकीर्णताक कारणेँ अथवा जानि बूझि कऽ छोड़ि देल गेल छलैक जकरा अपन 'संस्मरण' मे उद्धृत कयने छथि। तदनुसार—

"मन मति मानु मलान मातु मैथिली मर्म गुनि
चीर चिकुर चिकचाक चान चौगुन चमकत पुनि
सत्वर सजत समाज साज सत्कारक सुन्दर
पूर्व प्रतिष्ठा पैब पूर्ण पद पुजत पुरन्दर
कृपा कोर कामेश्वरक जे कयलक काया कलप
नेह नीर नहबाय नित से निरवाहत निरसि तप"

उपर्युद्धृत पद मे जाहि रूपेँ वृत्यनुप्रासक निर्वाह कयल गेल अछि से देखि प्राचीन कवि मे महाकवि गोविन्द दासक तथा वर्तमान मे कवि चूड़ामणि पं० श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क पद योजना सहसा स्मृति पथ पर आबि जाइत अछि। उपरि कथित अभिनन्दन पत्रक स्वरूप निम्नांकित अछि —

पुरुष प्रवोन महेश देश मिथिला जे अरजल
पुरुष केशरी 'राघव' जे अरि गजदल मरदल
पुरुष 'नरेन्द्र' नरेन्द्र शान नहि आनक राखल
पुरुष अमर शिवसिंह सुकवि कवितामृत चाखल
मैथिलीक मधुवन मुकुल मधुमाधव मद मोद प्रद
'कामेश्वर' पौरुष प्रबल सफल कयल मिथिलेश पद

आद सुदिन भल भाग मैथिली बसलि अपन घर
जीवन जनम कृतार्थ आइ परिषदक अधिकतर
अधिकारक बल पाबि आन भाषा सब गरजथु
बढ़थु विरोधी लाख अर्थ संकट वर वरजथु
बोली कहि-कहि धरथु पुनि नाम हुनक अज्ञान दल
आबि अपन घर मैथिली छथि निसंक कामेश बल ।

श्रीमानक ई सहज भक्ति निज भाषा देशक
भेले विवर्धित पूज्य पिता कर सँ मिथिलेशक
होइतहि राज्यासीन कयल (क ?) चेयरक निरूपन
स्वीकृति तखन कराओल संस्कृत एसोशियेशन
आब विश्वविद्यालयहुँ पहुंचावल तेँ दक्ष भय
कखन अहाँ की कयल नहि मैथिलीक शुभ (?) शुभ पक्ष धय ।

अभिनन्दनक सम्पूर्ण पद एतय प्रस्तुत नहि कयल गेल अछि किन्तु सम्पूर्ण पद प्रतीकात्मक अछि। वन्दिनी मैथिली केँ जेना राम हनुमानजी द्वारा सीताक उद्देश्य पाबि, सेतु बन्हाय, सुग्रीवक सैन्य दल द्वारा सहायता पाबि, लंका पर विजय प्राप्त कऽ मैथिलीक उद्धार कयलथिन, तहिना महाराज कामेश्वर सिंह केँ राम, सकल सहायक मैथिल गणकेँ सुग्रीवक सैन्य, मैथिलो साहित्य परिषद केँ सेतु तथा वंगमैत्री केँ हनुमानक रूप दऽ सम्पूर्ण पदक रचना कयने छथि।

'श्रीमैथिली' मे जे प्रथम पद्य रचना प्रकाशित छनि ताहू मे वर्ण्य विषय मैथिलीए सँ संबद्ध छनि। ओहूमे मैथिली पदेन जगज्जननी जानकीक अर्थ व्यंजित करैत अछि। उक्त गीतक स्वरूप निम्नांकित अछि :—

धनि से मैथिलीक चरण।
परम कोमल विपिन विचरणशील अशरण शरण ॥
सुमिरि जे तियगण चढ़थि असिधार पतिव्रत गहन।
दुखहुँ जे सुखरूप कयलन्हि लोक हित आमरण ॥
उतरि आँचहुँ साँच मिथ्या कयल अपयश हरण।
जारि जे निज जाति अवगुण कयल सुवरण वरण ॥

ई पद्य 'श्रीमैथिली' क प्रथमे अंक मे प्रकाशित भेल छलनि। एहि पत्रक छठम अंक मे एक आओर पद प्राप्त होइत अछि 'मंगलाचरण'। सामान्यतः ओहि समयक जे प्रमुख कविलोकनि पत्र-पत्रिका मे लिखैत छलाह, यथा पं० यदुनाथ झा 'यदुवर', पं० छेदी झा 'मधुप', पुलकितलाल दास 'मधुर' आदि, तनिका सभक कविता मे प्राचीन मिथिलाक गौरवगान तथा वर्तमानक अधःपतनक वर्णनक संग समाज केँ जगयबाक हेतु उद्बोधनात्मक स्वर विशेषतः प्राप्त होइत अछि। भोलाबाबूक उपर्युक्त 'मंगलाचरण' मे ओहने स्वर मुखरित भेल अछि। एकर आरम्भ करैत लिखने छथि :

धन्य ई मिथिला मैथिलधाम।
परम उर्वरा भूमिदायिनी सहज सकल मनकाम ॥

मध्य मे मिथिलाक सीमा, ओहि महापुरुष लोकनिक तथा विदुषी लोकनिक नामोल्लेख कयलनि अछि जनिका लोकनिक दार्शनिक चिन्तन तथा लोकभाषा मैथिलीक रचना सँ मिथिलाक मुख गौरवोज्ज्वल ओ मस्तक उन्नत रहल अछि। अन्त मे ओहि गौरवक स्मरण करबैत लिखने छथि—

से मिथिला शिथिला छथि दुख रुज निर्धनतादिक धाम।
आबहु यदि जागथि मैथिलगण रहय हिनक किछु नाम ॥

विशेषता ई अछि जे 'श्रीमैथिली' क प्रथम पृष्ठ पर ताहि समयक जे स्थापित कवि लोकनि छलाह तनिके लोकनिक कविता केँ स्थान देल जाइत छलनि। भोलाबाबू तँ एहि पत्रक माध्यम सँ मैथिली साहित्य क्षेत्र मे पदार्पण कयनेहि छलाह तथापि हिनक प्रतिभा सँ प्रभावित भऽ सम्पादक छठम अंक प्रकाशित होइत-होइत हिनको उपर्युक्त रचना केँ प्रथमे पृष्ठ पर स्थान देने छथिन।

यद्यपि 'भारती' नामक मासिक पत्रक सम्पादन स्वयं करैत छलाह, किन्तु सम्पूर्ण वर्ष मे अपन नाम सँ प्राचीन साहित्यमाला शीर्षक स्तम्भ, जाहिमे वर्णरत्नाकरक परिचय, उद्धरण ओ अर्थ लिखने छथि तथा वन्दना शीर्षक सँ एक मात्र पद्य प्रकाशित कयने छथि। जखन हिन्दी मे 'अक्षरों की लड़ाई' लिखैत छलाह तँ एके अक्षर सँ आरम्भ शब्दावली सँ निर्मित पद सभक प्रयोजन पड़लनि आ हिन्दी मे प्रचुर मात्रा मे पद उपलब्ध नहि भेलनि। तेहना स्थिति मे हिनक ध्यान गोविन्द दासक पद सभ दिस गेलनि जकर प्रचुर उपयोग उक्त पुस्तक मे कयने छथि। प्रतीत होइत अछि जे एहन वृत्यनुप्रास युक्त पदक बेसी आवेश छलनि, तकर स्पष्ट प्रभाव हिनक स्वरचित पद सभ सँ प्राप्त होइत अछि। एहने एक पद्यक रचना ई कयने रहथि 'वन्दना' जाहि मे देवी दुर्गाक वन्दना कयने छथि। पदक स्वरूप निम्नांकित अछि—

दुरगे ! दया दृग दिय फेरि।
देखु दश दिश दशा देशक दासता दृढ़ घेरि ॥
दुरितदारिणि, दुष्ट दायिनि दीप्ति दामिनि गात।
देवि ! दुर्गति नाशिनी अहँ दिक दिगंचत्व ख्यात ॥
दनुज दल दुरदमन दापें दबथि देव समाज।
दुरल दान दहेज देवक दक्षिणहु सँ बाज ॥

दुलभ दाना - पानि दुर्घट दूध दधि एहिकाल।
दहथि दम्पति देह दूबर देखि दुखित दुलाल॥

दक्ष देहरि देह दाहल देखि दायक नास।
देरि की देखितहुँ दिगम्बर देश दुर्बस दास॥

हिनक एक पद्य रचना प्राप्त होइत अछि 'मैथिली उत्कर्ष' जे मिथिला मिहिरक २५ अप्रैल १९७६ क अंक मे प्रकाशित भेल अछि। उक्त पद्य मे मैथिली भाषीक संख्या, भाषाक जन्म ओ विकासक प्रक्रियाक क्रमिक विश्लेषण करैत कोना पहिने वैदिक भाषा छल, पुनः प्राकृत तखन संस्कृत आ ताहि सँ पुनः अपभ्रंश, ताहि अपभ्रंश सँ विभिन्न प्रान्तीय भाषा सभक उत्पत्ति, मैथिलीक भाषा सीमा तथा मैथिली सँ प्रभावित बंगला, असमी, उड़िया, नेवारीक विकासक चर्चा कयने छथि आ सिद्ध कयने छथि जे मैथिली एहिमे सबसँ जेठि अछि। ततबे नहि अक्षरहुक प्रसंग हिनक मन्तव्य छनि जे उक्त भाषा सभक लिपिओ मिथिलाक्षरे सँ प्रभावित भेल अछि। अपन मन्तव्य व्यक्त करैत दावा कयने छथि जे केवल पद्ये साहित्य नहि, अपितु गद्य साहित्य मे सेहो मैथिलीक दाबी सब मे बढ़ि चढ़ि कऽ छैक जाहि क्रम मे ज्योतिरीश्वर तथा वर्णरत्नाकरक उल्लेख कयने छथि। तदुत्तर मैथिलीक स्वीकृतिक हेतु जे संघर्ष क्रम चलल, विद्यापति जयन्ती मनायब कोना आरम्भ भेल, मिथिलेश कोन रूपेँ सहायक भेलथिन ताहू सभक उल्लेख कयने छथि। पुनः साम्प्रदायिकताक आधार पर कोना भाषा समस्या ठाढ़ भेल, महात्मा गान्धी कोना हिन्दू-मुसलमानक एकताक हेतु हिन्दी-उर्दू मिश्रित एक हिन्दुस्तानी भाषाक परिकल्पना कयलनि, किन्तु जिन्नाक हठ-धर्मिताक कारणेँ देशक विभाजन भऽ गेल तथा विशुद्ध हिन्दीक पक्षपाती हिन्दुस्तानी केँ अस्वीकार कऽ देलनि। अन्तमे पं० ललितनारायण मिश्र धरि कोना शहीद भऽ गेलाह आदि इतिहासक झलक सम्पूर्ण कविता मे वर्णित अछि। कविताक आरम्भ कयने छथि—

"जनक नन्दिनी मैथिलीक भाषो छथि दुइ करोड़े
अतिशय जनाकीर्ण मिथिला मंडल भरि एकर हिलोरे
भाषा जन्म विकासक दू क्रम मुख्य ज्ञात संसारे
व्याकरणक तानी आ भरनी शब्द कोष भंडारे

तथा एहि कविताक अन्त कयने छथि :

"मिश्र ललितनारायण तेहने अमर शहीदक प्रतिमा
मिथिला मैथिल मैथिलीक ई भेल सफल गुण-गरिमा,
अछि आरो अनगिनत मैथिली उत्कर्षक गुण भारी
बनल रहथु मिथिलावासी सब एक रंग आभारी।"

भोलाबाबू मातृभाषा तथा मातृवर्गक उद्धार अपन जीवनक लक्ष्य बनाय कर्मक्षेत्र मे अवतीर्ण भेल रहथि। मातृवर्गक उद्धार सम्बन्धी हिनक एक पद्य प्राप्त होइत अछि 'कन्योन्नति' जे छप्पय छन्द मे लिखल गेल अछि। एहि कविता मे स्त्री शिक्षाक अभाव, वृद्ध वा बाल विवाह, पुत्र सँ पुत्री केँ हीन दृष्टिएँ देखब आदिक वर्णन कयने छथि। प्रथम पद मे प्राचीन मिथिला केर उत्कर्ष कहल गेल अछि। यद्यपि कोनो विदुषी विशेषक नामोल्लेख नहि कयने छथि तथापि कविक भाव गार्गी, मैत्रेयी, लखिमा, भारती आदिक दिस इंगित करैत छनि आ अन्तिम पद मे, बिनु स्त्रीशिक्षाक विकासेँ समाजक उन्नति परम कठिन होयत से भाव व्यक्त कयल गेल अछि। एहि कथनक प्रामाणिकता हेतु एहि शीर्षकक प्रथम आ अन्तिम पद उद्धृत करब समीचीन होयत जे निम्नांकित अछि—

प्रथम पद : कूजित छल जे देश सरस कविता कलाप सँ
पूजित छल सभ ठाम प्रबल विद्याक दाप सँ
जगमग छल जगमध्य नारि आदर्श रत्न सँ
घर-घर छल सुख-शांति परम राजाक यत्न सँ
से मिथिला शिथिला भेली कायर सन्तति जन्म सँ
हैत हिनक उन्नति पुनः यदि सुधार हो सद्म सँ।

अन्तिम पद : बिनु रखने समभाव पुत्र पुत्री मे सुन्दर।

Scanned by CamScanner

बिनु हटने भ्रमभाव बालिका शिक्षा दुस्तर ॥
बिनु शिक्षा कन्याक वधू औती की उत्तम ।
बिनु उत्तम वधू हैत शिशुक शिक्षा की हृत्तम ॥
शिशु सुधार बिनु हयत की किछु समाज उपकार कहु ।
छाड़ि दुराग्रह मूर्खता कन्योन्नति सुख मूल गहु ॥[3]

संस्कृतक एक प्रसिद्ध श्लोक, जाहि मे सम्पूर्ण रामायणक घटना केँ अति संक्षिप्त रूप मे व्यक्त कयल गेल अछि। ओ श्लोक थिक :

"आदौ राम तपोवनादि गमनम् हत्वा मृगं काञ्चनम् ।
वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव सम्भाषणम्" ॥

भोलाबाबू सेहो एहि सम्पूर्ण घटनाक वर्णन छप्पय छन्द मे कयने छथि जकर शीर्षक देने छथिन छपदी, जकर स्वरूप निम्नांकित अछि :

आदि राम शुभजनम, बाल लीला, धनु खण्डन,
सिय विवाह, वनवास, भरत भायक जग वन्दन,
मृगवध, सीता हरण, जटाई मरण-सम्मरण,
पुनि सुकंठ-मित्रता, बालिवध, उदधि संतरण
सकुल-सबल रावण हनन, स्वदल अवध पुनरागमन
राम-राज-सुख-सम्पदा, इति श्री रामायण कथन ।

ई छपदी स्मृति (स्मारिका, मधेपुर) मे हुनक हाथेक लिखल पाण्डुलिपिक ब्लाक बनबाय प्रकाशित कयल गेल अछि। निश्चित रूपेँ एहि छपदी मे जेना सम्पूर्ण घटना समाविष्ट भऽ गेल अछि। एतावता ई सिद्ध होइत अछि जे भोलाबाबू छन्दोबद्ध पद योजना मे सिद्धहस्त छलाह। एतावता छिटफुट अनेको छन्दोबद्ध रचना कयने छथि किन्तु हिनक कविक रूप स्फुट भेल छनि 'युवक' शीर्षक कविता मे जे 'मिथिला' मासिक मे प्रकाशित छनि तथा ताहि प्रसंग जे सम्पादकीय टिप्पणी छनि तकर उल्लेख पूर्व कयल जा चुकल अछि। अर्थात् ओहि समय मे

3. श्रीमैथिली, वर्ष 1, अंक 4, पृ० 87

केहन कविताक आवश्यकता छल तकर दिशा-निर्देश कयने छथि। एहू दृष्टिएँ डा० श्री रामदेवझाक ई उक्ति :

'एकटा ज्वालापुञ्ज जकरा प्रकाश मे अनदेखल पथ-रेखा पूर्ण स्पष्ट भऽ उठल छल' बहुत समीचीन प्रतीत होइत अछि।

साधारणतः ई कहल जाइत छैक जे मैथिली ततेक कोमल भाषा अछि जे एहि मे वीररसात्मक कविता जमिते ने छैक। यद्यपि डा० श्री प्रबोध-नारायण सिंह, 'राष्ट्रकवि विद्यापति' नामक निबन्ध मे लिखने छथि : "यथार्थता तँ ई अछि जे विद्यापति अपना युगक वीररसक सर्वश्रेष्ठ कवि छलाह। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक उदयकालीन युग मे वीररसक एहन सफल कवि आन केओ नहि भेल।

वीर रस एक सजीव रस होइत अछि। एहि रसक कविता मे तेहन शक्ति होइछ जाहि सँ कापुरुष लोकनिक शिरा मे सेहो ऊष्ण रक्तक तीव्र संचार भए जाय एवं वीर लोकनि मरणोन्माद सँ आतुर भए प्राणाहुति देबाक लेल उताहुल भए उठथि। किन्तु अन्धवीरता सेहो कोनो काजक नहि। प्राणाहुति निरर्थक नहि होयबाक चाही। ओकरा पाछाँ सुनि-योजित नीति तथा मातृभूमिक प्रेरणा अपेक्षित। विद्यापति अन्धवीरत्वक प्रदर्शन नहि कयलन्हि। ओ वीरत्वक अपन चरितनायक कीर्त्ति सिंह केँ परम नीति-कुशल योद्धाक रूप मे चित्रित कयने छथि।" डा० सिंह जय-जय भैरवि केँ सेहो वीर रसात्मक कहने छथि।

तथापि अपन मृदुताक कारणेँ मैथिली भाषा वीर रसात्मक अभि-व्यक्तिक हेतु बहुत दिन धरि उपयुक्त नहि मानल जाइत रहल। वीररसक स्थायी भाव थिक उत्साह। भोलाबाबू अपन 'युवक' कविता द्वारा कवि लोकनिक हेतु नवीन पथरेखा तँ आलोकित करबे कयलनि, संगहि इहो सिद्ध कऽ देलनि जे मैथिलीओ वीर रसात्मक अभिव्यक्तिक हेतु समर्थ अछि। यद्यपि मैथिलीक अध्येताक हेतु उक्त कविता अपरिचित नहि अछि तथापि ओकर किछु अंश उद्धृत कयल जा रहल अछि—

भूमिकम्प छी प्रबल विश्व विप्लवकारी हम
छी अति प्रखर तरङ्ग रूढ़ि-गिरि-रजकारी हम
दावानल प्रज्वलित दासता क्षयकारी हम
झंझानिल सम छी स्वतन्त्रता रवकारी हम

अन्यायी सत्ताक छी प्रलय गगन सम अति विषम
हमरहि लघु हुंकार सँ महाप्रलय होइछ नियम।

हमहि रोष छी प्रबल हमहि छी ताण्डव भयंकर
असन्तोष छी हमहि क्षुब्ध मानू छी विषधर
हमहि अशान्तिक मूल हमहि दानव संहारक
हमहि परम दुर्दान्त लोकमत राष्ट्र सुधारक

हमहि रक्त दन्तावली विस्फारित केहरि बली
भूकथु श्वान हजार नित महामत्त गज सम चली।

वस्तुतः 'युवक' शीर्षक कविता मे भोलाबाबू युवक वर्ग मे अन्तर्निहित शक्तिक उद्घाटन करैत जाहि उत्साह भावक धारा प्रवाहित कयने छथि ताहि सँ स्वयं अपनहुँ अन्तःकरण मे व्याप्त अदम्य उत्साह ओ किछु कऽ बैसबाक दृढ़ संकल्प परिलक्षित होइत अछि।

पटना विश्वविद्यालय द्वारा मैथिली केँ स्वीकृति भेटलाक बाद १९४१ ई० मे मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा पाठ्य ग्रन्थक प्रकाशन भेलैक। आचार्य रमानाथ झाजी मैथिली पद्य संग्रह नाम सँ एक कविता संग्रहक संकलन ओ सम्पादन कयलनि जाहि मे एहू कविताकें संकलित कयने छथि। प्रत्येक कविताक संग कविक परिचय देने छथि। ताहि कवि परिचयक क्रम मे भोलाबाबूक प्रसङ्ग ओ लिखने छथि।

"श्रीयुत भोलालाल दासक नाम सँ के मैथिली-हितैषी अपरिचित होयताह? हिनकहि प्रयत्ने मैथिली साहित्य परिषद् सुदृढ़ भेल ओ एहि वर्ष धरि इएह परिषदक मन्त्री छलाह। ई करण कायस्थ कुलोद्भवा

ओकील छथि, किन्तु हिनक प्रवृत्ति साहित्यक दिसि छैन्हि। मैथिलीक हेतु ई की की ने कयने छथि। हिनक लेख ओ कविता समय-समय पर बराबरि प्रकाशित होइत रहैत अछि। यद्यपि आब ई कविता नहि रचैत छथि आ मुख्यतः गद्यहि मे लिखैत छथि तथापि जे किछु कविता काए चुकल छथि ओकर स्थायी महत्त्व छैक।''

एहि युगक सर्वमान्य समीक्षक आचार्य रमानाथ झाक उक्ति सँ स्पष्ट होइत अछि जे स्थायी महत्त्वक काव्य सर्जनाक प्रतिभा रखनिहार भोलाबाबू यदि साहित्ये साधना मे निरत रहितथि तँ निश्चित रूपेँ एक महाकविक रूप मे मैथिली साहित्यक इतिहास मे प्रतिष्ठापित रहितथि किन्तु हिनकर विचारधारा राष्ट्रीय आन्दोलन सँ ताहि रूपेँ प्रभावित छलनि जे देशोत्थान आ तकर अङ्गभूत मातृभाषा ओ मातृवर्गहिक उद्धार दिस हिनक सम्पूर्ण चैतन्यशक्ति एकाग्र भऽ गेल छलनि। दोसर हिनका द्वारा मैथिली भाषा केँ पुनर्जीवन प्राप्त होयबाक छलैक। उपर्युद्धृत कविताक प्रकाशनक किछुए दिनक बाद मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना भेलैक आ एक वर्ष धरि ई ओकर संयुक्त मन्त्री तथा एक वर्षक बाद प्रधान मन्त्रीक पद पर निर्वाचित भेलाह तँ ताबत धरि ओहि पद पर निर्वाचित होइत रहलाह जावत धरि पटना विश्वविद्यालय द्वारा मैथिली केँ स्वीकृति नहि भेटि गेलैक। एहि प्रकारेँ कारयित्री प्रतिभा रखितो मातृभाषा उद्धार यज्ञ मे ताहि रूपेँ पड़ि गेलाह जे ई सब चिन्तन पाछू पड़ि गेलनि। अतः निःसंकोच भावेँ कहल जा सकैछ जे भोलाबाबू मे एक कविक हेतु जाहि प्रकारक प्रतिभा ओ जेहन सूक्ष्म दृष्टि चाहियैक से सब विद्यमान छलनि।

गद्यकार बाबू भोलालाल दास :

गद्यकारक रूप मे भोलाबाबू सर्वप्रथम 'श्रीमैथिली' पत्रहिक माध्यम सँ साहित्य क्षेत्र मे अवतीर्ण होइत देखल जाइत छथि। यद्यपि डा० श्री काञ्चीनाथ झा 'किरण' 'स्मृति' स्मारिका मे लिखने छथि :

'श्रीमैथिली' नामक मासिक पत्र लहेरियासराय सँ प्रकाशित होवय लागल। एहि पत्र मे भोलाबाबूक सातगोट लेख प्रकाशित भेल छल। तीन गोट पद्य ओ चारि गोट गद्य। गद्यक शीर्षक छल :

(१) हमर समाज
(२) मैथिली भाषा मे क्रियाबोधक शब्द
(३) वर्तमान स्त्री समाज ओ हमर कर्त्तव्य
(४) स्त्री कोनो वस्तु नहि थिक

किन्तु ई सब रचना तँ 'श्रीमैथिली'क प्रथमे वर्षक विभिन्न अङ्क मे प्रकाशित छनि। श्रीमैथिली दू वर्ष धरि प्रकाशित होइत रहल। प्रायः श्रीयुत किरणजी 'श्रीमैथिली'क सब प्रकाशित अङ्क बिनु देखनहि अपन आँकड़ा दऽ देलनि अछि।

भोलाबाबू श्रीमैथिलीक दोसर वर्षक विभिन्न अङ्क मे तीन गोट गद्य लेख लिखने छथि—पहिल 'मैथिलो डाइरेक्टरी' दोसर 'राजनीति ओ समाजनीति', तेसर 'सौराठ सभा', एहि तरहेँ श्रीमैथिली मे हिनक प्रकाशित तीन गोट पद्य तथा सात गोट गद्य उपलब्ध अछि जाहि मे पद्यांशक विवेचन पूर्वहि भऽ चुकल अछि।

एक दिस समाजक कुम्भकर्णी निद्रा केँ तोड़ब, दोसर दिस मैथिली केँ आत्मसात् कऽ बलजोरी हिन्दी लदबाक चेष्टा मे लागल प्रतिपक्षी सब केँ मुँहतोड़ उत्तर देब, संगहि पत्र-पत्रिकाक अभावक पूर्ति हेतु कोनो पत्रक प्रकाशन ओ सम्पादन करब एहि सब काजक हेतु पद्यक अपेक्षा गद्य बेसी उपयुक्त होइत छैक। भोलाबाबू जाहि प्रकारक अध्यवसायी' दृढ़ निश्चयी ओ गंभीर चिन्तक छलाह तदनुसार गद्य लेखहु द्वारा साहित्यक भण्डार केँ परिपुष्ट करबाक पलखति कहाँ पाबि सकलाह तकर कारण छल जे समाज रूढ़िग्रस्त भेल अपन वास्तविक स्वरूप केँ बिसरने जाइत छल। आचार-विचारक कोन कथा विद्या व्यवसायहु मे युगक अनुरूप उन्नति करबा मे पिछड़ले, पछुआयले जा रहल छल।बाहरी दुनियाँ कोन

गतिएँ कोन दिशा मे अग्रसर भऽ रहल अछि एहि सबसँ अनभिज्ञ बनल, जाति-पाति, छोट-पैघ आदिक जे अपन क्षुद्रसन परिधि तकरे सर्वश्रेष्ठ मानैत, यथार्थता सँ सर्वथा दूर भेल जा रहल छल। एमहर मिथिलांचले मे मातृभाषा मैथिलीक समक्ष जीवन मरणक प्रश्न उपस्थित छलैक आ ओमहर अन्यान्य प्रान्तीय भाषा नव युगक संस्कार ग्रहण कयने प्रगतिक बाट पर अविराम गतिएँ आगाँ बढ़ल जा रहल छल। भोलाबाबू एहि सब स्थिति केँ हृदय सँ अनुभव करैत छलाह। तेहना स्थिति मे कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, ललित निबन्ध, गद्य-काव्य आदि किछु लिखबाक वा सोचबाक पलखति कतय सँ प्राप्त कऽ सकितथि ? हुनका हृदय केँ तँ सामाजिक स्थिति आ अपन न्यायोचित अधिकार सँ वंचित मातृभाषाक समस्या सतत आलोड़ित-विलोड़ित कयने रहैत छलनि। तेँ गद्यहु मे कलम उठाबथि तँ एहो मातृभाषा ओ मातृ-वर्ग विषयक विचार लेखनी सँ निःसृत होमय लगैत छलनि।

अस्तु, हिनक गद्य रचना केँ प्रथम दू भाग मे विभाजित कयल जा सकैत अछि। पहिल वैचारिक स्तर पर स्वतन्त्र निबन्ध तथा दोसर पत्र-सम्पादनक क्रम मे सम्पादकीय आदि। वैचारिक स्तर पर लिखल निबन्ध केँ पुनः अनेक भाग मे बाँटल जा सकैछ—सामाजिक, समस्यामूलक, संस्मरणात्मक, ऐतिहासिक, भाषा सम्बन्धो तथा समीक्षात्मक।

सामाजिक समस्यामूलक :

मैथिली भाषा मे सर्वप्रथम प्रकाशित गद्यक शोर्षक छनि 'हमर समाज'। ई लेख 'श्री मैथिली'क तेसर अङ्क मे प्रकाशित छनि। ध्यातव्य जे १९२५ ई० मे भोलाबाबू विधिशास्त्र अध्ययन समाप्त कऽ लहेरियासराय आबि ओकालति आरंभ कयलनि तँ 'हिन्दू लॉ मे स्त्रियों के अधिकार' नामक एक वृहद् ग्रन्थक लेखन मे लागि पड़लाह। ओ स्वयं अपन संस्मरण मे लिखने छथि—"अपना ओकालतिक क्रम मे स्त्री समाजक दुर्गति दूर करबाक विचारेँ कतोक शौहरो एवं दोखतरी मुकदमा हाथ मे लय हुनको लोकनिक कानूनी स्थिति सुधारार्थ यत्न करी, एहि लेल हिन्दू लॉक गहन

अध्ययन आरंभ कैल। एहि हेतु हिन्दी मे एक वृहत् पुस्तक 'हिन्दू लॉ मे स्त्रियों के अधिकार' प्रायः एक हजार पृष्ठ मे लिखि ओकर प्रकाशन धारा-वही रूपेँ इलाहाबादक ओही 'चान्द' पत्रक द्वारा आरंभ कैल। ई पुस्तक १९२५ ई० सँ १९३० पर्यन्तक 'चान्द' मे स्थायी स्तम्भ 'हिन्दू लॉ में स्त्रियों के अधिकार' नामे प्रकाशित भेल। ········ई सब दिशान्तर होइतहु मैथिली साहित्यक ओहि अद्भुत संसारक प्रवेश द्वारक चौकठिक भीतर जे एकटा डेग राखि चुकल छलहुँ तकरा भीतर प्रवेश कै किछुओ अधिक देखबा सुनबाक व्याकुलता चित्तकेँ उद्विग्न कैने रहैत छल। अंगरेजी, बङ्गला, हिन्दी, मैथिलीक पुस्तक सबसँ किछु अध्ययन ओहू दिस चलैत रहल, मुदा मैथिली सेवाक हेतु कोनो पत्र-पत्रिकाक आसरा अनि-वार्य बुझना जाय। जखने हमर मित्र पं० उदितनारायण दासजी, काव्य-तीर्थ, ओकील, मिथिला मिहिरक भूतपूर्व सहकारी सम्पादक, स्व० नन्द-किशोर लाल मुखतार एवं दोसर व्यक्ति स्व० अवधलाल झाक सहयोगेँ 'श्रीमैथिली' नामक मासिक पत्र चलबए लगलाह तँ एक नवीन आशाक संचार भेल। किछु ओहू मे लेखादि दय मैथिली सेवाक काज करै लगलहुँ।"

भोला बाबूक एहि उक्ति सँ स्पष्ट अछि जे सेवा करबाक आकांक्षा हृदय में पहिने सँ रखितहुँ मैथिली लिखित हिनक गद्य रचना सेहो सर्व-प्रथम श्रीमैथिलीए मे प्रकाशित भेलनि। अतः 'हमर समाज' शीर्षक लेख केँ हिनक प्रथम प्रकाशित गद्य रचना मानब युक्तिसंगत अछि।

एहि प्रथम लेख मे हुनक चिन्तनक दिशाक आभास भेटि जाइत अछि। एहि लेख मे ई मिथिलाक प्राचीनता केँ वेद, उपनिषद्, स्मृति सँ जोड़ैत, ताहि समयक, पुनः मध्यकालक एकर विद्या, वैभवक, सम्पन्नताक चर्चा करैत मुसलमानी शासनकालहु मे एहि ठामक विद्या व्यवसायक आंशिक अक्षुण्णता केँ स्वीकार कयलनि अछि, किन्तु वर्त्तमानकालीन मिथिलाक मूर्खताक तथा दरिद्रताक कारणेँ लुप्त होइत प्राचीन आदर्शक प्रति चिन्ता प्रकट कयलनि अछि एवं एहि अधःपतनक कारण दिस समाजक ध्यान

आकर्षित कयलनि अछि। एहि लेख मे विशेष रूपें विद्याव्यवसाय सँ विमुखता पर बेसी चोट कयल गेल अछि आ विद्या व्यवसाय सँ सम्बद्ध विशेषतः ब्राह्मण ओ करण कायस्थ ल.कनि रहलाह अछि, तें एही दू जातिक स्थितिक विश्लेषण भेल अछि। ताहू मे अनेक कुरीतिक रहितहुँ विवाह सम्बन्धी कुरीतिक नामोल्लेखपूर्वक चर्चा कयने छथि। एहि अधः-पतन सँ उबरबाक हेतु तत्कालीन शिक्षित दूनू वर्ग संस्कृत-शिक्षा-सम्पन्न तथा आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा सम्पन्न वर्गक स्थितिक विश्लेषण करैत निष्कर्ष बाहर कयने छथि जे संस्कृतक विद्वान लोकनि अपना-अपना विष-यक शास्त्रीय ज्ञान सम्पन्न रहितहुँ समसामयिक परिस्थिति सँ अनभिज्ञ रहैत छथि, पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त कयनिहार लोकनि धनोपार्जने कें अपन जीवनक लक्ष्य बनोने रहैत छथि। ई लोकनि धनोपार्जन करबाक कारणें समाज मे आदरक पात्र रहितहुँ सामाजिक ओ धार्मिक विषय मे समाज द्वारा मान्य नहि बूझल जाइत छथि। फलतः कुरीतिक निवारण संभव नहि भऽ पबैत अछि। अतः संस्कृतज्ञ पंडित लोकनि कें समयोचित ज्ञान तथा अङरेजी शिक्षित वर्ग कें स्वार्थक परिधि सँ बहराय देश तथा समाजक प्रति कर्त्तव्य वोध ओ प्रेमाभाव जावत धरि नहि होयतनि ताबत धरि समाज कें कुरीतिक पाँक सँ उबारि अभ्युत्थानक मार्ग पर आनब दुरूह अछि।

सामाजिक समस्यामूलक दोसर लेख एहि पत्र मे प्रकाशित भेल छनि जकर शीर्षक छैक : "वर्त्तमान स्त्री समाज ओ हमर कर्त्तव्य" जाहि मे स्त्रीवर्ग के शिक्षाक अभाव ताहि पर सँ पर्दाक इरोत मे राखि एहि समाज कें आओरो अन्धकार मे धकेलबाक समाजक प्रवृत्ति पर क्षोभ व्यक्त करैत बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह तथा बहुविवाह आदि प्रथा कें दूर करबाक आग्रह कयल गेल अछि।

जाहि व्यक्तिक चिन्तन जाहि विषयदिस विशेष रूपें रहैत छनि तनिक दृष्टिओ ताहि दिस क्षिप्र गतिएँ दौड़ैत छनि। काशी सँ प्रका-शित ताहि समयक सुविख्यात पत्र 'आज'क अग्रलेख माला मे एक लेख

छाल छलैक। स्त्री समाजक सुधार हेतु उक्त लेखक उपादेयता केँ दृष्टि मे राखि प्रयाग सँ प्रकाशित 'चान्द' जकर भोलाबाबू स्थायी लेखक होयबाक कारणेँ नियमित पाठक सेहो रहथि, दिसम्बर १९२५क अङ्क मे उद्धृत कयने छल। भोलाबाबू तकर अनुवाद 'श्रीमैथिली'क १२म अङ्क मे प्रकाशित करौने छलाह। उक्त अनुवादक शीर्षक छैक 'स्त्री कोनो वस्तु नहि थीक' तथा दोसर पंक्ति कोष्ठ मे छैक (दुर्गाशप्तशतीक एक दृश्य)। एहि मे दुर्गाशप्तशती मे वर्णित शुम्भ-निशुम्भ चरित्र केँ आधार मानि स्त्रीवर्ग मे निहित शक्तिक वर्णन कयल गेल अछि आ सिद्ध कयल गेल अछि जे ताहि समय धरि स्त्री केँ एक वस्तुक रूप मे मानल जाय लागल छल। तेँ अम्बिकाक सौन्दर्य देखलाक बाद चण्डमुण्ड शुम्भ-निशुम्भ केँ सूचना दैत छैक तथा कहैत छैक :

"एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते।
स्त्रीरत्नमेषाकल्याणो त्वयाकस्मान्नगृह्यते ॥"

अर्थात् हे दैत्यराज, त्रिभुवनक समस्त रत्न अहाँ जीतिकऽ अनलहुँ तखन एहि स्त्रीरत्न केँ अहाँ किएक ने ग्रहण करैत छी। तात्पर्य ई जे अन्यान्ये सम्पत्ति जकाँ स्त्री सेहो एक रत्न अर्थात् सम्पत्ति थीक। शुम्भ तुरन्त सुग्रीव नामक दूत केँ पठबैत छैक। दूत भगवती अम्बिकाक समक्ष जाय शुम्भ-निशुम्भक बल, पौरुष, ऐश्वर्य, प्रताप आदिक वर्णन करैत दूनू भाय मे सँ ककरो वरण कऽ लेबाक आग्रह करैत छनि। भगवती ओकर उक्तिक समर्थन करैत कहै छथिन—

"एवमेतद्बलीशुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान्।
किंकरोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा ॥
यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पम् व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलोलोके स मे भर्त्ता भविष्यति ॥"

अर्थात् शुम्भ-निशुभ बड़ बलवान छथि से बुझितो बिनु बुझनहि सुझनहि हम जे पहिनहि प्रतिज्ञा कऽ चुकल छी जे, जे व्यक्ति संग्राम मे जीति लेत, हमर दर्प केँ चूर कऽ देत सैह हमर भर्त्ता भऽ सकैत अछि।

तात्पर्य ई जे अम्बिकाक एहि उक्ति सँ स्त्रीवर्ग मे निहित आत्मशक्ति अभिव्यक्त होइत अछि। एहन उक्ति मात्र पारायण करबाक दिस नहि, अपितु अपना समाजक स्त्रीवर्गक प्रति समाज केँ की कर्त्तव्य थिकैक ताहि दिस संकेत करैत अछि। जाहि ठाम देवतो लोकनिक पौरुष परास्त भऽ जाइत छनि ताहि ठाम एही शक्तिक आराधना सँ हुनको लोकनि केँ त्राण भेटि पबैत छनि। अतः स्त्री कोनो वस्तु नहि थीक जकरा भोग्यामात्र बूझल जाय, प्रत्युत समाजक जँ उत्थान करब अभीष्ट हो तँ पारिवारिक एवं सामाजिक विकास मे एहि वर्गक उपेक्षा नहि कऽ एहि वर्ग सँ अपेक्षा रखबाक चाही, तखने भविष्य केँ उज्ज्वल बनयबाक कल्पनो कयल जा सकैत अछि।

एही क्रम मे एक लेख 'श्रीमैथिली' मे हिनक लिखल छनि जकर शीर्षक छैक 'सौराठ सभा'। एहि लेख मे पहिने सौराठ सभाक उत्कर्षक वर्णन कयल गेल अछि तकर बाद ताहि समय धरि जे दोष सब प्रवेश कऽ गेल छलैक ताहि अपकर्षहुक वर्णन कयने छथि। ताहि संग नवयुवक ओकील लोकनि सँ आग्रह कयने छथिन जे ओकालतिखाना मे नवीन ओकील होयबाक कारणेँ बहुतोकेँ निरर्थक अपन समय बितबय पड़ैत छनि आ सम्प्रति सौराठ सभा चलि रहल छैक, जाहि ठाम ओ लोकनि समाज मे प्रविष्ट कुरीति सभक निवारणार्थ देश ओ समाजसेवाक बुद्धि सँ अपन समयक सदुपयोग करथि तथा वृद्धविवाह, बहुविवाह, विवाह मे टाका गनायब आदि केँ रोकबाक यथाशक्ति प्रयत्न करथि। इतिहास एवं तत्कालीन पत्र-पत्रिकाक अन्वेषण सँ ज्ञात होइत अछि जे ताहि समय धरि पाँजि प्राप्त करबाक जुआरि समाज मे ततेक छलैक जे एक एक भलमानुस पाँच-पाँच विवाह एहन धनीक घरक कन्या सँ टाका गनबाय-गनबाय करथि जाहि धनीक लोकनि केँ अपन सामाजिक प्रतिष्ठा केँ ऊँच करबाक सेहन्ता रहनि तथा एहनो गरीब भलमानुस रहथि जे कन्या मे टाका गनबाय अपन अबोध कन्या केँ कोनो धनीक घरक वरक संग कराय देथिन। अर्थात् एक एहन वर्ग छल जे अपने वृद्धविवाहक टाका गनाबथि

तँ क्यो अबोध कन्याक विवाह टाका गनाय कऽ लैत छलाह। संगहि ताहि समय धरि पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त करैत वर लोकनि सेहो टाका गनायब आरम्भ कऽ चुकल रहथि जे प्रथा आइ समाजक समक्ष अभिशाप बनि गेल अछि।

भोलाबाबू अपन ओहि लेख मे लिखने छथि—

''ई स्वर्ण संयोग सौराठसभाक फेर नहि भेटत। 'स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्' थोड़ अनुष्ठान मे अधिक फल एहि पुण्य क्षेत्र सँ अधिक कतहुँ नहि भेटत। स्मरण राखी यदि अहाँक उद्योग सँ एके गोट निर-पराध मैथिल कन्याक बध कोनो बूढ़क परिणय तमाशा सँ निवृत्त भेलैक तँ ३६ गो हत्या निवारणक फल भेल। यदि एको गोटा कें अहाँ व्यर्थ बहुविवाह सँ बचा सकलहुँ तँ देशक कतोक परिवार कें सुखशान्ति देलहुँ। यदि अंगरेजी पाँजिक क्रमे एको नवशिक्षित वर्ग कें टाका लेबा सँ रोकि सकलहुँ तँ अहाँ कतेक स्नेहलता कें बचाओल।''

पूर्वहि कहल जा चुकल अछि जे भोलालाल दास राष्ट्रीय आन्दो-लन सँ प्रभावित भऽ मातृभाषाक उद्धार कें अपना जीवनक श्रेष्ठ कर्त्तव्य मानलनि। ऊपरि विवेचित लेख सभमे प्रतिपादित विषय सिद्ध करैत अछि जे मातृवर्गक दशा मे सुधार करबाक हेतु हुनका अन्तःकरण मे अनु-खन एक प्रकारक चिन्तन चलैत रहैत छलनि। समाजक ई सब समस्या जे हुनका हृदय कें सतत् मथैत रहैत छलनि, तकरा क्रिया रूप देबाक हेतु ओ कतेक तत्पर रहैत छलाह तकर ज्वलन्त उदाहरण छथिन हुनक पत्नी श्रीमती योगमाया देवी जनिका अपन प्रेरणा सँ ताही समय मे मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कराय प्रशिक्षितो करौने छलथिन्ह। ई तँ भेल स्त्री शिक्षाक हेतु हुनक क्रियात्मक स्वरूप। स्त्री स्वातन्त्र्यक प्रसंग हिनक की क्रियाकलाप छलनि तकर परिचय हिनक पत्नीएक लिखल संस्म-रणात्मक लेख सँ प्राप्त भऽ जाइत अछि, जे 'स्मृति' (स्मारिका, मधेपुर) सँ प्रकाशित भऽ चुकल अछि। ओ लिखने छथि—

"आइ स्वतन्त्रता सेनानीक रूप मे हम पेन्शन प्राप्त कऽ रहल छी

ईहो तऽ हुनके देन छियैन्ह। हमर क्रान्ति प्रवृत्ति एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भाग लेबाक आकांक्षा कें प्रोत्साहित कय हमरा एते धरि अवसर प्रदान कएलन्हि जे हम स्व० श्री राजेन्द्र प्रसादक प्रत्यक्ष संगति मे रहि मगन आश्रम मझौलिया (लहेरियासरायक निकट) सँ स्वतन्त्रता संग्राम मे खुलि कए भागे टा नहि लेलहुँ गोली, बन्दूक आ जेल पर्यन्तक सामना कयलहुँ। कतेको सभा-सम्मेलन मे मिथिलाक नारी आ ललना लोकनिक अग्रणी आ सभानेत्री बनहुँ।''

श्रीमती योगमाया देवी सँ साक्षात्कार कयला उत्तर ज्ञात होइत अछि, जे भोलाबाबु स्वयं सक्रिय भऽ चारि पाँच गोट विधवाक पुर्नविवाह करौलनि। एहि रूपें हिनक लेखन तथा क्रियात्मकता एहि दूनू सँ सिद्ध होइत अछि जे सामाजिक सुधार हेतु मातृवर्ग मे सुधार आनब कें प्राथमिकता दैत अन्तःकरण सँ एहि हेतु प्रयत्नशील छलाह।

एकर अतिरिक्त हिनक एक निबन्ध उपलब्ध अछि जकर शीर्षक छैक 'राजनीति ओ समाजनीति'। 'श्रीमैथिली' मे प्रकाशित एहि निबन्ध कें मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित निबन्ध संग्रह मे सेहो संकलित कयल गेल अछि। एहि निबन्ध मे भोलाबाबू राजनीति ओ समाजनीति मे अन्तर स्पष्ट करैत कहने छथि जे राजनीति ओ समाजनीति दूनू लोकमे मत्स्य न्यायक प्रचार नहि हो अर्थात् सबल द्वारा निर्बल सताओल नहि जाथि तें अंकुश रखैत अछि, परन्तु राजनीति द्वारा कयल गेल दण्ड विधान व्यक्तिक इच्छा पर निर्भर नहि रहैत अछि। यदि हम नियमक उल्लंघन करबैक तँ बलात् हमरा दण्डित कयले जायत कारण राजाक हाथ मे दण्ड रहैत छैक, किन्तु समाज द्वारा निर्धारित नियमक यदि उल्लंघन करबैक तँ समाज बलात् दण्डित नहि कऽ सकैत अछि, एकर उल्लंघन लोक स्वविवेक सँ तथा लोकनिन्दाक भय सँ नहि करैत अछि। यदि एहि दूनू कें त्यागि देअय तँ केहनो गर्हित कर्म कऽ लेत समाज ओकर किछु नहि बिगाड़ि सकैत छैक। यैह कारण अछि जे मैथिल महासभा आदि सामाजिक संस्था द्वारा कतेको प्रस्ताव पारित होइत

अछि किन्तु जो कार्यान्वित नहि भऽ पबैत अछि। कन्या विक्रय आदि कुरीति दिनानुदिन बढ़िते जा रहल अछि। राजदण्ड एहि हेतु कोनो विधान नहि कयने अछि, कारण राजनीतिक सत्ता विदेशीक हाथ मे अछि। अतः सामाजिक कुरीति केँ दूर करबाक हेतु स्वराज्य प्राप्त करब आवश्यक अछि। भोलाबाबू लेखक उपसंहार करैत लिखने छथि—

''हमरा लोकनि केँ निरन्तर स्वराज्य प्राप्तिक चेष्टा करबाक चाहि एवं जखन से अधिकार उपलब्ध भय जाएत तखन हमरा लोकनिक सामाजिक सुधार पूर्ण रूपेँ हैत।''

संस्मरणात्मक :

भोलाबाबूक लिखल संस्मरणात्मक निबन्ध तीन गोट प्राप्त होइत अछि—सर्वप्रथम 'स्व० महाराजाधिराज', जे अक्टूबर १९६२ मे महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक मृत्युक पश्चात् लिखल गेल छलनि। दोसर 'सस्मरण' शीर्षक एक पुस्तक छनि जकर अभ्यन्तर आवरण पृष्ठ पर छपल अछि 'पटना विश्वविद्यालय मे मैथिली प्रवेशक प्रामाणिक संस्मरण' तथा '१९३४ क भूकम्प'। किन्तु एहिठाम सर्वप्रथम 'संस्मरण' नामक पुस्तकक चर्च कयल जा रहल अछि।

एहि पुस्तकक भूमिका सँ ज्ञात होइछ जे विजयादशमी १९७३क दिन एकर लेखन आरम्भ कयलनि तथा ४-२-१९७५ ई० मे जा कऽ सम्पन्न भऽ सकलनि किन्तु उक्त पुस्तक हुनक जीवन-काल मे प्रकाशित नहि भऽ सकलनि। एकर लेखन तत्कालीन चेतना समिति, पटनाक सचिव श्री ताराकान्त झाजी क अनुरोध पर कयने छलाह। २९ मई १९७७ ई० कऽ हिनक देहावसान भऽ गेलनि। चेतना समिति तकर बादो धरि एकरा प्रकाशित नहि कऽ सकल। अन्ततः चित्रगुप्त सभा, पटना ९ नवम्बर १९८० ई० मे आबि एकरा प्रकाशित कयलक, किन्तु एकर प्रथमो संस्करण एक हजारक नहि कयल गेल। मैथिली मे लिखल भोलाबाबूक ई एकमात्र पुस्तक छनि। मैथिली भाषा सम्प्रति जतबो विकास कऽ पौलक अछि ताहि हेतु कोन कोन संकटक स्थिति सँ एकरा

पार करय पड़लैक अछि तकर एक मात्र प्रामाणिक अभिलेख (दस्तावेज) एहि ग्रन्थ केँ मानल जा सकैत अछि।

एहि प्रसंग डा० श्री रामदेव झाक निम्नांकित उक्ति—"एमहर मृत्यु सँ किछु दिन पूर्व ओ अपन 'संस्मरण' लिखलनि जे मुख्यतः पटना विश्व-विद्यालय मे मैथिली प्रवेश, प्रयत्न ओ परिणाम केँ केन्द्रबिन्दु बनाय लिखल गेल अछि। ई संस्मरण एकटा दस्तावेज थिक। स्मरण-सरणिक अतिरिक्त एहिमे समसामयिक उद्धरणक प्रचुर समावेश अछि, तथापि अनेक एहन प्रसंग सब आयल अछि जे पढ़ि कऽ अभिभूत भऽ जाय पड़ैछ"[4] उपर्युक्त कथनक पुष्टि करैत अछि।

एहि संस्मरणात्मक ग्रन्थ केँ विभिन्न घटनाक्रमक उपशीर्षक दऽ अनेक अध्याय मे बाँटल गेल अछि। प्रथम अध्याय अछि 'लिखबाक आवश्यकता एवं आधार'। एकर मंगल एक छप्पय छन्द मे, जे हिनक प्रिय छन्द छलनि, कयने छथि। ताहूमे हिनक हृदयमे उमड़ैत मातृ-भाषाक प्रति श्रद्धा तथा हृदयक उदारता परिलक्षित होइत अछि। ओ पंक्ति थिक :

"जनकनन्दिनी मैथिलीक पद सुमरि मनोरम।
सुमिरिअ स्वीकृति मैथिलीक जे बहुजनहुक श्रम ॥"

पौराणिक कथा अछि जे भगवान इन्द्रक पूजा जखन श्रीकृष्ण बन्द करबाय गोवर्द्धन पर्वतक पूजा आरम्भ करबौलनि तँ इन्द्र विगड़ि कऽ गोकुल केँ डुबयबा पर लागि गेलाह। जखन गोकुल मे त्राहि-त्राहि मचि गेलैक तँ गो-गोपाल सहित गोकुलक रक्षाक हेतु गोबर्द्धन पर्वत केँ उठा लेलनि। ताहि काल ओना तँ गोकुलबासी सब सोङर लगौने छलाह, किन्तु गोवर्द्धन केँ उठएबाक मूल मे शक्ति छलनि श्रीकृष्ण मात्रक। ई प्रसङ्ग चलयबाक तात्पर्य ई जे सम्पूर्ण मैथिली केँ पचा लेबाक हेतु जखन विरोधी सन्नद्ध भऽ गेल छल तँ तकर रक्षाक हेतु ओना समाजक बहुतो व्यक्ति सहयोगी भेल छलथिन, परन्तु मूल मे छलाह भोलाबाबू। एकर

४ स्मृति, पृ० २४

सम्पूर्ण श्रेय भोलाबाबू अपने नहि लेबय चाहैत छलाह जे हिनक 'बहुजनहुँक श्रम' पद सँ व्यंजित भ जाइत अछि।

मंगलाचरणक बाद एक तार्किक अथवा विधिवेत्ताक जेहन भाषा होयबाक चाही तेहने भाषामे ग्रन्थक आरम्भ करैत लिखने छथि :

"कार्य कारणक दृष्टिएँ कोनो वस्तुक दू पक्ष प्रधान होइछ। न्यायालयहुक विवाद मे ओकर निर्णय तथा कार्यान्वयन यैह दू पक्ष प्रधान मानल जाइछ। विश्वविद्यालय मे मैथिली प्रवेशक यैह दू पक्ष प्रधान अछि—स्वीकृतिक निर्णय एवं तकर कार्यान्वयन वा संचालन।" एही वाक्य मे एहि ग्रन्थ केँ लिखबाक आवश्यकता सम्बन्धी समस्त तथ्य सन्निहित अछि।

भोला बाबू जहिना दृढ़ निश्चयी लोक छलाह तेहने निर्भीक ओ स्पष्ट वक्ता। यद्यपि ई सब गुण व्यक्तिक व्यक्तित्व केँ ऊपर अवश्य उटबैत छक, किन्तु छल-छद्म सँ भरल समाज मे एहन व्यक्ति केँ संघर्षो बहुत बेसी करय पड़ैत छैक। ई निर्भीकता ओ स्पष्टवादिता हिनक जीवन काल मे आर्थिक विपन्नताक अनेक मे सँ एक प्रमुख कारण रहलनि, किन्तु यैह गुण हिनका जीवनक लक्ष्य धरि पहुँचाय इतिहासक पृष्ठ पर अमरता सेहो प्रदान कयलकनि। पहिने हिनक निर्भीकता ओ स्पष्टवादिताक एक प्रसंगक चर्चा करब आवश्यक अछि जाहि सँ आगाँ वर्णनीय तथ्यक पुष्टि होइत अछि। मैथिल महासभाक बीसम अधिवेशन मुंगेर मे भेल रहैक। स्मर्त्तव्य जे मैथिल महासभाक आजीवन अध्यक्ष मिथिलेशे होइत छलाह। महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह अस्वस्थ भऽ गेल छलाह तेँ हुनक अनुपस्थिति मे महाराजाधिराज कुमार कामेश्वर सिंह सभापतित्व कयने रहथिन। ओ अपन भाषणक क्रम मे कहने छलथिन—'भाषणक आब समय नहि, क्रिया केवलमुत्तरम्'।

भोलाबाबू ताहि समय 'मिथिला' मासिकक सम्पादन करैत छलाह। ओ उक्त अधिबेशनक समस्त क्रिया कलापक समीक्षा करैत लिखने छथिन—

''शब्द तँ अत्यन्त ओजस्वी अछि, किन्तु 'क्रिया केवलमुत्तरम्' न्यायेन सर्वापेक्षा शोचनीय अवस्था दरभंगा राज परिवारहिक अछि जे आई धरि एकोटा छापाखाना मिथिलाक्षर के स्थापित नहि कय सकल, मिथिला भाषाक प्रचारार्थ कोनो उच्चकोटिक पत्र नहि प्रकाश कय सकल, एकोटा प्राचीन अप्रकाशित ग्रन्थ केँ संग्रहीत, सम्पादित एवं छापा नहि करा सकल। मिथिला भाषाकेँ अपन मातृभाषा मानि प्रान्तीय विश्वविद्यालय मे स्वीकृत नहि करा सकल। की आब ओ समय छैक जाहि मे बिना छापाखाना, पत्र-प्रकाशन एवं पुस्तक प्रकाशन आदिक भाषा अथवा अक्षर जीवित रहि सकै? की श्रीमानक उपरोक्त शब्दावली मे विशाल कार्यक्रमक योजना निहित नहि छैन्ह? की हमरालोकनिक ई आशा करब अयुक्त अछि जे श्रीमान् शीघ्रे तकरा हेतु कार्यक्षेत्र मे अग्रसर हैताह? दरभंगाक अक्षरांकण समिति अर्थाभावेँ कुहरि-कुहरि मिथला-क्षरक टाइप ढरावै और श्रीमानक ई मौखिक सहानुभूति? विद्यापति प्रेसक मैथिलेतर व्यवस्थापक तँ कहाँ एक हजार टाका एहि समिति केँ दियै आओर राजा, महाराजा, वकील, बैरिस्टर आदि सँ विभूषित मैथिल समाज कुहैर-कुहैर केँ दुइयो सै टाका नहि निकालै? यदि बजनहि एहि सब महान कार्यक सम्पादन होइत तँ बहुत गोटे कैने रहथि।'[5]

ई निर्भीक तथा स्पष्टोक्ति ताहि समयक थीक जहिया महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह जीवित छलाह तथा दरभंगाक प्रताप मध्याह्नक सूर्य जँका चमकि रहल छल। जेँ हेतु एहन एहन कटु सत्य हिंनका लेखनी सँ यदा-कदा उद्घाटित होइत रहैत छलनि तेँ राज दरभंगा सँ सम्पृक्त लोकक दृष्टि मे हिनकर व्यक्तित्व खटकिते रहैत छलैक। १९६८ ई० मे चेतना समिति, पटना विद्यापति स्मृति पर्वक अवसर पर भोलाबाबू कें मुख्य अतिथिक रूप मे आमंत्रित कयने छलनि तँ ताहिपर १९ जनवरी १९६९ क अंक मे मिथिला मिहिरक सम्पादकीय मे चेतना समिति पर किछु ताहि प्रकारक टिप्पणी कयल गेल छलैक जाहि सँ भोलाबाबूक प्रति

५ --मिथिला मासिक, वर्ष १, अङ्क २, पृ० ४४।

अपमानक स्वर झलकैत छलैक, जकर चर्च एहि स पहिनहुँ भऽ चुकल अछि।

१९७० ई०क विद्यापति स्मृति पर्वक अवसर पर चेतना समिति, पटना एक पुस्तिका प्रकाशित कयलक। पुस्तिकाक नाम थिकैक 'विश्वविद्यालय मे मैथिलीक प्रवेश' जाहि मे कलकत्ता मे मैथिलीक प्रवेशक प्रसंग पं० ब्रज-मोहन ठाकुर (पूर्णियाँ) तथा पटना विश्वविद्यालय मे मैथिलीक प्रवेशक प्रसंग डा० सुधाकर झा शास्त्रीक संस्मरण वार्ता प्रकाशित भेलनि। डा० सुधाकर झा 'शास्त्री' अपन संस्मरण मे लिखने छथि :

''पटना विश्वविद्यायक सेनेट मैथिलीक स्वीकृतिक प्रस्ताव प्रायः सर्वप्रथम १९२५ मे ओ तदुत्तरो कैक बेर आयल, किन्तु प्रबल विरोधक कारण स्वीकृति नहि भय सकैत छल। १९३८ ई० मे मैथिली आन्दोलन मे किछु बल आयल। महाराजाधिराज स्व० सर कामेश्वर सिंह, जे पटना विश्वविद्यालयक सेनेटक आजीवन सदस्य छलाह, मैथिलीक स्वी-कृतिक प्रस्ताव स्वयं अनलन्हि ओ भाग्यवश एहि बेर हुनक व्यक्तिगत प्रभाव सँ कहू वा मैथिली भाषीक जागरूकता सँ प्रवेशिका वर्ग मे एक ऐच्छिक विषयक रूपेँ मैथिली स्वीकृत भेल।

उपर्युक्त पुस्तिका मे मैथिली साहित्य परिषदक मंच सँ भोलाबाबू द्वारा कयल गेल प्रयत्नक कतहु चर्चामात्र नहि कयल गेल अछि, प्रत्युत एकठाम नामोल्लेख कयलो गेल छनि तँ ताहि सँ यैह ध्वनि बहराइत अछि जे जखन भोलाबाबू परिषदक मन्त्रित्वक भार छोड़लनि तखने परिषदक मंच सँ आन्दोलन मे बल आयल। ओहू अंशक उद्धरण विषयक स्पष्टताक हेतु आवश्यक अछि। आगाँ डा० सुधाकर झा 'शास्त्री' लिखने छथि :

''एहि बीच श्री सुभद्रबाबू ओ तन्त्रनाथ बाबू सेनेटक सदस्य भए गेल छलाह। श्री भोलालाल दास अ० भा० मैथिली साहित्य परिषदक मन्त्रित्व भार श्री तन्त्रनाथ बाबू केँ दए अपने पटना आबि गेलाह। श्री रमानाथ बाबू, स्व० ईशनाथ बाबू, श्री परमाकान्त चौधरी, श्री सुभद्रबाबूक संग श्री तन्त्रनाथ बाबू परिषदक मंच सँ मैथिलीक हेतु प्रबल

संघर्ष आरम्भ कएलन्हि। एहि सभक प्रसादात् प्रायः १९४१ ई० मे हिन्दी बोर्ड आफ स्टडीज, आइ० ए० वर्ग धरि मैथिलीक पाठ्यक्रम स्वीकृत कयलक।''

भोलाबाबू जखन उक्त पुस्तिका देखलनि तँ मोन मे कचोट भेलनि। ऐतिहासिक तथ्यक प्रति एहि प्रकारक सत्यक अपलाप समीचीन नहि बूझि पड़लनि। अतः अंग्रेजी मे एक लेख एण्डियन नेशन तथा सर्चलाइट मे लिखि पठौलथिन। इण्डियन नेशन तँ राज दरभंगाक पत्र, तेँ ओ नहि छपलकनि, किन्तु २१ नवंबर १९७१क अङ्क मे सर्चलाइट मे ओ लेख प्रकाशित भेलनि, जकर कोनो प्रतिवाद कतहुँ सँ नहि भेलैक। १९७२ ई० मे चेतना समितिक महासचिव श्री ताराकान्त झा, भूतपूर्व महाधिवक्ता, पटना उच्चन्यायालय, पटना किछु विद्वान मैथिली सेवी-लोकनिक सम्मान करबाक परिपाटी चलौलनि तँ पहिले बेर मे कविवर सीताराम झा, कविशेखर बदरीनाथ झा, पं० ब्रजमोहन ठाकुरक संग हिनको सम्मानित कयलथिन तथा सर्चलाइट मे पढ़ल लेख सँ प्रभावित भऽ पटना विश्वविद्यालय मे मैथिलीक प्रवेशक प्रामाणिक इतिहास लिखि देबाक आग्रह कयलथिन। एहि अध्याय मे भोलाबाबू एकर सांगोपांग वर्णन कयने छथि। वस्तुतः डा० सुधाकर झा शास्त्रीक संस्मरण केँ पटना विश्वविद्यालय मे मैथिलीक प्रवेशक संस्मरण नहि, स्वीकृतिक बाद ओकर कार्यान्वियनक संस्मरण बुझबाक चाही। एहि दिस संकेत करबाक उद्देश्य सँ भोलाबाबू ग्रन्थक आरम्भ एहि वाक्य सँ कयने छथि जे कार्य कारणक दृष्टियेँ कोनो वस्तुक दू पक्ष प्रधान होइछ। पहिने कारण तखन कार्य। एहिना न्यायालयक विवादहुक दू पक्ष होइत छैक पहिने निर्णय तखन तकर कार्यान्वियन। अस्तु।

एहि ग्रन्थक दोसर अध्यायक शीर्षक छैक—'हिन्दी मैथिलीक भ्रमपूर्ण विरोध।' एहि अध्याय मे लेखक जाहि राष्ट्रभाषा हिन्दीक प्रबल पक्षधर लोकनि मैथिली केँ स्वतन्त्र भाषाक रूप मे प्रतिष्ठित भेला पर हिन्दी पर अभिघात होयबाक आशंका करैत एकटा हिन्दीक बोली कहि आत्मसात् करबाक 'दुरभिसन्धि मे लागल रहलाह अछि ताहि हिन्दीक

आदि गद्यक लेखक पं० भगवान मिश्र, जनिक लिखल शिलालेख १७०३ ई०क लिखल मध्यप्रदेशक दन्तवारा ग्राम मे प्राप्त भेल छल। जाहि सदन मिश्र केँ हिंन्दीक गद्यक प्राचीनतम लेखक मानल जाइत छनि, भगवान मिश्र हुनका सँ एक सय वर्ष पहिने भेल छथि। एहि सम्बन्ध मे भोला बाबू लिखने छथि :

"वर्तमान हिन्दीक उन्नयन मे स्व० शिवपूजन सहायजो केँ दधीचि कही तँ सेहो थोड़े हैत। हुनक लिखल तथा सम्पादित एवं बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी साहित्य और बिहार' नामक पुस्तकक अध्ययन सँ एहि तथ्यक पता लगैछ जे हिन्दी भाषाक नामे जाहि कोनो भाषाक सामग्रीक चर्चा ओहि पुस्तक मे कैने छथि से सब सैकड़े अस्सी-पचासी शुद्ध मैथिलीये साहित्य थिक और उनैसम शताब्दी सँ आरम्भ भेल गद्य वा चलित हिन्दी जे स्व० सदन मिश्र तथा काशी नागरी प्रचारिणी सभा आदि प्रस्तुत कैलन्हि सेहो हिन्दवी वा हिन्दी हुनका सबसँ एक सए वर्ष पूर्व मैथिले पंडित भगवान मिश्र द्वारा प्रचलित भेल।"[6]

एहि कथनक पुष्टि मे राष्ट्रभाषा परिषदक उक्त पुस्तकक पृष्ठ १३-१४ सँ उद्धरण सेहो देने छथि। एहि अध्याय मे मैथिलीक प्राचीनता, मैथिलीक प्रभावक्षेत्र, एकरा पछुअयबाक कारण, आधुनिक आर्यभाषा सभक विकासक उत्स आदि विभिन्न विषय पर कनेक-कनेक प्रकाश दैत मैथिली भाषी द्वारा कोना हिन्दीक सेवा ओ समर्थन होइत रहल अछि ताहि सभक विवरण देने छथि। एहि अध्यायक उपसंहार करैत अन्त मे सात गोट तथ्य मे अन्तिम परिहार नहि भेला पर भविष्य मे की होय-बाक सम्भावना तकरो स्पष्ट कयने छथि। ओ सात स्वरूप निम्नांकित अछि :

(१) मैथिली क्षेत्र व्रज, अवधी, बाँगरू आदि क्षेत्रे जकाँ हिन्दीक पक्ष-पाती अछि एवं रहत। एहि क्षेत्र मे तेँ हेतु हिन्दीक आब ततेक प्रचार

---

6. संस्मरण पृष्ठ 11

भै गेल अछि जे, ओकरा मैथिली सँ कदापि अभिघातक भय नहि अछि। एकर लिपियो आब तिरहुता वा मिथिलाक्षर नहि, हिन्दीक समान नागराक्षरे अछि तेँ हेतु दूनू मे सौहार्द्र अछि एवं रहवे करत।

(२) मैथिलीक शब्दकोष एवं व्याकरण स्वतन्त्र छैक। हिन्दी एतय काहे-कूहे कहल जाइछ आ कोनहु रीतियेँ एहि क्षेत्रक लोकभाषा हिन्दी नहि भै सकैछ। अंगिका, बज्जिका, मधेशी, छिका-छिकीक कथे नहि, मगही पर्यन्त एहि दृष्टियेँ एकर प्रभाषा (डा० ग्रियर्सनक लेख) अथवा बोली थिक। भाषा-प्रभाषाक ई वैज्ञानिक एवं सहज भेद उपेक्षित भइयो नहि सकैछ।

(३) यैह कारण थिक जे हिन्दीक विकास सँ जतै ब्रजभाषादिक साहित्य सर्जना रुकि गेल, ततै मैथिलीक सर्जना तक्षुण्ण रहल एवं रहत। आब तँ हिन्दीक अधिको प्रचार वा प्रभाव भैने एकरो निजी साहित्य सर्जना ततेक विकसित एवं भिन्न-भिन्न विधाक भेल छैक एवं भऽ रहल छैक जे एकर हत्यो असम्भव अछि।

(४) मैथिली क्षेत्रक विस्तार नेपाल सँ गंगाधरि एवं पूर्णियाँ सँ चम्पा-रण धरि तथा बजनिहारक संख्या दू कोटि अछि, ई नगण्य नहि कहल जाय सकैछ, ने कोनहु रूपेँ उपेक्षणीय अछि।

(५) मैथिली साहित्यक महल जाही दृष्टि सँ देखल जाय समस्त भारत मे आदरणीय रहल अछि एवं रहत। पूर्वाञ्चलीय भाषाक तँ कथे नहि, हिन्दी पर्यन्त एहि सँ बहुत किछु अनुप्राणित होइत रहल अछि एवं होइत रहत।

(६) स्वतन्त्र भाषा वला क्षेत्र मे केवल मैथिलीये भाषो क्षेत्र हिन्दी केँ राष्ट्रभाषा बनैबाक पक्षपाती भारतवर्ष मे सर्वाधिक अछि। अन्यान्य अधिसूचित भाषा वर्ग हिन्दीक प्रतिद्वन्द्वो एवं विरोधियो अछि। शत्रु-मित्रहुक तँ किछु हैबाक चाही।

(७) ई विरोध परिहार नहि भैने मैथिली भाषी केँ पृथक् प्रान्तक हेतु पृथक् आन्दोलन करबा पर बाध्य करतैन्ह से वांछनीय नहि।

एहि अध्याय मे वर्तमान कालहु मे मैथिलीभाषी होइतो हिन्दीक सेवा मे, हिन्दी साहित्यक श्रीवृद्धि करबा मे जे लोकनि लागल रहलाह अछि तनिका लोकनिक नामोल्लेख करैत अपना सम्बन्ध मे लिखलनि अछि :

"अपनहुँ विषय मे हम निस्संकोच कहि सकै छी जे-जे किछु लिखि सकलहुँ तकरा देखैत मैथिली सेवा पासङ्गो बराबरि नहि भय सकल अछि।"

तेसर अध्यायक शीर्षक छैक—"मिथिला पत्रक द्वारा मैथिली साहित्य परिषदक स्थापनार्थ पृष्ठभूमिक निर्माण।" एहि अध्याय मे वर्णित विषय बहुत किछु शीर्षक सँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि। एहिमे अपना सँ सम्बद्ध घटना चक्र पर विशेष विवरण देने छथि संगहि मिथिला मासिक पत्र द्वारा मैथिलीक विकास मे केहन योगदान रहल, के लोकनि साहित्य क्षेत्र मे अवतीर्ण भऽ मातृभाषाक सेवा मे लगलाह, कोना विद्यापति स्मृति पर्वक श्रीगणेश भेल तथा मैथिलीक विकासक हेतु एक स्वतन्त्र संस्थाक निर्माणक हेतु अनुकूल वातावरणक निर्माण भऽ सकल तकर ऐतिहासिक महत्त्वक वर्णन कयल गेल अछि।

चारिम अध्यायक शीर्षक छैक—"मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना एवं मैथिलीक स्वीकृति तथा विद्यापति जयन्तीक सामूहिक प्रयत्न।" एहि अध्याय कें (क), (ख) क रूप मे चारि भाग मे विभाजित कयल गेल अछि। (क) खण्ड के मैथिली साहित्य परिषद सँ पहिने बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलनक भागलपुरक १९१४ ई०क अधिवेशन मे मैथिलीक विरुद्ध प्रस्ताव पारित भेलाक प्रतिक्रिया के मन्दार मधुसूदन मे भेल मैथिल महासभाक शाखाक रूप मे कोना मैथिली साहित्य समितिक संगठन भेल, पुनः १९३० मे आबि कोना ओहि समिति कें स्वतन्त्र साहित्यक मञ्च बनयबाक प्रयास भेल तथा १९३१ ई० मे मैथिली साहित्य परिषद कोना स्वतन्त्र रूप ग्रहण कयलक आदि ऐतिहासिक तथ्यक वर्णन कयल गेल अछि। यदि तत्त्वतः विचारल जाय तँ मैथिली साहित्य परिषदक जन्मक कथा एहि खण्ड मे वर्णित अछि।

खण्ड (ख मे जखन पटना विश्वविद्यालयक कुलपति जी० ई० फोकस साहेब रहथि ताहि समय परिषदक मञ्च सँ हुनका मैथिलीक स्वतन्त्र अस्तित्व तथा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृतिक आवश्यकता ओ उपादेयता सँ परिचय करयबाक कोना प्रयास कयल गेल तथा कोना डा० जनार्दन मिश्र घोर विरोध कयलथिन आदि तथ्य पर प्रकाश देल गेल अछि। स्मर्त्तव्य जे परिषदक माध्यम सँ 'केस ऑफ मैथिली बिफोर पटना युनिवर्सिटी' नामक पुस्तिका लिखि, छपाय सेनेटक सदस्य लोकनिक मध्य ओही समय मे वितरित भेल छल।

खण्ड (ग) मे पटना विश्वविद्यालय द्वारा फोकस साहेबक सक्रियता सँ एक 'सबकमीटी' मैथिलीक प्रश्न पर विचारार्थ बनाओल गेल छल जाहि मे डा० जनार्दन मिश्र सेहो रहथि आ वैह घोर विरोध कयलथिन ताहि पर जे प्रतिक्रिया भेलैक, म० म० डा० उमेश मिश्र कें घोघरडीहा अधिवेशनक सभापति मनोनीत कऽ ओ ऐतिहासिक भाषण प्रस्तुत कराओल गेल जाहि मे भाषा विज्ञानक आधार पर मैथिली कें एक स्वतन्त्र भाषाक रूप मे प्रमाणित कयल गेल, ताहि सभक विवरण उपस्थित कयल गेल अछि।

खण्ड (घ) मे विद्यापति जयन्तीक, जे आब विद्यापति स्मृति-पर्वक नाम सँ मैथिली आन्दोलनक पर्याय बनि गेल अछि, प्रचार-प्रसारक हेतु की सब उद्योग भेल, पहिने राजाबहादुर विशेश्वर सिंह पुनः महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह कोना क्रमशः १९३२ तथा १९३३ मे एहि समारोहक अध्यक्षता कयलनि तथा विद्यापति पर विशिष्ट निबन्ध लिखबाक हेतु पाँच वर्ष धरि एक एक सय टाका पुरस्कार देबाक घोषणा कयलनि आदिक विस्तृत विवरण देल गेल अछि।

पाँचम अध्याय एहि पुस्तक में सबसँ पैघ अछि। एहि अध्यायक शीर्षक छैक "स्वीकृतिक हेतु परिषदक अधिवेशन तथा भाषण, प्रस्तावादि।" एहि मे वस्तुतः मैथिली कें विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृति करयबाक हेतु भोलाबाबू अपन मन्त्रित्वकाल मे परिषद्द्वारा कयल गेल सम्पूर्ण क्रिया-

कलापक विवरण उपस्थित कयने छथि जाहिमे कतोक महत्त्वपूर्ण अधिवेशन जेना घोघरडीहा, एम्० एल्० एकेडमी लहेरियासराय, मधुबनी, मुजफ्फर-पुर, पटना तथा दू गोट विशेषाधिवेशन सरिसव तथा सीतामढ़ीक विशेष विवरण देने छथि। एहि अधिवेशन सभक अध्यक्षता क्रमशः म० म० डा० उमेश मिश्र, पं० रामभद्र झा, चीफ जस्टिस अलवर स्टेट, म० म० डा० सर गंगानाथ झा, राय बहादुर जयानन्द कुमर तथा डा० अमरनाथ झाक अनुपस्थिति मे पुनः जयानन्द कुमर कयने छलाह एवं विशेषाधिवेशनक अध्यक्षता क्रमशः पं० गिरीन्द्र मोहन मिश्र ओ राजपण्डित बलदेव मिश्र कयने रहथि। उक्त अधिवेशन सभक अध्यक्षीय भाषणक सारांश सेहो संक्षिप्त रूप मे उद्धृत कयने छथि।

एहि अध्याय मे तीन गोट उपशीर्षक सेहो अछि :

(१) संस्कृत काउन्सिल द्वारा मैथिलीक स्वीकृति

(२) मन्त्रित्वक गद्दारी तथा

(३) मिथिला मैथिलीक प्रति मिथिलेशक योगदान।

एहि मे पहिल उपशीर्षक 'भारती' पत्रिकाक सम्पादकीय टिप्पणी सँ उद्धृत अछि जाहि सँ परिषद् द्वारा कयल जाइत प्रयासक ई प्रथम सफलता छल से ज्ञात होइत अछि। संगहि उक्त प्रस्ताव केँ पारित होयबा मे जाहि व्यक्ति सभक सहयोग ओ सहानुभूति प्राप्त भेल छलनि यथा—संस्कृत ऐसोशियेशनक मन्त्री ईश्वरीदत्त दौर्गादत्ति शास्त्री, पं० कालिकानन्द सिंह, अनन्त प्रसाद बनर्जी शास्त्री, सर चन्द्रेश्वर प्रसाद नारायण सिंह तथा एहि संघर्ष मे कतोक दिन सँ लागल पं० हरिश्चन्द्र झा बैद्य आदिक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कयने छथि। अतीतक अन्धकारमय गुफा मे अदृश्य भेल कतोक व्यक्तित्व पर एहि सँ प्रकाश पड़ैत अछि।

दोसर उपशीर्षक—मन्त्रित्वक गद्दारी—मे ओहि तथ्य पर प्रकाश देने छथि जखन १९३९ ई० मे मैथिली केँ स्वीकृति भेटि गेलाक बादो मन्त्रिपदक त्याग नहि कयला पर जे हिनका पर दोषारोपण कयल जाय

९

लगलनि तखनहुँ कोन कारणेँ ई पद पर बनल रहलाह से हुनकहि शब्द मे उद्धृत करब समीचीन होयत।

"परिषदक किछु हितैषीयो व्यक्ति केँ १९३९क बाद परिषदक मन्त्रित्व केँ एतेक दीर्घकाल सँ अपरिवर्तित देखि हमरा विषय मे गद्दारो बुझबाक भ्रम भेलन्हि तथा कोनो पत्रहुमे ई भाव व्यक्त कैल गेल जे आब अति भै गेल। भोलाबाबू केँ उचित छन्हि जे ओ स्वयं एहि गद्दी केँ आब छोड़ि देथि। ८-९ वर्षक अवधि कोनो एक व्यक्तिक प्रधानमन्त्रित्वक हेतु अवश्य अति भै गेलैक एवं ई उलहन अनुचित नहि कहल जा सकैछ, मुदा हमरा स्मरण अछि जे प्रत्येक पुनर्निर्वाचनक पूर्व हम परिषदक कार्यभार अपना अयोग्यताक कारण कोनो आने योग्य व्यक्ति केँ देबाक आग्रह करैत एलहुँ आ एहि सभक विशेषाधिवेशन मे तँ पद त्यागक जेना धमकीए दए परिषदक कागत-पत्र एक दिश पटकि कए बैसि रहलहुँ, मुदा अधिकाधिक सहयोगक आश्वासने पाबि कहुना ई भार अपना ऊपर लेतहुँ। हँ, विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत भेलहुँ पर जे १९३९ मे त्यागपत्र नहि देलहुँ तकर कारण प्रान्तीय शिक्षा विभाग द्वारा मैट्रिक सँ निम्नवर्गक हेतु स्वीकृतिक यत्न छल।"[7]

तेसर उपशीर्षक—मिथिला मैथिलीक प्रति मिथिलेशक योगदान मे महाराजा द्वारा कयल गेल मैथिलीक प्रसंग ओहि सब कार्यक विवरण देल गेल अछि जाहि काज सब सँ मैथिलीक उत्थान मे सहायता भेलैक, किन्तु राज दरभंगा सन विशाल सम्पत्ति रखनिहार महाराजाक मातृभाषा होइतो मैथिली केँ एखनधरि अपन न्यायोचित अधिकार प्राप्त करबाक हेतु संघर्ष मे लागल रहय पड़ैक से अवश्य चिन्तनीय विषय थीक आ राज दरभंगाक हेतु लज्जास्पद। मैथिलीक विकास मे जे एक बहुत पैघ अवरोधक तत्त्व आबि बाट पर ठाढ़ भऽ गेलैक से थीक मिथिलाक्षरक उपेक्षा। प्रेसक एहि युग मे जाहि लिपिक प्रेस नहि रहतैक तकरा जीवित रहब असम्भव नहि तँ परम कठिन अवश्य छैक आ एहन काजक हेतु

7. तत्रैव, पृ० 86

जतेक धन अपेक्षित छैक से जनसाधारण सँ जुटायब दुर्घट, किन्तु राज दरभंगाक हेतु बामा हाथ सँ चुटकी बजायब सन छलैक, किन्तु राज दरभंगाक दिस सँ एहि हेतु कनेको ध्यान नहि देल गेल। एहि उपशीर्षक मे एहो सब बातक आलोचना कयल गेल अछि, संगहि महाराजा द्वारा बनाओल गेल 'विल' केर सेहो आलोचना कयल गेल अछि। कहल जा सकैछ जे 'स्व० महाराजाधिराज' शीर्षक संस्मरण तथा 'जा हे दरभंगा राज' नामक निबन्ध मे अभिव्यक्त भावक निचोड़ सेहो एहि मे कहि देल गेल अछि।

एवं क्रमे परिशिष्ट धरि मिलाय एहि संस्मरण ग्रन्थक तेरह गोट अध्याय अछि। सब अध्यायक शीर्षक क्रमशः देल अछि—

(६) स्वीकृति संघर्षक रूपरेखा
(७) विशेष खर्चक आवश्यकता नहि
(८) बंगाली समाजक स्मरणीय सहयोग
(९) स्वीकृतिक हेतु अन्यान्य किछु आवश्यक कार्य
(१०) मैथिली क्षेत्र निर्णयक मानचित्र
(११) प्रान्तीय शिक्षा विभाग द्वारा मैथिलीक स्वीकृति एवं आगाँक स्थिति
(१२) प्रेरणाक मूल स्रोत।
(१३) परिशिष्ट

मिला जुला कऽ एहि अध्याय सबमे मैथिलीक विरोध मे जे तर्क सब देल जाइत छल तकर परिहार मे देल तर्क, कोन वर्ग सँ कोन रूपक सहयोग भेटलनि तकर उल्लेख, पुस्तकादिक प्रणयन संकलन, सम्पादन, प्रकाशन, भारती मासिक पत्रक योगदान, ओकर प्रकाशन मे कठिनता, आर्थिक दण्ड सहबाक बाध्यता, डा० सुधाकर झा शास्त्रीक संस्मरणक अपूर्णता, प्र० ब्रजमोहन ठाकुर केँ कलकत्ता विश्वविद्यालय मे मैथिली केँ स्थान देअयबाक प्रेरणा स्रोतक अन्वेषण ओ ताहि मे विफलता, अपना सम्बन्ध मे लिखबाक बाध्यता आदि समस्त क्रिया-कलापक विवरण

अछि, जकरा तत्कालीन समय मे मैथिली भाषा केँ पुनरुज्जीवित करबाक सम्पूर्ण गतिविधिक प्रामाणिक अभिलेख कहल जा सकैत अछि।

अक्टूबर १९६२ ई० मे अन्तिम मिथिलेश महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक देहान्तक पश्चात् २५-११-१९६२ क 'मिथिला मिहिर' मे एक संस्मरणात्मक निबन्ध प्रकाशित भेल रहनि जकर शीर्षक छलैक 'स्व० महाराधिराज'। एहि मे महाराजाधिराज द्वारा मैथिली साहित्य परिषद ओ मैथिलीक हेतु कयल गेल ओहि सब कार्यक विस्तार सँ स्मरण कयने छथि जे परिषदक मञ्च सँ भोलाबाबू द्वारा कयल जाइत संघर्षक क्रम मे अपन लक्ष्य धरि पहुँचबामे तथा सफलता प्राप्त करबा मे सबसँ अधिक सहायक भेल छलनि। यथा—सिंहासनारूढ़ होइते दिवंगत अपन पिता स्व० मिथिलेशक स्मृति मे पटना विश्वविद्यालय मे मैथिली चेयरक हेतु सबा लाख दान, विद्यापति जयन्तीक अध्यक्षता, निबन्ध प्रतियोगिताक हेतु पारितोषिकक घोषणा, पं० जयगोविन्द मिश्रक माताजीक हाथ सँ काटल हरिपुरा कांग्रेस मे प्रमाणित भारत भरि मे सबसँ सूक्ष्म एवं उत्तम चरखा सूतक धोती पर परिषद् केँ अढ़ाई सय टाकाक पुरस्कार, कतोक गण्यमान्य व्यक्तिक डेपुटेशनक प्रसाद स्वरूप परिषद द्वारा संकलित मैथिली कुञ्जक प्रकाशन स्वीकार, संस्कृत कन्वोकेशन द्वारा मैथिली स्वीकृतिक पूर्ण प्रतिष्ठा एवं अन्त मे पटना विश्वविद्यालय द्वारा मैथिली स्वीकृतिक श्रीगणेश इत्यादि। ओना उपर्युक्त सब बातक चर्चा अपन संस्मरण नामक ग्रन्थ मे सेहो कऽ देने छथि।

तेसर एक सस्मरणात्मक लेख प्राप्त होइत अछि—१९३४क भूकम्प। ई लेख १९३६ ई० मे मैथिली साहित्य परिषद द्वारा मैथिली केँ विश्वविद्यालय मे स्वीकृति भेटला उत्तर यदि तुरन्त पुस्तकक माँग होअय, ताहि हेतु पहिने सँ सन्नद्ध रहबाक उद्देश्य सँ प्रकाशन आरम्भ कयल गेल छल ताहि क्रम मे मैथिली गद्य कुसुमाञ्जलि नामसँ एक गद्यग्रन्थक संकलन ओ प्रकाशन भेल छल। एहि पुस्तकक संकलयिता छथि म० म० डा० उमेश मिश्र तथा भूमिका लिखने छथि बाबू भोलालाल दास। ओकरा 'भूमिका'

नाम देल गेल अछि, किन्तु वस्तुतः परिषदक प्रधानमन्त्रीक वक्तव्य ओकरा बूझल जयबाक चाही जाहि मे पुस्तकक उपयोगिता पर प्रकाश देल गेल अछि। विषय वस्तुक परिज्ञान तँ शीर्षके सँ स्पष्ट भऽ जाइछ जाहि मे वर्णनक सजीवताक संग भयानक तथा अद्भुत एहि दूनू रसक मिश्रित रसास्वादन भऽ जाइत अछि। प्रवेशिका वर्गक छात्रक हेतु केहन सहज सरल शब्दावली ओ केहन सुसङ्घटित वाक्य रचना होयबाक चाही तकर एक सुन्दर दृष्टान्त थिक उक्त लेख, जकर एक छोट सन उद्धरण एतय देल जा रहल अछि—

"एहने बूझि पड़ल जे पृथ्वी पैरक नीचाँ सँ रसातल जा रहलि छथि वा एकदम सँ उनटने होबय चाहैत अछि। पैर पर ठाढ़ रहब असम्भव भए गेल। बहुत गोटए बैसि गेलाह, बहुत गोटए भटका पर भटका खाए लगलाह। के कतए सँ ककरा पर, कतए पड़ाएल, कूदल, खसल वा की भेल, तकर सुधि-बुधि ककरो नहि रहलन्हि। ककरो कान टुटलन्हि, ककरो कपार, ककरो हाथ, ककरो पैर, ककरो किछु, ककरो किछु। विचित्र अन्धाधुन्धि आओर विकराल विनाशक दृश्य छल। ....लोक बेसुध छलै, तथापि अपना अपना घर दिश पड़ाए रहल छल वा निरापद स्थानक अन्वेषण मे इतस्ततः विकल छल कि जमीन तड़ तड़ फाटए लागल। की देखै छी तँ चारू दिश दरारिए दरारि आओर ताहि सभ सँ बड़े वेगपूर्वक पानि, बालु बहराए रहल अछि, मानू पृथ्वी केँ अजीर्णक कारणेँ वमन भए रहल छन्हि।"[8]

एहिमे ने कतहु शब्दक क्लिष्टता अछि, ने समासक बोझिलता, ने अक्षरक दुरूहता, ने भावक अस्पष्टता। स्वभावोक्ति तथा उत्प्रेक्षा सँ अलंकृत एहने वाक्य समूह सामान्य सँ सामान्य बोधक लोकक चित्त केँ आकर्षित करबा मे सक्षम होइत अछि।

एकर अतिरिक्त हिनक एक संस्मरणात्मक लेख 'मिथिला ज्योति' मे

8. मै० गद्य कुसुमाञ्जलि, प्र० मैथिली सा० परिषद दरभंगा, पृ० 62-63

प्रकाशित छनि। १६४८ ई० मे दरभंगा मे प्राच्य विद्या महासम्मेलन आयोजित भेल छल। ताहि अवसर पर मैथिलीओक एक विभाग छल जकर अध्यक्षता कुमार गंगानन्द सिंहजी कयने छलाह। प्राच्य विद्या महासम्मेलन मे मैथिलीओ केँ स्थान प्राप्त भेलैक अछि से जानि भोला बाबू केँ अपार आनन्द भेलनि। ओहिमे प्रवेशक हेतु दू प्रकारक शुल्क छलैक। भोलाबाबू लिखने छथि—

"अधिकक तँ कथे नहि; संस्कृतक थोड़बो ज्ञान नहि अछि जे प्राच्य विद्या सम्मेलनक शास्त्रीय शाखा सभादि मे विशेष अभिरुचि हो, मुदा मैथिलीक आवेश तँ स्वाभाविक अछि। ...अतः अभ्यर्थना समितिक शुल्कक अतिरिक्त प्रतिनिधि शुल्क देल, मुदा मैथिलीक समन्वय सभा देखि निराश भै गेलहुँ।"

निराश होयबाक कारण पर प्रकाश दैत अपन मन्तव्य व्यक्त कयने छथि जे उक्त सभामे मुख्य विषय छल मैथिलीक समस्या, किन्तु ताहि विषयक उत्थान मात्रो नहि भेल। महान् भाषा वैज्ञानिक डा० सुनीति कुमार चटर्जी भाषा सम्बन्धी केन्द्रीयकरण नीतिक विशद व्याख्या उपस्थित कयलनि जाहिमे कोनो भाषा केँ सिंचित, पल्लवित, पुष्पित एवं फलित होयबाक योग्यताक चारि गोट लक्षण दर्शौलनि। डा० श्री सुभद्र झा तथा श्री तन्त्रनाथ झा तकर समर्थन कयलनि। तकर अतिरिक्त इच्छा रखनिहारो वक्ता लोकनि केँ समय नहि देल गेलनि। जहिया ई सम्मेलन भेल छल ताहि सँ कतेक वर्ष पहिनहि मैथिली केँ मातृभाषाक रूपमे बिहारक शिक्षा विभाग तथा विश्वविद्यालय मान्यता दऽ चुकल छल। अतः मैथिलीक भाषात्व सिद्ध करवाक आवश्यकता नहि छल, आवश्यकता छल एकर विकास कोन प्रकारें भऽ सकत, किन्तु ताहि प्रसंग विचार करबाक चर्चो नहि भेल। भोलाबाबू अपन संस्मरणक उपसंहार करैत लिखने छथि—

"आशा की विश्वासो छल जे ओरिएन्टल कान्फ्रेंस सदृश सार्वभौम संस्था द्वारा यथार्थ मिथिला, मैथिल ओ मैथिली परिचय देल जयतैक

मुदा ताहू सँ हमरा बुझने प्रतिनिधिगण के केवल मैथिल ब्राह्मण मात्र मिथिलावासी एवं मैथिल बूझि पड़ल हैथिन्ह।''

भोलाबाबूक उक्त निबन्ध 'मिथिला ज्योति' मासिक पत्रक प्रथम वर्षक सातम अङ्क मे प्रकाशित छनि।

ऐतिहासिक निबन्ध :

हिनक लिखल ऐतिहासिक तीन गोट निबन्ध प्राप्त होइत अछि :

१) आसामी सभ्यता पर मिथिलाक प्रभाव

२) मिथिलाक ऊपर बज्रपात तथा

३) जाहे दरभंगा राज।

पहिल निबन्ध बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' द्वारा सम्पादित 'विभूति' नामक मासिक पत्रक प्रथम वर्षक सातम अंक (सितम्बर १९३७) मे प्रकाशित छनि। जखन बी० ए० कक्षाक हेतु गद्य संग्रह संकलित कयल गेल तँ ताहिमे एहू निबन्ध केँ सन्निविष्ट कयल गेल।

आसाम मे एकटा गौरीपुर स्टेट छलैक। तकर अधिपति छलाह राजा प्रभात चन्द्र वरुआ। प्राच्य विद्यामहार्णव उपाधि विभूषित प० नगेन्द्र नाथ बसु महाशय अङ्गरेजी भाषा मे उक्त राज्यक वृहत् इतिहास लिखि उक्त राजा साहेब केँ समर्पित कयने छथिन। भोलाबाबू केँ ओहि राजा साहेब सँ पत्राचारो चलैत छलनि जे एहि निबन्धक अनुशीलन सँ ज्ञात होइत अछि। उक्त इतिहासहिक आधार पर भोलाबाबू एहि निबन्ध मे प्रमाणित कयने छथि जे गौरीपुर राज्यक अधिपति मिथिला सँ गेल करण कायस्थे छथि। हिनक कहब छनि जे नान्यवंशीय राजा लोकनिक पुश्तैनी मंत्री कायस्थ कुलोद्भूत श्रीधर ठाकुरहिक वंशधर होइत आयल छलथिन। श्रीधर ठाकुर स्वयं नान्यदेवक मंत्री छलथिन जे नान्यदेव मिथिला मे कर्णाटकुल राज्यक संस्थापक रहथि। ओही श्रीधर ठाकुर द्वारा अन्धराठाढ़ी मे एक विष्णु मठ स्थापित भेल छल। ओहि मठ मे विष्णु पादुका

पर अंकित शिलालेखक आधार पर भोलाबाबू उक्त मठक प्रतिष्ठापक श्रीधर ठाकुर केँ मानने छथि ।

एहि निबन्ध मे हिनक मुख्य प्रतिपाद्य विषय छनि जे महाराजा शिवसिंहक मन्त्री छलथिन अमृतकर जे विद्यापतिक साहित्य मे अमियकर नाम सँ चर्चित छथि । अमियकरक पौत्र छलथिन नरहरि । ओही नरहरि केँ कूचविहार (बंगाल) क राजा विश्वसिंह मिथिलाक कोनो विशिष्ट पण्डितक माध्यम सँ अपना ओहिठाम बजबाय मन्त्रीक पद पर नियुक्त कयने छलथिन । यज्ञ याजनादि मे एहि ठामक ब्राह्मण पण्डित लोकनि आसाम जाइते छलाह, नरहरि केँ ओतय मन्त्रिपद भेटलाक बाद ओहो आसाम मे अपन पूर्ण प्रभाव विस्तार कयलनि तथा १४ वंशक कायस्थ लोकनि केँ बजबाय ओतय बसौलनि । मिथिले जकाँ ओतहु पंजीक व्यवस्था कयलनि । एहि प्रकारेँ मिथिलाक सभ्यताक प्रचार-प्रसार आसाम मे बढ़य लागल । हिनक मन्तव्य छनि जे यदि आसाम पर मिथिलाक सभ्यताक प्रभाव पड़लैक तँ आसामो सँ मैथिल लोकनि शक्ति पूजा ओ तन्त्रमार्ग ग्रहण कएलनि । अपना देश मे शक्ति पूजाक तथा तन्त्रमार्ग मे चीनाचारक जे प्रधानता अछि से आसामे सँ आयल अछि ।

दोसर ऐतिहासिक निबन्ध—'मिथिलाक ऊपर वज्रपात' मिथिला मासिक पत्रक सम्पादकीय रूपमे महाराजाधिराज रामेश्वर सिंहक देहावसानक पश्चात् लिखल गेल छल । एकरा एकटा संयोगे कहबाक चाही जे भोलाबाबूक कलम सँ दू गोट मिथिलेशक देहावसान पर अपन शोकोच्छ्वास लिखल गेल. जाहिमे एकक चर्चा संस्मरणात्मक निबन्ध मे कयल जा चुकल अछि । संस्मरणात्मक निवन्ध ओकरे कहल जायत जाहिमे लेखक जाहि व्यक्ति पर कलम उठबैत छथि ताहि व्यक्ति सँ व्यक्तिगत सम्पर्क रहल होइनि । भोलाबाबू केँ महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह सँ व्यक्तिगत सम्पर्क छलनि, किन्तु महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह सँ व्यक्तिगत सम्पर्क मे अयबाक सुयोग नहि भेटल छलनि ।

तेहना स्थिति मे हुनक जीवन सँ सम्बद्ध सम्पूर्ण घटना चक्र पर तखन कलम उठौलनि जखन हुनक अवसान भऽ गेलनि। ओ स्वयं एकटा इतिहास बनि गेऽाह, अतः हुनक जोवन चरित्रो केँ ऐतिहासिके चरित्र मानव समीचीन होयत। एही दृष्टिएँ एहि निबन्ध केँ ऐतिहासिक निबन्ध कहल गेल अछि।

महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक जन्म १८६० ई० मे भेल छलनि तथा ओही वर्ष हुनक पिता महाराजा महेश्वर सिंहक देहान्तो भऽ गेलनि। वस्तुतः ओ वर्ष मिथिलाक राजनीतिक ओ सांस्कृतिक गतिविधिक दृष्टिएँ उल्लेखनीय मानल जायत। कारण जे महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह ओ महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह अवयस्क रहथि, राज दरभंगाक शासन व्यवस्था 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स'क अधीन भऽ गेल छलैक। दूनू राजकुमारक शिक्षा-दोक्षा कोर्ट आफ वार्ड्सहिक अधीन भेलनि। गोटे शताब्दी सँ जाहि पाश्चात्य शिक्षाक प्रचार-प्रसार भारतवर्षक अन्यान्य प्रान्त मे द्रुतगतिएँ बढ़ि रहल छलैक तेहना स्थिति मे मिथिला मे ओकर गन्ध धरि नहि आबि सकल छल। से यदि शुरू भेल तँ एही दूनू भायक शिक्षाक समय सँ। महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंहक शासनारूढ़ भेला पर मिथिला राज्यक प्रशासकीय भाषा मैथिली केँ हटाओल गेल। सम्पूर्ण समाज मे एक घोर परिवर्तनक युग आरम्भ भेल, ताहि समय महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंहक असामयिक निधन भेला उत्तर मिथिलेशक गद्दी पर बैसलाह। तखन सँ १९२९ ई० क ३ जुलाई, जहिया हिनकर देहान्त भेलनि, सँ पूर्व धरि अपन शासन कालमे ई कोन रूपेँ अपन ब्राह्मणत्वक रक्षा करैत सम्पूर्ण भारतवर्ष मे सनातन धर्मक रक्षार्थ, विद्याक प्रचारार्थ अपना राज्यक सम्पत्ति केँ बढ़यबाक हेतु तथा अन्यान्य विकासक हेतु सन्नद्ध रहलाह, अथक प्ररिश्रम करैत रहलाह, राजा होइतो तपस्वी जकाँ जीवन-यापन करैत रहलाह ताहि सब विषय पर भोलाबाबू प्रकाश देने छथि। संगहि आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा तथा मैथिली ओ मिथिलाक्षरक विकास सँ उदासीन रहलाह जाहि कारणेँ बड़ विनम्र ओ व्यंजक भाषा मे अपन क्षोभ सेहो प्रकाश कयने छथि। एहि निबन्धक अनुशीलन सँ ताहि कालक

विशेषतः राज दरभंगाक ताहि संग देश ओ समाजक स्थिति सँ परिचय प्राप्त होइत अछि।

तेसर ऐतिहासिक निबन्धक शीर्षक छनि—'जा हे दरभंगा राज'। जे मिथिला दर्शन मासिक पत्रक १९६९ क जनवरी फररीक अंक मे प्रकाशित भेल छनि। एहि निबन्ध मे भोलाबाबू अपना हृदयक समस्त आक्रोश अभिव्यक्त कऽ देलनि अछि आ सम्पूर्ण क्रिया कलापक विश्लेषण करैत सिद्ध कऽ देलनि अछि जे ई राज वाहवाह मे चल गेल, समयक रुखि केँ ई कहियो नहि चीन्हि सकल, समयक प्रवाहक प्रतिकूले एकर सब आचरण होइत रहलैक। एतेक अपार सम्पत्ति रखनिहार भारतवर्ष मे आंगुर पर गनल लोक होयताह, किन्तु जाहि क्षेत्रक दोहन कय ई अपार सम्पत्ति एकत्र कयल गेलैक ताहि क्षेत्रक हेतु तकर शतांशो एकरा अभ्युन्नति मे नहि लगाओल जा सकलैक। वस्तुतः आधुनिक पाश्चात्य शिक्षाक प्रचार-प्रसारक समय मे, क्षेत्रीय भाषाक उद्धार ओ विकासक समय मे एहि ठाम संस्कृतक प्रचार हेतु अनेक विद्यालय, महाविद्यालय स्थापित भेल, किन्तु ने कोनो साइन्स कालेज, ने इंजीनियरिंग कालेज, ने अन्यान्य प्रकारक विकासक काज कयल गेल। क्षेत्रीय भाषा, एहि क्षेत्रक मैथिली छल जकरा एक समय मे समस्त उत्तर पूर्वीय अंचलक लोकभाषा सबहि मध्य मानक भाषा होयबाक गौरव प्राप्त छलैक से बलात् राजकाजहु सँ निष्कासित कऽ देल गेल। मौखिक सहानुभूत प्रदर्शित करितो मैथिली भाषा ओ मिथिलाक्षरक विकासक घोर उपेक्षा कयल गेल। स्वतन्त्रता आन्दोलनक समय मे सम्पूर्ण देश अङरेजी शासनक विरुद्ध क्रांति करबा मे लागल छल तँ राज दरभंगा अङरेजक खरखाहो लेबाक हेतु अपस्याँत छल। एकटा समय रहैक जहिया दुर्गक निर्माण कऽ राजा लोकनि शत्रुक आक्रमण सँ आत्मरक्षाक व्यवस्था करैत छलाह, किन्तु आजुक वैज्ञानिक विकासक युग मे जखन आकश मार्गहु सँ आक्रमण कऽ केहन केहन दुर्ग केँ ध्वस्त कयल जा रहल छैक, रामबाग सन विशालकाय अट्टालिकाक निर्माण मे करोड़ों टाका बूकि देल गेल, किन्तु जनसामान्यक जीवन स्तर केँ

विकसित करबाक दिशा मे एकटा फूटल कौड़ी पर्यन्त नहि खर्च कयल गेल। एहि सब विषय पर विस्तार सँ प्रकाश देल गेल अछि। एहि निबन्धक भाषा मे अतिशय तीक्ष्णता, कटुता आ उपालम्भक स्वर मे कटु सत्यक उद्घाटन छैक। उक्तिक प्रामाणिकताक हेतु छोटसन उद्धरण प्रस्तुत कयल जा रहल अछि :

"आखिर कहबौक हेतु तँ तों छलाह मिथिलाधिराज। कोना नहि मैथिल आ मैथिली तोहर भरोस करैत ? कोना नहि ताहि भरोसेँ मैथिल गण तोहर स्तुति भाव कै अपना प्रखर बुद्धि केँ कुंठित कै लैथि ? परिणामो सैह भेल। मिथिलाक बिहार बनल, हिन्दी मैथिली केँ हटौलक, मिथिलाक्षर भूताक्षर भेल। मैथिली सेवक ने घरक रहलाह ने घाटक। तथापि लोक 'श्रीमानक जे इच्छा' कहि अपन कोनो अधिकार नहि बनौलक, कोनो स्वतन्त्र उद्योग नहि कयलक। देशक सरकार केँ नहि गोहरौलक। गोहरबैत कोना ? मिथिलें छल ओकर देश आ मिथिलेशे ओकर सरकार। तोँ नहि रहितह तँ लोक कहुना अपन पैर पर ठाढ़ हैबे करैत आ अपन मातृभाषा, लिपि तथा संस्कृतिक रक्षा आ विकास करबे करैत, मुदा तोहरा भरोसे ओ किछु नहि कै सकल। की विडम्बना, की दुर्योग !"

एहि निबन्धक अनुशीलन सँ एक दिस मिथिलाक तँ दोसर दिस मैथिलीक इतिहासक झलक सेहो भेटैत अछि, संगहि लेखकक गम्भीर चिन्तन, दूर दृष्टि, मातृभाषाक प्रति ममत्व तथा सामाजिक उत्थानक प्रति आकुलताक भाव प्रकट होइत अछि।

भाषा-लिपि सम्बन्धी तात्त्विक ओ समस्यामूलक—

पूर्वहि कहल जा चुकल अछि जे मैथिलीक हितचिन्तन मे हिनक सम्पूर्ण मानसिक चेतना ताहि रूपेँ एकाग्र भऽ गेल छलनि जे विभिन्न विचारक मन्थन करितो अन्त मे भाषाक समस्या पर आबि कऽ अँटकैत छलनि। एक सम्पादक तथा मैथिली साहित्य परिषदक महामन्त्रीक रूप मे विभिन्न रूपेँ भाषा समस्या पर हिनक कलम चालिते रहलनि,

किन्तु ताहि सँ अतिरिक्त यदा कदा स्वतन्त्र निबन्ध सेहो लिखैत रहलाह जाहिमे एक गोट लेख 'मिथिला मिहिर' क 'मिथिलांक' मे प्राप्त होइत अछि, जकर शीर्षक छैक ''मैथिली, भाषाक रूप मे'। ई ताहि परिप्रेक्ष्यक लिखल निबन्ध थिक जहिया मैथिली विरोधी लोकनि मैथिली केँ हिन्दीक बोली कहि एकर अस्तित्वे समाप्त करबाक हेतु सन्नद्ध छलाह, जखन कि मैथिली प्रेमी एकर स्वतन्त्र भाषात्व सिद्ध करबाक प्रयास मे लागल छलाह। एहि निबन्ध मे भोलाबाबू भाषा ओ विभाषा वा बोली मे की अन्तर छैक, कोन प्रकारेँ भाषा सँ बोली, पुनः ओ बोली भाषाक रूप ग्रहण करैत अछि तकर तात्त्विक विवेचन करैत, मैथिली एक स्वतन्त्र भाषा थीक, ताहि तथ्यक निरूपण कयने छथि। प्रत्येक भाषाक अपन-अपन आञ्चलिक रूप मे कनेक मनेक भेद होइत छैक, वैह भेद अर्थात् ओएह बोली अन्तर्जातीय किंवा अन्तर्प्रान्तीय सम्पर्क मे अबैत अछि तँ ओ दोसर भाषाक नाम सँ अभिहित होमय लगैछ। डा० ग्रिअर्सनक मतक उल्लेख करैत मैथिलीक विभिन्न बोली यथा पूर्वी, जोलही, छिकाछिकी आदिक नाम गनौने छथि। एहि निबन्धक अनुशीलन सँ ज्ञात होइत अछि जे भाषा-विज्ञान विषयहुमे हिनक प्रवेश छलनि। विषय केँ एहन सुबोध भाषा ओ सरल रीतिएँ प्रतिपादित कयने छथि जे पाठक केँ हृदयङ्गम करबा मे कोनो कठिनता नहि होइत छैक। मैथिली साहित्य संग्रह (गद्य भाग), जे प्रवेशिका छात्र लोकनिक हेतु सङ्कलित कयल गेल छल, ताहि मे सेहो आचार्य रमानाथ झा एहि निबन्ध केँ सङ्कलित कयने छलाह, किन्तु उक्त सङ्कलन मे कनेक संक्षिप्त कय सन्निविष्ट कयल गेल अछि।

ध्यातव्य जे मिथिला मिहिरक एही मिथिलांक नामक विशेषांकक हिन्दी खण्ड मे सेहो एकटा निबन्ध छपल छलनि 'मैथिली की उत्पत्ति और विकास' जाहिमे भाषा सभक क्रमिक विकास पर प्रकाश दैत मैथिलीक प्राचीनता तथा स्वतन्त्र सत्ता प्रमाणित कयने छथि।

एहि प्रकारेँ १९३८ ई० मे मिथिला मिहिरक शारदीय विशेषाङ्क मे एक हिन्दी निबन्ध प्रकाशित छनि 'बिहार मे भाषा की एकता' जकरा पढ़ला सँ हिनक भाषा विषयक ज्ञानक व्यापकता देखबा मे अबैत अछि। एहि निबन्ध मे ई डा० ग्रिअर्सनक उक्तिक समर्थन करैत मगहीओ केँ मैथिलीएक उपभाषा मानने छथि। एहि निबन्धक विलक्षणता ई अछि जे निठ्ठठ देहात मे जेना बाजल जाइत अछि ताहि रूपेँ एके कथ्य केँ मैथिली मे लिखि गया, सिंहभूमि, दक्षिण हजारीबाग, सुदूर दक्षिण रांची, मालदह जिलाक लोक ओही कथ्य केँ कोन रूपेँ बजैत अछि तकर उदाहरण दऽ अपन भाषा विषयक चिन्तनक प्रमाण प्रस्तुत कयने छथि।

१९४८ मे आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' जखन स्वदेश नामक मासिक पत्रक सम्पादन ओ प्रकाशन आरम्भ कयलनि तँ ओकर प्रथमे अंकक हेतु अपन शुभकामना स्वरूप एक लेख लिखने छलाह—'स्वदेश अमर होथु'। एकर शीर्षके एहिमे प्रतिपादित विषय केँ द्योतित करैत अछि। एहिमे सब सँ पहिने वर्त्तमानक महत्त्व देखौने छथि। भोला बाबू आनोठाम वर्त्तमान केँ सबसँ बेसी महत्त्व देने छथि।

"वर्त्तमान थिक हमर, भविष्य केँ चिन्ता करू ? (युवक शीर्षक कविता सँ) इतिहास साक्षी अछि जे मैथिली पत्रिकाक अतीत बड़ कटु रहल अछि। जाहि समय स्वदेशक प्रकाशन आरम्भ भेल, मैथिली मे पत्र-पत्रिकाक दृष्टिएँ एक रिक्तता व्याप्त छल। अतः उक्त परिवेश मे एक हित-चिन्तकक कर्त्तव्यक अनुरूप उत्साह भाव केँ बल प्रदान करबाक हेतु उक्त निबन्ध लिखने छलाह। भोलाबाबू स्वयं उत्साहक प्रतिमूर्ति छलाह। केहनो संघर्षक काल जीवन मे अयलनि किन्तु नैराश्य हिनक कलमक नोंक केँ स्पर्श नहि कऽ सकलनि। मैथिलीक दुःस्थिति पर विचार करितो, मैथिली भाषी श्रीमान् लोकनिक तथा उदासीनता केँ परेखितो एहि लेख मे सम्पादक ओ प्रकाशक केँ प्रोत्साहित करैत लिखने छथि—

"जे व्यक्ति कालकेँ एहि रीतिएँ पलपल उड़निहार ओ अमूल्य

बुझनिहार छथि, हुनका काज करबाक आतुरता रहै छनि। ओ साधन, सहयोग, संकट ओ परिणाम आदिक चिन्ता नहि करै छथि, केवल साहसक बलें चलि पड़ै छथि।"

हिनकर विश्वास छलनि जे मिथिलांचलक जे कोनो समस्या अछि तकर समाधान भाषाक विकासे सँ संभव अछि। अतः क्षणिक प्रयास किएक ने हो, वर्त्तमान प्रति क्षण बीतैत भूत भेल चल जाइत छैक, तेहना स्थिति मे जाहि क्षण कें जे चिह्नित कऽ पबैत अछि सैह इतिहास कें गढ़ि पबैत अछि। आ तें एहि निबन्धक अन्त मे लिखने छथि जे—

"वणिक बुद्धि अर्थदाता कें ई पुछबाक अधिकारे की छैन्हि जे पत्र सँ लाभ की होएत? और अस्मदादि सदृश साहित्यिके फक्कड़ कें तकर चिन्ते कोन जे पत्र क्षणिक चलतैक वा युगान्त व्यापी हेतैक? ओ तँ अपन कर्त्तव्य बुझै छथि। स्वदेशक आयोजको कें सएह करए पड़ैन्हि तऽ कोनो आश्चर्य नहि। तखन मुदा एकटा और एकेटा आशा वा आग्रह हमर ई रहत जे स्वदेश भीषण वज्रपात जकाँ तेहन जोर सँ कड़कओ तथा चमकओ जे मैथिलीक विरोधीगणक आँखि फुटि जाइन्ह एवं कान बधिर भऽ जाइन्ह।"

एहि पंक्ति सबकें पढ़ला सँ बुझना जाइत अछि जे मैथिलीक हेतु काज कयनिहार कें सतत् उत्साह भाव सँ परिपूरित राखब हिनक प्रकृति सिद्ध छलनि। अतः डा० श्री रामदेव झाक उक्ति—"एकटा ज्वाला-मुखी जकरा भीतर मे धहधह आगि निरन्तर धधकैत रहल"—सर्वथा युक्तियुक्त प्रतीत होइछ।

एकटा निबन्ध—'राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषा' शीर्षक गद्यश्री नामक संकलन मे डा० श्री शैलेन्द्र मोहन झाजी संकलित केने छथिन। एहि निबन्ध मे भारत सन विशाल बहुभाषी देशक हेतु एक राष्ट्रभाषा अनि-वार्य छैक, ताहि हेतु राजनीतिक मंच सँ की सब प्रयत्न होइत रहलैक, संविधान मे की विधान कयल गेलैक, कार्यान्वयन मे कोन रूपें बाधा भऽ

रहल छैक ताहि सब विषय पर प्रकाश दैत राष्ट्रभाषाक हेतु जहिना हिन्दीक समर्थन कयल गेल छैक, तहिना बलात् मातृभाषाक स्थान ग्रहण करबाक प्रयत्नक घोर विरोध कएल गेल अछि। मैथिलीक डेग क्रमशः विकासक पथ पर बढ़ैत देखि, एहि लेखक अन्त निम्नांकित विश्वासक संग कयने छथि जे—

"आब जनशिक्षाक द्वार बन्द नहि भै सकत जेना पूर्वकाल मे भेल, आ जनशिक्षाक प्रचार बढ़ने उच्च जाति वर्ग, दालि मे नोनोक बराबरि नहि रहत, लाभो सबकेँ एक रंग हेतैक। हिन्दी राष्ट्रभाषा बनौ, संविधान सत्य हो, सबकेँ तकर चेतना होउ, अंगरेजीक मोह मेटाउ, मुदा मैथिली अपन क्षेत्र मे पल्लवित, परिवर्द्धित आ आधुनिकतम बनौ, तकरा आब के टारि सकत ?"

भोलाबाबू जहिया मैथिलीक क्षेत्र मे पदार्पण कयलनि तहिए सँ मैथिली सम्बन्धी सब समस्या दिस हुनक दृष्टि दौड़ैत रहलनि। एकर प्रमाण 'श्रीमैथिली' मे प्रकाशित 'मैथिली मे क्रियाद्योतक' शीर्षक लिखल हिनक लेख छनि। साधारणतः वर्त्तमान कालिक क्रियापदक रूप मे लिखल जाइत अछि—हम पढ़ैत छी, तोँ पढ़ैत छह, ओ पढ़ैत छथि इत्यादि। भोलाबाबूक मतेँ एहना स्थल मे पढ़ैत पदमे तकारक प्रयोग अशुद्ध थीक। 'पढ़ै छी पढ़ै छह, पढ़ै छथि' एहन प्रयोग होयबाक चाहि। एहि हेतु जे तर्क ओ उपस्थित कयने छथि, स्पष्टताक हेतु तकरे उद्धृत करब समीचीन होयत। ओ लिखने छथि :—

"समाजक दुर्दशाक दृश्य हमरा समक्ष एहन स्थूल अछि जे भाषाक सूक्ष्मता पर हम किछु नहि लिखितहुँ, किन्तु सम्पादक महाशय अपना टिप्पणी मे ई भाव व्यक्त कयने छथि जे मैथिली स्वरूप स्थिर नहि भेल अछि। केयो लिखै छथि—लिखैत छी, करैत छी इत्यादि और केयो लिखै छथि—लिखै छी—करै छी इत्यादि। दुर्भाग्यवश सम्पादक महाशय क प्रयोग तकरान्तहि सँ सम्पन्न होइ छैन्ह। हमरा विचारेँ ई प्रयोग तकारान्तहि सँ सम्पन्न होइ छैन्ह। हमरा विचारेँ ई अशुद्ध थीक, अतः हम अही विषय मे अपन विचार प्रगट करब।

यदि हमर अनुमान भ्रमपूर्ण नहि अछि, यदि मिथिला भाषा, हिन्दी आदि आधुनिक भाषा सँ अधिक सम्बन्ध संस्कृत भाषा सँ रखैछ तँ लिखैत करैत, हँसैत आदि क्रियापदक तकर संस्कृत व्याकरणक सन्नन्तक सूचक थीक और हिन्दी मे एकर अर्थ लिखता हुआ, करता हुआ, हँसता हुआ आदि थीक अतः तकरान्त लिखैत, पढ़ैत आदिक प्रयोग केवल सन्नन्तहिक स्थान मे होमक चाही। हिन्दी मे ई क्रिया द्योतक कहबैछ अर्थात् जे कोनो संज्ञाक विशेषण होइतहुँ क्रियेक भाव द्योतन करय. सुतरां यदि हिन्दीक एहन वाक्य मिथिला भाषा मे लिखबाक हो यथा—वह बालक हँसता हुआ आया अथवा संस्कृतक 'हसन्नागतः' तँ अहि रीतियें लिखब परम शुद्ध हैत जे ओ बालक हँसैत आयल, किन्तु दुर्भाग्यवश कतेक पण्डितो लोकनि अहि सूक्ष्मता पर ध्यान नहि दै साधारणो क्रिया करता है. जाता है आदि एवं संस्कृतक करोति, याति, वदति आदिक स्थान मे करैत छथि, बजैत छथि आदि क्रियापदक प्रयोग करै छथि।"[9]

तात्पर्य जे विरोधी वर्ग मैथिली कें हिन्दीक बोली कहैत छल। से स्थिति जाबत बनल रहैत, मैथिलीक स्वतन्त्र भाषात्व नहि सिद्ध होइत तावत धरि जाहि लक्ष्य कें लऽ संघर्ष करबाक छलनि तकर आधारे नहि स्थिर होइतैक। तँ एक विधिवेत्ता होइतो भाषा-विज्ञान, व्याकरण, जकरा शब्दानुशासन कहल जाइत छैक तकरो अध्ययन मे लागि गेलाह। उपर्युक्त उद्धरण तकरे प्रमाण थीक। ततबे नहि, आगाँ चलि भाषा कें ठोस आधार देबाक हेतु भोलाबाबू व्याकरण प्रबोध, सुबोध व्याकरण, सरल व्याकरण आदि नाम सँ विभिन्न श्रेणीक छात्रक उपयोग हेतु पैघ-छोट व्याकरणोक पुस्तक लिखलनि। प्रबोध व्याकरणक भूमिका देखला सँ ज्ञात होइत अछि, जे हिनक व्याकरण प्रकाशित होयबा सँ पहिनहुँ प० हीरालाल झा 'हेम', प्रो० गंगापति सिंह तथा प० अच्छेलाल झाक लिखल व्याकरण प्रकाशित भऽ गेल छलनि, किन्तु उक्त व्याकरण सभक एक तँ स्तर निम्न छलैक। दोसर ओहि सब पर हिन्दी व्याकरणक

9—श्री मैथिली, वर्ष-१, अंक—५ पृ०—११७

अभाव छलैक। यद्यपि भोलाबाबू 'व्याकरण प्रबोध' अपना दृष्टिएँ आठम नवम वर्गक हेतु लिखलनि, किन्तु बिहार टेक्स्टबुक कमिटी एकरा प्रवेशिका कक्षाक हेतु तथा दोसर पुस्तकक अभाव मे पटना विश्वविद्यालयक इन्टर कक्षाक हेतु एकरा स्वीकृत कऽ लेलक।

प्रत्येक भाषाक अपन एक स्वतन्त्र प्रकृति होइत छैक, जे मैथिलीओक छैक। पूर्ववर्त्ती वैयाकरण लोकनि ताहि दिश विशेष ध्यान नहि देने छलथिन। मैथिली केँ जाहि संस्कृत सँ उद्‌भूत कहल जाइत छैक, सब ठाम विशेषतः क्रियापदक स्वरूप मे संस्कृत सँ ई बहुत भिन्न भऽ जाइत अछि। संस्कृत कर्त्तृवाच्य मे कर्मक परिवर्त्तन भेलो उत्तर क्रियापद अप्रभावित रहैत छैक। उदाहरणार्थ 'रामः माम् अकथयत्, रामः त्वाम् अकथयत्, रामः तम् अकथयत्' एहि तीनू वाक्य मे कर्म क्रमशः उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य (प्रथम) पुरुष सर्वनाम अछि, किन्तु वाक्यक मैथिली अनुवाद क्रमशः राम हमरा कहलनि, राम तोरा कहलथुन, राम ओकरा वा हुनका कहलथिन, हेतैक। एहि तीनू वाक्य मे अकथयत् तीन प्रकारक रूप ग्रहण कऽ लैत अछि। हिन्दीओ मे ई परिवर्तन नहि होइत छैक। हिन्दी मे अनुवाद कयने रामने मुझे कहा, रामने तुझे कहा, राम ने उसे कहा, तीनू मे कहा अपरिवर्तित अछि। भोलाबाबू एहि स्वतन्त्र प्रकृति दिश विशेष विचार कयने छथि। एहि प्रसङ्ग व्याकरण प्रबोधक भूमिका मे भोलाबाबू लिखने छथि :

''मैथिलीक धातु रूपावली सबकेँ भयावह बूझि पड़ैत छैन्हि, उपरोक्त वैयाकरण लोकनि तकर उचित व्याख्या वा साधनिका नहि बनाए सकलाह अछि। ग्रियर्सन, चटर्जी आदि भाषा विज्ञानी एकरा असम्भव प्राय बुझने छथि। एहना स्थिति मे तिङन्त (क्रिया) प्रकरण एहि मे जे किछु लिखल गेल अछि से एकदम स्वतन्त्र रीतीयें लिखल गेल अछि।.........मैथिली भाषी विद्यार्थीक कौन कथा, आनो प्रान्तक विद्यार्थी जे मैथिली सिखबाक इच्छुक होथि आओर जनिका मैथिली

धातु रूपावली अनन्त जटिल बूझि पड़ैत होन्हि सेहो एहि सँ अल्प प्रयासें तकरा सीखि लेथि, तकर पूर्ण ध्यान राखल गेल अछि। विश्वास अछि ई व्याकरण ताहि भय कें अवश्य निरस्त करत।''

एहि व्याकरण मे उद्देश्य ओ विधेयक रूप मे कारक एवं तकर पुरुष भेदें जे परिवर्त्तन होइत छैक तकरा क्रियाक वर्ग भेद कहल गेल अछि एवं ओकर पाँच प्रकार कहल गेल अछि। पुनश्च प्रत्येक कें विवर्ग मे विभाजित कयल गेल अछि। एहि तरहें लेखक मैथिलीक धातुरूपावली कें स्पष्ट करबाक हेतु तालिका बनाय उदाहरण दऽ देने छथि। बाद मे महावैयाकरण पं० दीनबन्धु झा जी सेहो अपन धातु पाठ मे तालिका प्रस्तुत कयने छथि एवं अन्यान्यो व्याकरणक लेखक लोकनि तथा पं० श्री गोविन्द झा, डॉ० बालगोविन्द झा 'व्यथित' आदि अनुकरण कयलनि अछि।

भाषा ओ लिपि मे परस्पर सम्बन्ध छैक। मनक भावकें अभिव्यक्त करबाक माध्यम भाषा होइछ। बिनु बजने ओही भावक अभिव्यक्ति मे लिपि सहायक होइछ। कोनो भाषाक हेतु ओकर अपन लिपि महत्त्ववर्द्धक होइत छैक। मैथिली कें सेहो ई गौरव प्राप्त छैक, किन्तु प्रेसक विकास भेला उत्तर अनेक चेष्टा होइतो मिथिलाक्षर अथवा तरहुता मे प्रेसक व्यवस्था होइतो नहि भऽ सकल अछि। भोलाबाबू एहू दिस चिन्तनशील छलाह। ई संयोग सेहो हिनके भेलनि जे एकटा सम्पादकीय मिथिलाक्षरे मे छपलनि। जे 'मिथिला' मासिकक ११म अंक छल। ओहिमे ई कहने छथि :

"एहि पत्रक प्रकाशन सँ हमरा लोकनिक अभिप्राय केवल एतबे अछि जे कोनहुना मिथिलाक्षरक उद्धार हो, किन्तु विदित होइछ मैथिल जाति के ई दूनू विषय स्वीकार नहि छैक अन्यथा 'मिथिला पत्र तथा मिथिलाक्षरांकन समितिक ई आपन्न स्थिति नहि रहितैक।"

भोलाबाबू एहि बिन्दु पर प्रकाश देबाक हेतु मिथिला मोदक नव

उद्गार २ तथा ३ दिसम्बर १९३६, जनवरी १९३७ मे 'मैथिली साहित्यक उत्थान मे मिथिलाक्षरक स्थान' शीर्षक निबन्ध लिखि भाषाक स्वतन्त्र अस्तित्वक हेतु लिपिक को उपादेयता छैक ताहि पर पूर्ण प्रकाश देने छथि।

हिनक एक अन्य निबन्ध प्राप्त होइत अछि 'बिहारक भाषा सर्वेक्षण एवं हिन्दी मैथिली' जे १९६७ मे मिहिरक एक अक्टूबरक अंक मे प्रकाशित भऽ चुकल अछि। १९६७ ई० मे संविद सरकार मे जखन श्री कर्पुरी ठाकुर शिक्षा मन्त्री छलाह तँ बिहारक राष्ट्रभाषा परिषदक तत्वावधान मे आयोजित एक सभा मे सभापतिक आसन सँ बिहारक भाषा सर्वेक्षण करयवाक घोषणा कयने रहथि। ई सर्वविदित तथ्य अछि जे हिन्दीक तथाकथित विरोधी लोकनिक शनि दृष्टि सब दिन सँ मैथिली पर रहैत अयलनि जखन कि मिथिलांचल सब दिन हिन्दीक विकास मे अपन भावात्मके नहि, रचनात्मको सहयोग दैत रहल अछि। स्वयं भोलाबाबू जहिया मैथिलीक विरोध मे बड़गामक सरस्वती पुस्तकालयक वार्षिकोत्सवक अवसर पर लेख लिखने छलाह आ साहित्य रत्नाकर मुन्शी रघुनन्दन दास एक पत्र मे अपन क्षोभ व्यक्त कयने छलथिन तहिया ताहि पत्रक उत्तर मे जे प्रतिज्ञा कयने रहथि, ताहू मे लिखने छलथिन जे आब सँ हम यथाशक्ति राष्ट्रभाषाक संग मातृभाषाहुक सेवा मे लागल रहब। राष्ट्रभाषाक रूप मे हिन्दी केँ मिथिलो क्षेत्रक हेतु उचित मानैत छलाह तहिना मातृभाषाक रूप मे एकमात्र मैथिलीएक उचित अधिकार बुझैत छलाह। मातृभाषाक स्थान पर हिन्दीक अनाधिकार चेष्टाक घोर विरोधी रहलाह। मैथिली विरोधी लोकनि जकरा मैथिलीक उपभाषा कहने छथि तकरो सब केँ एक नवीन नामाकरण अंगिका ओ बज्जिका कऽ मैथिलीक क्षेत्र केँ संकुचित करबाक प्रयास होइत रहल। मैथिलीक दुर्भाग्य ई रहलैक जे मैथिलीभाषिए विद्वान ओ राजनेता लोकनि एकर जड़ि उकन्नन करबा मे भिड़ल रहलाह। बिहारक भाषा-सर्वेक्षणक घोषणाक पाछू सेहो किछु एहि प्रकारक दुरभिसन्धिक आशंका होयब

असंगत नहि छल। भोलाबाबू मैथिलीक एक सजग प्रहरीक रूप मे आजीवन सतर्क ओ साकांक्ष रहलाह। मैथिलीक जीवनी शक्तिक प्रति हिनका अजेय मनोबल बनल रहलनि। उपरिचर्चित निबन्ध मे मैथिलीक स्थिति स्पष्ट करैत षड्यन्त्रकारी लोकनि कें मुँहतोड़ उत्तर दैत कहने छथिन जे :

"राष्ट्रभाषा परिषद यदि एहि प्रकारक अपन मिथ्या धारणा पर कोनो सरकारी मोहर लगयबाक हेतु भाषा सर्वेक्षणक ई टाटक ठाढ़ कयने अछि तँ ई ओकर भ्रम थिकैक। मैथिलीयो कोनो मोमक पुतली नहि जे ओकरा कोनो व्यक्ति वा संस्था गला देअय। सर्वेक्षण यदि निष्पक्ष एवं वैज्ञानिक रीति सँ कयल जाय तँ एकर पक्ष पूर्वापेक्षा आर सुदृढ़ एवं विस्तृत होयत। हँ, बिहार सरकार एवं राष्ट्रभाषा परिषद कें एखने सावधान कऽ देब आवश्यक अछि जे मैथिलीक प्रति आब कोनो प्रकारक षड्यन्त्र नहि चलि सकैछ।"

दोसर दिस मैथिलीक प्रति होइत अनेक षड्यन्त्र कें विफल करबाक हेतु भारतवर्षक विभिन्न नगर ओ गाम मे स्थापित मैथिली संस्था सब कें संगठित होयबाक आवश्यकता पर जोर देलनि अछि। एतेक दिन पूर्व सँ प्राप्त अधिकार प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मैथिली कें बनयबाक अधिकार कें कार्यान्वित होयबा मे जे बाधा भऽ रहल अछि ताहि सभक अन्वेषण कऽ तकरा दूर करबाक आग्रह समस्त मैथिली भाषी लोकनि सँ कयने छथि। ओ कहैत छथि—"प्रश्न पत्र एवं विषयक नाम मातृ-भाषा रहितो मिथिलांचल मे हिन्दीक जे अनर्थ प्रयोग भऽ रहल अछि से अविलम्ब हटि जयबाक चाही।" मातृभाषाक हित चिन्तन मे निरत हिनक आत्म विश्वास ओ दृढ़ मनोबल कतहु टूटैत दृष्टिगोचर नहि होइत अछि।

"मैथिली साहित्य परिषदक आवश्यकता" शीर्षक एक अन्य निबन्ध, जे मिथिला-मिहिरक ३१ मार्च १९६८क अंक मे प्रकाशित भऽ

चुकल छनि, १७-१८ फरवरी १९६८ मे सरिसवपाही मे सम्पन्न मैथिली साहित्य परिषदक सैंतिसम अधिवेशन भेलाक बाद लिखने छलाह जाहि मे, मैथिलीक तत्कालीन प्रगति-अगति, सम्भावना ओ बाधा आदिक सिंहावलोकन करैत कर्तव्यक हेतु मार्ग निर्देश कयने छथि। एहू मे एखन धरि प्राप्त अधिकारक कार्यान्वियन मे जतय जे अवरोधक तत्त्व अछि तकरा दूर करबाक कार्य कें प्राथमिकता देबाक अनुरोध कयल गेल अछि। सर्वप्रथम प्राथमिक शिक्षाक माध्यमक रूप मे मैथिली कोना लागू होयत ताहि दिस मन्त्री महोदय कें ध्यान केन्द्रित करबाक परामर्श देलथिन अछि तदुत्तर एक पत्रिकाक आवश्यकता पर जोर देलथिन अछि।

उक्त अधिवेशन मे किछु गोटे क्रान्ति हेतु उग्र भाषण कयने रहथि जे एहि निबन्ध कें पढ़ला पर ज्ञात होइत अछि जाहिमे भूतपूर्व मन्त्री प० श्री हरिनाथ मिश्रहुक नामोल्लेख कयने छथि, किन्तु समाजक असंगठित स्थिति कें देखैत ताहि प्रकारक अपरिपक्व कोनो आन्दोलन करब श्रेयष्कर नहि मानने छथि। प्रो० रमानाथ झा भाषाक प्रश्न कें राजनीति सँ असंपृक्ते रखबाक विचार व्यक्त कयने छलाह। भोलाबाबू एहि दूनू प्रकारक विचार सँ अपन असहमति कयने छथि। एक मनस्वी चिन्तक कें जे रास्ता अपनयबाक चाही तेहने हिनक विचार एहिमे व्यक्त भेल छनि। ओ लिखने छथि—

"वर्तमान परिस्थिति मे मौनावलम्बन वा राजनीति सँ पृथक रहबाक हमहुँ ततबे विरोधी छी जतबा आन व्यक्ति, मुदा इहो निश्चिते देखैत छी जे कोनो क्रान्ति वा मूर्खतापूर्ण विध्वंसलीला मैथिलीक कोन कथा जे हिन्दी पर्यन्त कें राष्ट्रभाषाक मंच पर नहि बैसा सकत। हमरा बुझने सरकारक अपेक्षा मैथिली भाषीक अपने सक्रियताक प्रयोजन छनि। मिड्लो वर्ग घरि तँ सभ मैथिली भाषी विद्यार्थी एवं हुनक अभिभावक लोकनि मैंथिली लेबाक अडिग संकल्प करथु। तखन संविधानक अष्टम अनुसूची वा लोक सेवा आयोग मे प्रवेशक आन्दोलन सफल होयत।"

एतददिरिक्त १९६७ मे मैथिलीक कोनो पुस्तक साहित्य अकादमी पुरस्कार सँ पुरस्कृत नहि भऽ सकल ताहि पर क्षोभे नहि आक्रोशो व्यक्त कयने छथि। ध्यातव्य जे मैथिली कें १९६६ ई० सँ साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त होअय लगलैक आ दोसरे वर्ष मैथिलीक कोनो पुस्तक ताहि योग्य नहि बुझल जायब मैथिली हेतु हीनताक बात छल। हिनका मतें से निर्णय औचित्य सँ दूर छल। एक दिस अष्टम अनुसूची मे प्रवेशक हेतु उच्च स्तर सँ क्रान्तिक गप्प करब तथा दोसर दिस अविवेकपूर्ण निर्णय लेब दूनू कें परस्पर विरोधी मानने छथि। एहि प्रसंग व्यक्त हिनक आक्रोशक तीक्ष्णता निम्नलिखित शब्द मे देखल जा सकैछ—

"एहि निर्णायक लोकनि कें एतबो नहि सुझलनि जे जाहि 'मिथिला वैभव' कें गत वर्ष पुरस्कार भेटलैक ताहू सँ उत्कृष्ट तीन नहि तँ दू ग्रन्थ एहू बेर अवश्य छलैक!!! की एहू सँ अधिक मैथिलीक कोनो अपकार भऽ सकैछ? हम 'मिथिला वैभव' पर लिखि चुकल छी, आ ओहू दूनू वा तीनू पर अवश्य लिखब। पाठक लोकनि यथा समय देखताह जे ओ सभ केहन उच्च कोटिक रचना अछि, प्रत्युत आनो भाषा सभक पुरस्कृत ग्रन्थ सभ सँ टक्कड़ लेबय वला अछि तथापि रावणीय पाण्डित्य वा विवेक शून्यता सँ ओ सभ रद्दीक टोकड़ी मे फेकि देल गेल। अष्टम सूची मे प्रवेशक हेतु कोन मुँहें कोनो आन्दोलन करब आ ताहि सँ फले की होयत।"[1]

उक्त निबन्धक अनुशीलन सँ स्पष्ट होइत अछि जे भोलाबाबू अनुभव करैत रहलाह जे मातृभाषाक समुचित विकासक हेतु मैथिली भाषी लोकनि मे जे सक्रियता तथा तत्परता चाही तकर अभाव अछि संगहि एक वर्ग एहनो अछि जे मैथिलीक उत्थान मे लागल रहितो किछु विन्दु पर पूर्वाग्रह युक्त अछि यथा अपना अहं केर तुष्टिक हेतु यदि मैथिलीक किछु

१. मिथिला मिहिर, ३१ मार्च १९६८, पृ०-८

अहितो होइक तँ तकर परवाहि नहि करैत अछि। उपयुक्त उद्धरण मे 'रावणीय पाण्डित्य' शब्द एही भाव कें व्यंजित करैत अछि। 'मिथिला वैभव'क जे समीक्षा कयने छथि से उपलब्ध होइत अछि ताहि पर आगाँ विचार कयल जायत, किन्तु एहि मे कहल गेल जाहि तीनू ग्रन्थक प्रसंग, जकरा सबकें ओ साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत होयबाक योग्य मानैत छलाह आ भविष्य मे ताहि पर लिखबाक घोषणा' कयने छथि से सब कतहु उपलब्ध नहि भेल अछि। उपरि विवेचित निबन्धक भाषा मे कतेक तीक्ष्णता अछि से एहू सँ जानल जा सकैत अछि जे सम्पादक मोट मोट अक्षर मे लिखने छथि—

"प्रस्तुत निबन्धक प्रत्येक विचार लेखकक व्यक्तिगत विचार अछि।" पाठक कें ई टिप्पणी देखि पहिने विस्मय होइत छनि, कारण कोनहु लेख मे व्यक्त विचार लेखकक व्यक्तिगते विचार होइत छनि, किन्तु निबन्ध पढ़ला पर एतेक स्पष्टता सँ एहन कटु सत्यक उद्घाटनक उत्तरदायित्व सँ अपना कें मुक्त रखबेक उद्देश्य सँ सम्पादक एहन टिप्पणी देने छथि, जे निबन्ध पढ़लाक बाद बोध भऽ पबैत अछि।

धर्म-सम्बन्धी :

भोलाबाबू द्वारा लिखित समस्त रचनाक अनुशीलन सँ ज्ञात होइछ जे धार्मिक समस्याक प्रसंग ओ कोनो विशेष चिन्तन नहि करैत छलाह। राष्ट्रवादी ओ सुधारवादी होयबाक कारणें अपना समय मे प्रगतिवादी मानल जाइत छलाह तथापि भोलाबाबू धर्मक उपेक्षा करैत छलाह से नहि कहल जा सकैछ। एकर पुष्टि मे हिनक लिखल एक मात्र निबन्ध उपलब्ध होइत अछि 'विश्वक्रान्ति और धर्म'। ई निबन्ध मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा द्वारा प्रकाशित, म० म० डा० उमेश मिश्र द्वारा सम्पादित 'गद्य कुसुममाला' नामक गद्य संकलन मे संकलित अछि।

उक्त निबन्ध मे लेखक ताहि समय मे संसार भरि मे सत्ता प्राप्तिक हेतु जे क्रान्ति भऽ रहल छल तकरा तीन भाग मे विभाजित कऽ विचार कयने

छथि जकरा क्रमशः राजनैतिक, आर्थिक ओ सामाजिक क्रान्ति कहलनि अछि। पुनश्च तीनूक विश्लेषण कयलनि अछि ज़ाहि सँ ताहि समयक संसारक परिस्थितिक ज्ञान तँ होइते अछि संगहि हिनक अपन दृष्टि कोणक झलक सेहो भेटैत अछि। संसार भरि मे कोन तरहें एकतन्त्र शासन सभक अन्त ओ प्रजातन्त्रक स्थापनाक क्रम चलि रहल छल, पुनः प्रजातन्त्रहुमे नौकर शाही, समाजवादी ओ प्रजातान्त्रिक शासनक स्थितिक परिचय भेटैत अछि। अपनहुँ देश मे स्वतन्त्रताक हेतु मुख्यतः कांग्रेस क्रान्ति मे लागल छल। भोलाबाबू स्वयं कट्टर कांग्रेसी छलाह, आजीवन खद्दड़ पहिरैत रहलाह। एमहर विज्ञानक प्रगति सँ समाज मे धर्मक नाम पर अन्धविश्वास छलैक से खंडित भऽ रहल छलैक। विज्ञानक विकास सँ पाश्चात्य देश मे भौतिक उन्नति तँ होइत गेलैक, किन्तु धर्मक क्षेत्र मे ह्रास होइत गेलैक। ओमहर रूसक साम्यवादी शासन कानून बना बड़ा दिन आदि जे पर्व होइत छलैक तकरा उठा देलकैक। अनीश्वरवादक प्रचार-प्रसार बेसी होमय लगलैक, रूस यूरोपहुक हेतु आदर्श भेल जा रहल छल। एतावता धर्मक गूढ़ रहस्य विनु बुझने लोककें धर्म पर सँ आस्था उठल गेलैक जे लेखकक दृष्टिएँ महान अनर्थकारी स्थिति अछि। लेखकक मान्यता छनि जे धर्म पर सँ आस्था घटला सँ जनसाधारण मे कर्त्तव्याकर्त्तव्यक विचार नहि रहि जयतैक। अपना देशक आन्दोलन जें पाश्चात्य प्रभावित अछि तें एतहु भ्रष्टाचार, दुराचार, अत्याचार आदि बढ़ि सकैत अछि। एहि कथनक पुष्टि निम्नांकित पंक्ति सँ होइत अछि जे निबन्धक उपसंहार करैत लिखल गेल अछि। ओ लिखने छथि—

"दुर्भाग्यवश ई निरीश्वरवादिता, अधार्मिकता हमरहु देशक आन्दोलन कें आक्रान्त केने जाइछ। अतः एहना स्थिति मे हमरालोकनिक की कर्त्तव्य ई गम्भीर चिन्ताक विषय।"

साधारणतः धारणा छैक जे प्रगतिशीलता अधार्मिके भेला पर आबि सकैत छैक। भोलाबाबू अपना युगक प्रगतिशील बूझल जाइत छलाह,

तथापि एहि प्रकारक चिन्ता व्यक्त करैत छथि, ताहि सँ एहन धारणाक निःसारता सिद्ध होइत अछि, अन्यथा आधुनिकता वा प्रगतिशीलताक पक्षधर होइतो धार्मिकताक रक्षा हेतु एना चिन्तित नहि होइतथि।

समीक्षात्मक :

भोलाबाबू द्वारा लिखल तीन गोट समीक्षात्मक निबन्ध उपलब्ध अछि :

(१) स्वर्गीय मुन्शीजी ओ हुनक सुभद्राहरण

(२) स्वानुभव, एवं (३) मिथिला वैभव।

समीक्षा शब्द सम् उपसर्गयुक्त ईक्ष् धातु सँ निष्पन्न भेल अछि जकर अर्थ होइत छैक 'सम्यक रूपेँ कोनो वस्तु केँ देखब। साहित्य मे सम्यक् रूपेँ देखब सँ तात्पर्य होइछ कोनो रचना केँ नीक जकाँ पढ़ि ओकर गुण-दोषक विवेचना करब। भोलाबाबू एक सूक्ष्म दृष्टि रखनिहार लोक छलाह से हिनक समीक्षात्मक निबन्ध केँ देखला उत्तर स्पष्ट होइत अछि। ओना ई अपना केँ एहि योग्य नहि मानैत छथि जे कोनो कृतिक विवेचना कऽ सकथि, किन्तु से हिनक विनम्रता सूचक थिकनि। अन्यान्यो विषय मे अपना सम्बन्ध मे एहने भाव यत्र-तत्र व्यक्त कयने छथि जेना कि काव्य रचनाहुक प्रसङ्ग अपन एहने भाव अभिव्यक्त कयने छथि। हिनक स्वाभिमान केवल एकठाम व्यक्त भेल छनि से मैथिलीक प्रसङ्ग, मैथिलीक अधिकारक प्रसङ्ग जखन पटना विश्वविद्यालयक उपकुलपति डा० सच्चिदानन्द सिन्हा सँ गप्प करय गेल छलाह। ताहि क्रम मे अपन संस्मरण ग्रन्थ मे लिखने छथि :

"यद्यपि सिन्हा साहेबक समक्ष हम एक मामूली जूनियर ओकील, ओ लब्धप्रतिष्ठ बैरिस्टर, अवस्थो तेहने छोट पैघ। व्यक्तित्व, विद्वत्ता आदिक तँ कथे नहि हो। मैथिलीक विषय मे हम अपना केँ केहनो पैघ व्यक्ति केँ सब प्रकारेँ परास्त करबाक हेतु सक्षम बुझैत छलहुँ।" अन्यत्र ई सबठाम अपन विनम्रते देखबैत कलम उठौने छथि से एहू सब निबन्ध मे दृष्टिगोचर होइत अछि।

५ मार्च १९६१ क मिथिला मिहिर मे सुभद्राहरणक प्रसङ्ग अपन अपन विचार व्यक्त करैत लिखने छथि जे :

"जखन एकर सौष्ठवक प्रसंशा, गुण दोषक समीक्षा एवं विस्तृत समालोचना भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री कुमार श्री गंगानन्द सिंह, स्व० प्राचार्य पं० त्रिलोचन मिश्र तथा म० म० डा० श्री उमेश मिश्र सन मैथिलीक महारथी गण क्रमशः एकर भूमिका, प्रस्तावना तथा आमुख मे कऽ गेल छथि एवं महाकवि विद्यापतिक काव्य समीक्षक मित्रवर श्री नरेन्द्रनाथ दास विद्यालंकार कविवरक सुयोग्य आत्मज अपना निवेदन मे एकर विस्तृत इतिहासो लिखलनि अछि तँ हमर किछु लिखब अनावश्यके नहि अपितु अनधिकार चेष्टो होयत।"

स्मर्त्तव्य जे एहि महाकाव्यक प्रणयन मे भोलाबाबू मुन्शीजीक हेतु एक प्रेरक तत्त्व छलथिन जे कि हुनक संस्मरणे सँ ज्ञात होइत अछि— मैथिली मे कवीश्वर चन्दा झा रचित मिथिला भाषा रामायण केँ छोड़ि देल जाय तँ तकर बाद सुभद्राहरणे महाकाव्य प्रणीत भेल जकर आरम्भिक अंश मैथिली साहित्य परिषद्क मुजफ्फरपुर अधिवेशन मे मुन्शीजी पाठ कयने रहथि जकर उल्लेख प्रस्तावना मे पं० त्रिलोकनाथ मिश्रजी कयने छथि आ जाहि अवसर पर कविशेखर बदरीनाथ झा महाकाव्य लिखि देबाक वचन देने छलथिन। मैथिली भाषा सर्वाङ्गपूर्ण हो, ई चिन्ता भोलाबाबू केँ सतत रहैत छलनि, तेँ प्रतिभावान लेखक लोकनि केँ रचना करबाक हेतु तगादा करैत रहैत छलथिन। एहू सब विषयक चर्चा निबन्धक आरम्भ मे कयने छथि। तदुत्तर संक्षेप मे एहि महाकाव्यक गुण दोषक समीक्षा कयने छथि। हिनका मतेँ ई महाकाव्य सांगोपांग छन्द, रस, अलङ्कार, ओज, प्रसाद, माधुर्य आदि काव्यगत सभ गुण सँ समलंकृत अछि आ तेँ मैथिली भाषाक गौरवग्रन्थ कहयबाक अधिकारी अछि। यद्यपि एहि सभक उदाहरण दऽ विश्लेषण नहि कयने छथि, तथापि स्थालीपुलाकन्याय सँ किछु उदाहरण दैत जतय चमत्कार देखबा मे अयलनि अछि तकरा उद्धृत कयने छथि जाहि सँ सिद्ध होइछ जे

एक समीक्षकक जेहन सूक्ष्म दृष्टि होयबाक चाही से हिंनका प्राप्त छलनि। एकटा उत्प्रेक्षाक उदाहरण उपस्थित कयने छथि :

'तम तुराइ जनु तानि सुतल आलसवश चन्दा' दोसर उपमाक उदाहरण देने छथि जे द्रौपदी पाँचों पाण्डवक पत्नी छथिन आ अपन आचरण सँ ओ पाँचो भाय मे कोना सामंजस्य रखने छथि :

"देखि दिनचर्या सभक मन ई करय विश्वास
प्रकृति पाँचो मर्म इन्द्रिय संग कर सुख दास।"

द्रौपदीक उपमा प्रकृति सँ आ पाँचो पाण्डवक उपमा पाँचो ज्ञानेन्द्रिय सँ दऽ वस्तुतः एक चमत्कार उपस्थित कयल प्रतीत होइछ जाहि पर कुशल समीक्षकक दृष्टि जायब उचिते थीक। एहिना एक दोसर चमत्कारक पद उदाहरण मे उपस्थित कयने छथि जाहिमे भिन्न-भिन्न ऋतुक सूर्य केँ राजधर्मक पालन हेतु उपमान बनौने छथि। राजा केँ हेमन्त ऋतुक समान, शत्रुक हेतुक ग्रीष्म ऋतुक मध्याह्नक सूर्यक समान तथा न्यायाधिकार मे पावसक सूर्य जकाँ आचरण करबाक चाहिऐन।

ई तँ विदिते अछि जे भोलाबाबू केँ मातृभाषाक सेवा दिस प्रेरित कयनिहार मुंशीएजी छलथिन तकर उल्लेख पूर्वहि भऽ चुकल अछि आ एहू निबन्ध मे ई कयने छथि। एक समीक्षकक हेतु तटस्थता सर्वप्रथम आवश्यक गुणे मानल गेल अछि जकर समुचित निर्वाह एकर समीक्षा करबा मे कऽ सकलाह अछि। भोलाबाबू स्वयं लिखैत छथि :

"हम एहि महाकाव्यक अल्पज्ञो जकाँ किछु गुणगाने करवाक अधिकारी छी, दोष चुनबाक नहि। तथापि कोनो रूपेँ अन्धभक्ति सँ प्रेरित नहि छी आ ने ताहि रूपेँ किछु लिखब।"

अतः एहि महाकाव्य मे जे एक पैघ दोष अछि ताहू दिस पाठकक ध्यान आकर्षित कयने छथि। महाकाव्यक नाम थिकैक 'सुभद्राहरण', तेँ एकर कथानकक आधार भेलैक हरण करबाक घटना। किन्तु से

घटना तेरह सर्गक एहि महाकाव्य मे अन्तिम तीन सर्ग मे समाप्त भऽ गेल अछि, आदि सँ दस सग भूमिके रहि गेल अछि। एहि तरहेँ एक समीक्षकक जे कर्त्तव्य थिकैक ताहि सँ विमुख नहि भेल छथि।

दोसर हिनक समीक्षात्मक निबन्धक शीर्षक छनि 'स्वानुभव', जे २४ नवम्बर '६८क मिथिला मिहिर मे प्रकाशित भेल अछि। यद्यपि एहि लेख मे डा० श्री ललितेश्वर झा लिखित 'कवीश्वर चन्दाझा' पुस्तकक समीक्षा करब अभिप्रेत छल होयतनि, किन्तु ग्रन्थक प्रसंग किछु विशेष नहि कहल गेल अछि, कहल गेल अछि मैथिलीक स्थितिक सम्बन्ध मे। ग्रन्थक प्रसंग कहने छथि :

"एहि शोधग्रन्थ पर प्रो० श्री रमानाथ झा, प्रो० श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' सदृश मैथिलीक महारथीगण अपन-अपन सम्मति दऽ डाक्टर साहेबक एहि प्रयासक पूर्ण सराहना कयने छथि जाहि सँ सुधी समाजक कृतज्ञता ज्ञापनो भैये गेल अछि। एतावता अस्मदादि सदृश जनसाधारण केँ किछु लिखबाक प्रयोजन गौण अछि, तथापि एतबा लिखब आवश्यक अछि जे विषय केँ लिपिबद्ध एवं प्रकाशित करबाक अपेक्षा हम कतोक गुण अधिक प्रशंसनीय एहि साहसी लेखकक ओहि श्रम, कष्ट, व्यय एवं लगनक बुझैत छी जकरा बलेँ ओ भिन्न-भिन्न, गाम, ठाम एवं नामक व्यक्तिक ओतय जाकऽ सामग्री जुटौलनि अछि तथा एखनो जे सब वस्तु अज्ञात अछि तकर संकेत भावी गवेषकगण केँ देने छथि।"

एतदतिरिक्त उक्त पुस्तक मे कवीश्वरक मृत्युक प्रसंग, लेखकक द्वारा देल गेल सूचना, जे हुनक मृत्यु १९०९ ई० मे भेलनि, केर खण्डन करैत उक्त पुस्तकक भूमिका मे पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' द्वारा मिथिला मोद मे प्रकाशित समाचारक आधार पर देल गेल १९०७ ई०क तिथिक समर्थन कयने छथि। तदुत्तर एहि ग्रन्थक प्रकाशन सँ अपना केँ उपकृत मानैत अपन बाल्यकालक संस्मरण लिखलनि अछि जाहि मे ई सिद्ध कयने

छथि जे ताहि समय चन्दा झाक रामायण तथा अन्यान्य पदक प्रचार आइ काल्हिक अपेक्षा बेसी छलनि। बाल्यकालक घटनाक स्मरण करैत लिखने छथि जे : "नेना छलहुँ तँ चन्दाझाक एक गीत गबैत छलहुँ— साजन देखल सपन।" ओ गीत कोना ऊपर कयने रहथि ताहू घटनाक विवरण देने छथि। पँचगछिया मे मिड्ल क्लास मे पढ़ैत रहथि। ओहिठाम प्रति वर्ष फगुआक अवसर पर धूमधाम सँ जलसा होइक। ताहि जलसा मे भागलपुर सँ कोनो नर्तकी आइलि छलि जे उक्त गीत गौने रहय। भोलाबाबू लिखैत छथि :

"अवसर पाबि ओकरा सँ ई गीत लिखि सस्वर अभ्यास कयल्हुँ आ अनेक वर्ष पर्यन्त बाल चापल्येँ गवैत रहल्हुँ, किन्तु चन्द्र के थिकाह तकर कोनो ज्ञान नहि भेल।"

ओ गीत सेहो एहि ग्रन्थ मे भेटलनि तँ अपन बाल्यकालक ओ घटना तथा ताहि समयक मैथिलीक प्रचार प्रसारक स्थिति सेहो स्मरण भऽ अयलनि। ओ लिखने छथि—

"भागलपुर, पूर्णियाँ, मुँगेर आदि मैथिलीक्षेत्रक केन्द्र मे नहि थिक। ताहि सभठाम बालवर्गक पठन-पाठन, न्यायालय आदिक दर दस्तावेज, खेल-तमाशा, नाच-गान इत्यादि जीवन-प्रत्येक सार्वजनिक क्षेत्र मे पूर्व मे मैथिली ओ मिथिलाक्षरक पूर्ण प्रचार छल।"

एहि प्रकारेँ कहल जा सकैछ जे एहि निबन्ध मे ग्रन्थक समीक्षाक संग मैथिलीक स्थितिएक समीक्षा भऽ सकल अछि।

समीक्षात्मक निबन्ध मे तेसर जे उपलब्ध अछि तकर शीर्षक छैक 'अकादमी द्वारा पुरस्कृत मिथिला बैभव'। एहि ग्रन्थक प्रणेता थिकाह सतलखा ग्रामवासी पं० यशोधर झा। एहि ग्रन्थ केँ भारत सरकारक सर्वोच्च साहित्यिक संस्था साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा कोनो मैथिलीक पुस्तक पर सर्वप्रथम पुरस्कार प्राप्त करबाक गौरव प्राप्त छैक। स्मर्त्तव्य जे साहित्य अकादमी १९६५ ई० मे मैथिली केँ एक भाषाक

रूप मे मान्यता देलक तथा १९६६ ई० मे मैथिलीक पोथी पर सर्वप्रथम पुरस्कार प्राप्त भेलैक। जें हेतु साहित्य अकादमी द्वारा ई पुस्तक पुरस्कृत भेल, तें भोलाबाबू कें एहि ग्रन्थ कें देखबाक उत्कट आकांक्षा सेहो भेल होयतनि। ग्रन्थक अनुशीलन कयलाक बाद पहिलुक जे औत्सुक्य छल होयतनि ताहि अनुपात मे सन्तोष नहि भऽ सकलनि जकर झलक एहि समीक्षा कें पढ़ला उत्तर ज्ञात होइत अछि।

सर्वप्रथम एकर नामहिक प्रसंग हिनक मन्तव्य देखल जा सकैछ। हुनकहि शब्द मे :

"पुस्तकक कोष्ठ गत आवान्तर नाम अछि 'मिथिला मे दर्शनक उत्कर्ष' संक्षेप मे यैह एकर प्रतिपाद्य विषय अछि। एहि मे भारतीय समस्त दर्शनक समन्वयक पाण्डित्यपूर्ण प्रयास कयल गेल अछि। यदि एहि नामक उल्लेख नहि रहैत तँ एहि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक विषय बूझल जाइत मिथिलाक शश्यश्यामल भूमि अथवा पाकल धानक विस्तृत स्बर्णोपम लहलहाइत खेत अथवा पृथ्वीक सभ सँ जनाकोर्ण (केवल हालैण्ड एवं हुगली जिला कें छोड़ि) भूभाग अथवा एहन किछु दृश्य वस्तु। सूक्ष्मो दृष्टि रखनिहारक हेतु मुख्य नाम सँ प्रायः याज्ञवल्क्य स्मृति अथवा गौतम न्यायक भान होयत।"[11]

हिनक एहि उक्ति सँ एहन प्रतीत होइछ जे एहि मे प्रतिपादित विषय तथा नाम मे कोनो सामंजस्य नहि अछि। पुस्तकक मुख्य विचार विन्दु अछि जे सब दर्शनक समन्वय वा उत्कर्ष अद्वैते अछि। ताहि प्रसंग भोलाबाबू प्रश्न उपस्थित कयने छथि जे यदि अद्वैते कें सब दर्शनक उत्कर्ष मानियो लेल जाय तँ ई वैभव केवल मिथिलेक थीक, आन कोनो प्रान्त वा देशक नहि तकर कोन प्रमाण ?

ग्रन्थक मौलिकताक प्रसंग भोलाबाबूक प्रशंसात्मक वाक्य समूह द्वारा व्यक्त व्यंजित भाव कें हुनकहि शब्द मे देखब समीचीन होयत। ओ कहैत छथि :

11. मिथिला मिहिर, 17 दिसम्बर 1967, पृ० ४

"ग्रन्थ पर बड़े-बड़े विद्वान एवं महान लोकक सम्मति एवं परिचय संग्रहीत अछि जे पुस्तकक संगे छपल अछि। पण्डितजी जयपुर मे महाराजा कालेजक अनेक वर्ष धरि प्राध्यापक छलाह तथा विद्यावाचस्पति मधुसूदन झाक अन्तेवासी छलाह। ओ वैदिक वाङ्मयक जे अपूर्व व्याख्या कऽ गेलाह जाहि कारणेँ हुनका विश्वव्यापी कीर्तिलाभ भेलबि एवं सनातनी संसार मे ओ वेदोद्धारक कहल जाय लगलाह ताहि सभ अमूल्य निधिक संचय लेखक महोदय पंडित झाजी करैत गेलाह एवं एहि पुस्तकक संकलन मे ताहि सभक भूरि-भूरि उपयोग करैत अपना अवकाशक पूर्ण सदुपयोग संग मातृभाषाक अभ्यर्चना सेहो कयने छथि।"[12]

पुनः अपन समीक्षा केँ आगू बढ़बैत लिखने छथि जे—

"एहि विषयक मैथिलीक पूर्व प्रकाशन वेदान्त दीपक। जकरा डा० गंगानाथ झा सँ लिखा कऽ मैथिली साहित्य परिषद द्वारा हमही प्रकाशित करौने छलहुँ? एवं मधुबनीक बाबू साहेब स्व० क्षेमधारी सिंह लिखित सांख्य खद्योतिका केँ देखैत ई ग्रन्थ बहुत ऊँच आकाश मे निराधार लटकल बूझि पड़ैछ। छप्पर फाड़ि कऽ मैथिलीये साहित्य सन कोनो भाग्यवान केँ एहन विषय प्राप्त होइत छैक।[13]

उपर्युक्त एही किछु उद्धरण सँ उक्त ग्रन्थक सार्थकता, विषय वस्तुक मौलिकता तथा प्रतिपादनक विशिष्टताक संदर्भ मे व्यक्त व्यंजित भावक परिचय भेटि जाइत अछि, किन्तु ताहि संग भोला बाबूक दर्शन विषयक पहन अध्ययनक परिचय सेहो भेटि जाइत अछि। ओ तर्क ओ प्रमाण द्वारा सिद्ध कऽ देलनि अछि, जे न्याय, वैशेषिक ओ सांख्य दर्शनक तँ उद्गम भूमिए मिथिला थीक अपितु वेदान्त दर्शनहु मे मिथिलाक उत्कर्षक थोड़ नहि अछि। हुनक मन्तव्य छनि जे भामती टीकाकार वाचस्पति यदि भामती टीका नहि लिखने रहितथि तँ एहि भाष्यक अभाव मे शांकर भाष्य बहुत अंश मे अज्ञाते रहैत। मिथिलाक जे अपन वैभव छैक ताहि मे न्याय शास्त्रक अन्यतम स्थान छैक। भोला बाबू अन्यान्यो दर्शनक

12, तत्रैव, 13. तत्रैव

तात्त्विक विवेचन ओ पाश्चात्यो दार्शनिक सभक मन्तव्य पर प्रकाश दैत न्यायशास्त्रक कतहु एहि ग्रन्थ मे चर्चो नहि देखि कहने छथि—'न्यायक प्रति हमरा बुझने अन्याये कयने छथि।'

हिनक समग्र रचनाक अनुशीलन सँ ज्ञात होइत अछि जे एक गद्यकारक रूप मे भोलाबाबूक अपन विस्तृत अध्ययन, गंभीर चिन्तन, स्पष्ट प्रतिपादन एवं निर्भीकतापूर्वक सत्यक उद्घाटन करबाक कला केँ बड़ विनम्र शब्देँ उपस्थित कयने छथि। विधिशास्त्रक तँ ई विधिवत् अध्ययन कयने छलाह; किन्तु विधिशास्त्र सँ सम्बद्ध जाहि ग्रन्थक रचना कयलनि से हिन्दी मे छलनि। तदतिरिक्त विषयक ज्ञान स्वाध्याये द्वारा अर्जन कयने होयताह। हिनकर प्रवेश जहिना काव्यशास्त्र मे तहिना भाषाशास्त्र मे सेहो रहनि। भाषा शास्त्र अर्थात् व्याकरण आ भाषा विज्ञान, जाहिमे भाषा विज्ञान विषयक निबन्धेक चर्चा पूर्वे भऽ चुकल अछि तथा व्याकरणक तँ स्वतन्त्र पुस्तके प्रकाशित छनि। दर्शन केँ दुरूह मानल जाइत अछि, तथापि एहु विषय मे हिनक प्रवेश असामान्य प्रतीत होइत अछि। प्राचीन साहित्यमाला स्तंभ बनाय 'भारती' नामक स्वसम्पादित पत्र मे कविशेश्वराचार्य ज्योतिरीश्वर रचित वर्णरत्नाकरक व्याख्या प्रस्तुत कऽ अपन प्राचीन साहित्यक गंभीर ज्ञानक परिचय देने छथि। ओना ई मैथिली गद्य केँ कोनो नवीन दिशा देलनि से नहि कहल जा सकैछ, किन्तु हिनक गद्यक सबसँ पैघ विशेषता थिकनि प्रतिपादन शैलीक स्पष्टता ओ सरलता। जाहि विषय केँ उपस्थापित करय चाहलनि अछि तकरा तेहन सोझरायल वाक्य मे कहलनि अछि जे सामान्यो ज्ञानक लोक केँ बुझबा मे सुगम होइत छैक। हँ, किछु समीक्षात्मक निबन्ध एवं किछु सम्पादकीय अग्रलेख मे हिनक भाषा व्यंजनाक समीप अवश्य जानि पड़ैत अछि। मुहावरेदार भाषा जाहि मे ओज ओ प्रसाद गुणक सर्वत्र दर्शन होइत अछि, किन्तु भोलाबाबू पाठक पर अपन विशिष्ट पाण्डित्यक प्रदर्शन द्वारा प्रभाव थोपबाक कतहु प्रयास करैत नहि देखल जाइत छथि जे हिनक सबसँ पैघ विशेषता थिकनि।

पञ्चम अध्याय

मैथिली पत्रकारिता ओ बाबू भोलालाल दास

पत्रकारिता ओ बाबू भोलालाल दास :

पत्रकारिता आधुनिक जीवन ओ साहित्यक प्राण तत्त्व थिक। जाहि भाषा मे ई जतेक उन्नत अवस्था मे रहैछ, ओहि भाषाक बौद्धिक धरातल ओ साहित्य सृष्टिक स्तर ततबे उच्च मानल जाइत अछि। पत्रकारिता वास्तव मे एक कठोर साधनाक क्षेत्र मानल जाइत अछि जकर सिद्धि देश, समाज ओ साहित्यक महान उपकार मे निहित छैक। वास्तव मे साधकक लेल साधनाक, त्यागीक लेल उत्सर्ग, तपस्वीक लेल कष्ट-सहन तथा अनासक्तिक, योद्धाक लेल संघर्ष ओ रणक, कविक लेल अनुभूतिक अभिव्यक्तिक, कलाकारक लेल संसृतिक गूढ़ ओ रहस्यमय चित्रक चित्रण करबाक, आलोचकक लेल जीवनक स्थूल ओ सूक्ष्म धाराक विवेचनक, साहित्यिकक लेल लौकिक ओ अलौकिक, यथार्थ ओ भावुक जगतकेँ प्रकाश मे अनबाक पथ एकहि सङ्ग उपस्थित कय देबा मे पत्रकारिताक अतिरिक्त आओर के सफल होइत अछि।[1]

पत्रकारिता एक दिस जँ सांसारिक नित नूतन घटना चक्र सँ परिचित

---

1. पत्र और पत्रकार—कमलापति शास्त्री एवं पुरुषोत्तम दास टण्डन-ज्ञानमण्डल पुस्तक भण्डार लिमिटेड, बनारस १९४४, भूमिका, पृष्ट—क।

करबैत अछि तँ दोसर दिस अन्याय, अत्याचार ओ सामाजिक विसंगतिक प्रतिरोध करैत अछि। नव-नव विचारधारा ओ कल्पनाक संवाहक बनैत अछि तँ नवीन साहित्य ओ साहित्यकार केँ पुरस्सर करबाक गुरुतर कार्य सम्पादित करैत अछि। अतः पत्रकारिताक क्षेत्र मे ओहने व्यक्ति प्रवेश करबाक साहस कय सकैत अछि जकरा मे बहुविध नैसर्गिक गुण ओ क्षमता विद्यमान होइक। पत्रकारक विशिष्ट गुणक व्याख्या करैत कमलापति शास्त्री ओ पुरुषोत्तम दास टण्डन द्वारा रचित 'पत्र और पत्रकार' नामक ग्रन्थ मे कहल गेल अछि :

"सार ओ तत्त्वक बात केँ क्षणमात्र मे पकड़ि लेब, मानसिक सतर्कता, समयानुसार अपना केँ तदनुकूल बना लेबाक क्षमता, सूक्ष्म विवेचनात्मक बुद्धि, सहनशीलता ओ साहस, सतर्कता ओ सावधानी, निष्पक्षता ओ मौलिकता, कल्पना ओ पारदर्शी दृष्टि, निर्लिप्तता ओ निर्भीकता तथा सबसँ बढ़ि कऽ जगत् ओ जीवनक प्रति हृदय मे सम्वेदना तथा उदार भावना ओकर आवश्यक गुण थिकैक जकर विकास कयने बिना पत्रकारिता मे आगाँ बढ़ब ओ सफलता प्राप्त करब सम्भव नहि अछि।"[2]

बाबू भोलालाल दास मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्र मे एहने गुण सँ सम्पन्न सम्पादक ओ पत्रकारक रूप मे प्रतिष्ठित छथि जकर प्रमाण अछि हुनका द्वारा सम्पादित दुइ गोट मासिक पत्र 'मिथिला' ओ 'भारती'।

मिथिला मासिक सँ पूर्व मिथिला मैथिली ओ मैथिल समाजक स्थिती अत्यन्त शोचनीय छल। मिथिला, राष्ट्रीय धारा सँ जेना सर्वथा फराक अठारहम-उनैसम शताब्दी मे जीबि रहल छल। एहि ठामक सामन्तीय व्यवस्थाक जाल मे समस्त बौद्धिक जगत निगड-बद्ध

2. पत्र और पत्रकार—कमलापति शास्त्री एवं पुरुषोत्तम दास टण्डन, ज्ञानमण्डल पुस्तक भंडार लिमिटेड, बनारस १९४४, पृष्ठ—१७२।

जकाँ छल। देश मे राष्ट्रीय स्तर पर जे स्वातन्त्र्य आन्दोलन चलि रहल छल, समाज सुधारक जे प्रक्रिया चलि रहल छल, तकर कनेको प्रभाव मिथिला पर नहि पड़ि रहल छल। मिथिलाक समाज पारम्परिक रुढ़ि, अन्धविश्वास, कुसंस्कार सँ तेना जकड़ल छल जे कोनो प्रकारक परिवर्तन, सामाजिक सुधार, शिक्षा प्रचार इत्यादि केँ सनातन धर्मक प्रतिरोधी मानि बैसैत छल तथा ओकरा विरुद्ध सन्नद्ध भय जाइत छल। यैह स्थिति मैथिली भाषा ओ साहित्यहुक छल। मैथिली स्वयं मैथिली भाषी द्वारा उपेक्षित छल। किछु संवेदनशील व्यक्ति मैथिलीक विकास दिस उन्मुख छलाह, जनिका एक दिस, अपनहि समाज सँ सहयोग तँ नहिएँ प्रतिरोधहु भेटैत छलनि, दोसर दिस हिन्दी समर्थक बिहार ओ अन्य प्रान्तीय जन द्वारा मैथिलीक किंचितो विकास ओ उचित अधिकार प्राप्तिक साधारणो माङ्क प्रबल प्रतिरोध होइत छल।

भोलाबावू मैथिली साहित्य ओ मैथिली पत्रकारिता मे प्रवेश सँ पूर्व जयपुर सँ प्रकाशित 'मैथिली हित साधन' काशी सँ प्रकाशित 'मिथिला मोद' दरभंगा सँ प्रकाशित 'मिथिला मिहिर' एवं 'श्रीमैथिली' अजमेर सँ प्रकाशित 'मैथिल प्रभा' आदि पत्र मैथिली भाषा ओ साहित्यक प्रति किछु बुद्धि जीवी वर्ग मे जागरुकता ओ चेतना उद्बुद्ध करबा मे सफल भऽ सकल छल। एही मध्य कलकत्ता विश्वविद्यालय मे भारतक अन्य स्वीकृत भाषा साहित्यक श्रेणी मे मैथिली कें सेहो रजौर ओ बनैलीक सहयोग, कलकत्ता विश्वविद्यालयस्थ किछु मैथिल विद्वानक प्रत्यन ओ तत्कालीन वाइसचान्सलर सर आशुतोष मुखर्जीक सदाशयता सँ अध्ययन-अध्यापनक विषयक रूप मे स्वीकृत भेला सँ मिथिलावासी मे एकटा उद्बोधन जकाँ भेलनि। अतः किछु आओरो शिक्षित जन मैथिलीक प्रति उद्बुद्ध भेलाह।

परन्तु नवीन शिक्षा ओ विचाराधारा सँ पराङ्मुख, मातृभाषाक महत्त्व सँ अनभिज्ञ समाजक मानसिकता केँ प्रशिक्षित करबाक हेतु,

जनमत जगयबाक हेतु, सङ्गठित भऽ अपन अधिकारक हेतु संघर्ष करबाक लेल ने कोनो पथ प्रदर्शक छल, ने कार्यकर्त्ता छल, ने कोनो संस्था छल आओर ने कोनो समाचार पत्रे छल। १९२८-२९ धरि अबैत-अबैत मिथिला मिहिर छोड़ि आन सब पत्र बन्द भऽ चुकल छल। मिथिला मिहिरो मैथिलीक दृष्टिएँ अपन आकार मे विरुपिते छल।

१९१० ई० मे मैथिल महासभाक स्थापना भेला सँ एकटा नवीन चेतना किरण प्रस्फुटित होइत बूझि पड़ल तथा ओकरहि अनुसरण करैत मैथिल शिक्षित समाज कलकत्ता (१९१९), मैथिल सम्मेलन, कलकत्ता (१९२३) मैथिल सम्मेलन पटना (१९२४)[3] इत्यादि सन अनेक छोट-छोट स्थानीय संस्था सभक स्थापना भेल छल, जकर उद्देश्य मिथिला-वासी जन समुदाय केँ संगठित कऽ आत्म चेतना जगायब छल। मैथिल महासभा ओकरा सबकेँ एक सूत्र मे बन्हबाक हेतु एकटा केन्द्रीय सस्थाक रूप मे विकसित भऽ सकैत छल। परन्तु ओ अपना केँ मैथिल ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ धरि सीमित राखि मिथिलाक वृहत्तर समाज केँ छोड़िए नहि देलक, अपितु मैथिलत्वक संकुचित परिभाषा दऽ कऽ मैथिल समाज केँ मैथिल ओ मैथिलेतर रूप मे विभाजित कऽ देलक। जकर परिणाम स्वरूप ब्राह्मण ओ कायस्थ सँ इतर जातीय मैथिल समुदाय अपन मातृ-भाषाहु सँ सर्वथा विमुख होइत गेल। एकरा मिथिला ओ मैथिलीक हेतु इतिहासक एकटा महान दुर्घटना कहल जा सकैत अछि।

मैथिल महासभाक उद्देश्य छलैक सामाजिक सुधार तथा ओहि दिशा मे ओकर क्रिया कलापक प्रभाव समाज पर अवश्य पड़लैक। परन्तु ओकर सुधार ओ सामाजिक विकासक परिभाषा अत्यन्त संकुचित छलैक। सामाजिक रूढ़ि ओ अन्धविश्वास, आडम्बर पूर्ण परम्परा ओ आचारक अधिकांश तत्त्व केँ सनातन धर्मक अविच्छिन्न अंग होयबाक धारणा सँ ई

3. हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर भाग-२, डा० जयकान्त मिश्र, तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, १९५०, पृ०-७।

सभा ग्रस्त छल। अतः क्रान्तिकारी सामाजिक परिवर्तनक प्रक्रिया सँ सर्वथा विमुख छल। परिणामतः राष्ट्रीय स्तर पर स्वतन्त्रता संघर्षक दिशा मे जे चेतना प्रवाह चलि रहल छल तकर सशक्त माध्यम बनबाक अवसर ओ क्षमता रहितो ओकरा प्रति उदासीने नहि रहल, प्रत्युत कतोक अवसर पर ओकर प्रतिरोधो कयलक। अस्पृश्यता निवारण, स्त्री-शिक्षा, पाश्चात्य शिक्षा, समुद्र पार यात्रा, स्वदेशी आन्दोलनक विभिन्न कार्य-क्रम इत्यादिक प्रति मैथिल समाज मे विपरीते धारणा छलैक।

एहन परिस्थिति मे बाबू भोलालाल दास मिथिला मासिक पत्रक प्रकाशनक आयोजन कयलनि।

मिथिला मासिक पत्रक प्रकाशन :

पत्र प्रकाशन ओ संचालन मे बुद्धि, श्रम ओ अर्थ तीनूक प्रयोजन होइछ। 'किछु विद्या किछु बाहुबल ओ गेठी किछु दाम' अपेक्षित होइछ। भोला बाबू मे बुद्धि छलनि, श्रम करबाक क्षमता छलनि, परन्तु प्रकाशनक अर्थ-सामर्थ्य नहि छलनि। एहि हेतु ओहि कालक भारतीय स्तरक प्रसिद्ध प्रकाशन-संस्था पुस्तक-भण्डार, लहेरियासरायक मुख्य संचालक एवं अधिपति आचार्य रामलोचन शरण सहायक भेलथिन। मिथिलाक मुद्रण ओ प्रकाशनक व्यय भार स्वीकार कयलथिन।

१९२९ ई० क वैशाख मास (अप्रैल-मइ) सँ एकर प्रकाशन आरम्भ भेल। एक वर्ष धरि एकर प्रकाशन होइत रहल। कुल १२ गोट अंक प्रकाशित भेल। अन्तिम अंक चैत्र मात्र १९३० ई० मे प्रकाशित भय अर्थ संकटक कारणेँ बन्द भऽ गेल।

मिथिलाक प्रकाशनक उद्देश्य ओ नीतिक प्रसंग किछु विवादात्मक स्थिति छल। किछु व्यक्ति एकरा सनातन धर्म ओ मिथिलाक (नीक अधलाह समस्त) परम्परा ओ संस्कृतिक सम्पोषक रूपमे देखय चाहैत छलाह। परन्तु बाबू भोलालाल दास एकरा नवीन धाराक संवाहक रूप

मे प्रस्तुत करबाक आकांक्षी छलाह । एहि अन्तर्द्वन्द्वक समाधान कयल गेल सम्पादकक रूपमे सनातनी विचारक पोषक पण्डित कुशेश्वर कुमर केँ भोला बाबूक संग सम्पादक बना कऽ । एहि मे प्रथम स्थान कुमरजी केँ तथा दोसर स्थान भोलालाल दास केँ देल गेलनि । मिथिलाक प्रथमहि अंक मे समन्वय ओ सामञ्जस्यक व्यवस्थाक सूचना प्रकाशक द्वारा देल गेल छल ।

'वादी प्रतिवादी दुनूक हम, खण्डन मण्डन छापब ।
उचित दोष गुण जे क्यौ लिखता नहि तकरा हम झाँपब ।।
कुमर पुरातन नीति निरत छथि, दास नवीन समाजी ।
अछि आशा दुनू दुनू केँ राखथि सब दिन राजी ।।'

अवश्य एहि सँ भोलालाल दासक स्वतन्त्र विचार-धाराक अनुकूल सम्पादन कार्य पर अंकुश लागि गेल । तथापि अपन उद्देश-सिद्धिक लेल अवसरक सर्वाधिक ओ समुचित उपयोग करबा सँ नहि चुकलाह, यदर्थ प्राचीनतावादी लोकनिक कठोर आलोचनाक प्रतिरोध निरन्तर करय पड़लनि, जकर आभास मिथिला मे प्रकाशित पाठकक पत्र, सम्पादकीय विचार ओ टिप्पणी सभ सँ भेटैत अछि ।

मिथिलाक उद्देश्य ओ नीति :

मिथिलाक नियमावली मे ई घोषणा कयल गेल छल जे 'एहि मे साहित्यिक सामाजिक तथा धार्मिक लेख छापल जाएत ।' परन्तु ई एकटा अस्पष्ट घोषणा मात्र छल । एकर स्पष्टीकरण अपेक्षित छल । भोलालाल दास अपन प्रथम सम्पादकीय मे एकरा फड़िछाकय प्रस्तुत कयलनि । सनातनी अंकुशक अछैतो भोला बाबू मिथिला केँ ओहि दिशा मे प्रवर्तित कय देलनि जकर हुनका आकांक्षा छलनि ।

भोला बाबूक समक्ष मैथिली साहित्य ओ मैथिल समाज, मैथिली भाषा ओ मिथिला भूमिक अभ्युन्नतिक कामना छलनि आ कामना छलनि

एहि चारु कें भारतक राष्ट्रीय धारा सँ जोड़बाक। एकरा सबके एकहि माध्यमे सम्पादित करबा मे जे कठिनता ओ बाधा सम्भावित छल से सहज अनुमेय अछि।

प्रथम सम्पादकीय मे भोला बाबू मिथिलाक उद्देश्य कें स्पष्ट करैत लिखने छलाह—

''एहि पत्रक मुख्य उद्देश्य मिथिला भाषा कैं उचित स्थान प्रदान कराएब थिक। अतः पत्र यथार्थ मे साहित्यिके किन्तु एहि मे सामाजिक एवं धार्मिको विषयक समावेश करब तेहने आवश्यक बुझना गेल।''

पुनः अगाँ लिखैत छथि जे—

''हमरा लोकनिक प्राचीन रीति-नीति मे बहुत किछु अनावश्यकता एवं आडम्बर आबि गेल अछि जकरा कात करब आवश्यक अछि तथा नवीनो क्रान्ति मे किछु सार छैक जकरा ग्रहण करब तेहने आवश्यक अछि। अतः निर्भीक भावें हमरा लोकनि सामाज कें समयानुकूल मार्ग पर लै चली तखनहि हमर कल्याण अछि अन्यथा हमरा जखन भावे नहि रहत तँ भाषा लै कऽ की करब? अतः भावोत्कृष्ठताक हेतु निर्जीव समाज मे किछु जीवन शक्तिक संचार करबाक हेतु बहुत किछु तीव्र आलोचनाक आवश्यकता अछि। दोसर कारण ई अछि जे सम्प्रति मिथिलाक ग्राहक अधिकतः मैथिले छथि आओर ग्राहक लोकनि मे सँ अधिकांश व्यक्ति सामाजिको विषयक समावेशार्थ आग्रह कैने छथि। सम्प्रति दोसर कोनो नहि जकरा ऊपर ई भार अर्पण कयल जाय। धर्म एवं समाज कें कोनहु प्रकारें पृथक नहि कै सकै छी। अतः एहि दूनू विषयक उपेक्षा करब उचित नहि बुझना गेल, हम अपना समाज कैं प्रत्येक कुरीति एवं दुर्वृत्ति सँ पूर्ण रूपेण मुक्त देखै चाहै छी। कोनहु विषय पर मिथिला भाषाक सत्साहित्यक निर्माण होऔ हमर येह ध्येय अछि। हमर दृढ़ विश्वास अछि जे यदि विश्वविद्यालय हमरा लोकनिक मातृभाषा कें स्थान नहियो देत तँ हमरा लोकनिक सत्य परिश्रम कदापि निष्फल नहि

भै सकैछ ; कारण साहित्यिक वस्तु कतहु रहै, ओकर महत्त्व कम नहि भै सकैछ। हम देखै एवं देखाबै चाहै छी जे मिथिला भाषा मे कोन कोन साहित्यिक सामग्री प्रस्तुति भै सकैछ। हमरा लोकनि प्रत्येक विषय पर उत्तमोत्तम सामग्री उपस्थित करबाक अभिलाषा रखैत छी।"

उपर्युक्त कथन सँ दुइ गोट स्पष्ट उद्देश्य परिलक्षित होइत अछि— प्रथम मैथिली भाषाक सर्वतोभावेन उत्थान ओ विकास एवं दोसर सामाजिक परिवर्त्तन अर्थात् समाज-सुधार सामाजिक उन्नति, विशेषतः मैथिल समाजक।

एहि उद्देश्य-सिद्धिक हेतु मिथिलाक नीति अत्यन्त तर्कसंगत ओ सन्तुलित राखल गेल। ओही सम्पादकीय मे नीति पर प्रकाश दैत कहल गेल अछि जे :

"पत्र मे एहन कोनो लेख नहि छपत जाहि सँ अनुचित व्यक्तिगत विरोध सूचित हो अथवा स्थायी कानूनक कोनो आशय भंग होइत हो। सामाजिक लेखहु मे जहाँ धरि हैत तीव्र भाषाक अकारण प्रयोग नहि कैल जाएत आओर ने कोनो एहन लेख छापल जाएत जाहि सँ ई सूचित हो जे ई कोनो खास जातिक पत्र थिक। भाषाक सम्बन्ध मे हम मिथिला-वासी प्रत्येक ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, कायस्थ, मुसलमान, अंगरेज, बिहारी, बंगाली, मारवाड़ी, कान्यकुब्ज एवं वैष्णव, शाक्त, दयानन्दी, रमानन्दी, कबीरपन्थी तथा अन्यान्य मताबलम्बी कैँ एक दृष्टि सँ मैथिल कहै छिऐन्ह एवं हुनका लोकनि सँ मैथिलीक प्रति एक रंग सेवाक आशा करै छी। उदार विचारक सर्वदा हमरा लोकनि पक्षपाती रहब तथा अपना नीतिक विरुद्धो लेख कैँ (यदि ओहिमे किछु तथ्य रहतैक तँ) पत्र मे प्रकाशित कै सकब।"[4]

मिथिला मे उपर्युक्त उद्देश्य ओ नीतिक पूर्णतः अनुसरण कयल गेल ताहि मे सन्देह नहि। एहि सँ विचलित होयबाक परिस्थिति मिथिलाक

4. मिथिला, अंक १, पृ० ७।

एकहि वर्षक जीवन मे कयबेर आयल। परन्तु भोलाबाबू अपन उदार विचार ओ सामाजिक परिवर्त्तनक विचार-धारा सँ विचलित होयबाक लेल तैयार नहि भेलाह। उग्र सम्पादकीय विचार, सामाजिक दुर्गुणक कठोर आलोचना, बाल-विवाह निरोध विषयक शारदा-बिलक समर्थन मैथिल महासभाक ओ प्रकारान्तरेँ मिथिलेशहुक आलोचना, स्त्री-शिक्षाक समर्थन, परदा प्रथाक विरोध, अस्पृश्यता-निवारण, मिथिलावासी समस्त जनसमुदाय केँ मैथिल मानवाक उद्घोषणा इत्यादि विषयक निबन्ध प्रकाशन सँ मिथिला ओ भोलालाल दासक सनातनी विचारधारानुयायी लोकनि द्वारा कठोर आलोचना कयल जाय लागल। एहि पर भोला बाबूक दू टूक उत्तर छलनि "मिथिला चलौ अथवा बन्द भै जाओ हम एहि कठोर सत्यक अवहेलना नहि कै सकब।"[5]

मिथिलाक सम्पादन योजना :

मिथिला मासिकक बारहो अंक देखला सँ स्पष्ट भय जाइत अछि जे एकर सम्पादन अत्यन्त व्यवस्थित छल। विशुद्ध साहित्य, विशिष्ट विचारोत्तेजक साहित्य, विशिष्ट स्तम्भक समुचित समावेश छल।

मिथिला मासिक पत्र मे मुद्रित भेनिहार सामग्री सभक अवलोकन कयला सँ धारणा बनैत अछि जे एहि मे रचना चयनक एकटा सुनिश्चित अवधारणा ओ रूप रेखा निर्धारित छल। कोनो विषयक रचनाक चयन मिथिला मे स्वीकृत विचारधाराक अनुकूले होइत छल।

मिथिलाक समस्त अंक मे मुद्रित सामग्री केँ दुइ वर्ग मे राखल जा सकैत अछि।

(१) सामान्य सामग्री।

(२) स्थायी सामग्री (स्तम्भ)।

सामान्य सामग्री :

एहि वर्ग मे ओ रचना सब अबैत अछि जे विभिन्न लेखक द्वारा

5. मिथिला, अंक ८, पृ० ३१६

प्रदान कयल जाइत छल। एहि मे पद्य ओ गद्य दुइ रहैत छल। पद्य ओ गद्य रचनाक संख्या सन्तुलिते कहल जा सकैत अछि। परन्तु सर्जनात्मक साहित्यक दृष्टिकोण सँ परीक्षण कयला पर पद्य रचना बेसी समृद्ध बूझि पड़ैत अछि। मैथिली भाषा ओ साहित्यक प्रति सामाजिक चेतनाक अभाव रहितो मैथिल कविक संख्या ओहू कलावधि मे विशेष छल जे मैथिलीक साहित्यिक गरिमा केँ बनौने रहल।

मिथिलाक बारहो अंक मे तैंतीत गोट कविक (एहि मे तीन गोट छद्म नाम अछि) तेहत्तरि गोट पद्य रचना प्रकाशित अछि। एहि मे अच्युतानन्द दत्तक तीन गोट पद्य महाभारतक[6] तथा गुणवन्त लाल दासक चारि गोट पद्य दुर्गाशप्तशतीक[7] क्रमिक अनुवाद थिक। कवि ओ पद्य रचनाक ई संख्या मिथिलाक प्रकाशनयुग ओ प्रकाशन अवधि केँ ध्यान मे रखैत साधारण नहि मानल जा सकैत अछि। एहि कविता सभ मे मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक अतीतक गौरवक व्याख्यान, वर्तमान दुर्दशाक वेदना तथा ओहि सँ त्राण पयबाक लेल उद्बोधन ओ जागरणक आह्वान रहैत छल। परन्तु एहू कविताक मध्य किछु एहनो रचना सब अबैत रहल जाहि मे नव तर्जक स्वर सुनाइ पड़ैत छल। एक दिस सँ राष्ट्रीय भावनाक समावेश तँ दोसर दिस रोमांटिक भाव ओ सौन्दर्य चेतनाक अभिव्यक्ति कतोक कविता मे दृष्टिगोचर होइत अछि। तथापि भोला बाबू मैथिली कविता केँ सर्वथा नवीन दिशा देबाक उत्कट आकांक्षा रखैत छलाह। ओ मैथिली कविता मे ओज ओ पौरुषक अभिव्यक्ति केँ अधिक प्रश्रय देबाक पक्ष मे छलाह। अतः एक सम्पादकीय टिप्पणी मे ओ कवि लोकनि सँ निवेदन कयने छलाह जे—

"मिथिलाक पद्य भाग हमरा जनैत उत्तम नहि जा रहल अछि तकर एकमात्र कारण अछि उत्तम कविताक अभाव। कविता चाहे तँ प्राचीन

6. मिथिला, अंक ६, ७, ८

7. मिथिला, अंक ७, ८, १०, १२

आदर्शानुसार अलंकार-शास्त्र सँ मंडित कवित्वपूर्ण हो अथवा सामायिकता सँ पूर्ण क्रान्तिकारी, वीर रसपूर्ण तीव्र आलोचनाजनक, नवीन एवं मौलिक हो।"[8]

एहि दिशा मे ओ स्वयं एक कविता 'युवक' नाम सँ रचना कय प्रकाशित करौने छलाह। ई एकटा प्रयोग ओ नवीन कविक लेल पथ निर्देश छल। मिथिलाक अन्तिम अंक मे मैथिली कविताक भाव-धाराक प्रसंग पुनः अपन विचार व्यक्त करैत लिखने छलाह—

"जहिना भारतवर्षक शृङ्गार प्रधान भक्ति काव्यक समय मे विद्यापति, गोविन्द दास आदि उत्कृष्ट काव्य रचना कय अपना समयक उच्च कवि भेलाह तहिना वर्त्तमान समयक वायुमंडल देखि यदि हमर कवि समाज अग्रसर होथि तँ बड़ा उपकार हो। एक प्रकारक पद्य हमहुँ अहि अंक मे 'युवक' शीर्षक देने छी। पद्य रचना मे हमर लेखनी तेहन शिथिल जे हम तकर प्रयासो करब अनधिकार चर्चा बुझैत छी, तथापि हम चाहै छी जे हमर काव्य मिथिलाभाषा मे रहितहुँ केवल मैथिल, मैथिली अथवा मिथिलाक सम्बन्ध मे नहि रहै प्रत्युक सार्वदेशिक और सार्वजनिक होइत भावोन्नायक रहय।"[9]

सम्पादकक रूप मे मिथिला मे प्रकाशित काव्यक प्रति जे असन्तोष रहल होनि मुदा मैथिली पाठक केँ मैथिली काव्य गगन मे नवीन विद्युत तरंगक दर्शन भेलैक। पुरान ओ प्रसिद्ध अनेक कविक संगहि नवीन प्रतिभाक प्रथम दर्शन 'मिथिला'क पृष्ठ पर भेल जाहि मे हरिमोहन झा, भुवन, जयनारायण मल्लिक, बदरीनाथ झा (पश्चात कवि शेखर रूप मे प्रख्यात) विद्यार्थी वैद्यनाथ मिश्र (सम्प्रति नागार्जुन ओ यात्री नाम सँ प्रख्यात) इत्यादि प्रमुख छथि। कतोक नवीन कवयित्री लोकनिक कविता सेहो मिथिला मे प्रकाशित भेल छल।

ओहि कालक प्रतिष्ठित प्रौढ़ कवि लोकनि मे पुलकितलाल दास

8. मिथिला, अंक २, पृ० ८२ 9. मिथिला, अंक १२, पृ० २१५

मधुर, मुंशी रघुनन्दन दास, कविवर सीताराम झा, नन्दकिशोर लाल दास, कालीकुमार दास, यदुनाथ झा 'यदुवर', दामोदरलाल दास, छेदी झा 'मधुप', जगदीश मिश्र 'मैथिल' इत्यादिक कविता मिथिला मे निरन्तर प्रकाशित होइत छलनि।

मिथिला मे पद्यक स्थान क्रम निर्धारित नहि छल परन्तु रचनाक्रम मे कम सँ कम एकटा कविता केँ प्रथम स्थान देल जाइत छल। ई पद्यक प्रति सम्पादकक आदर ओ रुझानक द्योतक मानल जा सकैत अछि।

सामान्य सामग्री मे विशेष स्थान गद्य केँ प्राप्त छलैक। ओहि कालक प्रसिद्ध विद्वान, चिन्तक ओ सिद्धहस्त लेखक लोकनिक रचना मिथिला मे प्रकाशित देखल जाइत अछि। संगहि नवीन लेखक केँ सेहो प्रोत्साहन देल जाइत छल। विशेषतः प्रतिभाशाली युवक ओ छात्र केँ आगाँ अनबाक दिशा मे भोलाबाबूक बेसी मनोयोग रहैत छलनि। परवर्ती कालक कतोक प्रतिभाशाली मैथिली साहित्यकार छात्र जीवनहि मे सर्वप्रथम मिथिलाक पृष्ठ पर अवतरित भेल छलाह, जाहि मे हरिमोहन झा ओ रमानाथ झा वास्तव मे बाबू भोलालाल दासक पत्रकार जीवनक अनमोल सृष्टि सिद्ध भेलाह।

मिथिलाक गद्य सामग्रीक पर्यालोचन सँ स्पष्ट होइत अछि जे एहि मे प्रकाशित गद्य रचना मुख्यतः दुइ वर्ग मे राखल जा सकैत अछि—साहित्यिक गद्य रचना ओ सामाजिक गद्य रचना।

मिथिलाक बारहो अंक मे प्रकाशित समस्त गद्य सामग्रीक अध्ययन कयला सँ निष्कर्ष बहराइत अछि जे एकर साहित्य पक्षक पलड़ा बड़ उदास छलैक। गद्य साहित्यक विविध विधाक प्रयोग दिस मिथिला जेना अनासक्त छल अथवा सर्जनशील लेखकक अभाव मे अशक्त छल। सर्जनात्मक साहित्य मे छओ गोट कथा मात्र मिथिला मे प्रकाशित भऽ सकल—कालीकुमार दासक 'अदलाक बदला', शाम्भवी देवीक 'आशा-परम्परा' ओ 'सोदर स्नेह', एक प्रत्यक्षदर्शीक 'निर्वासन', अवध नारायण

दासक 'सुशिक्षा' तथा हरिनन्दन ठाकुर सरोजक 'एक बरिआतिक चिट्ठी'। एकरा सबकेँ मैथिलीक आरम्भिक कालक सम्भ्रमित कथा-प्रयोग कहल जा सकैत अछि। अवश्ये हरिमोहन झाक धारावाहिक रूप मे (चारि अङ्क २, ३, ५, ६,) मे अपूर्णतः प्रकाशित कन्यादान एकटा युगान्तरकारी औपन्यासिक सृष्टि सिद्ध भेल। विषय-सूची मे कन्यादान केँ गल्प कहल गेल अछि। किस्त मे प्रकाशित भेला सँ भने एकरा गल्प कहल गेल होइक, परन्तु सम्पूर्ण रूप मे ई कृति औपन्यासिक मर्यादा केँ प्राप्त कयलक। कन्यादान मिथिलाक पाठक केँ आकृष्ट कयलक जकर सूचना मिथिलहि मे मुद्रित कतोक सजग पाठकक पत्र सँ भेटैत अछि। कन्यादानक जतबा अंश मिथिला मे प्रकाशित भेल छलैक ताहिमे कोनो एहन वस्तु नहि छल जकरा ओहिकाल मे परम्परावादी लोकनिक दृष्टिएँ आलोचनात्मक बूझल जा सकय। कहल जाइत अछि, जे म० म० मुरलीधर झा कन्यादानक कटु आलोचना कयने छलथिन।

पं० कुशेश्वर कुमर अपन एक सम्पादकीय टिप्पणी मे मिथिला मे प्रकाशित चिट्ठीक प्रमाण दैत सूचित कयने छलाह जे मुरलीधर झाजी कन्यादानक आलोचना कयलनि अछि।[10] मिथिला मे प्रकाशित म० म० मुरलीधर झाक ओहि पत्र मे मिथिला मे प्रकाशित अन्य निबन्ध, सम्पादकीय लेख ओ विचारधाराक प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोणक अभिव्यक्ति देने छथि अवश्य, परन्तु हरिमोहन झाक कन्यादानक प्रसङ्ग एकहु शब्द नहि लिखने छथि।[11] तखन मुरलीधर झा पर कन्यादानक आलोचना करबाक कथा आरोपित किएक भेल। भऽ सकैछ पुरातन नीति-निरत कुमरजी कन्यादान केँ नहि पसिन्न कयने होथि आ अपन अभिप्रेत विषयक अभिव्यक्तिक हेतु मुरलीधर झाक नामक आश्रय लेने होथि। तथापि कन्यादानक आलोचना अवश्य भेल छल होयत।

---

10. मिथिला, अङ्क—८, पृ०-४०२

11. तत्रैव, अङ्क—७, ३८८-८९

कारण भोलालाल दास अन्तिम अङ्कक सम्पादकीय टिप्पणी मे हरिमोहन झा सँ कन्यादान कें पूरा करबाक आग्रह एहि शब्द मे कयने छलथिन—

"श्रीयुत पं० हरिमोहन झा सँ हमर विशेष आग्रह जे ओ कन्यादानक शेषांश शीघ्र पठाबथु। हुनका लेखक विरोध केनिहार भीतर अथवा बाहर आब क्यौ नहि छैन्ह। प्रत्युत अधिकांश पाठक कें एकाध लोकक विरोध सँ अपना मनोरंजक विचार शैली सँ वञ्चित करब हुनका हेतु कथमपि उचित नहि।"[12]

साहित्यिक पक्षक गद्य रचना मे किछु आलोचनात्मक निबन्ध मात्र उल्लेखनीय कहल जा सकैछ जाहि मे नरेन्द्रनाथ दासक धारावाहिक रूप मे प्रकाशित निबन्ध 'विद्यापति ओ चण्डीदास' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि। मुन्शी रघुनन्दन दासक 'मैथिली साहित्यक दिग्दर्शन' (अंक-६), श्यामसुन्दर झा मधुपक 'कविता मे रस एवं अलंकार,' (अंक-८), भीमेश्वर सिंह-जलेश्वर सिंहक 'प्रेम-प्रसंग' (अंक-८) आदि एहने किछु निबन्ध सब मिथिला कें साहित्यिक होयबाक श्रेय प्रदान करैत छैक। किछु निबन्ध मिथिला भाषा विषयक प्रकाशित भेल अवश्य, मुदा अहिमे साहित्यिक पक्ष वा भाषा वैज्ञानिकेताक अपेक्षा ओकर सामाजिक पक्ष बेसी प्रखर-मुखर छल। मिथिलाक किछु अंक मे पुस्तक समीक्षा सेहो प्रकाशित भेल छल। एहन पुस्तक समीक्षा कें व्यावहारिक समीक्षाक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण मानल जा सकैत अछि।

'मिथिला'क प्रत्येक अंक मे मिथिला क्षेत्रक विशेषतः ओ भारतक अंशतः सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक ओ सांस्कृतिक परिवर्तन ओ ओकर उत्थान विषयक विचार प्रतिपादन कयनिहार गद्यरचना सब प्रकाशित होइत छल। मिथिला ओ मैथिल समाजक विभिन्न कुरीति, एहि प्रकारक निबन्धकार मे ओहि कालक प्रमुख विचारक ओ विद्वान लोकनि देखल जाइत छथि। संगहि कतोक नवीन लेखक सब उदित भेलाह

12. मिथिला, अङ्क—१२, पृ० ५१६

जाहि मे किछु तँ परवर्तीयो काल मे लिखैत रहलाह आ किछु मिथिलहि धरि सीमित रहि गेलाह।

स्थायी स्तम्भ :

कोनो पत्र पत्रिकाक महत्वपूर्ण अंग होइत छैक, ओकर स्थायी स्तम्भ। मिथिला मे सेहो स्थायी स्तम्भक व्यवस्था छल। एहिमे किछु नियमित छल आ किछु स्तम्भ अनियमित छल।

सबसँ प्रमुख स्तम्भ छल (१) सम्पादकीय विचार ओ (२) सम्पादकीय टिप्पणी। शीर्षके सँ सिद्ध अछि जे एकरा सम्पादके लिखैत छलाह। दुनू सम्पादक अपन अपन सम्पादकीय विचार व्यक्त करैत छलाह। कुमरजीक सम्पादकीय किछु अंक मे नियमित रहल, परन्तु पाछाँ अनियमित भऽ गेल। दोसर दिस भोलाबाबूक सम्पादकीय प्रत्येक अंक मे रहैत छल। भोला बाबूक एहि सम्पादकीय मे हुनक विचारधारा, गम्भीर चिन्तन, मैथिली भाषाक समुचित स्थान प्राप्ति, सामाजिक परिवर्तन ओ देशोत्थानक प्रबल आकांक्षाक परिचय भेटैत अछि। मिथिलाक कुल बारह टा अंक प्रकाशित भेल जाहिमे भोला बाबूक प्रत्येक अंक मे प्रकाशित सम्पादकीय केर सूची निम्नलिखित अछि—

(१) अग्रिम निवेदन (मिथिलाक नीति ओ उद्देश्यक विस्तृत व्याख्या परक एहि सम्पादकीय मे मिथिला भाषा ओ मिथिलाक तत्कालीन परिस्थितिक विश्लेषण करैत ओकर उत्थान प्रयत्न पर विचार प्रस्तुत अछि।)

(२) मैथिल महासभाक २० म अधिवेशन (मुंगेर)।

(३) मिथिला भाषाक व्यापकता।

(४) सुन्दर प्रभात (महाराज कामेश्वर सिंहक राज्याभिषेकक प्रसंग मे विचार व्यक्त करैत मिथिला भाषा ओ मिथिलाक प्रति राज परिवारक उत्तरदायित्वक विश्लेषण अछि।)

(५) हमर पतनक कारण।

(६) मिथिलाक स्थिति-परिवर्तन।

(७) समाचारपत्र संसार मे हमर स्थिति।

(८) मिथिलाक नीति।

(९) अखिल भारतीय मैथिल-युवक सम्मेलन, अरेडांगा (मालदह)।

(१०) विश्वक्रांति और धर्म।

(११) मिथिलाक्षरक प्रचारोपाय।

(१२) मिथिला और मैथिल महासभा।

दोसर स्थायी स्तम्भ रहैत छल सम्पादकीय टिप्पणी। एहि मे सामयिक घटना-प्रसंग, विशेषतः सामाजिक ओ मैथिली-मिथिला विषयक समाचार संकलन एवं ओहि पर सम्पादकीय अभिमत देल जाइत छल। एहि टिप्पणी सभ मे किछु मे टिप्पणीकारक रूप मे सोझे सम्पादक अथवा मि० सम्पादक वा सं० मि०क उल्लेख भेटैत अछि, एक अंक मे सम्पादक कुमर केर टिप्पणी छनि। एहि सँ इतर समस्त सम्पादकीय टिप्पणी मे टिप्पणीकारक रूप मे दास अथवा सम्पादक दासक उल्लेख अछि। अतः ओकर सभक लेखक बाबू भोलालाल दास छलाह। एहू टिप्पणी सभ केँ स्वतन्त्र रूपक सम्पादकीय कहल जा सकैत अछि जाहि मे ओहि कालक घटना चक्रक बहुत किछु विवरण भेटि जाइत अछि जे इतिहास लेखनक महत्त्वपूर्ण सामग्री सिद्ध भऽ सकैत अछि। एकरहि अन्तर्गत पुस्तक समीक्षा सेहो रहैत छल जाहि मे आदिकाल मे प्रकाशित अनेको पोथीक समीक्षा कयल गेल अछि।

एकर अतिरिक्त महिला मनोरंजन ओ बाल मनोरंजन वा मनोरंजन नाम सँ दुइ गोट स्तम्भ छल जे पूर्णतः नियमित नहि कहल जा सकैत अछि। कारण ई कोनो कोनो अंक मे नहियो रहैत छल। महिला मनोरंजनक लेखिका रहैत छलीह श्रीमती सुभद्रा देवी तथा श्रीमती शशिलता देवी। एहि स्तम्भ मे पाक विज्ञान तथा अन्यान्य महिलोपयोगी शिक्षात्मक सामग्री रहैत छल। बाल मनोरंजन मे छोट छोट हास्य रसात्मक चुटुक्का रहैत छल जकर लेखकक रूप मे पं० ठक्कन झाक नामक उल्लेख भेटैत अछि।

मैथिली भाषा-आन्दोलन ओ मैथिली साहित्यक विकासमे मिथिलाक अवदानक सम्यक् मूल्यांकन सम्भवतः एखन धरि नीक जकाँ नहि भेल अछि। मुदा मिथिलाक द्वारा कयल गेल अनवरत प्रयत्नक परिणाम परवर्ती कालक घटना चक्र मे देखल जाइत अछि।

मिथिलाक चारिम अंक मे महाराज कामेश्वर सिंहक राज्याभिषेकक परिप्रेक्ष्य मे लिखित 'सुन्दर प्रभात' शीर्षक सम्पादकीय मे मैथिलीक स्थिति एवं ओहिमे विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक ओ सांस्कृतिक घटकक नीक वा अधलाह, सहयोगी वा असहयोगी योगदानक विश्लेषण करैत मैथिली-भाषा-साहित्यक विकास-प्रयत्नक एकटा निश्चित रूपरेखा आ दिशा-निर्देश प्रस्तुत करैत भोलालाल दास लिखने छलाह—

"मैथिली-भाषाक उन्नति चारि प्रकारेँ होयत—

१) प्रान्तीय विश्वविद्यालय मे एकर स्वीकृति तथा पाठ्यक्रमक निश्चय

२) मिथिलाक्षरक प्रेस-संस्थापन

३) पुस्तक प्रकाशन एवं संचार तथा

४) पत्र-पत्रिकाक संचालन

एहि चारिमे प्रथम दू वस्तुक आवश्यकता सब सँ अधिक। शेष दूनू कार्य प्रथम दुनू वस्तुक अभाव मे जाहि रीतियें चलबाक चाही, चलितहि अछि।"

समेकित रूप मे देखी तँ मैथिलीक प्रति लोकमत जगयबाक लेल ओ लक्ष्य प्राप्तिक हेतु भोलालाल दासक जे परिकल्पना छलनि से भविष्य मे चरितार्थ भेल तकर साक्षी परवर्ती इतिहासे अछि। 'मिथिला'क प्रयत्नक परिणाम संक्षेपतः निम्न रूप मे भेल—

१) मिथिलाक्षरक टाइपक निर्माण भेल तथा 'मिथिला'क अन्तिम दुइ अंक मे सेहो मिथिलाक्षरक उपयोग भेल। एगारहम अंकक एकटा कविता तथा समस्त सम्पादकीय मिथिलाक्षरहि मे अछि। एगारहम ओ बारहम अंकक रचनाक शीर्षक सब मिथिलाक्षरहि मे प्रदत्त अछि।

२) मिथिला द्वारा सर्वप्रथम विद्यापति जयन्ती मनयबाक आह्वान कयल गेल आ तदनुसार १४ नवम्बर १९२९ के आयोजित कयल गेल। सम्प्रति विद्यापति स्मृति-पर्वक जे विस्तार भेल अछि आ जनमत-निर्माण तथा मैथिली-चेतना जगयबामे एकर की योगदान अछि से स्वतः स्पष्ट अछि।

३) एकटा संघटित मैथिली संस्थाक अपेक्षा छल। भोलालाल दास कें एकर अभावक अनुभव निरन्तर होइत छलनि। से १९३१ मे जाकऽ स्थापित भेल जकर नामकरण भेलैक मैथिली साहित्य परिषद जकर दीर्घ काल धरि भोलाबाबू प्रधानमन्त्री रहलाह तथा जकरा नेतृत्व मे मैथिलीक बहुतो महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पादित भेल।

४) पटना विश्वविद्यालय मे मैथिलीक स्वीकृति लेल सजगता आरंभ भेल।

५) मैथिली साहित्य नवोन्मेषक श्री गणेश 'मिथिला' सँ भेल। काव्य-धारा, गद्य-विधा, गद्य-शैली तथा वर्त्तनीक निर्धारणक क्षेत्र मे मिथिलाक महत्त्वपूर्ण योगदान रहल।

६) सबसँ महत्त्वपूर्ण अवदान छल नवीन प्रतिभाशाली कवि लेखकक अनुसन्धान जाहिमे हरिमोहन झा ओ रमानाथ झा आधुनिक मैथिली साहित्यक दुइ गोट महत्वपूर्ण स्तम्भक रूपमे स्थापित भेलाह।

७) मैथिली पत्रमे साज-सज्जा, सचित्रता ओ व्यंग्य चित्रक समावेस मे सेहो 'मिथिला' एकटा नव प्रकारक दिशा संकेत कयलक। एहि सँ पूर्व प्रकाशित कोनहुँ पत्रमे चित्रक प्रयोग नहि भेल छल।

भारती :

'मिथिला'क बन्द भेलाक पश्चात् बावू भोलालाल दासक कार्य क्षेत्र संघटनात्मक भऽ गेलनि। मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना हुनका प्रयत्ने संभव भऽ सकल। स्थापनाक दोसर वर्ष मे ओ ओकर प्रधानमन्त्री भेलाह। हुनक समस्त शक्ति, परिषद्क विकास तथा परिषदक माध्यमे मैथिलीक

विकास मे लागि गेलनि । तथापि पत्र-पत्रिकाक महत्त्व कें ओ बिसरि नहि सकलाह । १९३७ मे परिषदक संरक्षकत्व मे 'भारती' नामक मासिक पत्रिकाक प्रकाशन लहेरिया सराय सँ आरंभ कयलनि ।

'भारती' क जीवन काल सेहो 'मिथिले' जकाँ एके वर्षक रहल । १९३७ इसबीक फरवरी सँ आरम्भ भेल तथा १९३८ क जनवरीक पश्चात् बन्द भऽ गेल । पाँचम-छठम तथा अन्तिम ११म-१२म अंक संयुक्तांक रूप मे बहरायल । ई अन्तिम अंक विशेषांक रूपमे 'वसन्तांक' नामे अभिहित कयल गेल छल । अतः 'भारती'क पूर्णतः नओ गोट अंक साल भरि मे बहराय सकल । मिथिला ओ भारतीक मध्य सात वर्षक अन्तराल रहल जाहि बीच राष्ट्र ओ मिथिलाक परिस्थिति बहुत किछु बदलि गेल छल ।

मैथिली साहित्य परिषद भोला बाबूक प्रधानमन्त्रित्व मे बौद्धिक जगतक आस्था अर्जित कऽ लेने छल । १९३३ क घोघरडीहा अधिवेशन तथा १९३६ क मुजफ्फरपुर अधिवेशन मैथिली साहित्य परिषद कें प्रतिष्ठित संस्थाक रूप मे मान्यता दिअयबा मे सफल सिद्ध भेल । एहना स्थिति मे परिषदक एकटा मुखपत्रक आवश्यकता केर अनुभव कयल गेल जाहि सँ मैथिली भाषा ओ साहित्यक सर्वांगीण विकास सम्भव भऽ सकय ।

भोलाबाबूक सक्रिय प्रयास सँ मित्रमंडल नामक संस्था मैथिली साहित्य परिषद द्वारा संरक्षित पत्रिकाक रूपमे 'भारती'क प्रकाशन आरम्भ कयलक । एकर सर्वेसर्वा कहल जाय तँ भोलाबाबू स्वयं छलाह । एहि बेर भोलाबाबू पर कोनो सनातनी अंकुश नहि छलनि । अपन मनोनुकूल उद्देश्य ओ नीतिकें साकार करबाक निर्बाध अवसर छलनि । सामाजिक कुरीति ओ विसंगतिक प्रति समाज पूर्वापेक्षा अधिक सतर्क सचेत भऽ गेल छल । समाजक-जड़ता ओ सनातनी दुराग्रह कम भेल छल । मैथिलीक प्रति सेहो चेतना उद्बुद्ध भऽ गेल छल । एकटा उत्साहक वातावरण बनि गेल छल । पटना विश्वविद्यालय मे मैथिलोक प्रवेशक अनवरत माङ

होइतो रहला पर कोनो सुनबाइ नहि भेल छल अवश्य, किन्तु १६३६ मे संथाली भाषाक स्वीकृति पटना विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रम मे भेला सँ मैथिली भाषी लोकनि मे आशाक किरण प्रस्फुटित भेलनि जे जँ एकटा साहित्य रहित जनजातीय बोली कें पाठ्यक्रमक विषय बनाओल जा सकैछ तँ अत्यन्त प्राचीन साहित्य-समृद्ध, समकालीन साहित्य निर्माणमे सक्षम सारस्वत गरिमा सँ सम्पन्न मैथिली-भाषा कें स्वीकृति किएक ने भेटि सकैछ ?

अतः एहि बेर भोलाबाबूक समक्ष सामाजिक परिवर्तन सँ अधिक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य बनि गेल छलनि मैथिली कें साहित्य सर्जन ओ अधिकारक क्षेत्र मे अन्य आधुनिक भारतीय भाषाक समकक्षता प्रदान करब ।

'भारती'क प्रथमे अंकमे आत्मनिवेदन शीर्षक सम्पादकीय मे वसन्तागमक संग मैथिलीक परिस्थितिक तुलना करैत लिखने छथि—

"उदासीनताक शैत्य, विरोधक पाला, दुराग्रहक वायु-वेग आदि बाधा पराकाष्ठा पर पहुँचि, तापमान कें ताहि विन्दु पर लए अनलक जतय सँ की तौं ओकरे परिवर्तित भेने बाट छलैक अथवा मैथिलीये साहित्यक अस्तित्व मिटने बाट छलैक । सौभाग्यवश प्रथमे पक्ष सत्य भेल । आइ पचीस तीस वर्ष सँ मैथिलीक क्षेत्र मे क्षीण आलोक देखना जाइछ, तकरा हम परिस्थितिक प्रतिकूल लड़ाइ करब बुझै छी । सौभाग्वश ओकर परिणामो नीके देखि पड़ैछ । जाहि मैथिली मनीषी गणक अदम्य उत्साहे ई आलोक कोनो रीतियें अद्यावधि स्थिर रहल से अवश्य धन्यवादार्ह छथि । आइ हुनके तपस्याक बलें हम एहि युगान्त कें वसंत-पंचमी कहबाक साहस करै छी, अन्यथा एखनहु मैथिलीक प्रगति मे हमरा अनेक सन्देह अछि । विघ्नबाधाक पहाड़ ठाढ़े अछि ।

बिहार मे मैथिलीक प्रश्न जेहन महत्त्वपूर्ण भए रहल अछि ताहि सँ आब केयो मिथिलावासी तटस्थ नहि रहि सकै छथि । मैथिली साहित्य परिषदक निरन्तर उद्योग सँ विरोधक वातावरण आब किछु परिमार्जित भेल अछि ।"

आगाँ एहि सम्पादकीय मे तीन गोट घटना ओ ओकर मैथिली आन्दोलनक ऊपर भेल प्रभावक आकलन कयल गेल अछि। बिहार प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक बेगूसराय अधिवेशन मे हिन्दी-मैथिली सौहार्द सूचक प्रस्ताव स्वीकृत कऽ मैथिली भाषीक अपन साहित्य समृद्धिक प्रयत्न और मैथिली साहित्य परिषदक स्थापनाक प्रति सहानुभूति व्यक्त करैत उत्तरी बिहारक प्रचीन ग्रन्थक अन्वेषणक भार बाबू भोलालाल दास कें देल गेलनि। पटना विश्वविद्यालयक सिनेट मे १९३६क मार्च मे जाहि संथाली भाषा कें अस्वीकृत कऽ देल गेल छल तकरा नवम्बर मासमे स्वीकृति भेटि गेलैक। दरभंगाक महाराज द्वारा पटना विश्वविद्यालय मे 'मैथिली चेयर' क स्थापना भेल। पहिल तीन घटना जेना उत्साह वर्धक छल तेना मैथिली चेयरक परिणाम आशानुरूप नहि भऽ सकल। एहि सम्बन्ध मे 'भारती'क प्रथमे अंकक सम्पादकीय मे अपन क्षोभ व्यक्त करैत भोलाबाबू लिखने छथि—

"एकर अभिप्राय ई नहि जे मैथिलीक मार्ग एकदम साफ भए गेल। हमरा तँ एखनहुं विकट परिस्थितिक सामना अछि। स्वीकृतिक प्रश्न तँ एक सामान्य बात थीक। हँ, एहि विषय मे ई कहब आवश्यक जे अन्यान्य प्रान्तक स्वीकृति, मैथिलीक योग्यता ओ मैथिलीभाषी विद्यार्थीगणक आवश्यकता आदि देखैत मैथिली चेयरक स्थापना सँ हमरा लोकनि जतबा आशान्वित भेल छलहुँ से केवल मृगमरीचिके प्रमाणित भेल। अधिक की, साधक हैबाक अपेक्षा ई चेयर हमर बाधके प्रमाणित भए रहल अछि।"

बाधक की सब भेल से तँ अनुसन्धेय वस्तु थिक, परन्तु भोलाबाबूक जन संघर्षक आह्वान मे कहल गेल ई उक्ति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि जे—

"मैथिलीक स्वीकृति यदि कहियो हैत तँ अपनहि बल पर, किन्तु पटना विश्वविद्यालय आइ १५-२० वर्ष सँ मैथिलीक प्रश्न कें जाहि रीतियें ठोकरबैत आयल अछि से महती मैथिली जनताक हेतु लज्जाक विषय

थीक। ओ चोट आब ताहि पराकाष्ठा पर पहुँचि गेल अछि जे ओकर अभिव्यक्ति अधिवेशनक प्रस्तावादि द्वारा नहि भए सकैछ।[13]

एहने परिस्थिति मे 'भारती'क प्रकाशनक आवश्यकता प्रतीत भेल। एही परिस्थिति मे 'भारती'क उद्देश्य ओ नीति सन्निहित छल, से सम्पादकीय केर निम्नांकित उद्धरण सँ स्पष्ट भऽ जायत :

"किन्तु ई तँ हमर तात्कालिक आवश्यकता थीक, वास्तविक ध्येय तँ हमर मैथिलीक सेवे थीक। आब हम मैथिलीक पुरातन पटोर सँ अभिनव खादीक शुभ्र साड़िये सजायब आवश्यक बुझै छी। विद्यापति ओ गोविन्ददासक काव्यावली सँ आधुनिक साहित्य निर्माणहि कें अनिवार्य बुझै छी। से की बिना सर्वाङ्ग सुन्दर पत्रें संभव? की ताही दृष्टियें हमर मित्रगण ओ गुरुजन कतोक दिन सँ परिषद्‌क संरक्षकता मे पत्र प्रकाशित करबाक आग्रह नहि कए रहल छलाह? की मैथिली कें अन्यान्य प्रान्तीय साहित्य जकाँ सजय-वाक उत्कट अभिलाषा लोक मे नहि बढ़ि रहल अछि। एही निश्चित उद्देश्य कें समक्ष राखि 'भारती'क अवतार भेल अछि।[14]

सारांशतः मैथिली कें पटना विश्वविद्यालय मे स्वीकृति भेटैक से 'भारती'क तात्कालिक उद्देश्य छलैक परन्तु दीर्घकालिक ओ व्यापक उद्देश्य छलैक अभिनव साहित्यक निर्माण जाहि सँ अन्य उन्नत भारतीय भाषाक पंक्ति मे मैथिली गौरवपूर्ण स्थान पाबि सकय। संगहि मैथिली साहित्य राष्ट्रीय विचारधारा सँ सम्पृक्त होअय, ईहो एकटा महत्त्वपूर्ण प्रयोजन छल। समयक ई माङ छल जकर उपेक्षा करब आत्मघाती सिद्ध होइत। भोलाबाबू मानैत छलाह जे मैथिलीयोक माध्यम सँ राष्ट्रक सेवा कयल जा सकैत अछि। तें ओ उपरिचर्चित सम्पादकीय केर उपसंहार मे घोषणा कयलनि जे—

"आइ हमरा आगाँ भूत भविष्य किछु नहि अछि। हम केवल

१३. भारती, अंक-१, पृ०-४

१४. पूर्ववत्

वर्तमानक किंकर छी। और यदि राष्ट्र निर्माण मे किछु मूल्य साहित्य-सेवाहुक छैक तँ हम भारतीक उपासना मे लीन होइ छी।''

एहि उद्घोषित सिद्धान्तक अनुरूपे भारती पूर्णतः साहित्यिक पत्रक रूपमे प्रकाशित भेल। साहित्यक विभिन्न अंगक समृद्धिक प्रयत्न, एकर प्रत्येक अंक मे परिलक्षित होइत रहल। मैथिलीक विभिन्न साहित्यिक समस्या दिस भारती सजग छल। संगहि भाषा-संस्कारोक क्षेत्र मे भारती अपन महत्त्वपूर्ण योगदान करबाक चेष्टा कयलक।

भारतीक सम्पादन योजना :

जहाँ धरि सम्पादन योजनाक प्रश्न अछि, भारती साधारणतः मिथिलाक योजनाक अनुसरण कयलक। अर्थात् एहूमे वैह पद्धति राखल गेल छल जे मिथिला मे छल। एहूमे (१) सामान्य सामग्री एवं (२) स्थायी स्तम्भ राखल गेल।

सामान्य सामग्री :

सामान्य सामग्री मे मिथिलाक अपेक्षा भारती मे भिन्नता देखल जाइत अछि। मिथिला मे सामाजिक पक्ष विशेष प्रबल छल। परन्तु भारतो मे ई पक्ष गौण पड़ि गेल। एकर कारण छल सामाजिक ओ राष्ट्रीय परिवेश एवं परिस्थिति मे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन। मिथिला ओ भारतीक अन्तराल मे सामाजिक समस्याक प्रति दृष्टिकोण मे परिवर्तन भऽ गेल छल। सामाजिक रूढ़ि ओ कुप्रथा सभक प्रति लोकक विचार बहुत किछु बदलि गेल छल। बुद्धिजीवी वर्ग मे स्वाभाविक जागरूकता आबि गेल छल। अतः भारतीक सम्पादक केँ सामाजिक पक्ष केँ गौण कऽ मैथिली भाषा ओ साहित्य पक्ष पर अपन ध्यान केन्द्रित करब आवश्यक बूझि पड़लनि। अतः भारतीक प्रथम सम्पादकीय मे साहित्य निर्माणक जे संकल्प लेल गेल तथा ''मैथिली केँ अभिनव खादीक शुभ्र साड़ीये सजायब क कथन द्वारा मैथिली साहित्य केँ राष्ट्रीय विचारधारा दिस प्रवाहित करबाक संकेत देल गेल, तदनुरूपे भारतीक प्रत्येक अंकक हेतु सामग्रीक

संचयन कयल गेल। तें ई कहब पूर्ण उपयुक्त होयत जे भारती राष्ट्रीय विचारधारा सँ अनुप्राणित मैथिलीक प्रथम पूर्ण साहित्यिक पत्रिका छल।

सामान्य सामग्री पूर्णतः साहित्यिक रहैत छल, से पद्य ओ गद्य दूहू मे। पद्यक प्रधानता एहू ठाम देखना जाइत अछि। पद्य रचना कयनिहार मे 'मिथिला'क अधिकांश कवि एहू पत्रिका मे देखल जाइत छथि। तथापि अनेक नवीनो कविक रचना प्रकाशित भेल छल। एक दिस जँ पुरान परिपाटीक काव्य भेल तँ नवीन काव्यधाराक सेहो प्रस्फुटन भेल। भाव ओ कल्पना सँ संवलित लालित्यपूर्ण भाषा ओ लयात्मक छन्द योजना एहि कविता सभक विशेषता छल। तेसर दिस संस्कृत काव्यशास्त्रानुकूल महाकाव्य रचनाक प्रथम संकेत भारतीएक पृष्ठ पर देल गेल। मुंशी रघुनन्दन दासक 'सुभद्राहरण' महाकाव्यक प्रथम सर्गक आरम्भिक अंश भारतीक प्रथमहि अंक मे प्रकाशित भेल तथा अग्रिम कतोक अंक मे ई क्रम चलैत रहल। प्रथम अंक मे सुभद्राहरणक प्रसंग सम्पादकीय टिप्पणी ऐतिहासिक महत्त्वक कहल जा सकैत अछि जे निम्न रूपक अछि—

"श्रद्धेय मुन्शीजी ई महाकाव्य विशेषतः श्रीयुत भुवनेश्वर सिंह साहेब भुवन ओ हमरा आग्रहें लिखि रहलाह अछि। मैथिली मे एखन धरि महाकाव्य नहि छल तकर पूर्ति एहि सँ अवश्य हैत और सुन्दर रीतियें हैत। मुजफ्फरपुर संस्कृत कालेजक सुविख्यात प्रो० श्रीयुत बदरीनाथ झा जी सेहो एक महाकाव्य मैथिली मे लिखबाक प्रतिज्ञा कयने छथि। की उत्तम होइत यदि तकरो पूर्ति शीघ्र होइत।"

अतः मैथिलीक प्रथम महाकाव्य केँ साहित्य-मंचपर अनबाक श्रेय भारतीए केँ छैक।

भारतीक गद्य सामग्री अत्यन्त समृद्ध, सुश्लिष्ट ओ प्रौढ़तापूर्ण रहैत छल। विधा-वैविध्य एकर विशेषता छल। गल्प, साहित्यिक समालोचना, यात्रा-वृत्तान्त, नाटक इत्यादिक क्षेत्र मे भारतीक महत्त्वपूर्ण योगदान भेल

छल। एकर प्रत्येक अंक मे एक वा दुइ गल्प अवश्य रहैत छल जाहिमे कथानक, काव्यशैली ओ विचार-धाराक नवीनता दृष्टिगोचर होइछ। एहि गल्प सभक मुख्य स्वर रहैत छल राष्ट्रीयता, सामाजिक सुधार ओ उत्थान। काव्यशास्त्र विषयक अनेक महत्त्वपूर्ण निबन्ध ओ काव्यशास्त्र विषयक ग्रन्थक अंश भारती मे प्रकाशित देखल जाइत अछि। सबसँ महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ छल बाबू भोलालाल दास द्वारा कयल गेल वर्ण रत्नाकरक सटीक सम्पादन जकर किछु अंश मात्र प्रकाशित भऽ सकल। वर्णरत्नाकरक मुद्रण सँ पूर्वहि ओकर पहिला साक्षात् परिचय भारतीएक माध्यम सँ मैथिली साहित्य कँ प्राप्त भेलैक। स्मर्तव्य जे एकर प्रथम मुद्रित संस्करण बंगाल एसिएटिक सोसाइटी द्वारा १९४० मे भेल छल। एहिना शिवनन्दन ठाकुर द्वारा अनुसंन्धित रामभद्रपुर पदावलीक मूल पाठ तथा टीका सर्वप्रथम भारतीए मे प्रकाशित कयल गेल जे पश्चात ग्रन्थाकार ग्रहण कयलक। व्यावहारिक समालोचना तथा पुस्तक-समीक्षा क्षेत्र मे सेहो भारतीक बहुमूल्य योगदान भेल अछि आ मैथिली समालोचनाक इतिहास मे एकर गौरवपूर्ण स्थानक दाबी अनर्गल नहि कहल जायत।

साहित्यिक रचनाक अतिरिक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक ओ ऐतिहासिक विषय सँ सम्बद्ध सेहो कतोक निबन्ध भारती में प्रकाशित होइत रहल जाहि सँ विषय-वैविध्यक समावेश भेल। एहिसँ भिन्न-भिन्न रुचिक पाठक कँ अवश्य मनस्तोष भेल होयतनि।

स्थायी स्तम्भ :

कोनो पत्रिका मे स्थायी स्तम्भ अनिवार्य रूपेँ रहितहि अछि। एहि स्तम्भ सँ ओहि पत्रिकाक दृष्टिकोण, कार्यपद्धति, इत्यादिक पता लगैत अछि। स्थायी स्तम्भक योजना मे मिथिला जाहि रूपक छल ताहि सँ भिन्न रूपक भारती मे छल। भारती मे साधारणतः निम्नलिखित स्थायी स्तम्भ छल—

१—समाचार संग्रह २—देश-विदेश

३—साहित्य समीक्षा ४—झाजीक पत्रिका

५—परिषद समाचार ६—सम्पादकीय टिप्पणी एवं सम्पादकीय अभिमत

एहिमे प्रथम तीन स्तम्भक निर्वाह भारतीक सब अंक मे नहि भऽ सकल। अतः एकरा अनियमित स्थायी स्तम्भक संज्ञा सँ अभिहित कयल जा सकैछ। समाचार संग्रह एवं देश-विदेश एकहके अंकमे आबि सकल। स्थायी स्तम्भक रूप मे रहितो एकर पुनरावृत्ति नहि भऽ सकल। दुहू मे सामाजिक ओ राष्ट्रीय-अन्तराष्ट्रीय घटनाक सूचना देल गेल अछि! अतः वास्तव मे एकहि कोटि मे परिगणित कयल जा सकैछ। साहित्य समीक्षा एक सँ अधिक अंक मे देखल जाइत अछि जाहिमे नव-प्रकाशित ग्रन्थक समालोचना भेल अछि।

अन्तिम तीन गोट वास्तव मे स्थायी स्तम्भ छल। एहिमे 'झाजीक पत्रिका' व्यंग्य स्तम्भ छल। आठमे ओ नवम अंकक अतिरिक्त सब अंकमे ई स्तम्भ समाविष्ट छल। समकालीन लेखक ओ विद्वान लोकनि सँ प्राप्त सूचना सँ ज्ञात भेल अछि जे एहि स्तम्भक लेखक छलाह स्व० हरिमोहन झा। आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' क कथनानुसार वर्षान्तक अंकक झाजीक पत्रिका तात्कालिक कोनो कारणवशात हरिमोहन बाबू नहि लीखि सकलाह तँ हुनके द्वारा एकर पूर्ति कराओल गेल। झाजीक पत्रिका हास्य-व्यंग्य सँ परिपूर्ण रहैत छल तथा एकर विषय-वस्तु सामयिक घटना रहैत छल। जीवन ओ साहित्य दुहू मे हास्य रसक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि. एहि तथ्यक अनुभव पाठक केँ भारतीक माध्यम सँ भेलैक। ई स्तम्भ अत्यन्त लोकप्रिय छल। भारतीक प्रति लोकक अभिरुचि जगलैक। पाठक वर्ग केँ झाजीक पत्रिका अपना दिस आकृष्ट कयलक। तथापि ओहिमे जे कटु-तिक्त व्यंग्य ओ उपहास रहैत छलैक, ताहिसँ किछु वर्ग कुपित सेहो भेल छल, जकर सूचना नवम अंकक सम्पादकीय टिप्पणी मे भेटैत अछि।

वास्तव मे 'भाजीक पत्रिका' अपन व्यंग्य-सामर्थ्य सँ पाठक वर्गक मानस-जगतकेँ नोक जकाँ आन्दोलित कयलक आ पाठकक किछु अंशक तीक्ष्ण प्रतिक्रिया तकरे प्रमाण थिक। ई प्रतिक्रिया एहि स्तम्भक सफलताक प्रतीक थीक।

मैथिली साहित्य परिषद द्वारा संरक्षित पत्रिका घोषित रहबाक कारणें परिषदक समाचार एकर अनिवार्य स्तम्भ छल तथा प्रत्येक अंकमे एकर सतर्कतापूर्वक निर्वाह कयल गेल। एहि स्तम्भ मे मैथिली साहित्य परिषदक तत्वावधान मे कयल गेल मैथिली सम्बन्धो विभिन्न कार्यक समाचार संकलित रहैत छल। एहि स्तम्भक उद्देश्य छल पाठक वर्ग केँ परिषदक गतिविधि सँ परिचय करबैत मैथिलीक प्रति मैथिली भाषी समुदाय मे जागरूकता उत्पन्न करब। एहि समाचार सभ मे किछु मे केवल सूचना मात्र रहैत छल, मुदा किछु समाचार मे विचारहुक समावेश रहैत छल। एहि स्तम्भक अन्तर्गत जतबा सूचना ओ समाचार प्रकाशित भेल छल से आब मैथिली साहित्य परिषद ओ मैथिली भाषा-आन्दोलनक इतिहासक लेल महत्त्वपूर्ण आधार-सामग्री बनि गेल अछि। सब सँ महत्त्वपूर्ण छल सम्पादकीय टिप्पणी नामक स्तम्भ। एहि स्तम्भ मे मैथिली विषयक एवं अन्यान्य सामाजिक ओ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्या पर आलोचनात्मक तथा रचनात्मक विचार प्रस्तुत कयल जाइत छल। भारतीक दृष्टिकोणक अर्थ भेल बाबू भोलालाल दासक दृष्टिकोण आ भोलाबाबू ओहिकाल मे मैथिली बुद्धिजीवी समुदायक प्रतिनिधित्व करैत छलाह। सम्पादकीय टिप्पणी मे प्रस्तुत विचार मे तीव्रता, तीक्ष्णता, मुखरता, प्रखरता अनिवार्य रूपेँ रहैत छल। जाहि ठाम मैथिली एवं मिथिलाक प्रसंग रहैत छल ताहिठाम सम्पादकक आतुरता ओ आकुलता अधिक आवेगक संग व्यक्त होइत छल। मैथिली भाषाक अभ्युन्नति, विभिन्न क्षेत्र मे ओकर अधिकार-प्राप्ति तथा प्रतिष्ठा एहि सम्पादकीय टिप्पणी सभक केन्द्र विन्दु रहैत छल।

सम्पादकीय टिप्पणी स्तम्भ वास्तव मे 'मिथिला' क सम्पादकीय

टिप्पणीक अनुसरण मात्र छल। मुदा अन्तर ई जे मिथिला मे सामाजिक पक्ष प्रबल रहैत छल आ भारतो मे मैथिली-भाषा-साहित्य पक्ष व्याप्त रहैत छल। भारतीक तुलना मिथिला संग कयला पर देखैत छी जे भारतीक सबसँ पैघ अभाव रहल सम्पादकीय अभिमत नामक स्तम्भ। भारतीक प्रथम अंक मे आत्मनिवेदन तथा अन्तिम अंक मे सम्पादकीय अभिमत देल गेल अछि अवश्य, मुदा अन्य सब अंकमे एकर अभावे रहल। एहि दृष्टियेँ मिथिला भारतीक अपेक्षा गुरूतर कहल जा सकैत अछि।

साज-सज्जाक दृष्टिएँ भारतीक मुखपृष्ठ सरस्वतीक बहुरंगी चित्र सँ सज्जित रहैत छल। प्रत्येक अंक मे कोनो ने कोनो प्रसिद्ध ओ चर्चित व्यक्तिक चित्रक समावेश रहैत छल। कोनो-कोनो अंक मे व्यंग्य चित्र सेहो देल जाइत छल।

भोलाबाबू मिथिलाक सम्पादन कालमे भाषाक स्वरूप ओ वर्तनीक प्रति विशेष आग्रही नहि छलाह। आग्रह छलनि साहित्य-लेखनक। साहित्यक निर्माण-प्रक्रिया मे भाषाक स्वरूप स्वतः निर्धारित भऽ जायत। परन्तु भारतीक सम्पादन काल मे हुनका भाषा-संस्कारक आवश्यकताक अनुभव भेलनि। मैथिली मे शब्दक रूप वैविध्यक समस्याक प्रति अधिक सावधान भेलाह। अतः भारतीक द्वारा लेखन मे एकरूपता अनबाक दिशा मे सेहो प्रयत्न कयल गेल। यदि भारती साल दू साल और चलैत तँ संभव छल जे मैथिली-लेखन मे विद्यमान बहुरूपताक बहुत किछु समाधान भऽ जाइत।

समेकित रूप तँ देखला पर भारतो मैथिली भाषा केँ साहित्य समृद्ध करवा मे महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कयलक। उच्चकोटिक रचनात्मक, समालोचनात्मक ओ सूचनात्मक साहित्य सर्जनक पथ प्रशस्त कयलक। मैथिली-भाषा-साहित्यक विभिन्न समस्याक प्रति समाज मे जागरूकता अनलक तथा पटना विश्वविद्यालय मे मैथिली केँ स्थान दिअयबाक आन्दोलन केँ ततबा तीव्र कयलक जे आगाँ चलि कऽ दू तीन वर्षक अभ्यन्तरे मैथिली केँ ओ स्थान प्राप्त भऽ गेलैक।

मिथिला ओ भारतीक एकत्रैव अवलोकन सँ भोलाबाबूक पत्रकारिता विषयक सूक्ष्म दृष्टि, सम्पादन क्षमता इत्यादिक परिचय भेटितहि अछि, संगहि हुनक सशक्त ओ परिमार्जित गद्य शैलीक सेहो परिचय भेटि जाइत अछि। दुहू पत्रिका मे सम्पादकीय अभिमत, सम्पादकीय टिप्पणी, समाचार समीक्षा, पुस्तक समीक्षा, विभिन्न लेखकक रचनाक संग ठाम-ठाम देल गेल लघु सम्पादकीय टिप्पणी तथा कतिपय स्वतन्त्र निबन्ध सँ सिद्ध होइत अछि जे बाबू भोलालाल दास एकटा सफल गद्यकार छलाह तथा मैथिली साहित्य केँ आदर्श अनुसरणीय गद्य-स्वरूप प्रदान कऽ गेलाह। सुविचारित शब्द योजना, सुगठित सरल वाक्य-विन्यास, सुस्पष्ट विचार, शास्त्रार्थ शैली मे तर्क-प्रस्तुति, ओजगुण इत्यादि भोलालाल दासक सम्पादकीय गद्यक सहज विशेषता थिकनि। एहि समस्त गद्य रचनाक संकलन कऽ देल जाय तखने हिनक गद्यकारक रूप मे सम्यक् मूल्यांकन सम्भव अछि।

मिथिला ओ भारतीक मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्र मे युगान्तकारी स्थान छैक से मानबाक कोनो मतान्तरक सम्भावना नहि कयल जयबाक चाही। एकर समस्त श्रेय बाबू भोलालाल दास केँ छनि। वास्तव मे मिथिला ओ भारती भोलाबाबूक सम्पूर्ण व्यक्तित्वक आकार ग्रहण कयने छनि। भोलाबाबूक उद्देश्यक प्रति निष्ठा, ओकर पूर्तिक हेतु साधना, निर्भीकता, निष्पक्षता, स्पष्टता, अपन पक्ष-प्रतिपादन मे तार्किकता, अपन मान्यताक प्रति दृढ़ता, प्रतिपक्ष पर आक्रमण करबा मे विनम्रता ओ सदाशयता, मिश्रित निष्ठुरता इत्यादिक परिचय मिथिला ओ भारती सँ नीक जकाँ भेटि जाइत अछि। विशेषतः ओकर सम्पादकीय अभिमत एवं सम्पादकीय टिप्पणी सभ मे भोलालालदासक व्यक्तित्व सम्पूर्णता मे परिलक्षित होइत अछि।

भोलाबाबूक जीवन-कथा वास्तव मे मैथिली आन्दोलनक परिकथा थिकनि। एहि पुस्तक मे भोलाबाबूक व्यक्तित्वक सामान्य अनुशीलन

मात्र संभव भऽ सकल अछि। आवश्यकता अछि हिनक कृति सभक विशेष रूपेँ गम्भीर अध्ययनक। भोलाबाबूक मैथिली गद्य-रचना, भोलालाल दासक मैथिली-भाषा-तात्विक विचार, भोलालाल दास द्वारा सम्पादित मिथिला ओ भारती पत्रिकाक मूल्यांकन आदि विषय स्वतन्त्र रूपेँ अनुसन्धेय अछि।

बाबू भोलालाल दासक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक सम्बन्ध मे ई पहिल ओ प्रारम्भिक अनुसन्धान-प्रयत्न थिक। वृहत् स्तर पर हिनक रचना केँ सम्पादित करबाक आवश्यकता अछिहे, जे भविष्य पर निर्भर अछि।

—:o:—

परिशिष्ट 'अ'

अधीत ग्रन्थक सूची

मैथिली	लेखक / प्रकाशक
१) कविता संग्रह	मैथिली अकादमी, पटना
२) किछु देखल-किछु सूनल	गिरीन्द्रमोहन मिश्र, दरभंगा
३) गद्य कुसुमांजलि	स०, डॉ० उमेश मिश्र, मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा
४) गद्य कुसुममाला	स०, डॉ० उमेश मिश्र, मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा
५) गद्यश्री	डॉ० श्री शैलेन्द्रमोहन झा, मिथिला प्रकाशन, दरभंगा
६) चन्दा झा (मैथिली अनुवाद)	श्री जयदेव मिश्र, सा० अ०, नई दिल्ली
७) चन्द्र रचनावली	डॉ० श्री विशेश्वर मिश्र, मैथिली अकादमी, पटना
८) मैथिली पत्रकारिताक इतिहास	श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', मैथिली अकादमी, पटना,
९) मैथिली साहित्य परिषदक संक्षिप्त इतिहास	श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा
१०) मैथिली पद्य संग्रह	प्रो० रमानाथ झा, मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा
११) मैथिली गद्य पद्य संग्रह	प्र० - पाठ्य पुस्तक निगम, पटना
१२) व्याकरण प्रबोध	बाबू भोलालाल दास, अभिनव ग्रन्थागार, पटना

मैथिली	लेखक/प्रकाशक
१३) व्यक्तित्व ओ कृतित्व	सं० श्री राजनन्दनलाल दास ऑल इण्डिया मैथिल संघ, कलकत्ता
१४) संकल्प (स्मारिका)	संकल्प लोक, लहेरियासराय
१५) संस्मरण (पटना विश्वविद्यालय मे मैथिलीक प्रवेश)	बाबू भोलालदास, चित्रगुप्त सभा, पटना
१६) स्मारिका	अखिल भारतीय मै० सा० परिषदक, सरिसव अधिवेशन
१७) स्मारिका	चेतना समिति, पटना, १९७० ई०
१८) स्मृति (स्मारिका)	सांस्कृतिक समिति, मधेपुर

हिन्दी	लेखक/प्रकाशक
१) अक्षरों की लड़ाई	बाबू भोलालाल दास, दि युनाइटेड प्रेस लि०, भागलपुर
२) पत्र और पत्रकार	कमलापति शास्त्री एवं पुरुषोत्तम दास टण्डन, 'पत्रकार' ज्ञानमण्डल (पुस्तक भण्डार) लिमिटेड, बनारस, १९४४

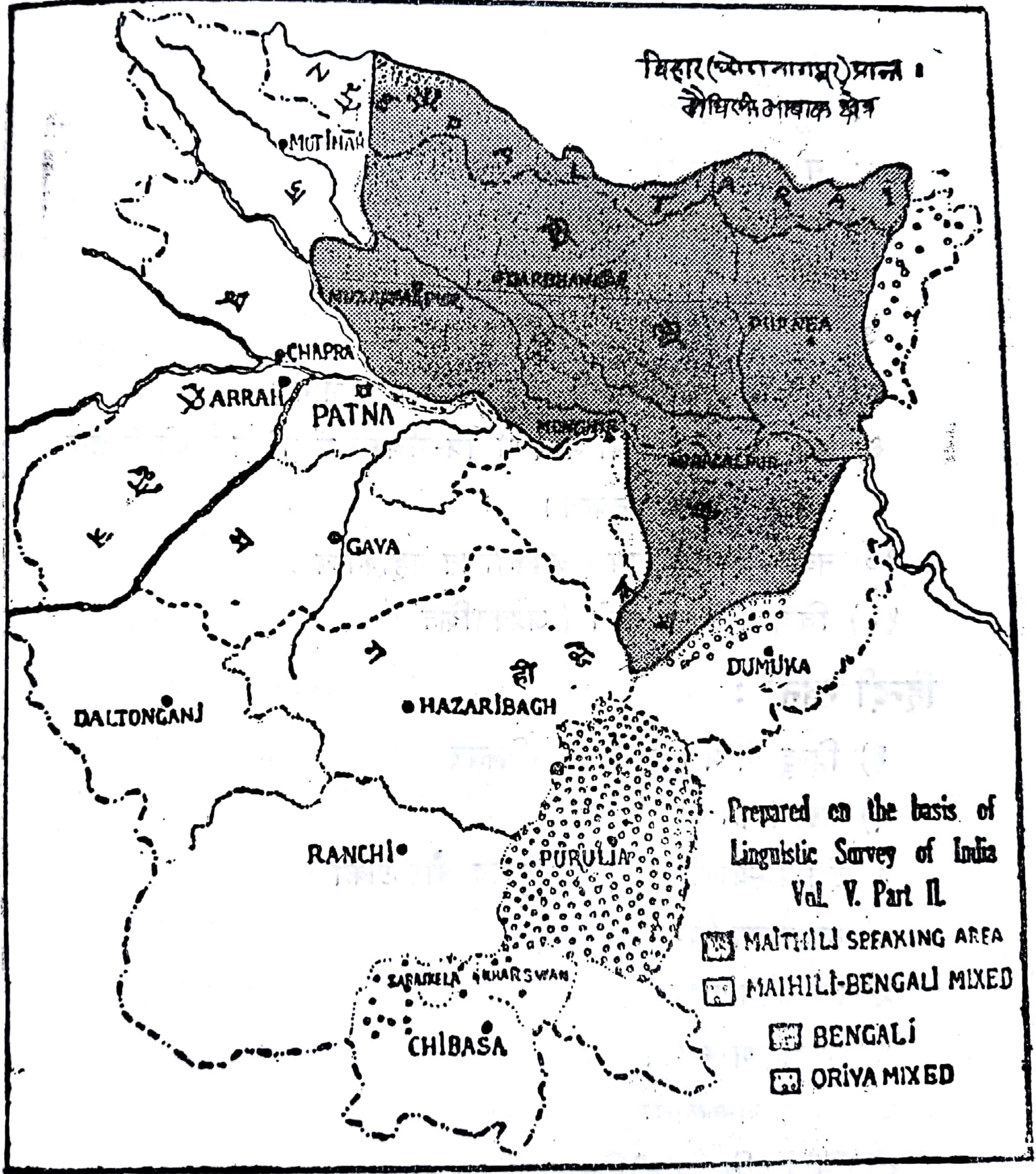
अंग्रेजी	लेखक/प्रकाशक
१) हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, भाग-२	डॉ० जयकान्त मिश्र, तीरभुक्ति पब्लिकेशन, सर पी० सी० बनर्जी रोड, इलाहाबाद, १९५०

पत्र-पत्रिका

१) आरम्भ
२) भारती
३) मिथिला
४) मिथिला मिहिर
५) मिथिला ज्योति
६) मिथिला दर्शन
७) मिथिला मोद
८) श्री मैथिली
९) स्वदेश (मासिक)

परिशिष्ट 'ब'

बाबू भोला लाल दास द्वारा निर्धारित मैथिली भाषी क्षेत्रक मानचित्र



'भारती'क वसंताक (जनवरी-फरवरी १६३८ ई०) सँ उद्धृत ।

परिशिष्ट 'स'

कृति ओ प्रवृत्ति

मैथिली रचना :

१) संस्मरण (पटना विश्वविद्यालय मे मैथिली प्रवेशक प्रामाणिक संस्मरण)

२) व्याकरण प्रबोध

३) सुबोध व्याकरण

४) सरल व्याकरण

५) गद्य कुसुमाञ्जलि (सम्पादित)

६) 'मिथिला' (मासिक पत्रिकाक सम्पादन)

७) 'भारती' (मासिक पत्रिकाक सम्पादन)

८) मैथिली साहित्यलहरी (बाल पोथी, ४ भाग)

९) अंग्रेजी, हिन्दी आ मैथिली पत्र-पत्रिका मे लिखल कतेको लेख एवं आलोचना निबन्ध।

१०) नव निबन्ध काव्यम (अप्रकाशित महाकाव्य)

११) विद्यापति पदावली (अप्रकाशित)

हिन्दी रचना :

१) हिन्दू लॉ मे स्त्रियों का अधिकार

२) अक्षरों की लड़ाई

३) ईशावास्योपनिषद् (पद्यानुवाद और टीका)

४) व्याकरण-विमर्श

५) व्याकरण-कला

६) व्याकरण-कलाप

७) व्याकरण-कलाधर

८) विश्व इतिहास दीपिका

९) बिहार टेक्स्ट बुक कमिटी द्वारा स्वीकृत इतिहास ग्रन्थ

परिशिष्ट 'द'

महाकवि विद्यापतिक मूर्ति कोन प्रकारक हो ?

[महाकवि विद्यापतिक इहलौकिक आकृति केहन रहल होयतनि तकर परिकल्पनापूर्वक हिनक चित्र, मूर्त्तिक निर्माण होइत रहल अछि। हिनक मूर्त्ति कोन प्रकारक हो ? एहि विषय पर बाबू भोलालाल दास आइ सँ करीब बाबन वर्ष पूर्वहि जे शास्त्रीय चिन्तन-मनन कयने छलाह, से आइयो यथावते प्रासंगिक अछि। प्रस्तुत अछि मिथिला मिहिर, २४ दिसम्बर, १९३७ सँ उद्धृत हुनक यथावत् निबन्ध]

कवि-कुल-कुमुद-कलाधर विद्यापतिक विषय मे मूर्ति कल्पनाक विचार ककरा हृदयमे अभिनव आशाक संचार नहि करत ? कोन मैथिली-सेवीक आकुल प्राणकेँ अशेष आनन्द नहि देत ? कोन विद्यापति-प्रेमीक अन्त-रात्माकेँ शीतल नहि करत ? मधु मधुरिमामयी मातृभाषा मैथिलीकेँ यदि एक मुद्रिका बूझी तँ विद्यापति ताहिमे जड़ल महामूल्यवान मणि प्रतीत होयताह। एहि नगीनाक विस्मृति ककरा नहि वृश्चिक दंशन जकां प्राणाघातक बोध हेतैक ? समस्त जाति आ देशोत्थानक मूलमन्त्र येह स्मृति रक्षा थीक।

पृथ्वी ककरो संग नहि गेल छथि। केवल कीर्त्तिये लोकक संग जाइछ। की महेञ्जोदड़ो तथा मांटगोमरीक भूगर्भ सँ प्राप्त सामग्री प्राचीन भारतक ऐतिहासिक सिद्धान्तमे युगान्तर उपस्थित नहि कयने अछि ? की अजन्ता, भुवनेश्वर, खजुराहो आदिक भास्कर-कला (प्रस्तर कर्म) एखनहुँ संसारमे भारतक मस्तककेँ ऊँच नहि करैछ ? की अनेकानेक शिलालेख प्रियदर्शी सम्राट अशोककेँ एखनहुं अमरत्व प्रदान नहि करैछ ?

की ताजमहल आबहु सम्राट शाहजहां ओ साम्राज्ञी मुमताजकेँ विश्व-विख्यात नहि कए रहल अछि ? को टुटलो फूटल सामग्री सँ संसारक अनेक इतिहास नहि जोड़ल गेल अछि ? विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर एक ठाम लिखने छथि :—

शुधु वैकुँठेर पर वैष्णबेर गान
पूर्व राग अनुराग मान अभिमान
वृन्दावन गाथा एक प्रणय सपन
....एके शुधु देवतार
ए संगीत रस धारा नहे मिटिवार—

एहि वैष्णव पदावलीक आदि गुरु के थिकाह ? संस्कृत, प्राकृत आदि प्राचीन भाषा मे जे केयो रहथु, किन्तु आधुनिक भाषा साहित्यक क्षेत्र मे केवल बंगाल वा मिथिलाक कोन कथा, समस्त भारतवर्षहिमे विद्यापति वैष्णवपदावलीक अग्रणी छथि। हिनके पदानुसरण करैत एक दिश चण्डीदास, बलराम दास, नरोत्तमदास आदि बंगाली वैष्णव कविगण दृष्टि गोचर होइ छथि तँ दोसर दिस मिथिलामे गोविन्द दास, नरहरि, रमापति प्रभृति अनेकानेक कविगण भेटताह। ओम्हर सूर, तुलसी, केशव, तुकाराम प्रभृति समस्त भारतीय वैष्णव कविगण पर-वर्त्तिये सिद्ध छथि। तखन भारतीय भाषा साहित्यमे विद्यापतिक स्थान की अछि, एतबहि सँ अनुमान कैल जा सकैछ।

किन्तु ओहि विद्यापतिक स्मृति-रक्षा मिथिला कोन रीतिये कए रहल अछि ? हम सब ओहि महाकवनकेँ कोना जोगाए रहलहुँ अछि ? जतय अन्यान्य प्रान्तक कविगणक स्मृति-रक्षार्थ हजारो टाका खर्च कैल गेल ओ कैल जाए रहल अछि, हुनका सबहिक काव्य सामग्रीक अनेकानेक संस्करण बहार भै रहल अछि, किमधिकम् ? महाकवि विद्यापतियेक जाहि ठाम बंगालमे आठ-आठ, नौ-नौ संस्करण भै गेल और हिन्दियहुमे चारि-चारि संस्करण प्रकाशित भए गेल, ताहि ठाम की हम सब अद्यापि

एको संस्करण बहार करबाक प्रयास कैल ? की अखन धरि तालपत्र पोथियहुक कतहु अन्वेषण कैल ? की नेपालहुक जानल बुझल पोथीक प्रतिलिपियो मंगैवाक चेष्टा कैल ? सुसम्पादितक हेतु न्यूनातिन्यून दस हजार टाका चाही, भिन्न-भिन्न स्थापनादिक स्मृति रक्षार्थ ताहू सँ अधिक व्ययक प्रयोजन अछि। किन्तु की छोटो पदावली जकरा मैथिल अपन कहि सकथि, एखन धरि प्रकाशित भेल ? की विसफियो पर्य्यन्तमे हम सव एक ईंट चढ़ाओल ? की वाजितपुरहुमे एक शिलान्यास कैल ? सभक उत्तर एक महा निराशाजनक नकारे भेटत। किछु विद्यापतियेक प्रति ई उदासीनता नहि अछि। ई मिथिलाक चिरंतन व्याधि थीक। मंडन मिश्रक डीह पर महुआक खेती देखब तँ वाचस्पति जन्म स्थान पर भांटाक वाड़ी। सौभाग्यवश शंकर मिश्रक चौपाड़ि पर एक पुस्तकालय बनि रहल अछि। किन्तु असंख्य महापुरुषक कृतिकेँ हम सब तराजू पर वांटि, माटिमे गाड़ि, अग्निदेवकेँ स्वाहा कए अपना विद्या प्रेमक परिचय दए रहल छी, तहिना हुनका सबहुक डीह-डाबर, क्रीड़ा-स्थलकेँ कतहु जोति-कोड़ि, कतहु श्मशान बनाए नष्ट-भ्रष्ट कए रहल छी। परन्तु आन व्यक्ति गवेषणक गह्वन गह्रमे भने गाड़ल रहथु, महाकवि विद्यापति तँ एखनहुँ हमर जातीय जीवन थिकाह ? हम हुनक अवहेलना कोना देखि सकै छी ? ओना तँ विद्यापति आदि महाकवि अपन-अपन स्मारक अपनहिं बना गेल छथि जे ताजमहल सँ सुन्दर ओ स्थायी अछि, तथापि जाहि जाति ओ देशक हेतु ओ अपन अमर काव्य-सामग्री दए गेलाह, से तकर पात्र अछि वा नहि, एकर तँ आधुनिक संसार मे परीक्षा हैबे करत। एहि दृष्टियेँ पूछी तँ विद्यापति नष्ट भए चुकल छथि और हुनका संग नष्ट भेल अछि मिथिलाक समस्त संस्कृति ओ इतिहास। एकर कारणो प्रत्यक्ष अछि। हम सब जहिना हुनका सँ उदास छी तहिना बंगाल हुनक यत्परो नास्ति भक्त अछि। अतः एम्हर, यदि कोनो कल्पने नहि, कोनो यत्ने नहि, तँ ओम्हर दिनानुदिन विद्यापतिक रेकर्ड, नाटक ओ फिल्म आदि तैयार भेल जाए रहल अछि जाहिमे एक अभिनवे विद्यापतिक आविर्भाव भए रहल अछि। मैथिलीक उपेक्षा सँ आव सत्य

वस्तुक लोप ओ एकदम कृत्रिम वस्तुक निर्म्माण होमए चाहैछ। आब ई चर्चा एहि काने नहि सुनब किन्तु चण्डीदासक शब्द मे कहय पड़ैछ जे—

सेई के बा शुनाइलो श्याम नाम
कानेर भीतरे दिया, मरमे पशिलो सेइ
आकुल रिलो मोर प्राण
नाम पर ताप जार ऐसन करिलो गो
दरस परस किवा हबे

अर्थात् जे प्रश्न एतेक आह्लाद-दायक अछि, तकर पूर्ति वास्तव मे केहन स्वर्गीय सुखक अनुभव कराओत ? वस्तुतः आब तँ व्याकुलता अछि विद्यापतिक मूर्ति निर्माण ओ स्थापनाक।

यदि केयो महाशय अपना मने एक मूर्ति बनबाए विस्फी वा वाजितपुर मे स्थापित कए देथि तँ पश्चात् व्यक्ति ओकर दोष बहार करब आरम्भ कए देब। अतः जनिका जे किछु सम्मति देबाक होन्हि से पूर्वहिं देथु। अधिक लोकक सम्मतिये जे आकार-प्रकार निश्चित हैत से केवल निर्दोष नहि हैत प्रत्युत सर्वथा सुन्दरो। अस्तु हम अपन मत नीचा लिखैत छी।

यथार्थ पूछी तँ विद्यापतिक मूर्ति निर्माण मे सामग्री अथवा आधारक अभाव ओतेक कठिनता नहि उपस्थित करैछ जतेक ओकर प्रचुरता। विद्यापतिक सदृश दीर्घजीवी कवि प्रायः क्यो नहि भेलाह अछि। १३० वर्षक परमायु अनेक विद्वान हिनक स्थिर कएने छथि। कार्यक्षेत्रो हिनक तेहने विस्तृत छलन्हि। महाराजा कीर्तिसिंह सँ महाराज रुद्रनारायण सिंहक समय धरि भिन्न-भिन्न स्थान ओ पद पर कार्य कैलन्हि। लेखो हिनक तीन-तीन भाषा मे पाओल जाइछ – संस्कृत, अवहट्ठ ओ मैथिली। युगक दृष्टियेँ हिनक समय-अर्थात् ओइनवार राज्यकाल, मिथिलाक इतिहास मे स्वर्णयुगे अछि। कहबाक तात्पर्य्य ई अछि जे विद्यापतिकेँ हम सब देश काल ओ पात्रक भेदें शतशः रूपमे पबै छिऐन्ह। अतः एक दू मूर्त्ति वा चित्रक कोन कथा ?

यदि हम सब हुनक चित्रशालाओ निर्माण कराबै चाही, तथापि निर्वाचन (Selection) क कठिनता बनले रहत। सब चित्र हुनक एक सँ एक प्रशस्त, भावोद्दीपक, महत्त्वपूर्ण ओ सुस्पष्ट देखि पड़त। कोन ग्रहण करी, ककर त्याग करी, एकर निर्णय करब कठिने बुझि पड़त। 'रुचीनां वैचित्र्यात्' कोनो व्यक्तिकेँ एक चित्र पसन्द हेतन्हि तँ दोसर तकरा नापसन्द करताह। अस्तु एहि कठिनताक मार्गकेँ परिष्कृत करब सुधी समाजक कर्तव्य अछि।

यतः सम्प्रति चित्रशाला खोलबाक आयोजन नहि अछि, प्रत्युत एक मूर्ति निर्माणक प्रश्न अछि अतः मुख्य घटनाक चित्र उपस्थित कय हम निर्वाचनक मार्ग सोचब। अस्तु, तँ हुनक जीवनक प्रधान घटना की थीक ? धुरन्धर पण्डितक वंश मे जन्म लेबाक कारणे हिनक बाल्यकाल शास्त्र-मर्य्यादानुसार संस्कृतक अध्ययन मध्य बितलन्हि। पिता गणपति ठाकुर ओइनवार—वंशीय राजा गणेश्वरक राजपण्डित छलथिन, आनो सम्बन्धी सब भिन्न-भिन्न पद पर प्रतिष्ठित छलथिन्ह, अतः पिताक सङ्ग बाल्यावस्थहिसँ दरबार मे आबै जाय लगलाह। तदुत्तर महाराज कीर्तिसिंहक शासन आरम्भ भेल। ई महाराज असलान नामक मुसलमान केँ अपना पिताक बैर सधाय राज्य प्राप्त कयने छलाह। अतः विद्यापतिक प्रथम काव्य रचना एही महाराज कीर्तिसिंहक वीर-गान सँ प्रारम्भ भेल जकर नाम कीर्त्तिलता अछि। तदुत्तर महाराज देवसिंह सिंहासनासीन भेलाह। हिनक आदेश सँ विद्यापति 'भूपरिक्रमा' ग्रन्थक रचना कैलनि। महाराज देवसिंहक राज्यकालहि सँ युवराज शिवसिंह अपना वीरता आ गुणग्राहकताक पूर्ण परिचय देबय लगलाह। अधिक की, देवसिंह केवल नामक महाराज छलाह, सब काज शिवसिंहे करय लगलाह। विद्यापति हिनक समवयस्क छलथिन्ह, अन्यतम सखा ओ प्रमुख दरबारी छलथिन्ह। हिनक पटरानी लखिमादेवी सेहो पण्डिता छलथिन्ह। ओ हुनको कृपा विद्यापति पर तेहने रहैत छलन्हि। विद्यापतिक यथार्थ आश्रयदाता आ

गुणग्राहक यैह महाराज शिवसिंह ओ हुनक रानी लखिमादेवी छलथिन्ह। स्वयं विद्यापति लिखने छथि जे—

"पंचगौड़ाधिप शिवसिंह भूप कृपा करिलेल निज पास।" और "लखिमा चरण ध्याने कविता निकमय विद्यापति इह भान।" एहो महाराजक आज्ञासँ विद्यापति 'पुरुष परीक्षा' नामक नीति ग्रन्थ लिखलन्हि। समवयस्कता ओ तारुण्योचित शृङ्गारक अटुट प्रवाह रहबाक कारणे राजा ओ रानीक प्रशंसा व्याजेँ राधा-कृष्ण सम्बन्धी अद्भुत मैथिली पदावलीक रचना एहि कालमे भेल। यैह अमर गान सब कवि-कोकिलकेँ 'अभिनव जयदेब'क उपाधि तथा आनो अनेक उपाधिसँ समय समय पर अलंकृत करैत गेल। शिवसिंहकेँ अनेक बेर यवन राजसँ युद्ध करए पड़लन्हि। एकबेर बन्दी भए दिल्ली गेलाह। विद्यापति ओतए जाए अपना कवितासँ दिल्लीश्वरकेँ प्रसन्न कए हुनका छोड़ाओल। एक पदक अंतिम भाग एहि प्रकारे अछि:—

भन विद्यापति चाहथि जे
विधि करथि से से लीला।
राजा शिवसिंह बंधन मोचल
तखन सुकवि जीला॥

२९३ ल० सं० मे ५० वर्षक अवस्थामे शिवसिंह अपना पिताक देहावसान पर सम्यक प्रकारेँ गद्दी पर बैसलाह। शीघ्रे यवनराजसँ युद्ध भेल। शिवसिंह विजयी भेलाह। एहि युद्धक प्रशंसामे विद्यापति 'कीर्ति-पताका' नामक ग्रन्थक रचना कएलन्हि। महाराज सेहो ओही वर्ष 'विसफी' गाम प्रदान कए अपन गुणग्राहकताक परिचय देलन्हि।

केवल साढ़े तीन वर्ष राज्य कए शिवसिंह लड़ाईमे मारल गेलाह वा अज्ञात भए गेलाह। तदुत्तर लखिमा आदि राज-महिषीकेँ लए विद्यापति हुनक मित्र द्रोणबार वंशीय राजा पुरादित्यक ओतय राजा बनौली गामक आश्रय कैल। एतहि बारह वर्षमे श्रीमद्भागवतक सम्पूर्ण पोथी

तड़िपत्र पर लिखलन्हि जे एखनहु राज दरभंगाक पुस्तकालयक अद्वितीय वस्तु अछि। एतदतिरिक्त ओहो राजा पुरादित्यक आज्ञासँ लिखनावली ग्रन्थक रचना सेहो कैलन्हि। एकटा पोखरियो ओतय खुनौलन्हि। पश्चात् राजा शिवसिंहक कुशदाह कए लखिमा सती भए गेलीह ओ मिथिलाक राज सिंहासन पर शिवसिंहक कनिष्ठ भ्राता पद्मसिंहक विधवा रानी विश्वासदेवी बैसलीह। विद्यापति आबसँ बरोबरि धर्माध्यक्ष आ शिव-भक्तक रूपमे दृष्टिगोचर होइ छथि। शिवसिंहक संगहि कविशेखरक अन्त भए गेल। अस्तु, महारानी विश्वासदेवीक आज्ञासँ 'शैव सर्वस्य सार' 'शैव सर्वस्व सार प्रमाण भूत पुराण संग्रह, ओ गंगा वाक्यवली' नामक तीन ग्रन्थक रचना कएलन्हि। पश्चात् महाराजाधिराज नरसिंहदेवक राज्यारम्भ भेल जनिक उपनाम 'दर्पनारायण, छलन्हि। हिनका आज्ञासँ महाकवि दूइ ग्रन्थक रचना कएलन्हि— विभागसार ओ दानवाक्यावली। तखन भैरवसिंह उपनाम हरिनारायण राज्यभार लेलन्हि। हिनका आज्ञा सँ विद्यापति एक ग्रन्थ 'दुर्गाभक्ति तरंगिणी' लिखलन्हि। 'गया पतलक' और 'वर्षकृत्य'। हिनका आज्ञा सँ वनल से विदित नहि, परन्तु दुर्गाभक्ति तरंगिणीक आरम्भ किछु पूर्वहिसँ भेल कारण जे एहिमे महाराज धीरसिंह आ हुनक भ्राता चन्द्रसिंहहुक नामोल्लेख अछि। अस्तु १५म शक शताब्दीक अन्तमे कविक ऐहिक लीला समाप्तप्राय बुझना जाइछ। महाप्रयाण निकट जानि भक्तराज गंगालाभक हेतु बिदा होइ छथि और वाजितपुरमे शिवधाम जाइ छथि। एहि बीचमे कतेक राजधानी परिवर्त्तन भेल, कतेक ठाम राजनिदेशेँ गेलाह और गढ विसफीक अपन गार्हस्थ्य जीवनक अनवरत निर्वाह करैत कतेक भिन्न-भिन्न घटना चक्रक परिवर्तनमे पड़लाह से के कहय ?

× × ×

एहूमे ४-५ घटना बड़ प्रधान ओ प्रतिनिध्यात्मक बुझना जाइछ। नवयुवक युवराज शिवसिंह यदि शिवाजीसन युद्धप्रिय छलाह तँ कविशेखर

विद्यापति भूषणसँ कम नहि छलाह। अनेक व्यक्ति विद्यापतिकेँ केवल श्रृङ्गारी कवि कहै छथि किन्तु ओहि वैष्णव पदधाराक प्रवाह-मधुर भावक विकाश हुनक पूर्ण युवावस्थामे भेल छलन्हि। ताहिसँ पूर्व ओ वीर साहित्यहिक रचनामे प्रवृत्त देखि पड़ै छथि। कीर्तिलतामे ओ कहै छथि—

"पुरिस हुअउ बलिराम जासु कर काह पसारिअ
पुरिस हुअउ रहुतनअ जेण रण रावण मारिअ
पुरिस भागीरथ हुअउ जेण णिअ कुल उद्धरिअउ
परसुराम पुणि पुरिस जेण खत्तिअ खअ करिअउ
पुरिस पसंसओ राजगुरु कित्तिसिंह गएणेस सुअ
जे सत्तु समर संम्मद्धि करि वप्प बैर उद्धरिअ धुअ'।

एतबे नहि, महाराज शिवसिंहक संग ई स्वयं रणभूमिमे जाथि ओ अपना कवितासँ हुनका अपूर्व उत्साह देथि। एही प्रकारक वीररसपूर्ण काव्य-कीर्त्तिपताका थीक। शिवसिंहक युद्धवर्णनक एके उदाहरण प्रर्य्याप्त हैत—

मेरु कनक सुमेरु कम्पिय, धरणि पूरिअ गगन झंपिअ,
हाति तुरग पदाति पयभर कौन सहिओ रे॥
तरल तर तरवारि रंगे; विज्जुदाम छटा तरंगे,
घोर घन संघात वारिस काल बरसेओ रे॥
तुरअ कोटि चाप चूरिअ, चारि दिसि चौविदिस पूरिअ,
विषम सार असार धारा धरणि भरिओ रे॥
अन्ध कूअ कवन्ध लाइअ, फेरवि फफ्फरिअ गाइअ,
रुहिर मत परेत भूत वेताल विछलिओ रे॥
राम रूपे स्वधर्म्म रखिअ, दान दप्पे दधीचि बलखिअ,
सुकवि नव जयदेव भनिओ रे॥
देवसिंह नरेन्द्र नन्दन, शत्रु नरवई कुल निकन्दन,
सिंह सम शिवसिंह राआ सकल गुणक निधान गुनिओ रे॥

एहिसँ स्पष्ट अछि जे शान्तिक समयमे हुनक लेखनी जेहने शृङ्गारक अजस्र सुधाधारा बहवै छल तेहने युद्धक्षेत्रमे अपूर्व वीररसक वर्षा करै छल। कमसँ कम एतबा मानहि पड़त जे इहो चित्र विद्यापतिक आन कोनो चित्रसँ कम आकर्षक नहि। साहित्य संसारकें विद्यापतिक एहि अपूर्व चित्रक प्रायः परिचयेटा नहि छैक, ओ साधारणतया शृंगारिके कवि मानल जाइ छथि, एहि कारणें विद्यापतिक ई चित्र आकर्षके नहि, आवश्यको अछि। ई चित्र घोड़ापर तरुण सैनिक वेशमे अंकित होमक चाही।

× × ×

दोसर प्रधान घटना अछि विसफी दानक। एहि सँ जेहने विद्यापतिक काव्य-गौरव देखि पड़ैछ, तेहने महाराज शिवसिंहक गुणग्राहकतो। यदि विसफी मे मूर्ति स्थापनाक विचार हो तँ एहि दृश्यक निर्वाचन उत्तम हैत। एहि मे राजा शिवसिंह ओ महाकवि विद्यापति दूनूक मूर्ति अपेक्षित अछि। राजा अपना राजकीय वेशभूषा मे होथि। दानपत्र विद्यापति केँ देवाक हेतु हाथ बढ़ौने रहथि ओ विद्यापति नम्र भावें तकरा ग्रहण करवाक हेतु हाथ बढ़ौने रहथि। हुनक वेश भूषा पांचो टूक कपड़ा पहिरने अर्थात् पनही, धोती, मिरजइ, चद्दरि ओ पाग धारण कयने रहन्हि। दूहूक मुख पर प्रसन्नता ओ नम्रताक भाव रहैन्ह। एहि मूर्त्तिक स्थापना तखनहि सार्थक हैत जखन मन्दिरक द्वार वा अन्तमार्गमे एक सुन्दर शिलालेख रहय जाहि पर समस्त दानपत्र सुस्पष्ट मिथिलाक्षर मे अंकित रहय। जन्म ओ मरणक आसन्न तिथि लिखल रहय ओ कोन वर्षमे ई ग्राम विद्यापतिक वंशज गणसं अन्यायपूर्व्वक लए लेल गेल तकरो उल्लेख रहय। ई चित्र विना राजा शिवसिंहहुक निर्म्माण कराओल जाए सकैछ। ताहि अवस्थामे दृश्यक स्वरूप ई होमक चाही जे दान पत्र लए विद्यापति विसफी ऐलाह अछि ओ अपना कुलदेवी 'विश्वेश्वरी' देवीक चरणमे तकरा अर्पण करैत छथि। विसफीमे हिनक मन्दिरो छल किन्तु आब नष्ट भए गेल अछि। ई मूर्त्ति तखन ताही स्थान मे होमक चाही। विश्वेश्वरीदेवीक कल्पना अनेक रूपें भऽ सकैछ किन्तु

मूर्त्तिमे भव्यता धरि पूर्ण हो। हुनका चरण पर दानपत्र राखल रहन्हि ओ विद्यापति नतमस्तक होथि। देवीक मूर्त्ति छोट, विद्यापतिक मनुष्याकृतिक तुल्य हो तँ उत्तम अन्यथा एकर अनुपात मूर्तिकारक इच्छा ओ व्ययक ऊपर छोड़ि देल जाए। हँ, दानपत्रक शिलालेख एहू दृश्यमे पूर्ववते आवश्यक अछि।

विसफीमे ताहूसँ सरल मूर्ति एहि प्रकारक राखल जाए सकैछ। विद्यापति पूजा पर बैसल होथि। पूजाक समस्त उपकरण उपस्थित होन्हि तथा आगाँमे वाणेश्वरनाथक शिवलिंग रहैन्ह। ई मूर्ति तखन विसफी सँ किछु उत्तर भेड़वा गाममे स्थापित करब उचित, कारण जे, एतहि विद्यापति वाणेश्वरनाथ महादेवक उपासना कैल करथि। चानन, तिलक, त्रिपुण्ड, रुद्राक्ष आदि सबसँ सुसज्जित रहथि। एहिमे दानपत्रक प्रयोजन नहि किन्तु जन्म ओ मरणतिथि धरि अवश्य पादशिला पर अंकित कए देबाक चाही। दोसरो सरल मूर्तिक कल्पना ई भए सकैत जे महाकवि एक आसन पर काव्य करवाक हेतु बैसल होथि। एक हाथ मे कागज ओ दोसरा हाथमे कलम होन्हि। आगामे मसिपात्र राखल रहन्हि आ भाव ई रहए जे काव्य करवामे एकदम तन्मय छथि। किछु औरो पत्र आगाँमे रहन्हि जाहि सँ ई सूचित हो जे अनेक पद्य बनाए लिखि लेने छथि तथा आगाँक हेतु तन्मयता पूर्वक सोचि रहल छथि। किन्तु एहि प्रकारक चित्र राजवनौली ग्राममे और उत्तम रूपेँ निर्म्मित होइत। तकर चर्चा आगाँ लगले करै छी।

× × × ×

बंगाल मे विद्यापति ओ लखिमाक विषयमे प्रेम सम्बन्धक निर्मूल प्रवाद अछि। एहि सम्बन्ध मे श्रीयुत नगेन्द्रनाथ गुप्त अपन पूर्व संस्करणमे लिखलन्हि अछि—"अनेक पदेर भणिताय शिवसिंह ओ ताहार पत्नी लखिमा अथवा लक्ष्मी देवीर उल्लेख अछि। इहा हइते बंग देशे लोकेर विश्वास जन्मे ये विद्यापति लक्ष्मी देवीर प्रति अनुरक्त छिलेन। येमन चण्डीदास रामतारा ओरफ (उर्फ) रामी राजकिनीर प्रति आसक्त

छिलेन, सेइ रूप विद्यापति लखिमा देवीर प्रेमे तन्मय छिलेन। वैष्णव कविगण एइ प्रवादकेँ प्रश्रय देन। नरहरि लिखियाछेन—'लखिमा गुणहि उपजे वहुरंग। विलसये रूप नारायण संग।' ऐ कवि अन्य पदे लिखिया छेन—'लछिमा रूपिणी सवा इष्ट वस्तु जार। जारे देखि कविता स्फुरये शतधार,। ....''ओ इहो लिखै छथि जे एहि वैष्णव सम्प्रदायक मतेँ यैह मानल जाइछ जे विना लखिमा के देखने विद्यापति के कविता करबाक स्फूर्त्तिये नहि होन्हि।

यद्यपि एहि प्रवादक खण्डन श्री नगेन्द्रनाथ गुप्त महाशय विस्तृत ओ पूर्णरूपे कयने छथि तथापि ओ लिखै छथि जे ई विश्वास एहि देशक लोकमे ततेक जड़ि पकड़ने अछि जे प्रायः कहियो नहि उठत। आइ तकरे फलस्वरूप हम सब न्यू थियेटर्स कलकत्ताक हिन्दी फिल्म विद्यापतिमे ई दृश्य और अतिरंजित रूपेँ देखबाक सूचना पौने छी। मैथिली साहित्य परिषद तकर उचिते विरोध कयलक अछि। विषयान्तर हैबाक कारणेँ हम एहि पर अधिक किछु नहि लिखब परन्तु ई दुश्चेष्टा देखि कविक (राजा बनौली ग्रामक तपश्चर्यापूर्ण जीवनक झांकी अत्यन्त आवश्यक भय उठल अछि। १२ वर्ष एक युगे थीक। ततबा कालमे महाकवि समस्त भागवत अपना हाथेँ नियम पूर्वक एतय लिखलन्हि। ई पोथी अद्यापि हुनक पवित्र जीवनक ज्वलन्त प्रमाण अछि। शुद्धता, स्पष्टता ओ प्राचीनताक हेतु जे एकर महत्त्व छैक, से भिन्ने अपन मूल्य रखैछ। लखिमा छलीहे, आश्रयो एक प्रकारेँ छले। विद्यापति एतहु पोखरि खुनबै छथि। लखिमा पूर्वमे अनेक दास-दासी सँ आवृता अपना अन्तः पुरमे रहैत छलीह। गजपुरक राज-प्रासादमे विद्यापति सँ कहियो भेटोँ होन्हि वा नहि तत्रापि सन्देह। किन्तु राजा बनौलीक पर्णकुटीमे विद्यापतिक संरक्षण मे प्रायः सर्वथा अधीने छलथिन्ह किन्तु एतय एको पद्यक रचना नहि होइछ। पुरादित्यक आदेश केवल नेना सभक हेतु लिखनावलीक रचना होइछ अथवा नियमपूर्वक दिवा-रात्रि केवल भागवत पोथीक लेख होइछ। यैह तपश्चर्या पूर्ण १२ वर्षक जीवन ओतय रहै छन्हि। जखन लखिमा शास्त्रक पूर्णविधि १२ वर्षक प्रतीक्षा कय लै छथि,

तखन हुनक कल्पित संस्कार कय अपने सती होइ छथि। विद्यापति निश्चिन्त होइ छथि। केवल शिवसिंहक बिना हुनक जीवन सर्वथा नीरस भय जाइ छन्हि, महान् परिवर्तन होइ छन्हि। पश्चात् कविक रूपमे विद्यापति दृष्टिगोचर नहि होइ छथि। तखन की रजाबनौलीक तपस्यापूर्ण जीवने ओहि अनुचित, निराधार और दुर्बल प्रवादरूप ओसकण केँ सूर्य्यक प्रखर किरण जकाँ अनायासेँ विलीन नहि करैछ? जे स्वयं लम्पट अछि, तकरा महान व्यक्तिक तपस्या लम्पटते बूझि पड़ौ किन्तु सभ्य संसारक समक्ष सत्यता पर कतेक दिन पर्दा पड़ल रहत? एकर अतिरिक्त अपना हाथेँ एतेक विस्तृत, शुद्ध, स्पष्ट ओ सुन्दर लेख केयो प्राचीन कवि अद्यापि नहि देलन्हि अछि। यदि केवल एहि पोथीक महत्ता पर विचार करी तँ तथापि रजाबनौलीक दृश्य बड़ विशेष बुझना जायत। हँ, एहि मूर्तिक स्थापना ओतहि हैबाक चाही, अन्यत्र नहि। पहिने विसफियेमे मूर्तिन्यास हो, तँ नहिं क्षति, किन्तु ओतहुको ध्यान रहय हमर एतबे आग्रह। ई मूर्ति ६० वर्षक अवस्थाक होमक चाही। राज लाइब्रेरीक हस्तलिखित भागवत पोथीक ठीक आकार-प्रकारक एक पोथी आगामे राखल रहन्हि। एक हाथमे तकर एक पात (तड़िपत्र स्वरूपक) रहन्हि जाहि पर कवि खूब ध्यानस्थ भागवत लीखि रहल होथि। भागवतक दोसर पोथी जकरा देखि लिखि रहल होथि तकर पात खुजल रहैक ओ मसि-पात्रादि उपस्थित रहन्हि। कुशासन पर आसीन होथि—लिखबाक क्रममे बैसल रहथि। मूर्तिमे दरबारी परिच्छद नहि हो प्रत्युत केवल धोती ओ चादरि रहन्हि। चद्दरि प्राचीन रोमन मूर्तिक टोगा जकाँ ओढ़ल रहन्हि, माथ खुजल रहन्हि किन्तु ललाट पर शैव-मार्गी त्रिपुण्ड ओ गर्दनि तथा बाँहि पर रुद्राक्षक माला रहन्हि।

× × × ×

एकर पश्चात् विद्यापतिक एके मूर्ति राज दरबारमे प्रधानतया स्थिर रहै छन्हि। ओ स्वरूप थिकैन्ह नैबेधिकक। शिवसिंहक पश्चात् जे कोनो महाराज वा महारानी राज्यभार लेलन्हि, से विद्यापतिकेँ धर्म्मा-

ध्यक्ष पद पर प्रतिष्ठित रखलन्हि और कुल समय कर्मकाण्ड, नीति वा व्यवहारहिं कानून,क ग्रन्थ सब लिखबामे बितलन्हि। अतः ई स्वरूप ७० वर्षक अवस्थासँ आरम्भ कय प्रायः ९० अथवा १०० वर्षक आयु पर्य्यन्त रहल हैतन्हि। एकरा बाद जतेक भरि जीवित छल हैताह, से अपना गाम मध्य शांत जीवन (Retired Life) बितौने हैताह। अतः राज दरबारक उपर्युक्त ३० वर्षक जोवन शुद्ध नैबैधिकक रूपमे पाओल जाइ छन्हि। एहि स्वरूपक महत्त्व एहि कारणो अछि जे विद्यापतिक यश अपना वैष्णव पदावलीक कारणे कविक रूपमे ततेक व्याप्त भेलन्हि जे नैबेधिकक स्वरूपे प्रच्छन्न भए गेलन्हि। किन्तु जहिना जहिना समय व्यतीत भेल जाइछ, तहिना तहिना एहू जीवनक महत्त्व प्रत्यक्ष भेल जाइछ। चण्डेश्वरक विवादरत्नाकर, वाचस्पति मिश्रक विवाद चिन्तामणि, मिसरू मिश्रक विवादरत्नाकर जहिना मैथिल सम्प्रदायक मान्य कानूनी ग्रन्थ मानल जाइछ, तहिना आब विद्यापतिक विभागसारो माननीय भए रहल अछि। एकर अतिरिक्त ई स्वरूप केवल हुनका दीर्घ जीवनहिक प्रतिनिधि नहि अछि, प्रत्युत हुनका पूर्व्वजहुक अनुकूल अछि अतः एकर महत्ता कोनहु प्रकारेँ कम नहि अछि। अस्तु तेँ ई स्वरूप केहन होमक चाही—प्रतिष्ठित ओ वयोवृद्ध राजपण्डितक स्वरूपे एक प्रतीक होमक चाही। ई मूर्त्ति पद्मासनासी शाक्त शैव स्मार्त्तक चिन्हसँ अलंकृत रहवाक चाही तथा एकर स्थापना गजरथपुरमे हैब उचित।

× × ×

महाकवि जखन राजदरबार सँ विरत भेल हैताह ओ अपना परिजनक संग शांत जोवन वितवैत हैताह तखनहि शंकर भगवानक नचारी इत्यादिक गीत अधिक बनौने हैताह। यद्यपि ई सब गीत पूर्व्वहु समय-समय पर बनौने हेताह, तथापि एहि शांत जीवन मे एकर रचना अधिक भेल हैत। कारण जे एहिमे शिवभक्तिक अतिरिक्त दोसर काजे नहि छलन्हि। दिवारात्रि महादेवक पूजा-अर्चा नचारीगान ओ भिन्न-भिन्न स्थानक दर्शनादि एतबे व्यापार छलन्हि। बुझना जाइछ एही स्थितिमे 'उगना' नामक सेवक जे महादेवक अवतार मानल जाइछ, अन्तर्ध्यान

भेल हेतन्हि। ई स्थान पण्डौल स्टेशन सँ पूर्व भवानीपुर मे कहल जाइछ। ओतए उग्रनाथ महादेवक पूर्वहुसँ एक मन्दिर छल। एम्हर पुनर्वार निर्म्मित भेल अछि। उगनाक विलुप्त भेला पर विद्यापति पागल जकाँ कानए लगलाह। की उत्तम हो यदि एक मूर्त्ति एही भावक उग्रनाथ महादेवक समीप न्यस्त हो? ई मूर्ति एहन हो जाहिसँ सूचित होइक जे महाकवि कोनो महादेवक दर्शनार्थ उगनाक संग पैदल जाइ छलाह, बाटमे कतहु बैसि गेलाह। ताहीठाम उगना विलीन भए गेलथिन्ह। ओ बैसल-वैसल विलाप कए रहल छथि। आगाँ से वस्त्रादिक मोटा रहैन्ह जे उगना पहिनें अपना कपार पर नेने जाइ छल और जकरा छोड़ि ओ विलीन भए जाइछ। महाकविक हाथमे एक ग्लास रहैन्ह, आगाँ मे लोटा, जाहिसँ ई सूचित होइ जे उगना जल आनि कए पीबाक हेतु देलकन्हि, किछु पीबो कैलन्हि किन्तु कथान्तरें जखन उगना अन्तर्ध्यान भए जाइ छथि तखन कवि हुनका स्वयं महादेव बुझि विलाप कै रहल होथि। यैह भाव एहि मूर्त्तिक होमक चाही।

महाकविक अंतिमो दृश्य अलौकिके अछि। जगत्प्रसिद्ध घटना अछि जे वाजितपुर मे महाकवि गंगालाभ कएलन्हि। किम्वदन्ती अछि जे गंगाजीक धार ओतयसँ ३ कोस दक्षिण छल। दैवयोग सँ एक धार वाजितपुरमे फूटि पड़ल आ कविकें सद्यः गंगालाभ भेलन्हि। अस्तु, एतय अपन सदा-सर्वदाक महादेव वाणेश्वरनाथक ध्यान करैत महाकवि अपन जीवन-लीला संवरण कएलन्हि तें, हुनका देहावसानक पश्चात् एहिठाम एक वाणेश्वरनाथ महादेवक मन्दिर ओ महाकवि समाधिस्थान निर्म्मित भेल, जे दूनू क्रमशः नष्टप्राय भए गेल। महादेवक नामो क्रमः अपभ्रंश होइत-होइत बालेसरनाथ भए गेल, सौभाग्यवश समस्तीपुर प्रांत केओटा क श्रीयुत् बालेश्वर बाबू जमीन्दारक जन्म एही वाणेश्वरनाथ उर्फ बालेश्वरनाथक उपासनासँ भेलन्हि जाहि कारणे हिनक नामो 'वालेश्वर' राखल गेलन्हि। पूर्वक जीर्ण मन्दिरक उत्तम रूपें उद्धार कैल गेल जे सम्प्रति वाजितपुर मे बालेश्वर नाथक मन्दिर रूपें ठाढ़ अछि। एक मात्र कसरि ई अछि जे कविक समाधि अद्यापि भग्नावशिष्टे अछि। एकर जीर्णो-

द्धार नहि भेल अछि। किछु दिन पूर्व मैथिली साहित्य परिषद एक विद्यापति जयन्ती मे ई प्रस्ताव कएने छल जे वाजितपुरक मन्दिर मे कविक जन्म-मरणादिक तिथि अङ्कित कए एक शिलालेख जड़ि देल जाए। श्रीयुत कुमार गंगानन्दसिंहजी स्वीकार कएलन्हि जकर प्रयत्न हैब अत्यन्त आवश्यक अछि।

अस्तु, एखनहु समय छैक जे एहि समाधिक जीर्णोद्धार कैल जाए तथा कविक महाप्रयाण अंकित कैल जाए। एहि मे मूर्तिकारक कला पूर्ण रीतियें अभिव्यक्त हेबाक चाही। कविक अवस्था एहि दिन १०० सँ ऊपर १३० वर्षक भीतर छलन्हि। तत्रत्य वाणेश्वरनाथ महादेवक दिशि मुँह कैने ध्यानस्थ भेल पद्मासनासीन रहथि। महाप्रस्थानक भाव मुखाकृति सँ सूचित होइत रहए। उत्तम होइत जे ई मूर्त्ति जानुपर्य्यन्त गङ्गाक धार मे निमग्न देखाओल जाइत, जाहि सँ गङ्गालाभक दृश्यो प्रत्यक्ष होइत रहए। माला चानन आदि साम्प्रदायिक रहए।

ऊपर मे महाकवि विद्यापतिक ५-६ गोट मुख्य-मुख्य चित्र अंकित कैल गेल अछि। यदि एहूमे सँ केवल दू गोट अपेक्षित हो तँ हमरा बुझने एक मूर्त्ति बिसफीक हेतु कतोक चित्र देल गेल अछि, ताहि मे सब सँ उपयुक्त ओ चित्र हैत जाहि मे विद्यापति बिसफी गामक दान-पत्र अपना कुलदेवी विश्वेश्वरी देवी केँ अर्पण करै छथि। यावत् मैथिल जाति कम सँ कम ई दू मूर्त्ति स्थापित नहि करैछ तावत ओकरा विद्यापति केँ अपन कहबाक किछु अधिकार नहि छैक। देखी! के माइक लाल एहन जातीय कार्यक बोड़ा उठाय देशक लाज रखै छथि?

आब चित्रक किछु विशेषो अंश पर विचार कै लेब एहिठाम आवश्यक। चित्र बिसफीक हो अथवा कोनोठामक, कविक आकृतिक अनुमान एहि रूपक होमक चाही। ओ दीर्घजीवी छलाह अतः विशालकाय अवश्य हैताह। छोट कदक आदमी एतेक दीर्घजीवी कम देखल जाइछ। अतः साधारण मापक ओ नहि हैताह। नमछोर हैताह किन्तु स्थूल नहि। तकर कारण ई जे आरम्भहिसँ ओ युद्ध क्षेत्रादिमे गेल करथि तथा स्वस्थ

शरीरक छलाह जें हेतु एतेक दीर्घजीवी भेलाह। अतः ओ व्यायामशील अवश्य मानल जेताह, तें हुनक स्थूल हैब असंगत बुझना जाइछ। हँ, पूर्ण स्वस्थ लोकक देह जेहन पचल, स्फूर्तिमय ओ सुडौल होइछ से अवश्य छल हेतन्हि। वंशपरम्परासँ धुरन्धर विद्वानक वंशज हैबाक कारणे एवं आजीवन राजकवि, राज पण्डित आदि हैबाक कारणे ओ परम सुखी छलाह, अतः शरीरसँ सुकुमारता सेहो अवश्य टपकैत हेतन्हि। तें आकृतिक क्रमें ओ खूब नाम, स्वस्थ, सुडौल, सुकुमार, ओ गौर हेताह।

परम विद्वान ओ अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न हेबाक कारणें आकृति-विज्ञानक मतें हुनक माथ बड़ पैघ, ललाट अत्यन्त प्रशस्त और कान छोट-छोट हेतन्हि। कपार परक केश सेहो उड़ल हेतन्हि। कवि हैबाक अतिरिक्त ओ दार्शनिक तथा नैबंधिको छलाह। अतः हुनक नाक और ठोर मोट-मोट अवश्य हेतन्हि। आँखि अत्यन्त प्रभावपूर्ण ओ दयालु हेतन्हि। बुझना जाइछ जे महाकवि ओतेक सुन्दर नहिं छलाह। बाबू श्रीगंगापतिसिंहजी, बी० ए०, एक लेख मे हुनक किछु फारसी कविताक उल्लेख कएने छथि जाहिसँ सूचित होइछ जे शाहीदरबारमे प्रायः योवराज नामक एक फारसीक कवि छल। विद्यापतिकेँ जखन ओ अपन कोनो काव्य-कौशल सँ हराय नहि सकल, तखन निरुपाय भए एक पद्य पढ़लक जकर भाव ई छलैक जे 'हे कवि अहाँ कतबो सुन्दर कविता करो, अहाँक रूप हमर तुल्य नहि भए सकत। अहाँ हमरा समक्ष अत्यन्त कुरूप छी।' एहि पर महाकवि एक पद्य फारसीये मे बनाय कए तकर जबाव देलथिन्ह जकर भाव ई छलैक जे सिंह और राजामे, दर्पण ओ सूर्य्यमे, हींग तथा कपूरमे, तालाब एवं समुद्रमे जे अंतर छैक से अवश्ये अहाँ और हमरामे अछि। अर्थात अहाँ केवल महकारीक फूल छी, सुगन्धि किछु नहि अछि। शारीरिक सुन्दरतासँ आत्मा ओ मस्तिष्कक शुन्दरता अवश्ये स्पृहणीय थीक इत्यादि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे ओ ततेक सुन्दर नहि छलाह किन्तु एकर इहो अर्थ नहि भए सकैछ जे ओ कुरूप होथि। दिल्ली दरबार काश्मीरी ओ अफगानो सुन्दरताक केन्द्र छल। एहि देशक सुन्दरो पुरुष

ओतेय कुरूप बनि जाय तँ आश्चर्य नहि। अतः ओ साधारणे सुन्दर हैताह, उत्कृष्ट रीतियेँ नहि। संसारक प्रायः सब महापुरुष सुन्दरतासँ वंचिते छथि। सुतरां विद्यापतिक मूर्त्तिनिर्माणमे सुन्दरताक ध्यान राखब गौण विषय थीक। सौन्दर्यपूर्ण बनैबाक प्रयत्नो व्यर्थ। हँ, लेखनीवृत्ति ओ सुखभोगक कारणेँ हाथ, पैर आदि समस्त अंग कोमल अवश्य छलन्हि। एकर अतिरिक्त कविगण बहुधा माथ ओ दाढ़ीक केश विशेष रीतियेँ कटबै छथि वा राखै छथि। तैँ यदि माथ पर पुरना फैशनक जुल्फी और दाढ़ीमे गलमोछ रहन्हि तँ युवावस्थाक हेतु समुचिते हैत।

संक्षेपमे एहि विषयक हमर यैह धारणा अछि। आशा अछि एतबा आलोचना तत्काल पर्य्याप्त बूझल जाएत। *

परिशिष्ट—'य'

महाकवि विद्यापतिक भाषा

[महाकवि विद्यापति युगानुरूप संस्कृत, प्राकृत एवं अवहट्ट रचनाक संग मैथिली केँ साहित्यिक गरिमा प्रदान कय एक सुनिश्चित दृष्टिकोणक परिचय देलनि। प्रस्तुत अछि विद्यापतिक भाषा पर बाबू भोलालाल दासक विचार जकरा ७ जनवरी १९३८ ई०क 'मिथिला मिहिर'क अंक सँ यथावत उद्धृत कयल गेल अछि]

विद्यापति अपन प्रथम काव्य ग्रन्थ 'कीर्तिलता' मे लिखने छथि जे—

सक्कय वाणी बुहअन भावइ
पाउण रस को मम्म न पावइ
देसिल बयना सब जन मिट्ठा
तैं तैसन जम्पओ अवहट्टा।

एहि मे विद्यापति संस्कृत, प्राकृत ओ अबहट्टक चर्चा कयने छथि, अथच अवहट्ट केँ देशी भाषा कहने छथि। किन्तु वैष्णव पदावली ओ शिव-शक्तिक भजनावलि ताहू भाषा मे नहि अछि। संगहि ईहो कहब आवश्यक जे पदावली तथा नचारीक भाषा आइकाल्हिक मैथिली सँ बड़ भिन्न अछि। एक तँ कालान्तरें पदावलीक पाठ मे अनेक परिवर्तन होइत आएल अछि जाहि सँ विद्यापति-युगक भाषाक यथार्थ स्वरूप बुझवा मे कठिनता होइत अछि, ताहू पर प्राचीन मैथिलीक अनेक प्रभेद एकरा और जटिल बना दैत अछि। यैह कारण अछि जे आइ विद्या-

पती पदावलीक एतेक पाठ भेद देखना जाइछ। सौभाग्यवश जहिना-जहिना प्राचीन पोथी सभक अनुसन्धान ओ प्रकाशन भेल जाइछ तहिना तहिना तत्कालीन भाषाक शुद्ध रूप प्रत्यक्ष भेल जाइछ।

ई विषय यथार्थ रूपें बुझवाक हेतु भाषा विज्ञानक ओहि मुख्य नियमक स्मरण राखब आवश्यक जकरा अनुकूल चलित भाषा सँ साहित्यिक भाषा सँ भिन्न-भिन्न बोलीक सृष्टि होइत रहैछ। उपमा-उपमेय रूपें ई उचिते कहल गेल अछि जे लोकभाषा यदि कोनो सरिताक प्रवाह थीक तें साहित्यिक भाषा व्याकरणादिक नियम सँ नियन्त्रित एक ह्रद वा सरोवर थीक। भाषा पहिने होइछ, साहित्य पाछाँ। अनेक काल सँ अनियं-मित ओ स्वच्छन्द गतियें प्रवाहित लोकभाषाक प्रयोग क्रमशः स्थिर ओ क्रमबद्ध होइछ, पश्चात् साहित्यिक रचना भेने व्याकरणादिक नियम बनैछ तथा ओकर रूप पूर्ण रूपें स्थिर भऽ जाइछ, ओकर स्वाभाविक प्रवाह रूकि जाइत छैक ओ विद्वन्मण्डली वा अल्पसंख्यक सभ्य समाजक भाषा भै जाइछ। किन्तु जनताक भाषा अनवरत स्वाभाविक रीतिमे प्रवाहित होइत रहैछ, ओ व्याकरणादि शास्त्रक अपेक्षा नहि रखैछ। कालान्तरें ओ लोक-भाषा अपना साहित्यिक रूप सँ भिन्न पड़ि जाइछ। ई अंतर जखन अधिक बढ़ि जाइछ तखन जनतामे अपना मन्तव्य कें प्रत्यक्ष रूपें प्रकाशित केनिहार धर्म्मोपदेशक वा साहित्यकार सबहुँ ताही लोक भाषा मे लिखब-पढ़ब आरम्भ करै छथि तथा पुनर्वार साहित्यिक भै जाइछ। ई प्रवाह कोनो जीवित जातिक जीवन मे सर्वदा बनले रहै।

अस्तु, विद्यापतिक आविर्भाव जाहि युग मे भेल छल से मिथिलाक हेतु स्वर्ण-युग छल। वंश परम्परा सँ ओ संस्कृत भाषाक उपासक ओ प्रशंसक छलाह किन्तु वास्तविक स्थिति ई छल जे लोक भाषा संस्कृतक कोन कथा प्राकृतहु सँ अनेक दूर पड़ि गेल छल। सभ्य समाजक भाषा वाहि दिने एक प्रकारक अपभ्रंश छलैक जकर नाम अवहट्ट वा अभट्ट छल।

ओ साधारण लोकक भाषा ताहू सँ अधिक श्रुतिमधुर मैथिली छल, जकरा हम सब आइ काल्हि प्राचीन मैथिली कहि सकै छी।

प्रथम काव्य रचना मे विद्यापतिक समक्ष ई प्रश्न उग्र रूपें ठाढ़ भेलन्हि। संस्कृत बड़ थोड़ व्यक्तिक बोधगम्य छल। प्राकृतहु मे ओ सरसता नहि छलैक अतः विद्यापति तत्कालीन साहित्यिक भाषा अवहट्ट मे अपन काव्य आरम्भ कैलन्हि। कारण ई भाषा चलित मैथिलीक अति सन्निकट छल। एहि प्रकारक अपभ्रंश भाषा मे कीर्तिलताक अतिरिक्त कीर्तिपताकाओ विद्यापति लिखलन्हि। किन्तु एकर साहित्य एतवहि मे आवद्ध नहि अछि। हुनका सँ पूर्व कविशेखराचार्य्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर वर्ण-रत्नाकर नामक ग्रन्थ एहि भाषामे लिखने छलाह। ताहू सँ पूर्व दक्षिण बिहारक बौद्धाचार्य लोकनि एकर प्रयोग चर्य्या साहित्य मे कयने छथि जाहि मे सँ अनेक व्यक्तिक उल्लेख वर्ण-रत्नाकर मे पाओल जाइछ। यद्यपि समयाभावें हम एहि ग्रन्थक अवतरण दै साम्य नहि देखा सकलहुँ तथापि मोटामोटी एतवा कहि सकै छी जे एहि सब ग्रन्थक भाषा पदावलीक प्राचीन मैथिली ओ पूर्वक मागधी प्राकृत मध्यवर्त्तिनी भाषाक अस्तित्व प्रायः निश्चित रूपें प्रमाणित करैछ।

एहि भाषा कें मैथिली अपभ्रंश कही, अवहट्ट कही अथवा जाहि कोनो नाम सँ एकरा अभिहित करी, ई केवल मैथिलियेक जननी नहि थीक प्रत्युत बंगला, आसामी तथा उड़िया आदि समस्त पूर्वीय भाषावर्गक जननी थीक। यैह कारण थीक जे चर्य्या-साहित्यक भाषा कें एहि सब भाषाक पूर्वरूप मानल जाइछ। एहि मे अर्ध मागधी प्राकृतिहुक पुट छैक जाहि कारणे हिन्दीक किछु विद्वान् एकरा हिन्दीक पूर्व रूप मानैत छथि। यथार्थ पूछी तँ एहि युगमे अर्धांगीन भाषा-परिवारक रूप-रेखा स्पष्ट नहि भेल छल। शैशवावस्थाक कारणे सब मे अनेक समानता छलैक। किछु सभक जन्म भए गेल छलैक। विद्यापतिक समय मे चलित लोक-भाषा सँ अर्द्धमागधी सँ द्रुतगतिये अपन पिण्ड छोड़ा रहल

छल, मैथिलीक रूप रेखा स्पष्ट भए गेल छलैक, किन्तु ई साहित्यिक नहि भेल छल।

ओ शीघ्र देखलन्हि जे वास्तविक प्रयोग सँ अवहट्टो बड़ दूर अछि, सरसता रहितहु जोकरामे मातृभाषाक स्वाभाविकता नहि छैक। अतः शीघ्रे ओ तकर परित्याग कएलन्हि तथा चलित मैथिलीमे पदावलीक रचना आरम्भ कएलन्हि। जहिना आजुक युगमे कवीन्द्र रवीन्द्र कें बंगलाक एक चलित भेद कें साहित्यिक बनैबाक श्रेय छन्हि, तहिना विद्यापतिहु कें सर्वप्रथम मैथिली कें साहित्यिक बनैबाक श्रेय छन्हि। महाकवि वा महापुरुषक अनुरूपे ई कार्य्य साहसपूर्ण ओ प्रशंसनीय अछि। विद्यापति कें छोड़ि ई कार्य्य प्रायः आन केओ व्यक्ति नहि कए सकै छलाह। अस्तु, तँ हुनक मैथिलीक स्वरूप की छल? तुलना कैला उत्तर सहजहि बोध हैत जे ई मैथिली सँ अत्यन्त दूर अछि। उचितो थीक। ई प्रायः ५०० वर्षक भाषा थीक। एहि दीर्घ कालमे परिवर्त्तनक ओ नियम चलिये रहल अछि ओ रहवे करत, तैं एहिमे कोनो आश्चर्यक विषय नहि।

देश ओ काल भेदें विद्यापतिक पदावलीहुक भाषा अनेक रूपमे पाओल जाइछ। किन्तु कतोक प्राचीन हस्तलिखित प्रति उपलब्ध भए रहल अछि। तत्सम्बन्धी आनो ग्रन्थक प्रकाशन भए रहल अछि। सुतरां ई कहबामे कनेको अत्युक्ति नहि अछि जे धान पाकल तैयार अछि, काटनिहारक अभाव अछि। गवेषणाक ई क्षेत्र सुधी-समाज कें उच्च स्वरें अनुसन्धानक हेतु आह्वान कै रहल अछि। सौभाग्यक विषय अछि जे विद्यापतिक भक्त गण तीन-तीन भाषा क्षेत्रमे विद्यमान अथि। मैथिली वा हिन्दी संसार यद्यपि अद्यपर्य्यन्त एहि महाकविक ओतेक पारख नहि कयलक अछि जतबा बंग साहित्य समाज। तथापि आब ओहि प्रकारक व्याकुलताक कोनो कारण नहिं अछि जे २८ वर्ष पूर्व श्रीयुत नगेन्द्र नाथ गुप्त महोदय कें ई कहबा पर बाध्य कयने छन्हि।

एकटा मुस्किलेर मिथिलार कथा एइ जे मिथिलार पक्ष हइते केह कोनो दाबी करे ना। विद्यापति ये मिथिला वासी ए कथाओ मिथिलार कोनो लेखक अमादेर साक्षाते करेन नाइ। बाङ्गालीर अनुसन्धानेइ ए संवाद प्रथमे जानायाय। चेष्टा ओ परिश्रम करिया मिथिलाय अनुसन्धान करिले विद्यापतिर विस्तर पदे पाओया याय एवं ताँहा सम्बन्धे अनेक जानिते पारा याय किन्तु आमरा यदि विद्यापति के बंग वासीइ बलिया आसिताम, ताहा हइलेउ बोध हय मिथिला हइते कोन प्रतिवाद आसित ना। केवल पुरुष परीक्षार भूमिकाय चन्द्रकवि लिखिया छेन कवि विद्यापतिर गीतावली देशान्तरे मुद्रित हओयाते अत्यन्त अशुद्ध हइया गियाछे। बंग देशेर नाम पर्य्यन्त करेन नाइ। एइ उपेक्षा ओ औदासीन्ये बिस्मयेर कोन कारण नाइ, कारण मिथिलार काछे बंग देश नितान्त शिशु। मिथिलार कवि केइ आमरा बांगलार आदि कवि बलिया गौरव करि। चन्द्र कविर सहित विद्यापतिर भाषा सम्बन्धे आमार पत्रादि विनिमय हय। तिनि बलेन विद्यापतिर भाषाए आकार नाना कोथाओ प्राकृतेर मत अथवा कोनो प्राकृत ताहाओ निणय करा याय ना। *

परिशिष्ट 'र'

लोक-शिक्षा मे मैथिलीक स्थान

[लोक-शिक्षा मे मैथिलीक स्थान निरूपित करैत मातृभाषाक माध्यमे शिक्षा देबाक महत्त्व पर आइ सँ ३६ वर्ष पूर्व विचार प्रस्तुत कयने छलाह बाबू भोलालाल दास जे आजुक परिवेश मे सेहो ओतबे समीचीन जानि पड़ैछ। प्रस्तुत अछि 'मिथिला मिहिर'क अप्रैल १६४४क अंक सँ उद्धृत हुनक यथावत् वक्तव्य जे पटोरी (भागलपुर) मैथिली पुस्तकालयक उद्‌घाटनक अवसर पर देल गेल छल।]

एकटा बड़ महत्त्वपूर्ण प्रश्न ई उठैत अछि जे जनताक शिक्षा की बिना मातृभाषाक माध्यमे भए सकैछ? देशक प्रत्येक महान व्यक्ति कें ई प्रश्न किछु दिन पूर्वहि सँ आह्वान करैत आयल छैन्हि। कारण जे कतबो व्यापक, साध्य एवं उपयोगी अङ्ग्रेजी भाषा रहओ ओ एहि देशक हेतु सार्वजनिक भाषा नहि भए सकैछ। प्रत्येक विद्वान् आओर राष्ट्र-कर्मी एहि सिद्धान्त कें स्वीकार करबा मे सम्मत छथि। आनो दृष्टि मे वर्त्तमान शिक्षापद्धतिक एक योजना गेल अछि। किछु वर्ष पूर्वहि तएँ हेतु महात्मा गांधी प्रभृति देशक प्रधान नेतागण भावी शिक्षा पद्धतिक एक योजना तैयार कएलैन्हि जे सम्प्रति 'वर्धा स्कीमक, नामे प्रख्यात अछि। यहि योजनाक ध्येय छैक जनताक अनिवार्य शिक्षा। अंग्रेजी सरकार १५०-२०० वर्षक अभ्यन्तर १०-१२ प्रतिशत सँ अधिक लोक कें शिक्षित नहि कए सकल तएँ अनिवार्य शिक्षाक अनिवार्यता। अस्तु, अन्यान्य विषयक समावेश करैत वर्धा पद्धति ७म कक्षा पर्य्यन्त मातृभाषाक द्वारा शिक्षा देवाक विधान कएलक अछि। यावत् प्रत्येक

कांग्रेस प्रान्त मे शिक्षा सुधारक हेतु प्रान्तीय कमिटी बनाए आ सबकेँ मिलाए एक अखिल भारतीय कमिटीक निर्माण हो वा ई सब अपन-अपन मन्तव्य प्रकाशित करथि तावत् कांग्रेश मन्त्रि-मंडल सब ठाम सँ टूटि गेल किन्तु सरकार द्वारा प्रायः तकर कार्यक्रम कतहु नहि रोकल छैक। उपस्थित विषय केँ बुझबाक हेतु एतबा कहि प्रकृत विषय पर अबैत छी। बिहारे प्रान्त मुदा बड़ विचित्र अछि। कहियो "बुद्ध" छलहुँ मुदा एखन तँ बुद्धुए बुझल जाए रहल छी। अन्यथा डिक्री तैयार हएबाक पूर्व कोन एहन प्रान्त अछि जतए इजरायक क्रिया कार्यगत हो ? एतय शिक्षा सुधार कमिटीक व्यवस्थो तावत् नहि प्रकाशित भेल कि हिन्दुस्तानी कमिटीक निर्माण भए गेल ओ तकरा तेसर कक्षा धरि प्रत्येक विषयक एवं ताहि सँ ऊपर नवम कक्षा पर्य्यन्त असाहित्यिक (**Non-language**) विषयक हिन्दुस्तानी पुस्तक निर्मित करएबाक ओ स्वीकृत करबाक अधिकार दए देल गेलैक। एकर की परिणाम भेल अछि वा होयत से शिक्षक वा शिक्षिते वर्ग कहताह मुदा ई विषय कोनहु रूपेँ उपेक्ष्य नहि अछि।

आब कनेक शिक्षा-निर्माण-कमिटीक व्यवस्थो सुनि लिय। १७ मार्च १९३९क पूर्णाधिवेशन मे (जाहि मे स्वयं डा० राजेन्द्र प्रसाद जी उपस्थित छलाह) सर्व सम्मति सँ ई स्वीकृत भेल जे सातम कक्षा पर्य्यन्त मैथिली भाषी नेनाक शिक्षा मैथिली द्वारा हो किन्तु कोनो विचित्र गतिएँ १९४० मे एहि निर्णय केँ उनटि देल गेल। किमधिकम्, डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ताहि उलट-फेर मे सहमत भए गेलाह ! कमिटी मे एक मात्र प्रो० अमर नाथ झा जी मैथिली बजनिहार छलाह अतः ओ एहि उलट-फेर सँ सहमत नहि भेलथिन्ह। हुनका एहि विषय पर अपन विरोध सूचक व्यवस्था देबाक अधिकार देल गेलैन्हि। फलतः हुनक अखण्डनीय नोट ओहि मे लागल अछि, जाहि सँ मैथिलीक योग्यता, अधिकार ओ अनिवार्यता संगहि ओकरा प्रति कएल गेल अनर्गल अत्याचार प्रत्यक्ष अछि।

उक्त कमिटी अनिवार्य्य शिक्षाक जे योजना एहि रिपोर्टक द्वारा

उपस्थित कएने छैक से व्ययसाध्य छैक। तावत् विश्वव्यापी युद्ध भारतक द्वारदेशमे आवि तुलाएल। सेक्रेटेरियटक कोनहु कोनमे ई रिपोर्ट सड़ि रहल अछि। सरकार एकरा मंजूर करओ कोना? मुदा तएँ की? निर्णय (जजमेंट) हो वा नहि, जयपत्र (डिक्री) प्रस्तुत कएल जाओ वा नहि, हिन्दुस्तानी कमिटी कार्य्यकारिणी न्यायशालाक काज कइए रहल अछि। ओ संस्था ने केवल मैथिलीक अपितु हिन्दी पर्य्यन्तक हत्या भोथ छुरी सँ कए रहल अछि। सरकारकेँ एहि सभक कोन प्रयोजन छन्हि, ई तँ प्रत्येक विहारवासीक गंभीर चिन्ताक विषय थीक।

हम हिन्दीक कोन कथा हिन्दुस्तानी पर्य्यन्तक बिरोधी नहि छी। किछु दिन पूर्व जखन प्रान्तीय विश्वविद्यालय द्वारा मैथिलीक स्वीकृतिक हेतु यत्नवान छलहुँ तँ एहि प्रकारक मिथ्या धारणा हमरा विषयमे कतोक गोटाकेँ छलैन्हि मुदा ताहि युगक आव प्रायः अवसान भए गेल छैक। वर्धा स्कीममे मातृभाषा ओ राष्ट्र-भाषाक स्थान निर्द्धारित भय गेने एहि भ्रमक भाव समावेशो नहि छैक किन्तु शिक्षा बिभागक अधिकारी-वर्गकेँ एखनहुँ मातृभाषाक ई अधिकार भयावह, अमंगलसूचक एवं अप्रयोजक बूझि पड़ैत छैन्हि। हुनका भ्रम छैन्हि जे मैथिलीक स्वीकृति देने भोजपुरी ओ मगही सेहो ठाढ़ होयत एवं बिहार प्रांतमे भाषाक अनैक्य होयत। ई संदेह यथार्थ पूछी तँ आनो प्रांतक हेतु उपयुक्त छैक, कारण जे कतोक प्रांत मे दू-दू तीन-तीन मातृभाषाक व्यवहार छैक। महात्मा गांधी आदि वर्द्धा योजनाक सूत्रधार गण एहि शंका सँ अनभिज्ञ नहि छलाह, तथापि मातृभाषाक विना जनशिक्षाक कल्पना असम्भव देखि ओ सब मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषाक पारस्परिक स्थान-निर्देश कए देल-थिन्ह। खरे महाशयक सभापतित्वमे जखन दिल्ली मध्य अखिल भारतीय शिक्षा सुधार कमिटीक अधिवेशन भेल तँ एहि कठिनताकेँ दृष्टिमे राखि ई निर्णय भेलैक जे मातृभाषाक अर्थ प्रत्येक बोली नहि प्रत्युत वैह बोली थीक जकरा किछु साहित्य छैक। ओ लिखैत छथि—

'The Wardha scheme lays down that the medium of

instruction shall be the mothertongue, that is the vernacular of the pupil. The Abbot-wood Report makes the same recommendation and few will be found to disagree. The committee unanimously approve, though they are aware that in certain provinces a difficulty might arise as more than one vernacular may be spoken. In making this reccommendation the Committee will emphasise that the term "vernacular" connotes the literary language and not a dialect.

आव विचारवाक बात अछि जे बिहार मे मैथिलीक अतिरिक्त कोन भाषा साहित्यिक अछि। डा० श्री अमरनाथ झा उक्त उद्धरण दैत अपना विरोध सूचक नोटमे लिखैत छथि। "Magahi and Bhojpure are not literary language and they are ruled out" कहए नहि पड़त जे बिहार मे केवल मात्र मैथिली साहित्यिक मातृभाषा अछि, सुतरां उपर्युक्त शंकाक स्थान नहि छैक। तथापि छोट-छोट दुधमुहाँ नेना सभक हेतु मातृभाषाक स्थानमे हिन्दुस्तानी शिक्षाक माध्यम राखल गेल अछि! हिन्दी यावत् छलैक तावत् बात एक तरहक छलैक कारण जे हिन्दीक संस्कृत सँ अधिक सम्बन्ध छैक किन्तु हिन्दुस्तानी तँ ताहू सँ दूर पड़ि जाइत छैक। कोनो उच्च कक्षे मध्य उपयुक्त भए सकैछ, जखन विद्यार्थी कें देश-विदेशक बहुत किछु ज्ञान भए जाइ छैन्हि किन्तु विचित्रता तँ ई अछि जे कमिटी मातृभाषाक सिद्धातकें सर्वतोभावेन, स्वीकार करैत ई निर्णय देने अछि! किमाश्चर्य्यगतः परम्? कमिटी अपना रिपोर्टक धारा ११० मे लिखैत अछि जे :—

During this period of 7 years Basic Education, the question of the medium of instruction need not cause us any great difficulty. It is an accepted principle of proper education that knowledge should be imparted through the

medium of the mother-tongue. We indorse it completely and we would admit of few exceptions.

एवं मातृभाषाक द्वारा ७ वर्ष पर्य्यन्त शिक्षा देवाक सिद्धान्तकेँ पूर्ण रूपें स्वीकृत करैत विहारक ई भाग्यविधाता लोकनि हिन्दुस्तानीए शिक्षाक माध्यम स्वीकृत कएलैन्हि अछि। एकर अर्थ ई भेल जे हिन्दी वा हिन्दुस्तानी हमर मातृभाषाक थीक। डा० सच्चिदानन्द सिंह अपना नोटमे स्पष्ट लिखने छथि जे 'हिन्दी विहारक मातृभाषा नहि। ई एक पश्चिमी भाषा थीक जकरा हम राजनैतिक कारणें किछु काजक हेतु अपनौने छी। वस्तुतः हिन्दी वा हिन्दुस्तानी केँ विहार राष्ट्र-भाषा मानि सकैछ, मातृभाषा कोना मानत? आओर यदि कोनो भविष्यमे जन-साधारणक अनिवार्य्य शिक्षाक योजना हेतैक तँ बिना मैथिलीकेँ वर्ह्वा स्कीमक स्थान देने कोनोटा उपाय नहि छैक। आइ ने काल्हि ओहो दिन अएवे करतैक।

सरकारी शिक्षा विभागक ई नीति किछु दिन आओर रहतैक मुदा हमरा सभक दृष्टि दूरदर्शी होमक चाही। कोनो प्रकारक गैर-सरकारी शिक्षा प्रचारक उद्योगमे हम सब मातृभाषा ओ राष्ट्रभाषाक स्थान मे विपर्यय नहि आबै दी, ई हमर अनिवार्य्य कर्त्तव्य होमक चाही। संख्या, एकर प्राचीन साहित्यक उत्कर्ष, एकर नैसर्गिक शक्ति, एकर दूरदेशी प्रभाव आदि सब किछु आश्चर्यजनक अछि। नेपाल, बंगाल, उड़िसा ओ आसाम पर एखनहुँ एकर पर्य्याप्त प्रभाव छैक। तखन की ई अपना घरहिमे विस्मृत, आनादृत ओ त्यक्त रहत? हमरा जनैत एकरा द्वारा समाजक ओ सब अंग, जकरा शिक्षाक नितान्त आवश्यकता छैक आओर जकर चर्चा हम पूर्वमे कए चुकल छी, जाहि द्रुत गतियें शिक्षित भए सकत ततवा आन कोनो भाषाक द्वारा नहि। तएँ हेतु हम अपने सबहुँ सँ मैथिली ग्रन्थ संग्रहक विशेष अनुरोध करब। अपना देहातमे एखनहुँ लोरिक, दयालसिंह, सोठि कुमरि, नौका, बिहुला, सलहेस आदिक

शतावधि ग्राम्य गीतक प्रचार अछि किन्तु ओ लुप्त भेल जाइछ। मरसिया अर्थात् दाहा मे मैथिली गीतक प्रचार अछि। एहि सबकेँ लिपिबद्ध कए लेब एकान्त आवश्यक अछि।

हमरा बुझने बड़ शुभलक्षण थीक जे आब हिन्दीक अभिभावक लोकनिमे विकेन्द्री करणक भावना प्रबल वेगें जागृत भए रहल छैन्हि। आब ओ सब बूझि रहलाह अछि जे वस्तुतः प्रान्तीय मातृभाषाकेँ दबौने हिन्दीक उन्नति नहि भय सकैछ आओर ने हिन्दी-उर्दूक प्रतिद्वन्द्विते हँटत। आब केवल प्रयागकेँ हिन्दीक कार्य्य क्षेत्र नहि मानि प्रांत-प्रांतमे मातृभाषाक आभिवृद्धि द्वारा राष्ट्र ओ राष्ट्रभाषाक मंगलमय भविष्य निर्मित भए रहल अछि। जहिना सोवियत रूस आइ अपना सोलहो प्रान्तकेँ पूर्ण स्वाधीनता दए देनेँ अछि, तहिना प्रत्येक प्रान्तीय मातृभाषाकेँ हिन्दीक चूड़ान्त अभिभावकगण पूर्ण स्वतन्त्रता देबाक पक्षमे सन्नद्ध भए उठल छथि। गत हरिद्वारक अखिल भारतीय हि० सा० सम्मेलन द्वारा बहुमतसँ विकेन्द्री-करणक प्रस्ताव स्वीकृत भए गेल अछि। विशाल-भारतक भू०पू० सम्पादक पं० बनारसीदास चतुर्वेदी अपना प्रान्त बुन्देल खंडमे बुन्देली भाषाक उत्थानक हेतु प्रबल आन्दोलन ठाढ़ कए देने छथि। द्रुत गतिसँ बुन्देलीमे नवीन साहित्यक निर्माण भय रहल अछि, पुस्तक ओ पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन बढ़ि रहल अछि। सर राधाकृष्ण सम्मुखम् चेट्टी अन्नामलय विश्वविद्यालयक दीक्षान्त भाषणमे गतवर्ष कहने छथि जे—

"Of late there has been a revival of interest in the study of vernacular languages and there is a spirit of renaissance in the different cultures of India. I am not one of those who look upon this as a fissiparous tendency threatening the unity of India. Infact I consider that those who oppose this spirit are the enemies of Indian nationalism, for, they forget that Indian culture and nationalism

are the Synthesis of different cultures and multi-national forces each with great traditions and a strong individuality,"

—Searchlight 8. 12. 43.

अर्थात्—किछु दिनसँ प्रान्तीय मातृभाषाक अध्ययनमे जागृति उत्पन्न भेल अछि ओ भारतवर्षक भिन्न-भिन्न केन्द्रमे नव जीवनक संचार देखि पड़ैछ। हम ओहि व्यक्ति मे सँ नहि छी जे एहि भावनाकेँ भारतीय एकताक बाधक बुझै छथि। हम तँ वास्तवमे ओहि व्यक्तिकेँ भारतीय जातीयताक शत्रु बुझै छियन्हि जे एहि भावनाक विरोध करै छथि जाहि हेतु जे ओ व्यक्ति एहि बातकेँ बिसरि जाइ छथि जे भारतीय संस्कृति ओ जातीयता भिन्न-भिन्न संस्कृति ओ जातीयताक सामंजस्य थीक जकरा अपन-अपन विशेष परम्परा एवं सबल व्यक्तित्व छैक।

मैथिलीक क्षेत्रमे एहि बीच जे किछु कार्य्य भेल अछि तकर प्रतीक्षा दूर-दूरसँ कएल जाए रहल अछि। बुन्देल-खंडक कार्य्यकर्तागण हमरा कार्य्यवाहीकेँ विशेष सतृष्ण दृष्टियें देखि रहल छथि ओ भिन्न-भिन्न मार्गें तकर सूचनो लए रहल छथि। एहना स्थितिमे हम सब की उदस्त भेल केवल सरकारी भिक्षाक मुखापेक्षी रहब ?

भारतवर्ष—इङ्गलैंड, जर्मनी, फ्रांस, जापान आदिक समान कोनो छोट देश नहि। एहि सब देशक विस्तार एकर प्रान्त सबमे छैक। एकर तुलना चीन, रूस अथवा अमेरिकाक युनाइटेड स्टेटसँ भए सकैछ। एहि सब पैघ देश मध्य कतोक विस्तृत प्रदेश वा प्रान्त छैक जकरा पूर्ण रूपें स्थानीय स्वतंत्रता छैक। हँ, सब प्रान्तक कोनो एकेटा केन्द्र-शासन छैक। नेहरू-रिपोर्टमे भारतवर्षहुक हेतु तेहने विधान स्वीकृत भेल छलैक। जिन्ना साहेबक दुराग्रहें आइ किछु मुसलमान भाइ भने एकरा दू जातिक देश कहथु किन्तु विभागक आधार जाति सम्बन्धी नहि प्रान्त सम्बन्धी

श्रेयस्कर भए सकैछ। तएँ चेट्टो महोदयक उपर्युक्त विचार अराष्ट्रीय हएबाक तँ कथे नहि शुद्ध रूपें राष्ट्रीय ओ जातीय भावनोद्भूत अछि।

समस्त राष्ट्रक कोनो एकटा भाषा होएब अनिवार्य्य ! उर्दू-मिश्रित हिन्दुस्तानी से राष्ट्रभाषा भय सकैछ मुसलमान सब देवनागरी लिपि अंगीकृत कय लेथि। किन्तु यावत् लिपिक झगड़ा रहत तावत् राष्ट्र भाषाक प्रश्न हल नहि भए सकत। मुदा हिन्दी, उर्दू अथवा हिन्दुस्तानी जे कोनो राष्ट्र-भाषा हो से होऔ किन्तु से भाषा एतेकटा देशमे सब प्रान्तक मातृभाषो भए जाएत, से कोना संभव ? हमरा हिन्दी वा हिन्दुस्तानीसँ विरोध एही ठाम होइछ। हिन्दीक प्राचीन पंथी लोकनि एतेक दिन धरि हिन्दीकेँ दूनू स्थान दिएबाक यत्न कए रहल छलाह ओ छथि तएँ सफल नहि भए सकलाह। आब ओ लोकनि अपन क्षेत्र बूझि रहल छथि, अतः विकेन्द्रीकरणक भावना उग्र रूपें जागृत भेल जाइछ। जे राहुलजी हमरा सबहक मैथिली आन्दोलनक किछु वर्ष पूर्व मुजफ्फरपुरक वि० प्रा० हि० सा० सम्मेलनक सभापतिक आसनसँ घोर विरोध कएने छलाह (जाहिपर हमरा 'राहुलजीक अकारण कोप' शीर्षक लेख 'मिथिला-मिहिर' मध्य देबए पड़ल) सएह महापण्डित राहुल सांकृत्यायनजी गत वर्षक जुलाइ-अगस्त आदिक 'विशालभारत'क कतोक अंकमे प्रत्येक प्रान्तीय भाषाकेँ पूर्ण स्वतंत्रता देबाक मुक्त कंठे भैरवनिनाद कएने छथि। तहिना हमरा प्रान्तक सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय नेता देशरत्न डा० राजेन्द्रो प्रसाद) आइ ने काल्हि अवश्यमेव अपना पूर्व निर्णयकेँ यथार्थ बुझताह। हमर तँ ई निश्चित धारणा अछि जे मगही आ भोजपुरीकेँ साहित्य नहि छैक तैं की ? जखनहि कोनो अनिवार्य्य शिक्षाक क्रम जारी हेतक आओर ओकरा सफल बनएबाक उद्देश्य रहतैक तँ ओहू दूनू मातृ-भाषाकेँ निम्न वर्गक शिक्षा पद्धतिमे स्वीकार करहि पड़तैक। मैथिलीक योग्यता तेँ सब प्रकारें निर्विवादे अछि। ●

परिशिष्ट 'ल'

मैथिली-कार्यक्षेत्रमे कोना ऐलहुँ ?

संस्मरण कथा-१

['मैथिली कार्य क्षेत्र मे कोना ऐलहुं' सम्बन्धी संस्मरण अनेको पत्र-पत्रिका एवं संस्मरण नामक पुस्तक मे बाबू भोलालाल दास व्यक्त कैने छलाह। प्रस्तुत अछि सितम्बर १९४५ ई० क मिथिला मिहिर मे धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित उक्त संस्मरण —ले०।]

[मातृ-भाषाक आदर्श भक्त ओ मैथिली-साहित्यक एकनिष्ठ उन्नेता श्रीभोला बाबूसँ ई संस्मरण परिषदाङ्क हेतु लिखबाक आग्रह कैने छलिऐन्ह, किन्तु अधिवेशनक तिथि सम्प्रति अनिश्चित रूपेँ बढ़ि गेने एही अंकसँ प्रकाशित कै रहल छी। मैथिलीमे वैयक्तिक संस्मरण लिखबाक परिपाटी एखन धरि विरले अछि। मातृभाषाक एकनिष्ठ साधक आराधकक लेखनीसँ व्यक्त प्रस्तुत संस्मरणकेँ पढ़ि वाचक मैथिलीक प्रगतिक इतिवृत्तियहुसँ परिचित होयताह। आशा अछि, अन्यान्य—विशेषतः वयोवृद्ध मै० साहित्यसेवी लोकनि संस्मरण द्वारा मैथिलीक प्रगति-निर्माणमे योग दैत जैताह। —सम्पा०]

मैथिल महासभाक प्रायः दोसर अधिवेशन उत्तर भागलपुरस्थ सुपौल मध्य १९१० ई० मे भेल छल जकर आयोजनार्थ कतोक अवान्तर सभा शिवरात्रि मेलाक अवसर पर सिंहेश्वर स्थानमे भेल छल। आयोजक छलाह महासभाक मंत्री स्व० पण्डित कपिलेश्वर मिश्रजी वकील। ताहि दिन हम मधेपुरा हाइ स्कूलमे पढ़ैत छलहुं, प्रायः ताहि दिनक फोर्थ

क्लासमे। चारि मीलक अन्तर कोनो विशेष दूर नहि। अनेक रविके हम सब महादेवक दर्शनार्थ सिंहेश्वर स्थान अबैत छलहुँ। शिवरात्रिक मेलामे तँ आएब अनिवार्य छल।

संयोगवशात् हमहुँ सभा-स्थलपर उपस्थित भेलहुँ। सभाक हेतु शतरंजी जाजिम इत्यादि बिछाओल जाए रहल छल। पंडितजी कारी बालावर पर वृत्तपर बान्हल खूब स्वच्छ पाग पहिरने छलाह। हाथमे छाताक डंटी जकाँ मोड़ल काठक छड़ी छलैन्हि, बालावरक जेब-घड़ीमे चेन लागल घड़ी छलैन्हि। समय-समय पर जेबीसँ घड़ी बहार कए समय देखि लोककें अगुतबैत जाथि जे आब समय नहि अछि, शीघ्रता करू। शतरंजी पर जाजिम पड़ै नहि पबै छल कि लोक ओहि पर बैस जाइत छल। अपना सहपाठी सभक संग हमहुँ कतहु बैस गेलहुँ। 'एम्हर अहाँ सब जनु बैसी एतएसँ एतए धरि जगह छाड़ि दैत जाउ।' इत्यादि शुद्ध मैथिलीक प्रवाह, पंडितजीक मुहें सुनि हृदय-वीणा किछु झंकृत होइत छल। सभा कोना की भेलैक से स्मरण नहि अछि, मुदा एहि अवसरकें हम अपन जीवनक मैथिली-प्रणयक इतिहासमे अर्द्धरात्रिक स्वप्न-दर्शन कहि सकैत छी।

अस्तु, सुपौल महासभामे हम सब प्रायः दू मासक बाद स्वयंसेवक रूपें सम्मिलित भेलहुँ। महासभाक आयोजन बड़ विशाल छल। स्व० महाराज मिथिलेशक स्वागतार्थ अपार जन-समूहक समुद्र उमड़ि पड़ल छल। अपना कप्तानक अधीन हम सभ प्रतिनिधिक स्वागतार्थ भिन्न-भिन्न काज कै रहल छलहुँ। डेरा प्रायः कैम्पहि मध्य छल। महासभाक संस्मरण लिखबाक एहि ठाम स्थान नहि अछि। विषय निर्द्धारिणी समिति (Subject commitee) क अधिवेशन मध्य हम शान्ति-रक्षक रूपें प्रवेश द्वारपर ठाढ़ छलहुँ, आँखि छल अपना कर्तव्य पर मुदा कान छल सभाक कार्य्य-वाही पर। यद्यपि ताहि समयमे मर्म बुझबाक अवगति नहि छल तथापि 'जनु कुरंगिनि सुनइ गीत' क भावकेँ चरितार्थ करैत छलहुँ। प्रस्ताव सभक अनुमोदन, समर्थन, विरोध इत्यादिमे जे मैथिलीमय मधुर भाषण सब देल जाय रहल छल ताहिमे सबसँ प्रभावशाली हमरा स्वर्गीय बाबू

हरिनन्दन दासजीक वक्तव्य बूझि पड़ैत छल। एहने बूझि पड़ैत छल जेना कार्य्यवाहीक कुंजी हिनके हाथ छन्हि। जेम्हरे चाहथि तेम्हरे लोक-मतकेँ मोड़ि लेथि। अस्तु, एहि अवसरकेँ हम अपना प्रणयक वयः सन्धि मानि सकैछी। एहिठाम मातृभाषा-प्रेमक मानू प्रथम उन्मेष भेल। आँखि मुनले छल मुदा निद्राभंग भए गेल—'जागल मनसिज मुदित नयन'क एकटा चेष्टा भय गेल।

यदि आब हम एहिठाम एहि यात्राक कोस mile stone गनए लागब तै कथा-विस्तार भै जायत, अतः एतबे कहब पर्य्याप्त अछि जे सुपौलमे एकटा करौट फेरि हम अनेक वर्ष धरि पुनः निद्रादेबीक कोड़मे पड़ल रहलहुं। मैट्रिक पास कैल, आइ० ए० पर्य्यन्त पार कैलहुं, कतहु कोनो मैथिली साहित्यसँ भेंट नहि भेल। तावत् हिन्दीक अधिकारो हृदय देशमे अधिक भै गेल। अर्थाभावसँ आगाँक पाठ छोड़ि १९१३ वा १९१४ मे नयागाँव सिराजपुर मुंगेर जिलामध्य एकटा मिड्ल स्कूलक हेड मास्टरी स्वीकार कए लेल। बड़गाँव मध्य एकटा सुन्दर पुस्तकालय खुजल छल। तकर वार्षिकोत्सवमे मधेपुराक संसर्गे हमरो निमन्त्रणपत्र भेटल। सभापति छलाह भागलपुरक स्व० जगधर प्रसाद वकील। हम जाय नहि सकलहुँ मुदा हिन्दीमे एक लेख लिखि कए पठाए देलिऐन्हि। ताहिमे साहित्य विकासक प्रगतिमे मैथिलीक उन्नति असम्भव देखि ई लिखने छलहुँ—"मैथिली अब हिन्दीको नहीं पकड़ सकती जैसे कछुआ चलती रेलगाड़ीको नहीं पकड़ सकता।' सौभाग्यवशात् गुरुवर मु० रघुनन्दन दासजी ओहि सभामे उपस्थित छलाह। हमरा लेखक प्रायः ओहि ठाम नीक स्वागत भेलैक, से तँ विशेष कथा मुंशीयेजी कहताह कारण जे वैह ओहि ठाम उपस्थित छलाह मुदा पाछाँ काल भागलपुरमे जगधर बाबूक समक्ष ओही लेखक आधार पर उपस्थित कैल गेलहुँ और हमरा ओ बी० ए० धरि एक प्रकारें पढ़ाय देलन्हि। अस्तु, मुंशीजीकेँ हमर ओ धरि पंक्ति आघात कैलकैन्हि जैं हेतु एक पत्र हमरा लिखि मैथिलीक योग्यता ओ मधुरता

बुझौलन्हि। ततबे नहि, एहि सम्बन्धमे कर्त्तव्यो सुझौलैन्हि जे मैथिलीक साहित्य पढ़ू। ई पत्र हमरा हेतु छल महाकवि चण्डीदासक ओ सिद्ध पंक्ति –"से ई के वा सुनाइलो श्यामनाम। कानेर भीतर दिया मरमे पशिलो सेइ आकुल करिलो मोर प्राण"। बहुत पश्चाताप भेल। कोनो वस्तुक सुधार करबामे अति-कालक भय कोन? It is never late to mend हम किए मैथिलीक उन्नतिकेँ असम्भव बुझल? हिन्दीकेँ नहियो पकड़ी तैं की मैथिलीकेँ छोड़ब हमर कर्त्तव्य थीक? इत्यादि भावनामे ओतप्रोत होइत मुंशीजीकेँ अपना हृदयासन पर मनहिमन दीक्षागुरुक स्थान पर बैसौलहुं। प्रायः हुनका क्षमा प्रार्थनाक एकटा पत्रो लिखि देलिऐन्हि। मुदा काज कोन करब से किछु नहि फूरए। कोनो ग्रंथ नहि भेटए।

संस्मरण कथा–२

किछु दिनक बाद भच्छीक स्व० रासिबिहारी लाल दासजी लिखित 'मिथिला दर्पण' नामक पुस्तकक विज्ञापन देखल, पुस्तक मंगोलहुँ। आद्योपान्त पढ़ि तृषार्त्तक ओसचाटब जकाँ शान्ति पौलहुँ। किछु हुनका सम्मतियो देलिऐन्हि जकरा हेतु ओ परम हार्दिक धन्यवाद देलैन्हि। पुस्तक छलैक हिन्दी मे परन्तु मैथिली ओ मैथिलत्वक-भावनासँ-ओत-प्रोत छलैक। ताहि सँ बाबू श्यामनारायण सिंह जीक History of Tirhut नामक अंग्रेजी ग्रंथ पढ़वाक प्रबल प्रेरणा भेल। कठिनतापूर्वक ओहो ऊपर भेल। पारायण कए एक देशक प्रति विशेष श्रद्धा उत्पन्न भेल। एहि समयक लगभग हम एक बेरि अपना मात्रिक महिसी जाइत छलहुँ। बाटमे भच्छीक स्व० मुखतार गुणबन्तलाल दासजी सँ भेट भेल। वार्ता--लाप प्रसंग ओ कहलैन्ह–"हिन्दी अंग्रेजी सब किछु पढ़ू मुदा कनडरियहु मैथिली कें तकैत रहू" हुनक ई शब्द मुन्शीजीक पत्रसँ कम मर्मभेदी नहि बुझि पड़ल।

सब पुस्तकालय जाइ, मुदा मैथिलीक कोनो ग्रन्थ नहि भेटए। बड़

मनो दुःख हुऐ मुदा कैल की जाओ ? तावत पुनः भागलपुर बी० ए० पढ़बाक हेतु गेलहुँ। ओतहि अपना गुरुवरक प्रणीत 'मिथिला नाटक' देखबाक सौभाग्य भेल, पढ़ि कृतार्थ भेलहुँ, मिथिलामोदक प्रथम दर्शनो प्रायः एतहि भेल। किछु प्रकाश भेटै लागल, तथापि शांति नहि भेल। बंगला छनैत छलहुं मुदा मैथिली काव्य साहित्य अनुसन्धान नहि केलहुँ वा कए सकलहुँ। कारण अद्यापि बुझल नहि भेल। प्रायः ई भान छल जे मैथिलीक गीत कतहु बंगला मे होइ। कीर्तिवासक रामायण ओ काशीराम दासक महाभारत खूब पढ़ल, उपन्यास प्रभृति बंगलाक आनो ग्रन्थ पढ़ल। कोनो कालक अपना मामक 'सुन्दर नागराज्ञर मे लिखल जीवन झाक 'सुन्दर संयोग' नाटक सेहो पढ़ल। ई पुस्तक घर मे बहुत दिन सौं राखल छलैक ओ अत्यन्त वाल्यावस्था मे एकरा पढ़ि किछु हंशी-खुशी मनबैत छलहुँ मुदा अर्थ किछु नहि लागै। प्रायः बुझि पड़ए जे ई तँ सब दिन रहबे करत। ई तँ दिन-राति बजितहि छी। मैथिलीक संग एतवए, से तँ बहुत पाछाँ बुझलहुँ जखन कि ओहि पोथीक कालेजक समय मे नहि उनटाओल। तथापि ई बुझैत रहलहुं जे ई पठन-पाठनक भाषा नहि केबल बोलचालक भाषा थीक। अस्तु आब ओहो पोथीक श्रृंगार रसक मैथिली गीत वा विधि-व्यवहारक गीतक अर्थ लागै लागल मुदा 'सुन्दर संयोग' ओहि मे अपूर्ण छलैक तँ पुनः उनटेवाक प्रवृत्ति नहि हो। जे से, 'मिथिलामोद' एक मात्र आधार छल परन्तु ओहो समय-समय पर भेटै, बरोबरि नहि। कखनहु मुन्शीजी कें, गुणवंतलाल दासजी कें व आचार्य मुरलीधर झा पर्य्यन्त कें दोष देब लागिऐन्हि जे ई सब व्यर्थ मैथिलीक उन्नति-उन्नति भूकैत छथि। काज तँ किछु नहि भै रहल अछि।

बी० ए० पास कैलापर कलकत्ता कानून पढ़ए गेलहुं। मुदा दुइएमासक बाद छोड़ि कए बेतिया ऐलहुँ। 'मोदक' चिर लेखक पंडित त्रिलोचन झाजी सँ एतहि साक्षात्कार भेल। मानु छपरा जखन तखन जाइ एवं हुनकहि सँ किछु मैथिलीक प्रसंग वार्त्तालाप भेल करए। ओ एकटा आधार भेटि

गेलाह। तावत कलकत्ता विश्वविद्यालय मध्य बनैली राज्यक दान स मैथिलीक स्वीकृति भेल, एहि घटना सँ चित्त पर बड़ सुन्दर प्रभाव पड़ल। बुझल, भला एहनो केयो मैथिलीभाषी राज्य छैक जे मिथिलाक हेतु दस हजार टाका दए सकै छैक। मोदक अध्ययन सँ मैथिली मे पद्य रचनाक संभावना अवगत भए गेल छल। आनन्दोद्रेकेँ मैथिलीक स्वीकृतिपर पद्यारंभ कैल। पद्यरचनाक क्षमता अद्यपि हमरा मे नहि भेल। यदा कदा किछु रचना करबो कैलहुँ तँ परिश्रम साध्ये कोनो स्वाभाविक प्रवाह नहि। अपनहि समालोचना करए बैसब तँ अनेक दोष बहार कए सकब। केबल एहि बलपर दोष अधिक नहि आबै दैत छिऐक किन्तु एहि मे परिश्रम अधिक बुझना जाइछ। तैं ओकर प्रयास नहि करैछी। मुदा बेतिया मे ई कथा सूनि हृदय मे एक स्वाभाविक प्रेरणा भेल। आरम्भ छल तएँ एकर वर्णावृतहि सँ श्रीगणेश कैल। भाव सँ भाषा होइत छैक तएँ किछु दूर धरि लिखि गेलहुँ मुदा कृत्रिम और स्वाभाविक रचना मे वड़ बिघ्न होइछैक, तएँ गोटेक सए पंक्ति लीखि तकरा असमाप्त छोड़ल। इच्छा छल जे आगाँ प्रवाह हैत तँ Cowpir's Task जकाँ अनेकानेक विषयक चर्चा करब। अस्तु ओहि कविता वा कविताक चर्चा आइए कैल अछि। अन्यथा कोनो अन्तरंगो मित्र केँ देखैबाक प्रवृत्ति नहि भेल। नीक भेल जे ओ भूकम्पक सर्वनाश मे भूमिसात् भए गेल। केवल आरम्भ आ एक आधटा बाचक पद्य अद्यापि स्मरण अछि जकर आगाँक कथा बुझैबाक हेतु हम एहि ठाम लिखि सकैछी। आरम्भ मे बन्दना एहि प्रकारें केने छलहुँ—

जे श्री कृष्ण विमूढ़ भेल रण मे कौन्तेय प्रोत्साह लै
नाना अर्थ विधान साधन करी गीत सुनाओल से—
मात्रा हीन सहाय हीन हमरा वाधाक विध्वंस कै
आत्मामे बल देथु पूर्ण जहिंसौं सेवी सदा मैथिली।

प्रायः शारदा वा गणेशक बन्दना नहि कैलिऐन्हि तैं

ओकर प्रवाह अवरुद्ध भए गेलैक मुदा मैथिली सेवाक व्रत अवश्य किछु पौलहुँ। हँ एकटा पद्य आओर मोन छथि। बनैली राज्याधीशकें एहि प्रकारें धन्यवाद देने छलिऐन्हि—

नृपति वर अहाँक मैथिली मान रक्षा—
लखि मुदित हृदै हो, लेथु श्रीमान शिक्षा।
दिन-दिन निज भाषा प्रीति बाढ़ै अहाँ मे,
अमल धवल व्यापै कीर्ति चान्द्री अहाँमे।

संस्मरण कथा-३

संस्कृत पाठशालाक पंडितजी कें 'मिहिर' अवैत छलैन्ह। 'मिहिर' जखन तखन पढ़य लगलहुँ मुदा ओहि मे तत्काल कोनो आकर्षण नहिं छल। ओहि दिनसँ संकल्प कैल जे मैथिली मे एकटा सुन्दर पत्र चलाबी, मुदा ताहि काल कोनो साधन नहि छल। पुनः पटना ओकालत पढ़ै एलहुँ। एतै असहयोगक बिहारि मे पड़ि गेलहुं। ४-५ वर्ष के देखैत अछि? पुनः तेसर विश्वविद्यालय प्रयाग ओकालतक हेतु देखल। एतै एकटा सुयोग भेल, कोनो एक ठाम (मुजफ्फरपुर वा पटना ठीक स्मरण नहि अछि) प्रतिस्पर्धिता परीक्षा छलैक। विद्यापतिक काव्यलोचना पर ५०) टाका मूल्यक पारितोषिक घोषित छलैक, इच्छा भेल जे ई परीक्षा अवश्य दी। लेखक हेतु सामग्री जुटैवा मे कठिनता भेल। इन्डियन प्रेस सँ ५) टाका मे विद्यापति पदावली कीनल- महाकवि विद्यापतिक काव्यक-अध्ययनक यैह छल श्रीगणेश तैं अहु अवसरकेँ अपना जीवनेतिहासक एक प्रमुख घटना स्थल •बुझैत छी। लेख मे अन्यान्य काव्य-सौष्ठव जे केवल एक वेरिक अध्ययनसँ बूझि पड़ल से तऽ देबे कैलिऐक, विशेषतः विद्यापतिक श्लेषालंकारक एक अपूर्व उदाहरण पर बहुत किछु टीका-टिप्पणी केलिऐक ओ पद्य आरम्भ होइ छैक एहि प्रकारें—

"सखि हे की कहब, किछू नहि फूर ?

सपन कि परतेक कहएन पारिअ की अति नियर कि "दूर"।

अन्तक पंक्ति छैक—

प्रणय पयोधि जले तन झाँपल ई नहि युग अवसान।
के विपरीत कथा पतिआएत कवि विद्यापति भान॥

विपरीत रतिक वर्णन छैक। प्रलय और प्रणयक एहन सुन्दर श्लेष हमरा अद्यापि नहि भेटल अछि। बूझि पड़ैछ केवल एहि पद्यक व्याख्यान सँहमर लेख प्रतिस्पर्धिता मे प्रथम भेल, अस्तु विद्यापतिक आधार पर मनहि मन अपना मोकदमाक अरजीदाबी तैयार करए लगलहुँ, प्रायः तैयारो भेल, मुदा कोर्ट फीस नहि जे दायर हैत। सर्वत्र तँ हिन्दीयहिक चर्चा, मैथिलीक प्रसंग कतै उठाउ ?

अस्तु, वकालत पास कै १९२४ मे दरभंगा ऐलहुं।

मित्रवर उदितनारायण दासजी—"श्रीमैथिली' नामक पत्र चलौलन्हि। ओ पत्र छल विशेषतः सामाजिक मुदा नवीन भावापन्न लेखकक रूपें, कखनहुँ पद्यरचयिताक रूपें ओहिसँ सम्बद्ध भेलहुँ। मुदा ओ ततेक क्षीणकाय एवं साहित्यसँ दूर छल जे हमर चित्त कहियो नहि भरल। तथापि मित्रवर श्रीनरेन्द्रनाथ दासक, विद्यापति ओ चण्डीदास' शीर्षक लेखसँ अधिक आकृष्ट भेलहुं। श्रीनरेन्द्र बाबूसँ परिचयक यैह भेल सूत्रपात। एतबो नहि बूझल छल जे ई हमरे दीक्षागुरुक सुयोग्य पुत्र तस्मात् गुरुभाइ थिकाह।

मैथिलीक हेतु कार्य्यक्षेत्र कतहु छलैके नहि। क्षेत्रो बनैबाक आवश्यकते छलैक। मित्रवर उदितबाबूक रोगाक्रान्त भेलासँश्रीमैथिली बन्द भै गेलैक। सहकारी सम्पादक बाबू श्रीचन्द्रकिशोरलाल दास मुखतार समस्तीपुर मुखतारी करए गेलाह। ई बड़ योग्य व्यक्ति छथि मुदा आब मुकदमाक भार सँ साहित्य सँ बिमुख भए गेल छथि तथापि कहियो काल किछु लिखितहि

छथि। एहि बीच मे पुस्तकभंडारक अध्यक्ष श्रीयुत (आब राय साहेब) रामलोचन शरणजी सँ लेखक—प्रकाशक सम्बन्ध भेल। ओतहि ई विचार स्थिर भेल जे कोनो मैथिली पत्र बहार करी। निदान पं० श्रीकुशेश्वर कुमर ओ हमरा सम्पादकत्व मे भंडार सँ मिथिला नामक मासिक पत्रिका चलल। कुमरजी म० म० पं० मुरलीधर झा जीक शिष्य छलाह। मिथिलामोदक प्रकाशन मे बहुत किछु हिनको हाथ छलैन्ह मुदा 'मिथिला' क सम्पादन भार मुखयतः हमरे ऊपर दय निश्चिन्त रहैत छलाह।

ई संघर्षक युग छल। 'मोद' यद्यपि बड़ तीव्र समालोचक छल तथापि ओ सामाजिक एवं पंडिताह छल। मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक विरोध वा निन्दा सूनि ओ अपन काया सँ हिन्दीक बहिष्कार सब दिनक हेतु कए देलक। महामहोपाध्यायजीओ हिन्दीक कर्कशताक निन्दा बरोबरि 'छोड़ा जाता है, रोड़ा पड़ता है' कहि करैत रहलाह। अपना निर्भीकआलोचनाक आगाँ ओ 'मिथिला' पर्य्यन्त कें नहि बुझथि, मुदा आश्चर्यक विषय ई छल जे एहि दिन धरि मैथिलीक भाषा सम्बन्धी योग्यताक कतहु आलोचना प्रत्यालोचना नहि छल। मैथिल-महासभाक उद्योग सँ मिथिला ओ मैथिलक अतीत गौरब जाग्रत भेल छल। अधिक पद्य शोकोच्छ्वासक रूपें बहार होइत छल मुदा एकर चर्चा कतहु नहि छल जे आधुनिक संघर्ष मे 'मैथिलीक प्रति हमरा लोकनिक कर्तव्य की अछि। मैथिल-महासभा अपन कार्य्यवाही मैथिली मे करैत छल। शुभंकरपुर ड्यौढ़ी मे कोनो साहित्य गोष्ठी मैथिलीक सेवा कै रहल छल। पश्चात् काशी पर्य्यन्त मे मैथिल विद्वज्जन समिति स्थापित भेल मुदा किछु ग्रन्थादि प्रकाशनक अतिरिक्त मैथिलीक पठन-पाठन योग्यताक चर्चा नहि छल।

यदि ई चर्चा ओहो दिन होइत जाहि दिन कविवर चन्दा झा अपन रामायण वा पदावली लिखने छलाह वा ग्रियर्सन साहेब मधुवनी मे मैथिली-गीतक संग्रह ओ मैथिली-साहित्यक अनुसन्धान कै रहल छलाह

वा जाहि दिन कलकत्ता विश्वविद्यालयक सर्वापेक्षा आशुतोष मुखर्जी छलाह तँ एतेक परिश्रमसाध्य मैथिलीक अभ्युत्थान नहि होइत। सुनल अछि जे डा० मुखर्जी अनेक वर्ष पूर्वहि सँ मैथिलीक योग्यता सँ परिचित छलाह एवं मैथिलीक हेतु किछु करए चाहैत छलाह मुदा मैथिलीक कोनो मांगे उपस्थित केनिहार नहि किमधिकम जखन कलकत्ता मे मैथिलीक स्वीकृति भए गेलैक तखनहुँ मिथिलाक हेतु कोनो नवोल्लास नहि, मैथिलीक हेतु कोनो योजना नहि, मैथिली भाषीक हेतु कोनो कर्त्तव्य नहि। हमरा नहि बुझल अछि जे मैथिल महासभा ओहि विश्वविद्यालय वा राजा साहेब बनैलीकें धन्यवाद पर्य्यन्त देलकैन्ह वा नहि। प्रायः नहिए।

संस्मरण कथा–४

दुर्भाग्यक विषय एहन जे मैथिलीक स्वीकृति भेलैक किन्तु थोड़ेक दिनक बादे बंगाल सँ बिहार वियुक्त भैगेल। स्वीकृतिक कोनो लाभ हम सब नहि उठा सकलहुँ। पटना विश्वविद्यालयक आरंभिक युगमे कोनो वंगीय सज्जन मैथिलीक स्वीकृतिक प्रश्न उठौलैन्हि मुदा ओ प्रो० राधाकृष्ण झा एक मैथिलहि क विरोध सँ निर्वासित भए गेल।

यैह छल ताहि दिन दिनक असल स्थिति जखन 'मिथिला' क उदय भेल छल। मैथिल महासभा धरि मे हमरो लोकनि किछु स्थान लेवे लागल छलहुँ। मिथिला क्रमशः मैथिलीक कार्यक्षेत्र प्रस्तुत करए लागल। मैथिलीक अनेक प्रतिभाशाली लेखक ओ कविक परिचय एही द्वारा भेल। प्रो० हरिमोहन झा ताहि दिन एम० ए० पढ़ैत छलाह) सँ परिचय पावि विशेष लाभान्वित भेलहुँ। श्रीयुत नरेन्द्र नाथ दासजीक 'विद्यापति ओ चंडी दास' धारावाही रूप सँ आवए लागल। प० महावीर झा 'वीर' सँ एतहि परिचय भेल। ओ बेस प्रतिभाशाली कवि बूझि पड़लाह। पण्डित सीताराम झा जीक तँ कथे नहि हो, एकटा संसारे बसि गेल। ओहि

पत्रक सम्पादकीय लेख कें ध्यान सँ पढ़ला उत्तर एखनहु स्पष्ट हैत जे मैथिलीक विषय मे ओकर लक्ष्य की छलैक। ओ चाहैत छल जे जहिना गुजरात मे गुजराती, महाराष्ट्र मे महाराष्ट्री 'मराठी' ओ बंगाल मे बंगला अछि तहिना बिहार मे नहि तँ मिथिला मे मैथिलीक स्थान हो। एहि उद्देश्यक द्व घटना विशेष सहायक भेल एक तँ वर्तमान मिथिलेश द्वारा मैथिली चेयरक स्थापना, दोसर श्रीयुत शशिनाथ चौधरी द्वारा मैथिली साहित्यक अनुसन्धानार्थ मैथिली साहित्य परिषदक स्थापनाक प्रस्ताव। मिथिला पत्र दोसरे वर्ष बन्द भै गेल, मुदा अनेक व्यक्ति मैथिलीक प्रति साहित्यिक रूपें आकृष्ट भै गेल छलाह। प्रायः ओ हमरो अध्ययन बहुत किछु विस्तृत भए गेल छल। स्व० प्रो० हरिगोविन्द चौधरी डा० श्रीसुनीति कुमार चटर्जी प्रणीत अंग्रेजीक सुवृहत ग्रन्थ Origin & Development of Bengali linguistic देलैन्हि। जाहि सँ मैथिलीक पूर्ण योग्यता बूझल। डा० ग्रियर्सनक Linguistic Survey of India पढ़ि और गद्‌गद भेलहुं। श्रीयुक्त बाबू गंगापति सिंहजीक द्वारा जखन म० म० ज्योतिरीश्वर ठाकुर प्रणीत 'वर्णरत्नाकर' ओ प्रो० हरिगोविन्द चौधरीक द्वारा ओहि पर १० पृष्ठक अंग्रेजी मे लिखल डा० चटर्जीक भूमिका पाओल और पढ़लहुँ तँ एक नवीन पुस्तक हमरा हेतु खुजि गेल। वर्णरत्नाकर ओ तकर भूमिका कें पूर्णमनोयोग सँ २०—२२ बेर आद्योपान्त पढ़लहुँ, आवेसो तेहने छल। हुए जेएक-एक पंक्ति हरदम कियै नहि स्मरण रहत। एहि सबसँ आत्मा मे एतेक बल आवि गेल जे मैथिलीक दावी कें सर्वथाअकाट्य बुझलहुँ, यैह सब कारण मिथिलाक द्वारा मैथिलीक पक्ष कें समर्थन करवा मे सहायक भेल ओ किछु लोकमत तैयार भए सकल। अस्तु, १९३० ई० मे मैथिल—महासभा दरभंगा मे भेल। स्वागतमन्त्री छलाह पं० श्रीनागेश्वर मिश्र। हुनक सहानुभूति पूर्ण छलैन्हि। एकटा सभा मैथिलीक सम्बन्ध मे एहिमे भेल प्रायः राजमैनेजर स्व० केशी बाबूक सभापतित्व मे। पं० शशिनाथ चौधरीक योजना पूर्वहि

'मिहिर मे' प्रकाशित भेल छल। हुनक प्रस्ताव भेलैन्हि परिषद्क स्थापनाक सम्बन्ध मे, समर्थनक हेतु हम तैयारे भेल छलहुँ। जखन हम अनेक ठामक उद्धरण दैत मैथिलीक दावी सावित करै लगलहुँ तँ स्पष्ट मोन अछि केशी बाबू, बाबू हरिन्दनदास जी आदि प्रमुख व्यक्ति आनन्द सँ गद्गद भेल छलाह। लगले मैथिली-साहित्य-परिषदक स्थापना भेल ओ प० श्रीशशिनाथ चौधरी मन्त्री बनाओल गेलाह। एक विभागक मन्त्री हमहुं भेलहुँ। यैह भेल मैथिली साहित्य परिषदक जन्म-कथा ओ हमरा सम्बन्धक संयोग।

परिशिष्ट ब

बाबू भोलालाल दासक अपूर्ण ओ अप्रकाशित काव्य-कृति

मैथिली कृतिकेतु

जननि जनक गुरु देव पद, नमिअ प्रथम सगलानि
बिनु सेवहि जे देल ई, मानव तन मन वानि
गो गंगा गीता नमिअ, दया क्षमा चिति रूप
जे भारत जग धन्य करु, परतछ देव अनूप
अखिल लोक सचराचरक, जीवन मरण अधार
बंदिअ धरती जननि पुनि, करुणामयि बहुबार
सोम सुधाकर चन्द्र विधु, तारापति राकेश
शशि शशांक शीतांशु कें, नमन अशेष विशेष
तापन तपन तमारि तप, भर्ग भानु भास्वान
आदि भूत आदित्य पद, नमिअ सूर्य भगवान

एक नाम गुण अकथ अति, सहस जनिक से नाम
तनिक वंदना कोन परि, भावहि मूक प्रनाम
आदि शक्ति बिनु मूल जे, तत्पद वाच्य वरेण्य
भर्ग देव प्रेरित करथु, जे तेहि दिस बुद्धि शरण्य

जय जय जगदम्बे त्रिगुण कदम्बे छी अवलम्ब सभक सदाय
कालत्रय नयन दश दिश अयन हेतु रहित अहँ हेतु निकाय
निर्गुण छी अपने सबके झपने गुणक जाल सँ जग समुदाय
कनियो हमरहु दिस ताकु कोनहु मिस लिअ कुपुत्र के अपन बनाय
विश्व वास से शक्ति सबहि थल। अछि प्रतच्छ यदि चित्त अचंचल

सरिता विमल छोड़ि निज सन्मुख। भटकथि दूर पियासल मूरुख
देल खर जे वड़द न खाय। सैह कोल्हु चाटै लै जाय
भूपति महामान्यहुक परिषद। देखै सुनै न पटु जन प्रतिशत
तदपि सेवि निकटक अधिकारि। होथि सुखी सब तथ्यविचारि

देश काल ओ पात्र महत्व। बढ़ै घटै लग दूरहि सत्व
जनिकहि सौं हो काज सुसिद्ध। तनिके पूजा जगत प्रसिद्ध

परतछ छोड़ि अपरतछ पूज। तकरा सन नहि मनुख अबूझ
तैं किछु अनुभव भाखब अपन। मनक दूर हो जाहि सौं तपन

जतनहि सौं मरु भू उपज, तरभुज पीन खजूर
सुन्दर खेतहु जतन बिनु, जनमै आक धथूर

स्यौह जतन की लागत पार। 'लागल रहू' क एक आधार
गद्य लिखब छल एत दिन साध। जरा जीर्ण तकरो करु बाद
तैं पर पद्यक ई नव चाट। समय चूकि पछतावक बाट
असिम बरख वय असि सम लाग। असि-मसि द्वन्द पड़ल लखु भाग
की भावी अछि के कह ताहि। मसि पच्छे हो सफल कदाहि
मुदा एतै नहि-नहि काव्य प्रबंध। नहि रस अलंकार सम्बन्ध
नहि उदार जन चरित महान। नहि रमणीय कथा किछु आन
मित्राक्षरहुँक सरल निवाह। नहि होएत अवश्य अधलाह
तदपि मनोरथ करै विमूढ़। जनु एहि मे किछु तत्य निगूढ़
जनिका हाथक थिकहुँ खेलौना। तनिकहि पर छोड़ी ई धौना

की विचित्र जगदम्ब यदि, कृपा करथि बिनु हेतु
थर थर कर कर ठाढ़ ई, मैथिलीक कृति केतु

भूत भविष्य दुनू थिक सपन। वर्त्तमान हो काजहि अपन
तैं छनहुक किछु सत उपयोग। करै न दै अछि चिंता सोग

ज्ञातहि सौ अज्ञातक खोज। मानव ताहिक अद्भुत ओज
के हम, के अहँ कत सौं आगत। के ककरा सौं कहुना लागत

छोट पैघ लोकक जे उक्ति। तकरे संग्रह करव सदुक्ति
व्यष्टि समष्टि राष्ट्र संगठन। बूझल वा जे किछु अछि पठन
धर्म समाज अर्थ तंत्रोचित। राजनीति सह हो आलोचित
नहि किनकहुँ सौं भय वा प्रीति। स्वमत कहब रीतिहुँ अनरीति
मैथिलीक कवि वा आलोचक। जे छथि एक सौं एक रोचक
जे प्राकृत अवहट्टक प्रान। सिद्ध डाक लोरिकादिक गान
बंदनीय से सबहुँ समान। तदपि नाम किछु करब उथान
स्यौह नाम कत छूटत अवस। रहत हुनक यश हमरे अयस

प्रथम वंदना करिअ ज्योतिरीश्वर ठाकुर पद
देलनि गद्य प्रथम 'वर्णरत्नाकर' सुविशद
विद्यापति गोविन्द उमापति पद पुनि वंदन
लोचन मन वोधादि चन्द्र लालो रघुनंदन
आवि समुद्रक पार सौं, कैल ग्रियर्सन वाणि गुरु
श्री नारायण सिंह सह, नव गवेषणो ध्यान धरु

भाषा कहब चलित जे वेशि। तत्सम तद्भव देशि विदेशि
मैथिलीक अछि प्रकृति उदार। ह्रस्व दीर्घ सुविधहि उच्चार

कतिधा शैली विवरण विषम। तकरो अछि प्रचलित किछु नियम
गद्य पद्य भेदहुँ सौं बाध्य। बहुधा शब्दो चयन असाध्य
कतहु विचित्र हैत क्रम भंग। छंदो कते हैत बेढंग
आनो कते ठाम खसताक। राम छमथु दोष बुधजन लिखताक

गुण दोषक हो मिश्रण जतय। क्षमा याचनो समुचित ओतय
दोषे दोष भरल अछि एतय। चलत ढिठाई हमर ई कतए

मिथिला मैथिल मैथिली, बहु चर्चित अछि भेल
पूर्वाञ्चल अर्चित बुझी, पथ वाधा टरि गेल

पथ वाधा टरि गेल मैथिली वसति अपन घर
बङ्गले सन ई हैत विश्वज्ञानक शुचि आकर

हो आदान प्रदान अंचलहुँ सौं व्यापक पुनि
राष्ट्रो धरि ता रहौ विषय वर्णन सीमा धुनि

पंगुक पर्वत लंधनक आस पुरल अति बार
अम्ब करुण दृग आस अछि, किय नहि जाएब पार

किय नहि जाएब पार भाव यदि सब जन सुखकर
वाणी लटपट रहौ सभक हित चिंतन अछि बर

आनक आस भरोस आत्मनिर्भर भै छोड़ल
सैह राष्ट्र जग बीच आइ अछि सब सँ जोड़ल

वर्ष पचीसहुँ सौं टपल, भारतीय गणतंत्र
भेल न एखनहुँ जनगणक, प्रतिज्ञात जनतंत्र

प्रतिज्ञात जनतंत्र एकतो रहल न बन्धुक
भै खंडित छी आइ बनल परहाथक कन्दुक

जनता अछि अति दीन गरीबी बढ़ै दिनहि दिन
स्वतन्त्रता की रहत नीति अपनौने दृढ़ बिन ?

ककरहु जो मे चैन नहि, देशक दुर्गति देखि
जन्मभूमि जननीक दुख, कहथु मैथिली लेखि

भारत अछि विशाल बड़ देश। प्रान्त एकर लागै जनु देश
प्रान्तो सभक विशेष विशेष। भाषादिक पसरल अछि वेश

बंग, मराठी, ब्रज गुजराति। भाषा अछि समृद्ध बहु भांति।
अंगरेजी सब पर छल बनल। एतदिन अंगरेजक बल सबल
मुदा स्वतंत्र भारतक लेल। राखब ओकर न संभव भेल
बनल जखन भारतक विधान। सब मिलि कैल एकर समधान
हिन्दी कें मानल सब लोक। हिन्द राष्ट्रभाषा बिन रोक
एकर अस्थि पंजर प्राचीन। रक्त मांस यदि कहिअ नवीन
व्यापकता उपलब्धि समृद्धि। देखि भारतक योग्य प्रसिद्धि
संस्कृत उर्दू मूलक हेतु। दछिनहुँ केर यैह बुझि सेतु
कथमपि अंगरेजी नहि एकर। पौत सरलता सीखब सुकर
तैं पन्द्रह वर्षक देल अवधि। संविधान कर्ता सब सविधि
सन उनैस सए पैंसठि देल। हिन्दी राष्ट्रक भाषा भेल
भेल न अद्यावधि से मान्य। नव संशोधन कैल अमान्य
संविधान परिशिष्ट निविष्ट। पन्द्रह भाषा अछि संश्लिष्ट
नव संशोधन कैल विधान। सबकेँ भाषा राष्ट्र समान
ई परि हिन्दी कत अधिकार। वितनहु अवधि न भेल प्रचार
केओ त्रिभाषा सत्र चौभाष। केओ सम्पर्कें भाषा राख
केओ संस्कृत केओ अंगरेजीक। केओ कह हिन्दी सटीक
विघटित हो बरु भारत संघ। अंगरेजो बरु रहौ अलंघ
कथमपि हिन्दक हिन्दी वानि। हो न राष्ट्र भाषा सन्मानि।
संसारक स्वतंत्र सब देश। गहल एकनिज भाषा वेश
मात्र भारतक अछि ई हाल। कोना चलत ई संघ विशाल

राजक अधिकारो घटल, बढ़ल केन्द्र सरकार
तदपि न एखनहुँ कै सकल, भाषा प्रश्न सुधार

भेल राष्ट्र भाषा नहि एक। की होएत एहि सौं अविवेक
भावी भारत भाग्य विधान। की अछि की नहि हो अनुमान
संविधान सशोधन सर्प। डसलक हिन्दी भेक सदर्प

नहि जानक छै तकर निबाह । तदपि मैथिली गीड़ै चाह
मुदा न ई अछि कीटे अबल । नहि ककरहुं सौं ई पुनि दबल
तदपि आन भाषाक समान । ई नहि गाहक हिन्दी प्रान
बरु हिन्दीक सहायक सबल । छत्र मैथिली बड़ अछि प्रबल
विना राष्ट्रभाषा नहि देश । मिथिले बूझै नियम विशेष
बहुभाषा भाषी अछि रूस । स्यौह न तकरा कैल अदूस
जतहु न लिपि साहित्यक लेश । रूसी ततहु देल से वेश,
एकल अंग पालन कै वेश । रूसी पटल राष्ट्र बिन क्लेश
रूस कैल जे मार्ग प्रशस्त । भारत हो तकरे अभ्यस्त
संविधान से हमरो देल । संशोधन तकरा हरि लेल
हिन्दी सबसँ अछि उपयुक्त । भारत राष्ट्रक भाषा मुक्त
हिन्दी सभक करै संतोष । दियो मैथिलीकें परितोष
छोड़ौ मैथिलीक प्रति क्रोध । करौ न आवहु एकर विरोध
लियौ न मातृ-भाषा केर नाम । रहौ राष्ट्रभाषा सब ठाम

गुरु रूपे मूखिया बनौ, राष्ट्र अंग हो एक
प्रांत मातृभाषा सकल, पालौ ओ सविवेक

मैथिली नहि ककरहुँ सौं छीन । लिपि साहित्य समृद्ध प्राचीन
भाषी छथि कोटिहुँ सौं टपल । से थिक मिथिलाभाषा असल
कत जन तकरे हिन्दी बुझय । हिन्दी 'काहे कूहे' कहय
मैथिलीक जौं होएत त्याग । भारतहिक अछि परम अभाग
कोनहु परि ई नहिए मिटत । भय अछि भारत संघे टुटत
सात समुद्र पार केर वानि । अंग्रेजी रहने छल हानि
भूलहिं सौं संविधान मे छूट । तैं हिन्दी केर पकड़ल खूट
सत्ता मैथिलीक सब जान । देल विश्वविद्यालय थान
अकादमी साहित्यो तखन । बैसाओल अपनहि निज भवन
कहइछ मैथिलीक इतिहास । मध्यांचलहुक कैल विकास

नहि करवाबौ अधिक मनान। आठम सुचि लिखि करौ मिलान
बंधु हे आब न उचित गुमान
एखनुक लच्छन कहइछ परतछ टूटल पै संविधान
देब न हमरा अहँ आवहुँ जौं अष्टम सुचि मे थान
पूर्वांचल दछिनो छूटत ई टूटत संघ महान।
एकताक सुन्दर अवसर ई सब ताकैछ मिलान
सब घर बसओ हमर उजरत की भ्रातृ द्वितीये चान
मैथिलीक ई सीख हिय धरु किय आबहु छी म्लान
नौत हमर सुन्दर लिय अपने करत जगत यश गान
जर्जरतन छी भेल अहाँ बड़ आबहु करु समधान
नेता जनता भाई बहिन मिलि करू सभक कल्यान
सुमिरि बहुरि जगदम्ब पद अवगुण अपन अपार
देश काल बहु पात्र मे बिन्दुक कोन विचार
नाम रूप संसार पसार। वाद वाद सौं तत्व निखार
एक ईश तद्यपि बहुलोक। सगुण अगुण मानै बिन रोक
मन वाणी नहि पहुंचय जतय। छथि की नहि तकरो नहि निच्चय
वेद पुराण उपनिषद गाव। संकेतहि बहु भांति बुझाब
जे परतछ गोचर लघु खण्ड। स्यौह अनादि अनंत प्रचंड
तकरो देश काल गति ज्ञान। करय मूढ़ मन हृदय हरान
जे विज्ञान चाह सब थाह। सद्यः चन्द्र लोक अवगाह
अद्भुत यंत्रादिक निरमान। कयल तथ्य कथ अनुसंधान
प्रकृतिक अनुकृति अजगुत कयल। देश काल जनु मुट्ठी धयल
कतबो गुनल नव कन बरहल। नित नूतन ओ सब खन रहल
द्वैत अद्वैतक चर्चो विफल। चित अचितक नहि भेदो सफल
दु अछि डारि एक अछि मूल। आदि शक्ति से छथि समतूल

से जगदम्बा करुणा अयन । पालथि हरथि सृजथि विनु चयन

नाम रूप जे जगत मे, अस्ति माटि प्रिय रूप
सब जगदम्बा जानि भजु, माया महा अनूप

से माया नहि असत कहानी । जादू नगर मे टाटक वानी
नाम रूप उनटै पुनटै वित । शक्तिनाश नहि कखनहुं किंचित
जड़ चेतन नहि पृथक तत्वअति । एक शक्तिकेर पृथक नामगति
गति प्रकाश सँ अरु तापतीन विधि । यथा प्रगट एकहि विद्युत निधि
कायहु मे जड़ चेतन लेखिअ । एक मूल दू शाखा देखिअ
जड़ सौं चेतन चेतन सौं जड़ । बढ़य दुनू साखा एकहि छड़
से प्रतच्छ अछि रूप असंक । जतहि भाव सेबिअ निश्शंक
तदपि कहब किछु परतछ देव । जीबन सफल होअ जनि सेव

नव पुरान से देव छथि, वंदनीय अनवंद्य
जीवथि जे एहि सौं विमुख, कहिअ अभागल सद्य

माय बाप गुरु मानल देव । वेदो कहथि हिनक पद सेव
सैह सुसंतति शिष्य महान । जे हिनकर ऋण करथि सधान
राज छोड़ि वन कैल पयान । रामक सदृश पुत्र के आन
माइ बाप हित श्रवण कुमार । अजगुत कैल जान संसार
भेला देवव्रत भीष्म महान । पितु हित रहि कुमार आप्राण
एकलव्य सीखल प्रच्छन्न । दए औंठा गुरु कैल प्रसन्न
धौम्य गुरुक आज्ञा शुभ मानि । आरुणीक तनु रोकल पानि
रघुनन्दन मिथिला परमान । गुरु महेश कें देलनि दान
पतिव्रता काँ पतिये देव । से आदर्श भारते सेव ।

के कह से महिमा पतिव्रत गरिमा चरित चारु चमकै चौदीस
सीता सावित्री दुख दमयन्ती द्रौपदीक जे लागत हीस
पद्मिनि पटरानी राजपुतानी जखन देखल नहि आन उपाय
हँसि हँसि कूदलि सब जनु हो उत्सव कत सहस्र से चिता बनाय

गो, गंगा, गीता पुनि तेहन । महिमामयि माता छथि जेहन
हिनका मे देवत्वक भास । सब जनकें समान विश्वास
हिनका सौं भारत अछि धन्य । जग भरि भारत मान अनन्य
गंगा गीता चन्द्रो सूर । ताबत रहथु इहो सब दूर
गो महिमे किछु कहल जाय । धरणी सम ई सबहक माय
दूध दही घृत गोतरु गोमय । पंच गव्य केर रोग पाप क्षय
हाड़ चाम आ गोबर गोंत । उसरो खेतक हरे सुखौत
घास पात चरि अमृत देथि । मरियो के हमरे सुधि लेथि
के कर महिमा तनिक बखान । चुप रहनहुँ नहि अछि कल्यान
छटपट करइछ तेँ ई प्रान । कहवा लै से तथ्य महान
भारत सुख समृद्धि केर बात । जा नहि रोकब हठि गौ घात
ताबत हैत व्यर्थ सब लक्ष । दिन दिन भेलो अछि प्रत्यक्ष
चारि योजना बीतल व्यर्थ । पांचम तहिना हैत अनर्थ
सबसँ पहिने अन्न छल, बिन कृषि से नहि भेल
पशुए पालन सौं कृषी, तहि पर ध्यान न गेल
दिन दिन बढ़ल दरिद्रता, आयुछीन बलहीन
यद्यपि चलल उद्योग किछु, लै विदेश सौं रीन
दीर्घ वृत्त भारतक दू, पशु कृषि अक्ष समान
बिन रखने से लक्ष दू, नहि देशक कल्यान
झांपि तोपि दुहु कें चलल, कै नहि सकल सुधार
देशक नहि से प्रथमता, नव भारत सरकार
नवभारत सरकार मर्म नहि बुझलक देशक
कैल विदेशक नकल बुझि तकरे भल वेशक
कहि जनसंख्या अधिक कृषिक पच्छे अनठौलक
धर्मक प्रश्न उठाय व्यर्थ गोवध अपनौलक
प्रतिशत अस्सीजनक अछि, जतै जीविका खेत

से अछि ग'ले वृत्त बुझू एक केन्द्र से खेत
एक केन्द्र से खेत अन्न वस्त्रादिक साधन
जेहि बिन नहि निर्वाह कोनहु विधि जीवन धारन
उद्योगहुं सौं अन्न-वस्त्र किछु कृत्रिम देखी
लागले सबहक पूर्ति यन्त्र सौं नहियै लेखी
मानल नव युग एतहु क्रमागत । अमेरिके सन भारत जागत
खेतक काज आब नहि पड़त । यंत्रे असन बसन सब गढ़त
गामक बदला नगरे बसत । सूर्य रश्मि सँ सब किछु खसत
योगाभ्यासक काज न रहत । बटन दबौनहिं चाहल लहत
जे सब लाग असम्भव गप्प । से बिज्ञान करत झप झप्प
विज्ञानक अछि बड़ बड़ घोष । तद्यपि न हो मन मे संतोष
से दिन की लगले जग ऐत । की भारते ताहि अगुऐत
उद्योगी देशो सब आन । नहिं छोड़ल खेते खरिहान
बरु वैज्ञानिक खेती आनि । कतगुन उपजो लेलक छानि
भारत हित गो रक्षे मूल । बैज्ञानिक खेती हो तूल
भेलछि जे मूलहि मे भूल । स्वतन्त्रतो तैं नहि अनुकूल
जोश जवानक राख किसान । तखनहि देश सुरक्षित जान
भूखल जौं रह हमर किसान । राखि सकत की देश जवान
कोना भेल ई भूल महान । प्रकृति भारतक करै बखान
भरतखण्ड ई छल सदा, एक राष्ट्र उत्कृष्ट
एकर सभ्यता संस्कृति, अति प्राचीन बिशिष्ट
जकर सीमा हिमगिरिक प्राचीर परिखा सिंधुहिक
से देश अनुपम राष्ट्र एक स्वहस्त निर्मित प्रकृतिहिक
सिंधु नद कहबैछ हिन्द सँ इन्द वा पच्छिम यथा
तें भेल हिन्दुस्थान अथवा इंदिया नामक प्रथा
उत्तरक सभ भूमि सङ दक्षिण पठार समुद्र धरि
विन्ध्य गिरि सोभैछ सुन्दर मेखला कटि देश भरि

आर्य द्रविड़क मूलवासे वा भरत जनपदक हित
सदा आर्यावर्त्त आर्यक वास जगमे अछि प्रथित
उपमहादेशक समाने देश ई सुविशाल अछि
भेष भाषा भाव भूषा धर्म कर्म अटाल अछि
आर्य द्राबिड़ प्रमुख जांगल पार्वती बहुजाति अछि
आसेतु हिन्दू राष्ट्र भै एक जाति हिन्दुक ख्याति अछि
समय पावि कुशान शक पहलव यवन एहि मे पचल
चीन कोल किरात खस दरदो मिलित एकरा रचल
धर्म कर्म समाज संस्कृति सभक हिन्दू भै रहल
मौर्य शक गुप्तादि साम्राज्यक सुशासन एक छल
खण्ड राज्यो भेल कत उपराज्य वाणिज्यो बढ़ल
धर्महिक शाखा प्रशाखा भीतरो बाहर पटल
अंत नहि वादक रहल छल तर्क केर स्वतन्त्रता
भिन्न भेनहु भेद धर्मक कतहु नहि छल विवशता
खण्ड राज्यहु मे व्यवस्था शान्ति सुख नहि अन्यथा
कला निर्माणक विविध विधि धन जनक सुविशालता
चढ़ा उपरी छल परस्पर उन्नतिक नहि बाध्यता
क्रमहि क्षत्री जाति केर विकाश वंशक आढ्यता
ब्राह्मणक सब जाति पर गुरुताक भेल अकाट्यता
इहलोक सौं परलोक चिंता बढ़ल पुनि उद्विग्नता
धर्म भूमिक संग स्वर्णभूमि भै जग छल प्रथित
आवागमन बहु दूर छल भारतक से अछि बहु कथित
यवन चीनी रूमि पारसि यात्रियो लिखि से कथा
कैल सब अद्‌भुत प्रशंसा भारतक ओ सर्वथा
जते जाति बाहर सौं ऐल। भारत सब कें हिन्दू कैल

मुसलिम तकर एक अपवाद। तै एकरे किछु कहब समाद
गोवंशक महत्व अनुसार। हिन्दू संस्कृति धर्म उदार
से सब आगां कहब विशेष। पूर्वभ ारतक कै उल्लेख
जनिका बुझने सृष्टि समस्त। दस हजार वर्षहिमे व्यस्त
अहम्मन्य से छथि अज्ञान। नहि दिवांध कें सूर्यक ज्ञान
कोटि-कोटि अब्दहि पर दृष्टि। भारतीय वैदिक से सृष्टि
युग्म अर्व अछि तकर प्रमान। जे मानल नवको विज्ञान

विश्वक ग्रन्थागार मे सब सँ वेद पुरान

तैं ई स्वतः प्रमाण छथि, नहि क्यो हिनक प्रमान

हिनक आयु कूतथि विद्वान। क्यो पुरणालै क्यो विज्ञान
भू मंडल पर मानव सृष्टि। दस लक्षाब्द नृतत्वक दृष्टि
तकर शतांशो यदि ली मानि। दस सहस्त्र हो वेदक वानि
आनहु विज्ञानक अनुमान। तही तथ्य कें करै प्रमाण
पछिमक कत विद्वान विशिष्ट। भै इसाइयत सौं आविष्ट
अटपट बहुत बात लिखि देल। नव गवेषणा सौं कै मेल
कहलनि वेद गड़ेरिक गान। मानव के बानर संतान
यूरोप छल मूल निवास। आर्यावर्त न आर्यक वास
सदा विजित छल भारत देश। आर्यो जीतल द्राविड़ वेश
कहथि सहस्त्र पांच वर्षायु। छानवोन कै वेदक आयु
भंड धूर्त्त निश्चरक प्रलाप। कहि बौद्धो कैलनि अपलाप
खोज कते निष्पक्षो भेल। जे एकरा असत्य कहि देल
नहि विवाद केर ई अछि थान। जौं वेदे छथि ग्रन्थ पुरान

तें वेदहिक दोहाइ दै, मात्र देव आभास

आर्य जाति अनुश्रुति स्वतः, आर्यावर्त्त निवास

ऋतम्भरा प्रज्ञाक प्रसाद। ऋषिगण प्रथम देल श्रुतिनाद
ब्राह्मण आरण्यक उपनिषिद। सूत्र स्मृति वेदाङ्गो विशद

मानव धर्म कहल पुरषार्थ। अर्थ धर्म कामादि यथार्थ
वैदिक यज्ञ जाग शुभ कर्म। वर्णाश्रम व्यवहारो धर्म
सफल लोक परलोक निवाह। जीवन आदर्शक जे चाह
किछु हिंसो मानल तैं क्षम्य। उभय पक्ष संतुलनक जन्य
राजा प्रजा भेल श्रुति निष्ठ। लगला करै यज्ञ उत्कृष्ट
अस्व रथादि विजय अभियान। पोत भेल वाणिज्यक प्रान
फूलल फड़ल लोक समुदाय। संग्रह मे उत्साह सदाय
धूम धाम आमोद प्रमोद। क्रीड़ा कौतुक हास्य विनोद

आर्य अनार्यक मेल सौं, सभ्यताक आवर्त्त
हिम सौं सेतु समुद्र धरि, सुविदित आर्यावर्त्त

वर्णाश्रम आचार विचार। लागल चलै समाज सुधार
त्याग तपस्या जे कैल वरण। सैह लेल आरण्यक शरण
संन्यासक प्रव्रज्यो लेल। देश विदेशह शिक्षा देल
राजागण लै यज्ञक साज। क्रतु मिश्रो धरि थापल राज
प्राच्य सुमात्रा वालि यवादि। हिन्द चीन कम्बुज मलयादि
पणि गण वैदिक आर्य वनोक। भेला विश्व मे परम धनीक
पण हुनके मुद्रा केर नाम। पराय वनोजक वस्तु ललाम
पोत हुनक गेल सागर पार। वाणिज्यहुँ सौं बढ़ु अधिकार
से पारसी फणाक वाह्लीक। पण सौं पण्य बढ़ल बड़ ठीक
ई परि भारतीय पुरुषार्थ। दूर विदेशहु कैल कृतार्थ
दुराग्रहो जनिकर छनि इष्ट। स्यौह आर्य कें कहथि विशिष्ट

आर्यावर्त्तहु सौं वृहत वैदिक धर्म प्रवास
मिश्र यवन पारस असुर देशक कह इतिहास
राज श्रृंखला भारतक, बढ़ल क्रमहि सुविशाल
श्रुति साहित्यहुँ सौं तकर, भान होय तेहि काल
अनुश्रुति रूपहि चलित छल, से सब राज विकास

कत मन्वंतर कल्प युग, बिस्मृत कालक ग्रास
सूर्य चन्द्र सुर असुर कुल, ऐल बंश इतिहास
कथा पुरानक रुप मे, बचल रहल कतरास
तदपि भारतक सोलह राज। मगध, अवन्ति वत्स सिरताज
गणतंत्रों छल कते विशेष। ठामे ठाम पसरल भरि देश
मगधक बिम्बसार शिशुनाग। नन्द वंश केर जागल भाग
से भारत साम्राज्य विशाल। भेल संगठित मौर्य काल
उच्छृंखल नृप नन्दक दाप। जन गण भय सौं थर थर काप
विश्व विजय वोड़ा लै वीर। अलक्षेन्द्र अएला पचनीर
नन्द नृपक सुनि शक्ति विशाल। घुरला बाटहि सौं तत्काल
युद्ध तदपि बाटहु मे भेल। घायल कठिन भेला तहि लेल
घुरि नहि सकला जीवित देश। वाबुल नगरहि प्राणक शेष
एम्हर कोना भेल नन्दक नास। कहइछ मौर्य युगक इतिहास
चन्द्रगुप्त चाणक्यक योग। छल भारतक स्वर्ण संयोग
पारस सौं पूर्वान्चल वाल। गठित मौर्य साम्राज्य विशाल
पछिमक ओ सब प्रान्त विशाल। अंग भूत भारत बहु काल
से बल नीतिक अद्भुत विजय। अर्थशास्त्र चाणक्यक कहय
मेगास्थनीज शैलाक्षो दूत। लिखलनि ई सब हाल बहूत
पाओल सैह नीति आलोक। प्रियदर्शी सम्राट अशोक
कैल कलिंगक विजय महान। हिंसा सौं व्याकुल भेल प्राण
बौद्धक कै तेसर संगीति। बदलि देल चाणक्यक नीति
आगाँ तकर हाल किछु कहब। एखन बौद्ध पूर्वक युग गहब
देखि उपनिषद ज्ञान जल, प्लावित श्रुति सत्कर्म
मीमांसादिक पोत चढ़ि, बढ़ल सनातन धर्म
उपनिषदो तर्कक आधार। कयल ब्रह्म ज्ञाने श्रुति सार
तें उपनिषदक उत्तर काल। शास्त्र युगक अछि निश्चित हाल

मौर्य शुंग सौं तदपि पुरान। भेल शास्त्र सबहिक निर्माण
मीमांसा विधि वाक्य बुझाय। कर्म काण्ड श्रुति लेल बचाय
न्याय शास्त्र दै तर्कक रीति। शोधल वाद विवादक नीति
कहल नित्य परमाणु कणाद। वैशेषिक सृष्टिक संवाद
प्रकृति पुरुष मानल द्व तत्व। कैवल्ये सांख्यक पुरुषत्व
योग पतञ्जलि देल बताय। अछि पुरुषार्थ समाधि उपाय
ब्रम्ह सत्य, माया संसार। ज्ञान श्रेय वेदान्तक सार
ई परि दर्शन कैल विशेष। ज्ञानक मंथन तर्क लै वेश
आत्म अनात्मो ईश अनीश। कर्म अकर्म वाद कत दीस
आदि अंत विश्वक की थीक। माया शून्य स्यात् की ठीक
योगशास्त्र कै आविष्कार। मन पर्यन्तक बोधल धार
कै सक्रिय तकरो अभ्यास। तर्कहुँ के जनु कैल निरास
जे विश्वहि मे कतहु न भेल। योगशास्त्र से भारत देल
वाद विवादक निर्णय लेल। तर्क परस्पर बढ़ले गेल
यद्यपि बहुत बढ़ल मत भेद। तदपि तर्क मे नहि छल खेद
इदमित्थं यद्यपि नहि भेल। अंत कोनो नहि छोड़ल गेल
तर्कक ई परिणाम विशेष। नहि छल हठ वा भावावेश
ज्यौं ह न ईशक देल दोहाई। स्यौंह कैल वेदहिक बड़ाइ
सभक विवाद सबहु सुनि लेथि। वेदक सबहु मान्यता देथि
धर्म सनातन मान समान। वेद अपौरुष स्वतः प्रमान
हिंसे भेल विवादक मूल। लोको बढ़ल वेद प्रतिकूल
बौद्ध जैन कैलनि अपलाप। उग्र विरोधहि केर प्रताप

पटाक्षेप जनु भेल ई आएल अंक नवीन
देखल विश्वो नयन भरि, बौद्ध भारतक 'सीन'
निर्विवाद छल जे विषय ग्रस्त विवाद मिलाय
देल अहिंसा नाद धन, बौद्ध जैन दुहु भाय

करुणा दया लोक उपकार। लोकमान्य छल निति उदार

ई नहि छल किछु नव्य विचार। नहि प्रतिवादे वा तकरार
सिद्धान्तक ई दू अछि पक्ष। वाद अलग काज प्रत्यक्ष
यथा विन्दु अछि विन परिमाण। रुप तदपि चाहै किछु थान
काजहु मे आचार विचार। दूनू पक्ष अनिवार्य अवार
तारतम्य यद्यपि सब ठाम। कर्म वचन मन मेलक काम
तदपि न हो सब ठाम निवाह। की कर्त्तव्य न पावी राह
जाथि महाजन जाहो पंथ। सैह राह कहलनि सद् ग्रंथ
क्यो न कहत हिंसा थिक धर्म। तदपि न विनु हिंसा सत्कर्म
बाहर की अछि को नहि ज्ञान। मुदा सौर मंडलक प्रमाण
ग्रह गणहिक कक्षा परिमान। लेखि गणित भै जाथि हरान
अणु अणु तकर भरल अछि प्रान। भूमंडल अछि तकर प्रमाण
जीवक जीव अछि आधार। लोकहुं कें नहि आन प्रकार
बिन हिंसा नहि संभव स्वास। सांस बिना की जीवन आस
जल फूल मूल अन्न सप्राण। राखि सकथि के एहि विनु प्रान
सबहक रक्षा करथि किसान। बिन खेती नहि तकर निदान
तेहि खेती मे हिंसा घोर। पग पग लाख लाख जिव ओर
कृमि वहु करै नष्ट जे अन्न। खेतिहर तकरा मारि प्रसन्न
जतै न खेते नहि गृहवास। हरिनै सवहक जीवन आस
मांस खाय ओढ़य मृगछाल। चरबी सँ वारैछ मशाल
लोकहु मे जकरा नहि अन्न। करतै से की डोको वन्न
हिंसक सँ पैवा लै त्रान। हिंसा तकर न मानै प्राण
कते कहव हिंसाक प्रकार। जे अनिवार्य लोक व्यापार
कस्तुरी रेशम मधु सीप। शंख चवर मणि मूंगा दीप
छाल सींग अँतरी धरि छान। कत कत भेषज हो निर्माण
पालब पोसव जीव विषेय। सदुपयोग को हिंसा हेय?
से हिंसा मानो जौं त्याज्य। गो दुग्धो नहि होयत ग्राह्य

व्यष्टि समष्टि प्राण अछि एक। व्यष्टि वोध सुख दुःख अनेक
मानी सबकें आत्म समान। सब मे देखी स्वात्म रमान
विश्वास ईश्वरहिक बूझि। काजे भरि योगी नहि लूझि
काज करैत मरण पर्यन्त। जीवन बूझी सरस अनन्त
जीवन दर्शन देल सतूल। ईशावास्य वेद अनुकूल
यद्यपि न हिंसा शब्द प्रयोग। ओकरो देल पूर्ण उपयोग
हिंसा लोकक यदपि प्रवृति। मनुओ उत्तम कहल निवृत्ति
मानव जीवन रक्षा कार्य। यद्यपि अछि हिंसा अनिवार्य
यथा साध्य से रोकक हेतु। बांचल कते नियम कत सेतु
प्रायश्चित्तो दंड विधान। हिंसे रोकक अछि ओरिवान
वेद मूलता सभक प्रमान। यैह सनातन धर्म महान
वेदक निन्दा हिंसा लेल। तें नहि उचित जेना छल भेल
परलोकहु दिसे यद्यपि लक्ष। वेदक मुख्य ऐहि के पक्ष
लोक पक्ष कैने बिन सफल। परलोकक चिन्तन छल विफल
ऐहिक उन्नति सौं अवसाद। देलक दुहु कें परम बिषाद
कैल दुहू जन तैं गृह त्याग। पर उपकार हेतु वैराग
मुदा ने ई हिनके छल दोष। यद्यपि हिनक अतिशय छल घोष
आयल ई नहि बाढ़ि हठात। अबितहि छल ई बढ़ल क्रमात
योगि यती निहंगो नग्न। वैखानस तापस तप मग्न
कत शत नाम रूप समुदाय। त्यागक उठल देश भरिवाय
आश्रम कुटी बिहार अराम। बढ़ल जेना छल गामक गाम
वर्णाश्रम धर्मो नहि रहल। कते गृही सन्यासे गहल
लोक कर्म सँ भेल उदास। जेना जीवनहिं सौं नहि आस
आत्मा सौं जनु उठल प्रकार। संन्यासे अछि शांति अधार
महावीर आ बुद्धक वानि। आतप तापित कै भेल पानि
जैन बौद्ध मत तें एत बढ़ल। संग्रह सौं भिक्षे वर कहल

जैन मतक नहि भेल प्रचार। आन ठाम भारतक बहार
बौद्धक मुदा चलल अभियान। धरि कोरिया चीन जापान
दुनू अहिंसे कैल प्रधान। उपयोगक अछि भिन्न विधान
जैनी हिंसा सौं भय मानि। बिन छनने नहि पीवथि पानि
नाकहु लग राखथि रूमाल। सांस छानि ई करथि कमाल
श्वेताम्बरे अहिंसक ओर। तनिकहु टपल दिगम्बर जोर
अधिक जैन सेठे सहुकार। लाभ रक्त पिबि जेन ढकार
शोषणरत शुष्कहि सौं प्रेम। केश नोचाबथि तेहनो नेम
हिनक तीर्थ मरुभूमि पठार। जतै न पानिक हो संचार
अत्मघात कत करथि अगम्य। पर हिंसा नहि मानथि क्षम्य
कत गोशाला पिंजरापोल। जैन जीव रक्षा हित खोल
मठ मन्दिर जैनक विस्तार। कला चकित करइछ संसार
बुद्धो अहिंसाक अवतार। निन्दल वेदो तही प्रकार
हिंसा वेदक कहि अन्याय। यज्ञ कर्म सब देल उठाय
कर्मठताक दिशा देल मोड़ि। धर्म देल जनहित सौं जोड़ि
बहुजन हित बहुजन सुख हेतु। बनल एक तैं धर्मक केतु
प्रियदर्शी सम्राट अशोक। कैल नियुक्त राज सौं लोक
धर्म विभागो खोलि विशाल। देल वारि सत् सहस मसाल
से लै चलल भिक्षु समुदाय। पहुँचल दूर देश मे जाय
धर्म अहिंसा कैल प्रचार। विश्व शांति बन्धुत्व उदार,
जानि सभक सुख ओ उपकार। सबतरि हुनक भेल सत्कार
सैन्न शक्ति साम्राज्य बिशाल। तदपि कैल घोषित तत्काल
हिंसामूल युद्ध होबंद। राष्ट्र बनौं सभ मित्र स्वच्छंद
यवन देश धरि दूताचार। एसियान्त धरि एम्हर प्रचार
दूतावास पाटलीपुत्र। जोड़ल सबहुं मित्रता सूत्र

मिश्र, चीन, भारत जगत, तीन देश प्राचीन
तीनहुँ मे गुरु भारते, यूरोपादि नवीन
पूर्व पश्चिम देश सब, शिष्य भारतक भेल
भारोपिय हिन्देशिया तैं नामो पड़ि गेल
भारोपिय अछि जाति जतेक। सभक संस्कृति भाषा एक
भारतीय आर्यक से देल। धर्म पसरि हिन्देसिया भेल
वैदिक सभ्यताक परिणाम। स्पष्टे बूझि पड़े सबठाम
बौद्ध धर्महुक ई अभियान। तकरे छल जनु पुनरुत्थान
अहिंसाक ई विकट प्रभाव। देल हिन्द पर विषम दबाव
पंचशील बुद्धक अपनाय। छोड़ल निज विस्तारक न्याय
शस्त्र त्य गि शास्त्रार्थ प्रवीन। राज्य छोड़ि भिक्षाटन लीन
मारी माछ न उपछी पानि। कृषि वाणिज्यहु मे भेल ग्लानि
पुरुषार्थक सब काजे छोड़ि। लेल काछू सभ अंगहि मोड़ि

यदपि अहिंसहुं सौं बढ़ल, देशक बहु यशमान
र्थपित भारत कैल अति, शक हूणादि कुशान

शुंग मित्र करण्वादि नरेश। कैल तखन पुरुषार्थ विशेष
यदपि न ई सब मौर्य समान। नहि चाणक्यक नीति महात
रोकल तदपि हूण अभियान। कैल वेदमत पुनरुत्थान
विक्रम नृप जे देल पछारि। नाम हुनक तैं भेल शकारि
बिक्रमाब्द अछि तकर प्रमान। नहि ई गुप्तक संवत् आन
कालिदास कविकुल अवतंस। छला सभासद हुनक प्रशंस
देल स्वर्णयुग भारत आनि। बनल रहल इतिहासक मानि
शक हूणो पुनि बसला आबि। बनला हिन्दू-धर्मो पाबि
भेला कनिष्क शाक सम्राट। बौद्ध धर्म सेबको विराट
गंधारहि सौं मगधक अन्त। चीनहु धरि छल हुनकभिड़न्त
तक्षशिला हुँनके रजधानि। विश्व विदित विद्या गुण खानि

राज्यारोहन काल प्रमान । शक संवत हुनके अछि दान
कैल बौद्ध चारिम संगीति । बौद्ध मतक भेल दू दल नीति
हीनयान पथ बौद्ध विशुद्ध । महायान भेल तकरे विरुद्ध
बुद्ध मूर्त्ति पूजाक विधान । महायान मत कैल चलान
हिन्दू बौद्ध मतक संघर्ष । आनल कत उत्कर्ष विकर्ष

ईसा पूर्व शताब्द यदि, पुनरुत्थान प्रभात
गुप्तकाल मध्याह्न सम, भेल जगत विख्यात

पुनरुत्थाने नहि रहल, नव जागरण प्रवीन
ईंट माटि प्राचीन लै, गृह निर्माण नवीन
कला शिल्प वाणिज्य बहु, चलल विजय अभियान
काल पात्र गति लखिकयल, नव धर्मक निर्माण
चन्द्रगुप्त ई गुप्त नरेश । थापक भेला गुप्त कुल वेश
शुंग मित्र कण्वादिक वाद । राखल यैह वेद मर्याद
इसवी जखन तीस सए बीस । सम्वत् गुप्तक चलु कतदीस
वीर समुद्रगुप्त तनि तनय । कैल सबहु दिस अद्भुत विजय
कत शत नृपक मान मथि धैल । अश्वमेध यज्ञो पुनि कैल
तदपि न बुद्धहु सँ किछु द्वेष । ज्ञापल मेघ वर्ण लंकेश
मेघवर्ण बनबौल विशाल । बोधगया मठ शिल्प कमाल
चन्द्रगुप्त दोसर हुनि तनय । कैल शाक हूणक से विजय
जोड़ल निज नामहु मे समुद्र । अपर विक्रमादित्य विरुद
आनो नृप ई लेल उपाधि । से भेल इतिहास जनु व्याधि
उड़ला असल विक्रमादित्य । चन्द्रगुप्तक लै साहित्य
विक्रम नृपक सभा नवरत्न । अनुश्रुति एक चलल विनु यत्न
ई नवरत्न न छला एकत्र । भेला विक्रमो कए अन्यत्र
तैं नहि चन्द्रगुप्त से नृपति । विक्रम संवत् जनिकर सुरति
मानल इहो छला शाकारि । किछु नवरत्नो हिनक दुआरि

तदपि चाह जे निज संस्मरण। से की करत आन केर वरण
जौं ताहि सौं हो अपने लुप्त। पितामहक ओ सम्पत् गुप्त
तैं ई मत अछि लचर नितांत। नव गवेषणो कहइछ भ्रांत
चीन यात्रि फाहियनक प्रमान। चन्द्रगुप्त विक्रमो महान
स्कन्दगुप्त हिनकर वर पौत्र। अश्वमेध हुनको अछि सौत्र
ई परि गुप्त युगक उत्कर्ष। कैल समुज्ज्वल भारतवर्ष
छठम शताब्दक होइत अंत। गुप्त कालहुक भेल दुरंत
दछिनहुं आन्ध्रनृपक छल राज। सतवाहनो नाम तनि बाज
सातकर्णि से गौतम पुत्र। दृढ़तर कैल शासनक सूत्र
मालवाक छत्रपहि हराय। देल दक्षिणहु दुर्ग बनाय
पीढी तीस आंध्र करु राज। तकर बाद चालुक्य विराज
चोल चेर पांड्यक लघु राज। तमिल देश स्वतंत्र विराज
ई सब नाविक छला विशेष। दूर देश व्यापार प्रवेश
दक्षिण ब्राह्मण धर्म प्रचार। आनहुँ सौं नहि द्वेष विगार
तैं इसवीक पांच सए साल। छल हिन्दक नव जागृति काल

विश्वक नाट्यागार मे, चलै विचित्रे खेल
प्रकृति नटि नचवैत छथि, विविध पात्र कए मेल

वैदिक धर्म नवोने बनल। नाम सनातन यद्यपि रहल
वर्णाश्रमक भेल संस्कार। बौद्धक घटल प्रभाव पसार
हिन्दू भेला परम संतुष्ट। गेल अनीश्वरवादी दुष्ट
वैदिक यज्ञ जाग अनुरूप। चलु निर्माण मंदसर कूप
देवमूर्ति पूजाक विधान। बहु विधि चलल तीर्थ व्रतदान
इन्द्र अग्नि यम वरुण उषादि। मित्र मरुत त्वष्टा पूषादि
धावा पृथिवी द्युति पर सोम। आदिक उठल यज्ञ हवि होम
वेदो कहल ब्रह्म छथि एक। नाम रूप अछि हुनक अनेक
तैं बहुदेवक नव नव रूप। चलल कतेक समय अनुरूप

एक ब्रह्म अस्वत्थ समान। मूल अनादि उर्ध्व प्रस्थान
पसरल नीचा सृष्टि महान। शाखा पुत्र अनन्त समान
गीता सब उपनिषदक सार। भगवानक ई अछि उद्गार
ब्रह्मक से अस्वत्थ स्वरूप। कहल पुराणो विशद अनूप
देखिअ ब्रह्म थान सब गाम। पीपर तर तें बनल ललाम
सूर्य छला जे वेदक विष्णु। भेला क्षीरशायी प्रभविष्णु
रुद्रक रोदक रूप विरूप। भेल शिवक मंगलमय रुप
भाषा भेल संस्कृत नव्य। काव्य पुराणक सर्जन भव्य
कर्त्ता धर्त्ता हर्त्ता रूप। अज हरि हर भेल ब्रह्म त्रिरुप
विष्णुक मानल दस अवतार। शिवलिङ्गक तेहने विस्तार
शक्ति सभक से माया रूप। लक्ष्मी दुर्गा वाणी रूप
धर्म बल बुद्धि रूप पुरुषार्थ। यैह तीन अछि काम्य यथार्थ
देवी देवक विविध प्रचार। निगमागमक विषय अछि सार
वहल धर्मनद शक्तिक मूल। महाकाव्य दू तकरे कूल
मर्यादा पुरुषोत्तम राम। लै रामायण रचल ललाम
श्री कृष्णक लै चरित अथाह। भेल महाभारतक प्रवाह
हिन्दू धर्म संस्कृतिक प्रान। महाकाव्य ई दुनू प्रधान
निगम वेदमत दहिन अछि, वैष्णव धर्म ललाम
शाक्त पाशुपत तंत्रमत्, आगम अछि पथ वाम
दुहु मिलि कैल सनातनक, काया कल्प नितांत
वैदिक लौकिक तत्व लै, पुरुषार्थक सिद्धान्त
तंत्र मंत्र सिद्धासनक, योगक कै संयोग
बज्र यान से कैल जनु, योगहि मे संभोग
शाक्त पाशुपत तंत्र तैं, निगमक पाओल मान
मिलल सनातन धर्म मे, आगम निगम पुराण
तेहि सौं सहज यान उत्थान। पंथ सहजिया भजन प्रधान

कत कत पंथ और सब बनल। सनातनक भेदे सब रहल
अवतारक कल्पना उदार। कतै रूप मानै संसार
निर्गुण ब्रह्म सगुण संसार। दुहुक समन्वय अकथ अपार
नेति नेति कहि गावथि वेद। ऋषि मुनि धरि नहि पावथि भेद
कै यम नियम धारणा ध्यान। साधथि क्यो क्यो तन मन प्रान
लै समाधि ब्रह्मामृत पान। जन साधारण से की जान
नहि साधन नहि सूक्ष्म विचार। गुरु उपदेश हुनक अधार
भजन भाव सौं हुनका तोष। तीर्थ ब्रतक विश्वास भरोस
हुनका चाही कथा पुराण। संयम नियमाचार विधान
रचल पुराण काव्य श्रुतिसार। सबहि बनाओल लोकाचार
जनता पौल मार्ग सत्कर्म। ई परि बचल सनातन धर्म
धर्म सनातन केर दू, मार्ग दहिन ओ बाम
भुक्ति मुक्ति संयुक्तिहित, वामाचार सकाम

—:०:—

युवक

भूमि कम्प छी प्रबल विश्व-विप्लवकारी हम,
छी अति प्रखर तरंग रूढ़ि गिरि रजकारी हम,
दावानल प्रज्वलित दासता क्षयकारी हम,
झंझानिल सम छी स्वतन्त्रता - रवकारी हम।
अन्यायी सत्ता प्रलय गगन सम अति विषम,
हमरहि लघु हुँकार सँ महाप्रलय होइछ नियम ॥
हमहि युगक अवसान हमहि शिब नयन भयंकर,
हमहि प्रबल विद्रोह क्रान्तिकारी प्रलयंकर,
हमहि विश्व - संहार अओर छी संघ - शक्तिधर,
हमहि अचल छी जगत-उदधि-मंथन-हित मन्दर।
हमहि काल छी पुनि हमहि महाकाल छी भूत हित
नवयुग नव सिरजन करी भू-कटाक्ष सँ हमहि नित ॥
हमहि रोष छी प्रबल, हमहि छी ताण्डव भयंकर,
असंतोष छी हमहि क्षुब्ध मानू छी विषधर।
हमहि अशान्तिक मूल हमहि दानव - संहारक,
हमहि परम दुर्दान्त लोकमत राष्ट्र - सुधारक।
हमहि रक्त - दन्तावली - विस्फारित केहरि बली,
भूकथु श्वान हज़ार नित महामत्त गज सम चली।
समता थापक हमहि विशमता - नाशक सत्वर
वर्त्तमान अछि हमर, भविष्यक के चिन्ता कर ?
हमहि ध्वंस प्राचीनताक पुनि मुक्ति - द्वार वर,
अन्यायक छी अशनि शान्ति - उल्का छी दुस्तर।
शक्ति, साधन, साहसक मूर्ति हमहि छी युवक जन,
हमर शक्ति प्रज्वलित हो, पाबि अनल आहुति ॥

('मिथिला' सँ उद्धृत)

बाबू भोलालाल दासक
एक दुर्लभ पत्रक छाया प्रति

पटना
२४-१-६५

श्री सत्य नारायण बाबू तथा
श्री राजनन्दन बाबू
सविनय नमस्कार —

[illegible]

हमर
कैल गेल छलैक मुदा हमरा ओहिलेलके
कोनो उत्तर नहि छलैक । गत १५-९-६५ क
सम्बादकीयमे एहि दुर्भावना मत्सिना कएल
कएल अछि ततबे नहि गत पंक्तिमे जेतना
समितिमे हमर सम्मान मुख्य अतिथिक रूपे
कैल ताहूपर ओकरो निन्दा कैल गेलैक
अछि संगहि नीचा उल्लेख श्री ल. का. झाजी
सँ समितिक सभापतित्व सँ पदत्यागक
समर्थन कैल गेलैक अछि एवं समितिके तकरा दुष्परिणाम भोगबा
क धमकी देल गेलैक अछि । मिहिरक सम्पा-
दक दरभंगा राजक अफसर श्री लक्ष्मीकांत झाजीकें
जे ओ समर्थित भेलैन्ह वा श्री रमानाथबाबूकें जे हमरा
पूर्वक लेखसँ अकारण मिहिर सम्बन्धमे भ्रान्ति
भूमि पड़लैन्ह वा हिनकर समर्थन संगहि अपना उक्ति
सम्पादकीयमे कैल अछि अछि [illegible] हमर रेमरदल वा

पोस्ट कार्ड
POST CARD
जवाबी कार्ड जवाब के लिए
THE [illegible] CARD IS INTENDED FOR THE ANSWER
केवल पता
ADDRESS ONLY
INDIA

श्री राजनन्दन लाल दास
C/o श्री सत्यनारायण लाल दास
६/१२ शम्भू चटर्जी स्ट्रीट
कलकत्ता १२


कर्ण गोष्ठी